हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों

का

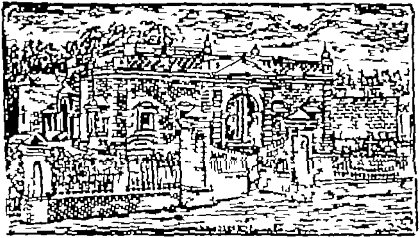
संक्षिप्त विवरण

पहला भाग

संपादक

श्यामसुंदरदास बी ए

भूतपूर्व निरीक्षक, हिंदी पुस्तकों की खोज, स्थायी समासद और
मंत्री, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, फेलो और
अध्यापक, काशी विश्वविद्यालय।



काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

१९८०

५००] [मूल्य ३)

मुद्रक—गणपति कृष्ण गुर्जर श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, बनारस सिटी। १०४१-२४

प्रस्तावना

सन् १८९८ ई० में भारत सरकार ने लाहौर निवासी पंडित राधाकृष्ण के प्रस्ताव को स्वीकृत कर भारतवर्ष के *भिन्न भिन्न प्रांतों में हस्त-लिखित* संस्कृत पुस्तकों की खोज का काम आरंभ करना निश्चित किया; और इस निश्चय के अनुसार अब तक संस्कृत पुस्तकों की खोज का काम सरकार की ओर से बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी, *बम्बई और मद्रास गवर्नमेंटों तथा अन्य संस्थाओं* और विद्वानों द्वारा निरंतर होता आ रहा है। इस खोज का जो परिणाम आज तक हुआ है और इससे भारतवर्ष की भिन्न भिन्न साहित्यिक तथा ऐतिहासिक बातों का पता चला है, वे पंडित राधाकृष्ण की बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता तथा भारत सरकार की समुचित कार्यतत्परता और विद्यारसिकता के प्रत्यक्ष और ज्वलंत प्रमाण हैं। संस्कृत पुस्तकों की खोज-संबंधी डाक्टर कीलहार्न, बूलर, पीटर्सन, भांडारकर और बर्नेल आदि की रिपोर्टों के आधार पर डाक्टर आफ्रेक्ट ने तीन भागों में, संस्कृत पुस्तकों तथा उनके कर्त्ताओं की एक बृहत् सूची छापी है जो बड़े महत्त्व की है और जिसके देखने से संस्कृत साहित्य के विस्तार तथा महत्त्व का पूरा पूरा परिचय मिलता है। इसका नाम कैटेलोगस कैटेलोगरम है। ऐसे ही महत्त्व के ग्रंथों में आफ्रेक्ट का आक्सफर्ड की बोडलियन लाइब्रेरी का सूचीपत्र, एगलिंग की इंडिया आफिस की पुस्तकों का सूचीपत्र, और वेबर का बर्लिन के राज पुस्तकालय का सूचीपत्र है।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना के पहले ही वर्ष (सन् १८९३ ई०) में इसके सभासदों का ध्यान इस महत्त्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित हुआ। सभा ने इस बात को भली भाँति समझ लिया और उसे इसका पूरा पूरा विश्वास हो गया कि भारतवर्ष की, विशेष कर उत्तर भारत की, बहुत सी साहित्यिक तथा ऐतिहासिक बातें बेठनों में लपेटी, अँधेरी कोठरियों में बंद हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों में छिपी पड़ी हैं। यदि किसी को कुछ पता भी है अथवा किसी व्यक्ति के घर में कुछ हस्तलिखित पुस्तकें संगृहीत भी हैं तो वे या तो मिथ्या मोहवश अथवा धनाभाव के कारण इन छिपे हुए रत्नों को सर्वसाधारण के सम्मुख उपस्थित कर अपनी देशभाषा के साहित्य को लाभ पहुँचाने और उसे सुरक्षित करने से पराङ्मुख हो रहे हैं।

सभा यह भली भाँति समझती थी कि इन छिपी हुई हस्तलिखित पुस्तकों को ढूँढ़ निकालने में तथा इनको प्राप्त करने में बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा; क्योंकि सभ्यता की इस बीसवीं शताब्दी में भी ऐसे बहुत से लोग मिल जाते हैं जो अपनी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों का, देने की बात तो दूर रही, दिखाने में भी आनाकानी करते हैं। तथापि यह सोचकर कि कदाचित् नीति, धैर्य और परिश्रम से काम करने पर कुछ लाभ अवश्य होगा, सभा ने यह विचार किया कि यदि राजपूताने, बुंदेलखंड,

संयुक्त प्रदेश तथा अवध और पंजाब में प्राचीन हस्तलिखित हिंदी-पुस्तकों के संग्रहों के खोजने की चेष्टा की जाय और उनकी एक सूची बनाई जा सके तो आशा है कि सरकार के संरक्षण, अधिकार तथा देख रेख में इस खोज की अच्छी सामग्री मिल जाय। पर सभा उस समय अपनी बाल्यावस्था तथा प्रारंभिक स्थिति में थी और ऐसे महत्त्वपूर्ण और व्ययसाध्य कार्य का भार उठाने में सर्वथा असमर्थ थी। अतएव उसने भारत सरकार और एशियाटिक सोसाइटी बंगाल से यह प्रार्थना की कि भविष्य में हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकों की खोज और जाँच करने के समय यदि हिंदी की हस्तलिखित पुस्तकें भी मिल जायँ तो उनकी सूची भी कृपाकर प्रकाशित कर दी जाय। एशियाटिक सोसाइटी ने सभा की इस प्रार्थना पर उचित ध्यान देते हुए उसकी अभिलाषा को पूर्ण करने की इच्छा प्रकट की। भारत सरकार ने भी इसी तरह का संतोषजनक उत्तर दिया। सन् १८९५ के आरंभ में ही एशियाटिक सोसाइटी ने खोज का काम बनारस में आरंभ कर दिया और उस वर्ष लगभग ६०० पुस्तकों की नोटिसें तैयार की गई। दूसरे वर्ष उक्त सोसाइटी ने इस काम के करने में अपनी असमर्थता प्रकट की और वहीं इस कार्य की इति श्री हो गई। यह दुःख की बात है कि इन पुस्तकों की कोई सूची अब तक प्रकाशित नहीं की गई है। सभा ने संयुक्त प्रदेश की सरकार से भी खोज का काम कराने की प्रार्थना की थी। प्रांतिक सरकार ने अपने यहाँ के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर महोदय को लिखा कि वे संस्कृत पुस्तकों की खोज के साथ ही साथ उसी ढंग पर ऐतिहासिक तथा महत्त्व की हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज का भी उचित प्रबंध कर दें। सरकार की इस आज्ञा की अवहेलना की गई और उसके अनुसार कुछ भी कार्य नहीं हुआ। यह अवस्था देखकर मार्च सन् १८९९ में सभा ने प्रांतिक सरकार का ध्यान फिर इस ओर आकर्षित किया। अब की बार सरकार ने इस कार्य के लिये सभा को ४००) की वार्षिक सहायता देना और खोज की रिपोर्ट को अपने व्यय से प्रकाशित करना स्वीकार किया। उस समय से अब तक सभा इस काम को बराबर कर रही है। अब तक आठ रिपोर्ट प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें से पहली ६ (सन् १९०० से १९०५ तक) तो वार्षिक हैं और शेष दो (सन् १९०६-१९०८ और १९०९-१९११) त्रैवार्षिक हैं। नवीं रिपोर्ट छप गई है, पर अभी प्रकाशित नहीं हुई। दसवीं और ग्यारहवीं रिपोर्टें संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट के पास विचारार्थ भेजी जा चुकी हैं। संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट ने इस खोज के काम के लिये पहले वार्षिक सहायता ४००) से ५००) कर दी, फिर १०००) कर दी और अब वह २०००) वार्षिक सहायता देती है। पंजाब की गवर्नमेंट ने भी गत तीन वर्षों से अपने प्रांत में प्राचीन हिंदी पुस्तकों की खोज के लिये ५००) वार्षिक सहायता देना आरंभ कर दिया है।

सन् १९०० से लेकर १९०८ तक की सात रिपोर्टें तो मेरी लिखी हुई हैं और सन् १९०९-१९११ तक की आठवीं रिपोर्ट पंडित श्यामबिहारी मिश्र एम. ए. की लिखी हुई है। इनमें से पहली छः रिपोर्ट (१९०० से १९०५ तक की) तो वार्षिक हैं और शेष दो (१९०६-०८ तथा १९०९-११ वाली) त्रैवार्षिक हैं। इसके आगे की नवीं रिपोर्ट भी जो अभी प्रकाशित नहीं हुई है, पंडित श्यामबिहारी

मिश्र की लिखी हुई है तथा दसवीं और ग्यारहवीं रिपोर्टें राय बहादुर बाबू हीरालाल की लिखी हैं। ये दोनों रिपोर्टें गवर्मेंट के विचाराधीन हैं। यह संक्षिप्त विवरण सन् १९०० से लेकर १९११ तक की ८ रिपोर्टों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

नई रिपोर्टों के प्रस्तुत करने में पिछली सब रिपोर्टों को देखना पड़ता था और प्रत्येक कवि या उसके ग्रंथ की जो नई नोटिस तैयार होती थी, उसके सम्बन्ध में यह जानना आवश्यक था कि पिछली रिपोर्टों में इनके विषय में क्या निश्चय हो चुका है। इन सब कामों के लिये रिपोर्टों को फेर फेर देखने में बड़ी कठिनता होती थी। जिन लोगों को इन रिपोर्टों के आधार पर यह जानने की आवश्यकता होती थी कि किस कवि के विषय में क्या पता लग चुका है, उन्हें भी बिना सब रिपोर्टों को देखे संतोष नहीं हो सकता था, क्योंकि प्रति वर्ष नई बातों का पता लगने से पुराने सिद्धांतों में हेर फेर हो जाता था। इसलिये यह संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया कि एक ही स्थान में सब सामग्री मिल जाय। आगे से ऐसे विवरण प्रति नवें वर्ष तैयार किए जायँगे।

इन रिपोर्टों को प्रस्तुत करने की व्यवस्था यह थी कि पहले प्रत्येक पुस्तक का एक विवरण तैयार किया जाता था जिसमें ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्ता का नाम ग्रंथ का विस्तार (अर्थात् प्रतिग्रंथ की अनुमानतः कितनी श्लोक संख्या है—प्रति श्लोक ३२ अक्षर का माना जाता है), लिपि, निर्माण काल, लिपि-काल, ग्रंथ की अवस्था (अर्थात् जीर्ण, नवीन, प्राचीन, पूर्ण, अपूर्ण आदि), रक्षित रहने का स्थान रहता है और ग्रंथ के आदि और अंत और कहीं कहीं मध्य का भी अंश उद्धृत किया जाता है। साथ ही ग्रंथ के विषय का विवरण और रिपोर्ट लेखक के कवि और उसकी कृति के विषय में भी विचार या सिद्धांत रहते हैं। इस प्रकार पूरी रिपोर्ट के प्रस्तुत हो जाने पर रिपोर्ट लेखक मुख्य मुख्य बातों का उल्लेख प्रस्तावना के रूप में करता है। इन रिपोर्टों ने हिंदी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करने में बड़ा काम किया है। पहले पहल सन् १८८३ में ठाकुर *शिवसिंह सेंगर* ने *शिवसिंह सरोज* नाम का हिंदी का इतिहास उपस्थित किया। इसके अनंतर सन् १८८९ में डाक्टर ग्रियर्सन ने Modern *Vernacular Literature of Northern* Hindustan लिखा। सन् १९१३ में मिश्र बन्धुओं ने मिश्रबन्धु विनोद नाम का ग्रंथ लिखा। हिंदी पुस्तकों की खोज से जो सामग्री उपस्थित हुई थी, उसका इस ग्रंथ में पूरा पूरा उपयोग किया गया है। सन् १९१८ में मिस्टर ग्रीव्स ने और सन् १९२० में मिस्टर के ने हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास लिखा। इन दोनों ग्रंथों में मिश्र बन्धुविनोद से अमूल्य सहायता ली गई है।

सन् १९२० में काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने एक उपसमिति का संघटन इस विचार से किया कि अब तक खोज का जो काम हुआ है, उस पर विचार कर के सिद्धांत स्थिर करें जिनके अनुसार खोज का काम भविष्य में चलाया जाय। इस उपसमिति ने एक अमूल्य रिपोर्ट उपस्थित की, जिसके विशिष्ट अंशों को हम नीचे उद्धृत करते हैं।

"काशी नागरीप्रचारिणी सभा की प्रबंधसमिति की आज्ञा के अनुसार शनिवार ता० २२ मई १९२० को हम लोग हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज से संबंध रखनेवाली निम्नलिखित बातों पर विचार

करने तथा सभा के विचारार्थ उन पर अपनी सम्मति देने के लिये सभाभवन में एकत्र हुए—

(१) संयुक्त प्रदेश में खोज के कार्य का क्या क्रम होना चाहिए ?

(२) क्या अन्य प्रांतों में भी खोज का काम होना चाहिए ? यदि हो तो कहाँ कहाँ हो तथा किस प्रणाली और किस क्रम से हो ?

(३) इस कार्य का निरीक्षक कितने वर्षों के लिये नियत होना चाहिए, उसका क्या कर्तव्य और उत्तरदायित्व होना चाहिए, इस कार्य के लिये कौन कौन महाशय उपयुक्त हैं ?

(४) क्या निरीक्षक की सहायता और उसको परामर्श देने अथवा उसके पूछने पर किसी विषय में अनुमति देने के लिये किसी स्थायी समिति के संघटन की आवश्यकता है ? यदि है तो उसके कौन कौन सभासद होने चाहिएँ और उस समिति का क्या कर्तव्य होना चाहिए ?

(५) खोज के काम के लिये कितने एजेंटों के नियत होने की आवश्यकता है ? उनका क्या वेतन होना चाहिए और वे किस योग्यता के पुरुष होने चाहिएँ ?

(६) इस कार्य की रिपोर्ट लिखने में किन किन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए और रिपोर्ट किस प्रणाली पर लिखी जानी चाहिए ?

(७) इस कार्य के लिये गवर्नमेंट की १०००) की वार्षिक सहायता के अतिरिक्त यदि अधिक धन की आवश्यकता हो तो उसका क्या प्रबंध होना चाहिए ?

(८) प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों को संग्रह करने तथा उनके रक्षापूर्वक रखने और प्रकाशित करने का क्या प्रबंध होना चाहिए ?

(९) इस संबंध में अन्य विचार करने योग्य विषयों पर भी विचार।

"हम लोगों को दुःख है कि इस अवसर पर पंडित श्यामबिहारी मिश्र कारण विशेष से उपस्थित न हो सके, परंतु उन्होंने अपनी जो लिखित सम्मति भेजी थी, उससे उनकी अनुपस्थिति के अभाव की बहुत कुछ पूर्ति हो गई। पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने भी विचाराधीन विषयों पर अपनी सम्मति लिखकर भेजी थी जिससे अपने सिद्धांतों के स्थिर करने में हम लोगों को बहुत सहायता मिली। हम लोग इन दोनों महाशयों के प्रति अपनी कृतज्ञता मानते हैं।

"पूर्वापर का विचार कर हम लोगों ने जो बातें निश्चित की हैं, वे इस प्रकार हैं—

१—हम लोगों की सम्मति में संयुक्त प्रदेश में हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज का काम इस क्रम से होना चाहिए—

(क) मेरठ कमिश्नरी और अलीगढ ज़िला।

(ख) आगरा कमिश्नरी (अलीगढ ज़िला छोड़कर), इटावा ज़िला, फरुखाबाद ज़िला, तथा भरतपुर और धौलपुर राज्य।

(ग) रुहेलखंड और कमाऊँ कमिश्नरियाँ तथा रामपुर और टेहरी राज्य।

(घ) इलाहाबाद कमिश्नरी (इटावा और फर्रुखाबाद ज़िले छोड़कर)।

(ङ) बनारस कमिश्नरी तथा बनारस राज्य और रियासतें।

(च) गोरखपुर कमिश्नरी तथा नेपाल सीमा के आसपास के स्थान।

(छ) लखनऊ कमिश्नरी।

(ज) फैजाबाद कमिश्नरी।

"यह आवश्यक नहीं है कि जिस क्रम से ये विभाग किए गए हैं, उसी क्रम से यह काम आरम्भ किया जाय। कहीं से भी यह काम आरंभ हो सकता है। केवल आवश्यकता इस बात की है कि जहाँ कहीं से यह काम आरंभ हो, वहाँ के गाँव गाँव तक की पूरी पूरी खोज कर ली जाय, तब दूसरे विभाग में काम आरम्भ किया जाय। ऐसा न हो कि एक विभाग का काम अधूरा छोड़कर दूसरे विभाग में कार्य आरम्भ कर दिया जाय। संयुक्त प्रदेश में ही हाबपुर (बाराबंकी), असनी (रायबरेली), वृंदावन-गोकुल (मथुरा) ऐसे स्थान हैं जहाँ से हिंदी साहित्य के अनगिनत ग्रंथों का पता लग सकता है। ऐसे स्थानों में बड़ी सावधानी, बुद्धिमानी तथा नीतिकुशलता से काम करना होगा। जहाँ जहाँ खोज का काम हो चुका है, वहाँ वहाँ पुनः होना चाहिए, और आगे जैसा हम लोग नोटिसों के प्रस्तुत करने के विषय में अपनी सम्मति लिखेंगे, उसके अनुसार सब पुस्तकों की जाँच होनी चाहिए। अब तक जो नोटिसें हुई हैं वे अधूरी हैं, उन्हें पूरे विस्तार के साथ लिखना चाहिए।

"२—अन्य प्रांतों में भी खोज का काम होना बड़ा आवश्यक है। हिंदी की पुस्तकें प्रायः कागज पर ही लिखी होती हैं जिनके बहुत दिनों तक बने रहने की संभावना नहीं है। कागज शीघ्र ही गल या सड़ जाता है और इससे अनेक ग्रंथ नष्ट हो जाते हैं। ऐसा भी देखने तथा सुनने में आया है कि जिन महानुभावों ने पुस्तकों का संग्रह किया था, उनके उत्तराधिकारियों की उपेक्षा के कारण बहुत से ग्रंथ नष्ट हो गए हैं तथा निरंतर होते जाते हैं। ऐसी अवस्था में यह बहुत आवश्यक है कि भिन्न भिन्न प्रांतों में हिंदी पुस्तकों के मिलने की संभावना हो, वहाँ वहाँ खोज का काम जितना शीघ्र संभव हो सके, आरंभ कर दिया जाय। सभा को इस काम के लिये १०००) रु० की वार्षिक सहायता संयुक्त प्रदेश की गवर्मेंट से मिलती है। यह सहायता संयुक्त प्रदेश के काम के लिये ही पूरी नहीं है, तब इससे अन्य प्रांतों में काम करना असंभव है, जब तक संयुक्त प्रदेश में खोज का काम समाप्त न हो जाय। संयुक्त प्रदेश में हम लोगों के अनुमान से २०-२५ वर्ष का समय लगेगा। इतने दिनों में अन्य प्रांतों में तथा संयुक्त प्रदेश में भी अनेक ग्रंथ नष्ट हो जायँगे। इसलिये हम लोगों के विचार में यह आवश्यक जान पड़ता है कि संयुक्त प्रदेश में काम के दो प्रधान विभाग कर दिए जायँ अर्थात् दो महाशयों के निरीक्षण में काम बाँट दिया जाय—एक के अधीन तो ऊपर दिए हुए विभाग के (क) (ग) (छ) और (ज) अंश हों तथा दूसरे के अधीन शेष (ख) (घ) (ङ) और (च) अंश हों। इस प्रकार कार्य तभी हो सकता है जब संयुक्त प्रदेश की सरकार की वार्षिक सहायता १०००) के स्थान पर २०००) मिलने लगे। इसके लिये गवर्मेंट से प्रार्थना करनी चाहिए।

"अन्य प्रांतों में जहाँ खोज का काम होना चाहिए, वे मध्य भारत, मध्य प्रदेश, राजपूताना, बिहार तथा सतलज के इस पार के पंजाब के जिले तथा वहाँ की पहाड़ी रियासतें हैं। इन सब प्रदेशों में अनेक हस्तलिखित ग्रंथ मिलेंगे, परन्तु हम लोगों का तो यह अनुमान है कि अधिक महत्व के ग्रंथों के अन्य प्रांतों में मिलने की ही अधिक संभावना है। हम लोगों की सम्मति में यह उचित जान पड़ता है कि इन सब प्रदेशों की गवर्मेंटों का ध्यान इस आवश्यक तथा उपयोगी काम की ओर दिलाया

जाय और उनसे प्रार्थना की जाय कि या तो वे सभा को आर्थिक सहायता करें जिसमें वह उन प्रांतों में भी इस काम को कर सके, अथवा वे इस काम को स्वयं करावें और जहाँ तक आवश्यक हो, सभा उन्हें उस प्रांत के काम में सहायता दे। सारांश इतना ही है कि सब प्रांतों में एक साथ काम प्रारंभ हो जाय जिससे अल्प से अल्प समय में यह पूरा हो जाय। यह आवश्यक नहीं है कि सभा ही सब प्रांतों के काम को अपने हाथ में ले, यद्यपि हम लोगों की सम्मति में ऐसा होने में अनेक लाभ हैं। एक समिति की तत्वावधानता में अनेक प्रांतों में काम होने से कार्य की परस्पर समानता, सहयोगिता, सहायता आदि लाभों के होने की बहुत संभावना है जो अन्यथा नहीं प्राप्त हो सकते। पर यदि कोई अथवा अन्य सब गवर्मेंट चाहें तो अपना अपना स्वतंत्र प्रबंध कर सकती हैं। इस अवस्था में सभा तथा इस संबंध में उसकी स्थायी समिति जिसके विषय में हम आगे लिखेंगे, उन उन प्रांतों के कार्य-निरीक्षकों की पूरी पूरी सहायता करें।

"३—हम लोगों के विचार में खोज के इस काम के लिये निरीक्षकों का वैतनिक होना आवश्यक है, परंतु इस काम के लिये कम से कम ढाई तीन हजार रुपए वार्षिक की आवश्यकता होगी। अतएव आवश्यक होने पर भी यह विचार व्यवहार-साध्य नहीं है। इस अवस्था में प्रति निरीक्षक का कम से कम ६ वर्ष के लिये निर्दिष्ट होना आवश्यक है। इससे कम के लिये नियत करना अनुचित ही नहीं वरन् हानिकारक भी हो सकता है। पर यह ध्यान रखना चाहिए कि कोई महाशय निरंतर इस अवैतनिक कार्य को न कर सकेंगे। अतएव हम लोगों के विचार में निरीक्षकों को एक ऐसे उपयुक्त व्यक्ति को इस काम में अपने साथ लगा लेना चाहिए जिसे इस ओर रुचि तथा श्रद्धा हो और जो कुछ दिनों तक काम सीखने के अनंतर स्वयं निरीक्षक होने के योग्य हो जाय।

"निरीक्षक के कर्तव्य और अधिकार ये होने चाहिएँ—

(१) कार्य की तत्वावधानता।

(२) कार्य को नियत सिद्धांतों तथा प्रणाली के अनुसार चलाना।

(३) एजेंट का नियत करना, उसे छुट्टी देना, निकालना, उसकी तनख्वाह बढ़ाना आदि; पर निकालने पर एजेंट सभा से पुनः विचार की प्रार्थना कर सकेगा तथा सभा के निश्चय को प्रधानता दी जायगी।

(४) बजेट में स्वीकृत धन के अनुसार व्यय का स्वीकार करना।

(५) एजेंट का भत्ता आदि नियत करना।

"४—हम लोगों के विचार में निरीक्षक या निरीक्षकों की सहायता करने, उनको परामर्श देने अथवा उनके पूछने पर किसी विषय में अनुमति देने के लिये एक स्थायी समिति के सघटन की बहुत बड़ी आवश्यकता है। यदि अनेक प्रांतों में खोज का काम आरंभ हो तो इस समिति की और भी अधिक आवश्यकता होगी। इस समिति की तत्वावधनता में खोज का समस्त काम होना चाहिए। निरीक्षक स्वतंत्र रूप से अपने अधिकारों और कर्तव्यों का जिनके विषय में हम ऊपर लिख चुके हैं, उपयोग करें। उनमें यह समिति किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करे। पर जहाँ सिद्धान्तों का बात हो, वहाँ यह समिति निश्चय करे तथा भिन्न भिन्न निरीक्षकों में सहयोगिता और उनके कार्यों

की समानता के साधन प्रस्तुत करके उनको उपयोग में लावे। निरीक्षकों को अधिकार हो कि इस समिति के सदस्यों से पत्र व्यवहार कर सहायता और परामर्श लें अथवा संयोजक द्वारा किसी विषय को समिति के सम्मुख उपस्थित करें। जहाँ तक संभव हो पत्र-व्यवहार द्वारा इस समिति का कार्य हो, पर आवश्यकता पड़ने पर इसके अधिवेशन भी हों।

"हम लोगों की सम्मति में निम्नलिखित महाशय इस समिति के सदस्य हों—

(१) डाक्टर सर जार्ज ए. ग्रियर्सन, कैंबरले, सरे, इंग्लैंड।

(२) रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर।

(३) श्रीयुत् काशीप्रसाद जायसवाल एम ए.।

(४) पंडित श्यामबिहारी मिश्र एम ए., गोंडा।

(५) पंडित चंद्रधर शर्मा गुलेरी बी ए., अजमेर।

(६) मुंशी देवीप्रसाद, जोधपुर।

(७) बाबू जगन्नाथदास बी ए., अयोध्या।

(८) पंडित शुकदेवबिहारी मिश्र बी ए., छत्रपुर।

(९) बाबू श्यामसुंदरदास बी ए., लखनऊ।

इस समिति के संयोजक बाबू श्यामसुंदरदास हों और यह समिति प्रति पाँच वर्षों के लिये नियत की जाया करे।

५—हम ऊपर लिख चुके हैं कि संयुक्त प्रदेश के लिये दो निरीक्षकों की आवश्यकता है। इस अवस्था में दो एजेंटों का होना भी आवश्यक है। परन्तु यह तभी हो सकता है जब ऐसा करने के लिये आवश्यक धन प्राप्त हो। जब तक यह न हो, एक ही निरीक्षक तथा एक ही एजेंट से काम लिया जाय। एजेंट का वेतन कम से कम ४५)–३) ६०) मासिक होना चाहिए। एजेंट इस योग्यता का हो कि वह हिंदी साहित्य का अच्छा ज्ञान रखता हो तथा प्राचीन खोज के काम में उसका मन लगता हो। यदि वह अँगरेजी जानता हो तो उत्तम है, पर यह आवश्यक नहीं है। एजेंट का भत्ता उसके खर्च को समझकर नियत करना चाहिए जिसमें उसे इस काम में अपने पास से कुछ न व्यय करना पड़े।

"यह आवश्यक है कि एजेंट कम से कम नौ महीने घूम घूमकर अपना काम करे और तीन महीने निरीक्षक के पास रहकर इस कार्य का विवरण आदि लिखने में उसकी सहायता करे।

६—सर जार्ज ग्रियर्सन ने अपने २२ सितंबर सन् १९१४ के पत्र में जो निर्देश किए हैं* उनके

---

* I am unable to agree with those who consider that the Reports in their present form are valueless On the contrary, I think that they have very considerable value as works of reference, and I have often used them myself and derived assistance from them

I consider, however, that they are capable of improvement as to their contents and would, in regard to this point, suggest that the late Dr Rajendra Lal Mitra's *Notices of Sanskrit Mss* published by the Government of Bengal, could

अनुसार प्रत्येक पुस्तक की नोटिस प्रस्तुत होनी चाहिए। केवल ग्रंथों और ग्रंथकर्ताओं की नामावली न हो, पुस्तक के विषय को विस्तार के साथ लिखना चाहिए, तथा ग्रंथकर्ता के वंश तथा अपने अभिभावक के वर्णन को पूरा पूरा उद्धृत करना चाहिए। साथ ही सन् संवत् जहाँ जहाँ हों उन्हें लिख देना चाहिए।

"रिपोर्ट प्रति तीसरे वर्ष लिखी जानी चाहिए जैसा कि अब होता है। यह बहुत महत्व की होनी चाहिए। जिन जिन साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक बातों का पता लगे, उनका रिपोर्ट में पूर्ण विवेचन के साथ उल्लेख होना चाहिए और यह स्पष्ट दिखाना चाहिए कि किन पुराने विचारों या सिद्धांतों को किन नई बातों से (जिन का खोज से पता लगा है) समर्थन अथवा खंडन होता है तथा कौन सी बातें संदिग्ध जान पड़ती हैं। सारांश यह कि प्रति तीसरे वर्ष की रिपोर्ट को एक दूसरे से संबद्ध होना चाहिए तथा खोज से जो प्रकाश साहित्यिक, ऐतिहासिक अथवा सामाजिक व्यवस्था या घटनाओं पर पड़ता हो, उसका पूरा पूरा तथा स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। डाक्टर राजेंद्रलाल मित्र, डाक्टर भांडारकर, डाक्टर पीटर्सन तथा पंडित हरप्रसाद शास्त्री की रिपोर्ट, विशेष कर अंतिम महाशय की बौद्ध हस्तलिखित पुस्तकों पर रिपोर्ट, आदर्श-स्वरूप सामने रखकर तब रिपोर्ट लिखी जानी चाहिए।

"७—इस विषय में हम विस्तारपूर्वक ऊपर लिख चुके हैं। हम लोगों की सम्मति है कि—

(१) संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट से प्रार्थना की जाय कि वह प्रति वर्ष २०००) रु० से सभा की

---

well be taken as a model. As it is, the Hindi Notices follow the form of thio very closely, except in one most important particular. A description of a book is of little value to students unless (besides the information given in the report) pretty full information is given as to its contents. On this point the Hindi Notices altogether fail. Merely a few words are given under each head affording a superficial and general view of the subject. What is wanted is an ordered summary of the contents of each Ms. Of course this would not be necessary in the case of well-known works which have been frequently printed, but most of the works described in this report exist only in Mss and such descriptions as "the sports of Radha and Krishna" (pp. 130, 131), "Laudation of Bhakti" (p. 155) or "the incarnations of Isvara, and laudation of his name" (p. 155) are manifestly insufficient These examples are typical of the whole report. On pp. 130, 131, three different works by the same author are described in exactly the same words (four in each case) but it stands to reason that their contents must have been different. As I have not seen them, I cannot tell what the account of each should contain, but it might be something of this kind vv. (or pp.) a–b such, vv. (or pp.) c–d such and such, vv (or pp.) e–f such and such, and so on.

सहायता करे जिसमें संयुक्त प्रांत का काम २४ वर्षों की अपेक्षा समवतः १२ वर्षों में समाप्त हो जाय।

(२) अन्य प्रांतों की गवर्नमेंटों से प्रार्थना की जाय कि या तो वे सभा की आर्थिक सहायता करें जिसमें यह उन प्रांतों में हिंदी खोज का काम कर सके अथवा वे गवर्नमेंटें अपने ही तत्वावधान में यह काम करावें और यह सभा यथाशक्ति उन गवर्नमेंटों की सहायता करे।

(३) राजपूताने में प्राचीन पुस्तकों का भांडार बहुत बड़ा है, अतएव अजमेर के माननीय एजेंट महोदय तथा प्रांतीय गवर्नमेंट द्वारा सब राज्यों से प्रार्थना की जाय कि वे अपने अपने राज्यों में हिंदी पुस्तकों की खोज स्वयं करावें अथवा सभा की

To make my meaning clear I may give an imaginary account of the contents of an imaginary work on Radha and Krishna, vv (or pp) 1–10 Invocation to Ganesa, praise of Vishnu, account of the origin of the Krishna incarnation, vv (or pp.) 11–15 author's account of himself and of his patron (giving any dates and names available), vv (or pp.) 16–21 Krishna wandering in the forest, vv (or pp) 22–50 the meeting with Radha, vv (or pp, 51–100) description of Radha's beauty, vv (or pp) 101–150 Krishna leaves Radha, her despair, vv (or pp.) 151–200 Arrival of Udhava with a message from Krishna, and so on

In a work dealing whith the "Laudation of *Bhakti*" it ought to be possible to give an account of the general build of the work, and of the lines along which the laudation proceeds, and in an account of Isvara's incarnations and laudation of his name, we might at least be told what incarnations are described and what space out of the whole is devoted to the laudation. Again many books are merely described as *Nakka-sikkas,* or catalogues of female charms. There are hundreds of these *nakka sikkas,* some good and some bad, and all different Merely to name the work as a *nakka sikka* is not sufficient. We should be given some account of the principles on which the cataloguing is done Even an anthology or a collection of sonnets by one author, or the like, is based on some system and a list could be given of the various groups of poems. In the case of an anthology a list of the names of the authors whose poems are quoted, is all important. If we know the date of an anthology and that a certain author is quoted in it, we have a *terminus ad quem* which may be most useful in fixing his date

For Narrative work, especially those which are historical, or semi historical, such as the interesting Ms. mentioned as No. 60 on p. 23 the value of an abstract of the contents is self-evident.

सहायता करें जिसमें सभा यह काम करा सके। यह काम या तो प्रति राज्य में अलग अलग हो सकता है अथवा यदि सब नृपतिगण थोडी थोडी सहायत करें तो यथाक्रम सब राज्यों में खोज हो सकती है। यदि वहाँ का काम सभा को सौंपा जाय तो उसे राजपूताने को दो भागों में विभक्त कर दो निरीक्षकों के अधीन खोज का काम करना चाहिए जिसमें काम जल्दी हो सके। जहाँ तक संभव हो, प्रत्येक राज्य की एक रिपोर्ट प्रकाशित की जाय। राजपूताने में जो स्थान ब्रिटिश गवर्नमेंट के अधीन हैं, उनमें खोज का काम करने के लिये ब्रिटिश एजेंसी से सहायता के लिये प्रार्थना की जाय।

यदि आवश्यक हो तो जिस समिति के संगठन की हम लोगों ने सम्मति दी है वह अन्य प्रांतों के कार्यक्रम को यथासमय निर्धारित करे।

"८—यह कार्य तीन मुख्य भागों में विभक्ति हो सकता है—(१) संग्रह, (२) सरक्षण और (३) प्रकाशन।

संग्रह—संग्रह का करना परम आवश्यक है क्योंकि इससे पुस्तकों की यथाविधि रक्षा हो सकेंगी और वे नष्ट होने से बच जायँगी तथा विद्वानों को अपने कार्य के लिये एक ही स्थान पर प्राप्त हो सकेंगी। सग्रह का काम प्रतियाँ खरीद कर अथवा नकल करवाकर हो सकता है। सभा की ओर से निरीक्षकों को इस बात का निर्देश रहे कि जो प्रतियाँ मूल्य पर मिल सकें, उनके खरीदने का वे ध्यान रक्खें और जो इस प्रकार न मिलें उनकी नकल करवाने का प्रबंध करें। पुस्तकों की नकल अच्छे देशी कागज पर हो तथा पक्की देशी स्याही से वे लिखी जायँ। निरीक्षक प्रति वर्ष सभा को यह सूचना दें कि कौन कौन सी पुस्तकें मोल ली गई हैं और किन किन की नकल हो गई या हो रही है तथा कौन कौन ऐसी हैं जो मोल न ली जा सकीं अथवा जिनकी नकल न हो सकी, परंतु जिन्हें प्राप्त करना आवश्यक और उचित है। उन्हें प्राप्त करने का सभा उद्योग करे।

संरक्षण—हम लोग समझते हैं कि सभा इस बात के उद्योग में है कि उसके पुस्तकालय के लिये एक अच्छा भवन बनवाया जाय। हम लोग इस उद्योग का स्तुत्य ही नहीं वरन् अत्यंत आवश्यक भी समझते हैं। हम लोगों की सम्मति है कि जब *यह भवन बनने लगे तो इस बात का ध्यान रक्खा* जाय कि उसके चार मुख्य विभाग हों, एक में हिंदी की छपी पुस्तकें रहें, दूसरे में हस्तलिखित पुस्तकें रहें, तीसरे में अन्य भाषाओं की ऐसी पुस्तकें रहें जो प्रायः लेखादि लिखने, पुस्तक संपादन करने और शोध का काम करने के लिये आवश्यक हैं, चौथे विभाग में ऐसा प्रबंध हो कि विद्वान् लोग सुभीते से बैठकर साहित्यिक कार्य कर सकें। चारों भाग एक दूसरे से स्वतंत्र हों। दूसरे विभाग में लकडी उपयोग में न लाई जाय और अलमारियाँ ऐसी बनवाई जायँ जिनमें रक्खी हुई चीजें आग लगने पर जल न सकें तथा दीमक आदि कीड़े जिनमें प्रवेश कर हानि न पहुँचा सकें, तथा जिनसे चीजें निकालने में अडचन हो, जिसमें चोरी आदि का भय न रहे। साथ ही यह भी आवश्यक है कि इन पुस्तकों की देख भाल होती रहे और बिना सोचे समझे ये किसी को मँगनी न दी जायँ और न बाहर भेजी जायँ।

प्रकाशन—यह काम काशी नागरीप्रचारिणी सभा कई वर्षों से कर रही है और हम लोगों को यह

जानकर बड़ा संतोष और आनंद हुआ है कि सभा ने अब तक अनेक प्राचीन पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

"यद्यपि यह काम देखने में कम नहीं है, पर फिर भी हिंदी साहित्य भांडार का ध्यान करने पर बहुत थोड़ा जान पड़ता है। हम लोगों की सम्मति है कि सभा प्रत्येक प्राचीन पुस्तक का उत्तम संस्करण प्रकाशित करे। प्राचीन पुस्तक से हमारा तात्पर्य सन् १८५० के पहले की बनी पुस्तकों से है।

इस काम के लिये आवश्यक है कि पुस्तकें अत्यंत शुद्धतापूर्वक छापी जायँ और योग्य विद्वानों के हाथ में ही यह काम रहे। अशुद्धतापूर्वक किसी पुस्तक के छापने से यह अच्छा है कि वह छापी ही न जाय।

हम लोगों के विचार में सभा को यह उद्योग करना चाहिए जिसमें उसे किसी प्रकार हिंदीप्रेमी से एक लाख के प्रामिसरी नोटों की निधि प्राप्त हो जाय। इसकी आय ३५००) रु० वार्षिक होगी। इसमें से ६००) रु० वार्षिक तो एक उपयुक्त साहित्य प्रेमी को यह काम करने के लिये वेतन दिया जाय और शेष २९००) पुस्तकों के प्रकाशन में व्यय किया जाय। तथा इनकी बिक्री से जो आय हो उसमें से आवश्यक फुटकर खर्च के लिये रुपया निकालकर बाकी इन्हीं पुस्तकों के प्रकाशन में लगाया जाय। यदि यह हो जाय तो बड़ा भारी कार्य हो और हिंदी का प्राचीन साहित्य भांडार एक प्रकार से अजर अमर हो जाय। हम लोगों का विश्वास है कि सभा यदि उद्योग करेगी तो इसमें सफल मनोरथ हो सकेगी।

हम लोगों को यह जानकर परम संतोष हुआ कि संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट ने कई वर्षों तक सभा को प्राचीन ग्रंथों के प्रकाशित करने के लिये सहायता दी थी। हम लोगों की समझ में नहीं आता कि ऐसे उपयोगी काम के लिये गवर्नमेंट ने सहायता देना क्यों बंद कर दिया। अस्तु, हम लोगों के विचार में, सभा प्रत्येक प्रांतिक गवर्नमेंट से यह प्रार्थना करे कि वह इस पुस्तकमाला की कुछ कुछ प्रतियाँ अपने पुस्तकालयों, स्कूलों और कालेजों के लिए निरंतर खरीदा करे तथा ऐसी ही प्रार्थना भारतीय नृपतिगण से भी की जाय। इससे आशा है कि सभा के पास इस काम के लिये आवश्यक द्रव्य एकत्र हो जायगा। अंत में इस संबंध में हम लोगों को इतना ही कहना है कि पुस्तकें अत्यंत शुद्धतापूर्वक अच्छे कागज पर छापी जायँ तथा छपाई का काम उत्तमोत्तम कराया जाय। पुस्तकें खंड खंड करके न प्रकाशित की जायँ, वरन् एक एक पुस्तक संपूर्ण छापकर उत्तम और पुष्ट जिल्द बँधवाकर प्रकाशित की जाय।

"६—हम लोगों की सम्मति में यह आवश्यक जान पड़ता है कि हिंदी पुस्तकों की खोज का जितना काम अब तक हो सका है, उसका सारांश डाक्टर ऑफ्रेक्ट के "कैटोलागस कैटोलोगरम" के ढंग पर तैयार करवाकर प्रकाशित करवा दिया जाय और कुछ नियत वर्षों के अनंतर इसके अगले भाग इसी प्रकार तैयार कराकर प्रकाशित होते रहें। यदि प्रति नवें वर्ष यह काम हो तो उत्तम होगा। साथ ही यह भी उचित जान पड़ता है कि प्रति वर्ष सभा की पत्रिका तथा वार्षिक रिपोर्ट में खोज के काम का किंचित् विस्तारपूर्वक वर्णन रहा करे जिसमें प्रति वर्ष में क्या क्या काम हुआ, इसकी सूचना सब विद्वानों को मिलती रहे।"

सभा ने इन सब सिद्धांतों को स्वीकृत किया है और अब उन्हीं के अनुसार काम हो रहा है।

इस समय तीन एजेंट संयुक्त प्रदेश में और एक पंजाब में काम कर रहे हैं।

हिंदी साहित्य का इतिहास तीन मुख्य कालों में विभक्त किया जा सकता है—प्रारम्भ काल, मध्य काल और उत्तर काल। प्रारंभ काल का आरंभ विक्रम संवत् ८०० के लगभग होता है, जब इस देश पर मुसलमानों के आक्रमण आरंभ हो गए थे, पर वे स्थायी रूप से यहाँ बसे नहीं थे। यह युग घोर संघर्षण और संग्राम का था और इसमें वीर-गाथाओं ही की प्रधानता रही। शहाबुद्दीन मुहम्मद गोरी के समय में मुसलमानों के पैर इस देश में जमने लगे और उनका शासन नियमित रूप से आरंभ हो गया। चौदहवीं शताब्दी के आरंभ में मुसलमानी शासन ने दृढ़ता प्राप्त की। इसी के साथ हिंदी साहित्य के इतिहास का मध्य काल आरंभ होता है जो संवत् १४०० से १७०० तक रहा। यह तीन सौ वर्षों का समय मुसलमानों के पूर्ण अभ्युदय का समय था। इन तीन शताब्दियों में वे अपने वैभव और शक्ति के शिखर पर चढ़ गए। परंतु मुसलमानी राज्य की नींव धर्मांधता पर स्थित थी। उसका मुख्य उद्देश इस्लाम धर्म का प्रचार और प्रसार करना था। इस कारण इस राज्य-काल में अन्य धर्मवालों पर घोर अत्याचार और अन्याय होते थे। धर्मांधता के कारण मुसलमान समझते थे कि हमारी एकता, शक्ति और संपत्ति का स्थायित्व हमारे धर्म पर ही निर्भर है; अतएव जितना ही हम उसका अनुकरण और प्रसार करेंगे, उतनी ही हमारी उन्नति होगी। उनकी समझ में यह नहीं आता था कि घात से ही प्रतिघात भी होना है। छोटे से छोटे जीव भी दबाने से, सीमा से अधिक दबाने से, अपनी रक्षा के लिये और अपने पीडक पर अपना क्रोध प्रदर्शित करने तथा उन्हें दंड देने के लिये सिर उठाते हैं। हिंदुओं के लिये यह समय बडी विपत्ति का था। वे निरालंब, निराधार और निराश्रय हो रहे थे, उन्हें चारों ओर निराशा और अंधकार देख पडता था, कहीं से भी आशा और अवलंब की झलक नहीं देख पडती थी। ऐसे समय में भक्ति मार्ग के प्रतिपादक महात्माओं ने हिंदू भारतवर्ष की रक्षा की, उसे सहारा दिया और उसमें आशा का संचार कर उसे बचा लिया। इनमें से कुछ महात्माओं ने हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता स्थापित करने, उन्हें एक सूत्र में बाँधकर उनमें भ्रातृत्व स्थापित करने का उद्योग किया, पर इसमें उन्हें सफलता नहीं प्राप्त हुई। विजेता होने के कारण मुसलमान अहंमन्यता से मदांध हो रहे थे। हिंदुओं के लिये किसी ऐसे ईश्वर की आवश्यकता थी जो दुष्टों का दमन करनेवाला, सुजनों की रक्षा करनेवाला, लोक मर्यादा का स्थापित करनेवाला तथा मनुष्यों के लिये अनुकरणीय आदर्श चरित्रों का भांडार हो और जिसके चरित्र उसके गुणों के प्रत्यक्ष प्रदर्शक हों। पीछे के महात्माओं ने इस भाव की पूर्त्ति की और उनके धार्मिक विचारों तथा आदेशों ने हिंदुओं के हृदयों पर स्थायी स्थान प्राप्त कर लिया जो अब तक ज्यों का त्यों बना हुआ है। अतएव मध्य काल के हिंदी साहित्य का इतिहास विशेष कर भक्ति मार्ग के प्रतिपादक महात्माओं की कृतियों का इतिहास है। एकेश्वरवादी, रामभक्त और कृष्णभक्त इन तीन संप्रदायों ने भारतवर्ष की रक्षा ही नहीं की वरन् उत्तर भारत के साधारण जीवन के प्रतिबिंब स्वरूप उसके साहित्य का अभ्युदय भी किया। इस काल में अलंकारी

कवियों का भी अभ्युदय हुआ। कल्पित कथाओं से हिंदी साहित्य शरीर की श्रीवृद्धि तथा पुष्टि करनेवाले मुसलमान कवि भी इसी समय में हुए। परन्तु यह विदेशीय पौधा भारतवर्ष की प्रतिकूल भाव वायु में परिपोषित और पल्लवित न हो सका। यह इसी काल में लगा और इसी में मुरझा भी गया। जहाँ इस काल में मुसलमानी राज्य का अभ्युदय हुआ वहीं साथ ही साथ उसकी जड़ में घुन भी लग गया और अंत में उत्तर काल में उसका समूल नाश भी हो गया, वहाँ हिंदी साहित्य भी उन्नति के शिखर पर पहुँचकर अलंकार के माया जाल में ऐसा फँसा कि वह अपना सच्चा स्वरूप ही भूलकर अपनी आत्मा का तिरस्कार कर बाहरी ठाट बाट और शारीरिक सजावट बनावट में औरंगज़ेब के समय के मुसलमानी राज्य की भाँति लग गया। सच्ची कविता अपने उच्च आसन से नीचे गिर पड़ी और अंत में उत्तर काल में एक प्रकार से विलीन हो गई। उत्तर काल में ब्रिटिश शासन की जड़ जमी, मुसलमानी अत्याचारों से साँस लेने का समय मिला, पूर्व और पश्चिम का सम्मेलन हुआ, आध्यात्मिकता और भौतिकता में घोर संग्राम आरंभ हुआ। इन सब बातों का यह परिणाम हुआ कि भाव, विचारादि में परिवर्तन होने लगा। कविता-युग की समाप्ति होकर गद्य युग का आरंभ हुआ। इस काल में साहित्य-सरिता नए वेग और नए जल से पूरित होकर बहने लगी।

अतएव हिंदी साहित्य के इतिहास के पूर्व काल की मुख्यता वीर काव्यों में है, परंतु स्थिति की प्रतिकूलता के कारण इनमें से अधिकांश काव्यों का अब पता नहीं चलता। यदि राजपूताने में प्राचीन पुस्तकों की खोज की जाय तो संभावना है कि अनेक ग्रंथ-रत्नों का पता लग जाय। मध्यकाल का हिंदी साहित्य ६ मुख्य मार्गों में विभक्त होता है अर्थात् (१) एकेश्वरवादी कवि (२) रामभक्त और (३) कृष्णभक्त कवि (४) अलंकारी कवि (५) कल्पित कथाओं के कवि और (६) फुटकर कवि। उत्तर या वर्तमान काल में मध्यकाल का अंतिम पद विकृत कहा जाता है, पर इस काल की विशेषता गद्य ग्रंथों की अधिकता में है। हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का संबंध विशेषकर पूर्व काल और मध्य काल से है, पर इस खोज का अधिकांश काम संयुक्त प्रदेश में होने के कारण मध्य काल की सामग्री विशेष कर प्रस्तुत हुई है। इस संक्षिप्त विवरण में सब मिला कर १४५० कवियों और उनके आश्रयदाताओं का तथा २७५६ ग्रंथों का उल्लेख है। इस संख्या से ही इस कार्य के विस्तार और महत्त्व का अनुमान किया जा सकता है। किस किस कवि के विषय में किन किन नई बातों का पता लगा है, इसका विवरण देने से इस प्रस्तावना का आकार बहुत बढ़ जायगा और इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है। परन्तु संक्षेप में हम दो चार बातों का उल्लेख कर देना चाहते हैं। किसी विषय में जहाँ किसी एक रिपोर्ट का दूसरी रिपोर्ट से विरोध होता था, वहाँ पर अनुसंधान कर यथा शक्ति निश्चित मत देने का उद्योग किया गया है—

(१) भूपति कृत दशम स्कंध भागवत् का निर्माण काल तीसरी रिपोर्ट में सं० १३४४ (ग–११५) माना गया है, परन्तु निम्नलिखित कारणों से १७४४ मानना ही ठीक है—

(अ) इस ग्रंथ की अठारहवीं शताब्दी से पूर्व की कोई प्रति नहीं पाई जाती।

(इ) इसकी भाषा बहुत परिमार्जित और आधुनिक व्रज भाषा के ही समान है।

(उ) इसमें "व्रजभाषा" और "गुसाइँ" शब्दों का प्रयोग हुआ है जो कि सोलहवीं शताब्दी से पूर्व व्यवहार में नहीं आते थे।

(ऋ) पंचांग बनाकर देखने से सं० १३४४ का बुद्धवार अशुद्ध और सं० १७४४ का चंद्रवार शुद्ध निकलता है।

(ए) उर्दू प्रतियाँ हिंदी प्रतियों की अपेक्षा पुरानी मिलती हैं जिनमें निर्माण काल सं० १७४४ दिया हुआ है। हिंदी और उर्दू प्रतियों में निर्माण काल इस प्रकार हैं:—

हिंदी प्रति में—संमत् तेरह सौ भये चारि अधिक चालीस।

मरगेसर सुध एकादसी बुधवार रजनीस ॥

उर्दू प्रति में—संवत् सत्रह सै भये चार अधिक चालीस।

मृगसिर की एकादसी सुद्धवार रजनीस ॥

(ओ) उर्दू से हिंदी लिपि में लिखने और लिपि-कर्त्ता के काशीनिवासी होने के कारण बहुत से शब्दों को बिगाड़कर अवधी रूप दे दिया गया है; अवाँधी, जवइ, वहोनी और चारी इत्यादि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। उक्त भागवत में आदि से अंत तक ऐसे प्रयोग भरे पड़े हैं। दीर्घ ऊकार का प्रयोग इस प्रति में कहीं नहीं किया गया; अतः भाषा प्राचीन सी मालूम होती है, परन्तु यथार्थ में परिष्कृत है। (छ-१३८) में वर्णित रामचरित्र रामायण भी उक्त भूपतिकृत ही बताया गया है। उसमें संवत् आदि कुछ नहीं है और न वह इन भूपति का बनाया हुआ ही प्रतीत होता है। उपर्युक्त कारणों से भूपति का कविता काल संवत् १७४४ के लगभग ही माना गया है।

(२) (ज-३६) के चंदहित और (ज-४३) के चंदलाल दो कवि माने गए हैं। परंतु दोनों कवियों की (१) अभिलाष पचीसी, (२) समय पचीसी, (३) भावना पचीसी ये तीनों पुस्तकें एक ही हैं। केवल कवि के नाम-भेद के कारण वे भूल से भिन्न भिन्न कवि माने गए हैं। दोनों का उपनाम चंद ही है, कविता काल भी एक ही है; अतः दोनों को भिन्न कवि न मानकर एक ही मान लिया गया है।

(३) (ज-१७२) में लालचंद्रिका लाल कवि कृत बतलाई गई है। लाल कवि संवत् १८३८ से पूर्व बनारस नरेश महाराज चेतसिंह के आश्रित थे; परंतु लाल चंद्रिका का निर्माण काल सं० १८७५ है। पंडित लल्लू जी लाल ने भी उससे पूर्व एक बार अपने प्रेस में ही इसे छपवाया था। संवत् १८७५ में लल्लूलाल का अवस्थित होना भी ठीक है; और लाल कवि का ८० वर्ष से अधिक अवस्था होने पर बिहारी सतसई जैसे शृंगारिक ग्रंथ पर टीका करना न्यायसंगत नहीं माना जा सकता और न विचार में ही आता है। अतः लाल चंद्रिका का लल्लूलाल कृत मानना ही उचित है।

(४) (ज-२६७) में प्रेम रत्न का रचयिता रतन कवि और निर्माण काल संवत् १८४४ माना है। परंतु यह प्रेमरत्न संवत् १६४४ में राजा शिवप्रसाद की दादी बीबी रतन कुँवर ने बनाया था। इस ग्रंथ का कुछ अंश राजा शिवप्रसाद कृत 'गुटका' में बीबी रत्न कुँवरि के जीवन चरित्र के साथ उद्धृत है। यह ग्रंथ अलग पुस्तकाकार भी छप चुका था। अतः इस ग्रंथ को रतन कवि कृत और नि० का० सं० १८४४ मानना नितांत भ्रममूलक है।

(५) (क–२८) और (घ–४२) में रसदीप काव्य के कवीन्द्र और राजा गुरुदत्तसिंह अलग अलग रचयिता माने गए हैं, परन्तु यथार्थ में कवीन्द्र ने उक्त ग्रंथ संवत् १७९९ में रचा था और अमेठी के राजा गुरुदत्तसिंह (उप० भूपति) को समर्पित किया था जो कि कवीन्द्र कवि के आश्रयदाता थे। वे रसदीप काव्य के रचयिता नहीं थे। कवीन्द्र कवि का उपनाम प्रतीत होता है।

(६) (क–११८) में आदित्य कथा बड़ी का रचयिता गौरी कवि माना गया है, परन्तु गौरी, माऊ कवि की माँ का नाम था। ग्रन्थकार ने स्वयं अपने ग्रंथ में लिखा है—

अगरवाल यह कियो बखाण।
गौरी जननी सिंहु वणगिरि थान॥
गर्ग हो गोत मलूकी पूत।
माउ कवि जन भगत सजूत॥

इससे विदित होता है कि इस ग्रंथ के रचयिता गर्गगोत्री अग्रवाल वैश्य माऊ कवि सिंधु वन गिरि निवासी थे, उनकी माँ का नाम गौरी और पिता का नाम मलूक था।

(७) (ख–१६०) में मोक्षदायक पंथ का रचयिता मानसिंह बताया गया है, परन्तु उसका रचयिता मानसिंह का शिष्य गुलाबसिंह था। कवि अपने ग्रंथ के अन्त में लिखता है—"इति श्रीमत मानसिंह चरण शिष्यन गुलाबसिंह हेत गौरी राय आतमजेन विरचते मोष पंथ प्रकासे विदह मुक्ति निरूपयो नाम पंचमो निवास"। अतः स्पष्ट है कि मोक्षदायक पंथ के रचयिता गुलाबसिंह थे। (घ–७८) में यही ग्रंथ 'मोक्ष पंथ प्रकाश' के नाम से गुलाबसिंह कृत वर्णित है।

(८) (ख–११०) में 'अलंकार चन्द्रिका' अनवरखाँ कृत लिखी गई है जो कि अशुद्ध है। यह ग्रंथ अनवरखाँ के आश्रित शुभकरण कवि ने अपने आश्रयदाता के नाम से लिखा था। (छ–३१) में ग्रंथकर्ता का नाम शुभकरण ठीक दिया गया है जैसा कि ग्रंथ में कवि ने स्वयं भी वर्णन किया है।

(९) (छ–१२९) और (छ–२६५) में वर्णित अनाथ तथा अनाथदास भिन्न माने गए हैं, पर उनका ग्रंथ 'विचार माला' एक ही है, अतः दोनों एक ही हैं। इस ग्रंथ का निर्माण काल संवत् १८०३ के स्थान में १७२६ चाहिए था। (ज–७) में कथित अनाथदास भी यही हैं। अतः तीनों को एक मान कर ही लिखा गया है।

(१०) (छ–२२०) में 'प्रेम रत्नाकर' रतनपाल भैया कृत बतलाया गया है परन्तु यथार्थ में यह ग्रंथ देवीदास कृत है जो कि रतनपाल भैया के आश्रित थे। राजनीति के कवित्त के रचयिता (ख–२३, ग–१ और ग–८२) में वर्णित देवीदास और ये देवीदास एक ही थे, अतः चारों को एक ही माना गया है।

इसी प्रकार अन्य भी कई कवियों के समय आदि में परिवर्त्तन किया गया है। इसी प्रकार जितनी ही खोज होती जायगी, उतना ही अधिक कवि और कविता काल आदि शुद्ध होते जायगे। संभव है इस संक्षिप्त विवरण में बहुत सी अशुद्धियाँ अब भी शेष हों, तथा इन संशोधनों में भी कुछ भूल हुई हो। गोस्वामी तुलसीदास जी के रचे ३४ ग्रंथ खोज में मिले हैं। ये संपूर्ण ग्रंथ गोस्वामी जी कृत कदापि नहीं हैं। बृहस्पति काण्ड और तुलसीदास जी की वाणी नामक ग्रंथ तो उस सूची से अलग कर दिए गए हैं परन्तु अभी कई ग्रंथ

ऐसे हैं जिन पर संदेह किया जा सकता है। गीता भाषा, राममुक्तावली, अंकावली, ज्ञान को प्रकरण, कृष्ण-चरित्र, उपदेश दोहा, सूरज पुराण और ध्रुव प्रश्नावली नामक ग्रंथ विशेष विचारणीय हैं। इनके अतिरिक्त चार ग्रथ और हैं जिनके नोटिस नहीं लिए गए हैं।

इस ग्रंथ में सर्वत्र विक्रमी संवत् का प्रयोग किया गया है।

यहाँ पर हम एक विशेष बात का उल्लेख करना चाहते हैं। यद्यपि इसका संबंध सन् १९०० से १९११ तक की खोज के काम से नहीं है जिसके आधार पर यह विवरण प्रस्तुत किया गया है, पर इस अनुसंधान के अत्यंत महत्वपूर्ण होने के कारण तथा इस खोज से अत्यंत प्रचलित बातों का कैसे संशोधन हो सकता है, इसे दिखाने के उद्देश से हम इस बात का उल्लेख यहाँ करते हैं। इस विषय पर निम्नलिखित विवरण लिखने का श्रेय खोज के एजेंट पंडित भागीरथप्रसाद दीक्षित को प्राप्त है—

"गत वर्ष जिस समय में फतहपुर जिले में भ्रमण कर रहा था, उस सयम असनी निवासी पं० कन्हैयालाल भट्ट महापात्र के यहाँ जो कि महा कवि नरहरि महापात्र के वंशज हैं, "वृत्तकौमुदी" नामक एक ग्रंथ खोज में मिला था।

यह ग्रंथ महाकवि मतिराम का रचा हुआ ह। इसका निर्माण काल सं० १७५८ वि० है जैसा कि इस दोहे से विदित होता है:—

संवत सत्रह सै वरस, अट्ठावन सुभ साल।
कार्तिक शुक्ल त्रयोदसी, करि विचार तेहि काल* ॥

यह वृत्त कौमुदी ग्रंथ राजवंशावतंस श्री स्वरूपसिंह देव के हितार्थ रचा गया है जैसा कि ग्रंथ में वर्णन किया गया है:—

वृत्त कौमुदी ग्रंथ की, सरसी सिंह स्वरूप।
रची सुकवि मतिराम सो, पढ़ौ सुनौ कविरूप ॥

कवि ने अपने वंशादि का परिचय भी निम्नलिखित पद्यों में दिया है।

तिरपाठी वनपुर वसै, वत्स गोत्र मुनि गेह।
विवुध चक्र मनि पुत्र तँह, गिरधर गिर धर देह ॥२१॥
भूमिदेव बलभद्र हुव, तिनहिं तनुज मुनि गान।
मंडित मंडित मडली, मंडन मही महान ॥२२॥
तिनके तनय उदारमति विश्वनाथ हुव नाम।
दुतिधर श्रुतिधर को अनुज, सकल गुनन को धाम२३
तासु पुत्र मतिराम कवि, निज मति के अनुसार।
सिंह स्वरूप सुजान को वरन्यो सुजस अपार ॥२४॥

इससे प्रतीत होता है कि मतिराम कवि वन पुर निवासी वत्स गोत्रीय पं० चक्रमणि त्रिपाठी के पुत्र-रत्न पं० गिरिधर के प्रपौत्र, पं० बलभद्र के पौत्र, पं० विश्वनाथ के पुत्र और पं० श्रुतिधर के भतीजे थे। महाकवि भूषण ने भी शिवराज भूषण में अपने वंशादि का परिचय इस प्रकार दिया है:—

दुज कन्नौज कुल कश्यपी रतनाकर सुत धीर।
वसत तिविक्रमपुर सदा तरनि तनूजा तीर ॥२६॥
वीर वीरवर से जहाँ उपजे कवि अरु भूप।
देव विहारीश्वर जहाँ, विश्वेश्वर तद्रूप ॥२७॥
कुल सुलंक चित कूटपति साहस सील समुद्र।
कवि भूषण पदवी दई हृदयराम सुत रुद्र* ॥२८॥

इससे विदित होता है कि महाकवि भूषण त्रिविक्रमपुर निवासी कश्यप गोत्रीय पं० रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे।

हिन्दी संसार के पठित समाज को यह भली

---

* वृत्त कौमुदी Search Report 1920-22.

* शिवराज भूषण छंद २६–२८।

भाँति विदित है कि चिन्तामणि, भूषण, मतिराम और नीलकंठ या जटाशंकर ये चारो सहोदर भाई माने जाते रहे हैं* परन्तु उपर्युक्त दोनों कवियों (भूषण और मतिराम) ने अपने अपने विषय में जो कथन किया है, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे दोनों कदापि सहोदर भाई न थे। भूषण कश्यप गोत्रीय और मतिराम वत्स गोत्री थे। भूषण के पिता का नाम रत्नाकर था और मतिराम पं० विश्वनाथ के पुत्र थे। अतः जब दोनों के गोत्र और पिता भिन्न भिन्न थे, तब ये सहोदर भाई कैसे हो सकते हैं? ये तो एक वंश के भी नहीं थे। सम्भव है, भूषण और मतिराम मामा फूफी के सम्बन्ध से भाई कहलाते हों। उपर्युक्त कथनों से तो यही प्रतीत होता है कि दोनों कवि एक ग्राम के निवासी भी नहीं थे, क्योंकि भूषण कवि अपने को तिविक्रमपुर निवासी और मतिराम वनपुर वासी लिखते हैं। मिश्रबन्धु महोदय ने नवरत्न में इनको तिकवाँपुर जिला कानपुर निवासी लिखा है, जो कि "तिविक्रमपुर" शब्द का ही अपभ्रंश रूप है। और सम्भव है, मतिराम ने भी 'तिक्रम पुर' का संक्षिप्त रूप "वनपुर" लिया हो; परन्तु इस विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मेरे विचार से "वनपुर" तिकवाँपुर से भिन्न अन्तर्वेद का दूसरा ग्राम है। विनोद में इसका वर्णन किया गया है†। रुद्र श्री त्रिपाठी यहीं हुए जो सं० १७४२ में वर्तमान थे। जब यह निश्चित हो गया कि भूषण और मतिराम सहोदर भाई नहीं थे, तब कुछ सज्जनों ने यह शंका उत्पन्न कर दी कि इस वृत्तकौमुदी ग्रंथ के रचयिता मतिराम और भूषण के भाई मतिराम भिन्न भिन्न व्यक्ति थे।

इस शंका का समाधान हुए बिना उपर्युक्त सिद्धान्त ही अपूर्ण रह जाता है। इस बात की जाँच करना भी उचित प्रतीत होता है। ललित ललाम और रसराज के रचयिता मतिराम और वृत्तकौमुदी के रचयिता मतिराम दोनों का समय एक ही है*। ललितललाम सं० १७४५ वि० के पूर्व बनाया गया था क्योंकि यह ग्रंथ बूँदी नरेश राव राजा भाऊसिंह† की प्रशंसा में बनाया था और उन्हीं को समर्पित किया गया था। राव राजा भाऊसिंह सं० १७१६ में गद्दी पर बैठे और सं० १७४५ में उनका देहान्त हुआ। अतः इसी बीच में किसी समय ललितललाम ग्रंथ रचा गया था। रसराज सं० १७९७ वि० में रचा हुआ बतलाया जाता है‡, और वृत्तकौमुदी का निर्माण काल सं० १७५८ वि० है जो कि ललितललाम के पीछे और रसराज के पूर्व रचा गया है।

इससे यह निश्चित है कि वृत्तकौमुदी का रचना काल मतिराम के कार्य काल के अन्तर्गत ही है।

ललितललाम और वृत्तकौमुदी की भाषा बिलकुल मिलती हुई है। दोनों ग्रंथों में वीर रस के जो छन्द हैं, वे एक सी ही ओजस्विनी भाषा में लिखे गए हैं और भूषण की कविता से बहुत मिलते हैं। शृङ्गार रस की शैली तथा माधुर्य्य आदि गुण भी

* शिवसिंह सरोज पृ. ४११।

† मिश्रबन्धु विनोद पृष्ठ ५११।

* कविता कौमुदी पृष्ठ १११। मिश्रबंधु विनोद पृष्ठ ४१३। हिन्दी नवरत्न पृष्ठ १२८।

† मिश्रबंधु विनोद पृष्ठ ४८६। राव राजस्थान वेंकटेश्वर प्रेस पृष्ठ ८१८। हिंदी नवरत्न पृष्ठ १०७।

‡ हिन्दी नवरत्न पृष्ठ ११७।

दोनों में एक से ही हैं। इससे प्रतीत होता है कि दोनों ग्रंथ एक ही कवि के रचे हुए हैं।

दोनों के कुछ कुछ उदाहरण दिए जाते हैं जिनसे भाषा, भाव और शैली की समानता का बहुत कुछ पता लग सकता है।

वृत्तकौमुदी से राजवंश वर्णन*—

अति अथाह गुन सिंधु सूर काशी नरेश हुव।
आतपत्र धरि धीर धरनि मंडन प्रसिद्ध भुव॥
विक्रम जिमि पृथुराज सबल पारथ पृथु पेक्खिय।
क्षात्र धर्म प्रतिपालि दान कृप कर्ण सुलेक्खिय॥
मधु साहि सुअन बुंदेल घर वीरसिंह अवतार लिय।
जस जुथ प्रबल मढ़िय जगत,
सुजपति विदिस्सि दिसि छह किय॥१॥
छत्रियपति छितिपाल उदित उद्दाम ओज अति।
प्रगट पुहुमि पुरहूत भयो विक्रम अपार गति॥
समर रुद्र मग भंजि धीर विजय व्रत लीन्हेउ।
राज राज सम वित्त वितरि जस करणहिं दीन्हेउ॥
हुव चन्द्र भान बुन्देल सो वीरसिंह पंचम सुअन।
बर खग्ग दसहु दिसि बंधिय तिय,
सुगज्जि दुसह दक्खिय दुवन॥२॥
बहु बीरनि कमनीय करिय निज दान अमित करि।
हद हिम्मत हिंदुवान ऐंठि रक्खिय भुजबल धरि॥
असि बसि गढ़ अगनि अखिल सज्जन सुख संचिय।
देवराज सम साज मौज फौजनि घर रंचिय॥
बुंदेल वीर कुलपती चन्द्रभान महिपाल सुव।
धनि धीर धरनि मंडन प्रबल
सुमित्र साहि नरनाह हुव॥३॥
जिमि कमंद करतीन बरन, गतत्रास गगन उठि।
लुटत हुव सब मुंड आन अनुयान मधु नठि॥

* वृत्तकौमुदी प्रथम प्रकरण।

द्रिय नृसिंह जय पातु जाहि संचित सु सिद्धि चय।
आंधु अवनि अचलय भयउ सुभ कर्म धर्ममय॥
नृप मित्र साहि नंदन प्रबल गहिरवार गंभीर भुव।
कुलदीप वीर बुंदेल घर सु अय सरूप अवतार हुव।
गज्जित गैयर मत्त सुरथ सज्जित जिमि पारथ।
वज्जत दुंदुभि घोर भूप तज्जत पुरुषारथ॥
गव्वर गैयर हरत हारि नहिं रत्थ रससक्किय।
जव्वर वीर बुँदेल हाँक सुनि सरघ रत्थक्किय॥
हुव सिंह सरुप सरोज जहँ तहँ दच्छिण उट्टिय गरद।
हट्टिय अरि लुट्टिय नगर जुट्टिय चोइ फुट्टिय मरद५
निज कुल भानु समान लखि नृपति सरुप सुजान।
बहु विधि जाकी देखिये बढ़त दान दिन मान॥६॥
भिक्षुक आये भौन के, सबन लहे मन काम।
त्यौंही नृप को सुजस सुनि आयो कवि मतिराम७
ताहि वचन मन मानिके, कीन्हो हुकुम सुजान।
ग्रंथ संस्कृत रीति सौं, भाषा करौं प्रमान॥८॥
छंदसार संग्रह रच्यो, सकल ग्रंथ मति देखि।
बालक कविता सिद्धि कौं, भाषा सरल विशेषि॥९॥
श्री महराजधिराज वीर विरसिंह देव हुव।
चन्द्र भान धरनीश धीर ताको प्रसिद्ध भुव॥
मित्र साहि तिनको सुपुत्र विख्यात जगत सब।
तासु पुत्र अवतंस अवनि पचम सरुप अब॥
जगत जासु अचलय लहि मतिराम सुकवि हित
चित धरिय।
रचि छदसार संग्रह सरस सु इमि दंडक पद्धति
करिय॥१०॥

ललितललाम से उद्धृत छंद*—

तिमिर तुलित तुरकान प्रबल दिशि विदिश प्रगट्टत।
चलत पंथ पंथीन धरम श्रुति करमनि घट्टत॥

* ललितललाम छंद ६३, ६७, ७४, ७५, ७६।

सकत न लोचन लोक भयमिपति मोह नींद रस।
घरनि बकय सब करत आनि कलि-काल आप बस॥
मतिराम तब अति जगमगत भावसिंह भूपाल महँ।
दिनकर दिवान दिन दिन उदित करत सुदिन
सब जगत कहँ॥७॥

एक धर्म गृह खम्भ अम्म रिपु रूप अवनि पर।
एक बुद्धि गम्भीर धीर धीराधि धीरवर॥
एक ओज अवतार सकल सरनागत रक्षक।
एक जासु करवाल निखिल खल कुल कहँ तक्षक॥
मतिराम एक दातानि मनि जग जस अमल
प्रगट्टियउ।
बहुवान बश अवतरा इमि एक राव सुरजन भयउ॥६२॥

बैठे ऐंडदार दरबार सिरदार सब,
ऊपर प्रताप दिल्लीपति को अभग भौ।
मतिराम कहँ करवार के कसैया केते,
गाडर से मूँडे जग हाँसी को प्रसंग भौ॥
सुरजन सुत रज लाज रखवारो एक,
भोज ही ते साहि के हुकुम पगरह्यौ।
मूँछनि सों राव मुख लाल रंग देखि मुख,
औरन को मूछनि बिना ही स्याम रंग भौ॥

परम नवीन धीर धरम धुरीन दीन
बधु सदा जाकी परमेसुर में मति है।
दुवन विदाल करि जाचक निहाल करि,
जगत में कीरति जगाई जाति मति है॥

राव शत्रुसाल को सपूत पूत भावसिंह,
मतिराम कहै जाहि साहिबी फबति है।
मानपति दानपति हाडा हिन्दुवान पति,
दिल्लीपति दलपति बला बघपति है॥

शत्रुसाल सुत सत्य मैं भावसिंह भूपाल।
एक जगत मैं जगत है सब हिंदुन की ढाल॥७४॥

बरन बारि निधि रतन सी रतन भोज को नन्द।
साहनि सौं रन रंग मैं जीत्यो चपत बिलन्द॥६७॥

इन दोनों पद्यों से भली भाँति विदित होता है कि ये दोनों ग्रंथ मतिराम के रचे हुए हैं। वृत्त कौमुदी की रचना ललितललाम से पीछे की होने के कारण और भी ओजस्विनी प्रतीत होती है।

अब एक ऐतिहासिक प्रमाण भी दिया जाता है जिससे भली भाँति विदित हो जायगा कि ललितललाम, रसराज, छन्दसार पिंगल और वृत्तकौमुदी के रचयिता महाकवि मतिराम एक ही हैं, भिन्न भिन्न नहीं हैं।

ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ शिवसिंह सरोज* में एक छन्द "छन्दसार पिंगल" से उद्धृत किया है। वह इस प्रकार है:—

दाता एक जैसो शिवराज भयो जैसो
अब फतेसाहि सी नगर साहिबी समाज है।
जैसो चित्तौर धनी राना नरनाह भयो
जैसो है कुमाऊँपति पूरो रज लाज है॥
जैसे जयसिंह जसवंत महाराज भयो
जिनको मही में अजौ बची बल साज है।
मित्र साहि नंद श्री बुँदेल कुल चन्द जग
ऐसो अब उदित सरूप महाराज है॥

इस छन्द में महाकवि मतिराम ने अपने तीन आश्रयदाता राजाओं कुमाऊँ-पति उद्योतसिंह, श्रीनगर (बुंदेलखंड) के राजा फतह साहि और श्री मित्र साहि बुँदेल के पुत्र राजवंशावतंस सरूप सिंह की समानता महाराज शिवाजी, महाराणा उदयपुर, जयपुर नरेश महाराजा जयसिंह और जोधपुर नरेश महाराज जसवंतसिंह से की है।

---

* शिवसिंह सरोज पृ० १२६।

इस छुन्द से यह भली भाँति विदित होता है कि मतिराम ने इसे महाराज शिवाजी, जयसिंह और जसवंतसिंह तथा राणा प्रताप के मरने के अनंतर रचा है। बूँदी नरेश से ये कुछ असंतुष्ट से प्रतीत होते हैं, क्योंकि इस छंद में उनकी चर्चा नहीं की गई है। स्यात् राव राजा भाऊसिंह के मरने के कारण उनका वर्णन न किया हो; क्योंकि इस छंद में मतिराम ने अपने जीवित आश्रय दाताओं का ही वर्णन किया है, विशेष कर श्री नगर (बुंदेलखंड) नरेश फतेह साहि और स्वरूप सिंह बुँदेले की ही विशेष प्रशंसा की है। संभव है, राव राजा भाऊसिंह के स्थानापन्न अनिरुद्धसिंह का बर्ताव उनके साथ अच्छा न रहा हो जिसके कुछ स्थानिक राजकीय कारण भी हो सकते हैं; और इसी लिये भाऊसिंह के मरने पर वहाँ से चले आए हों। भूषण बूँदी जाने पर राव राजा बुद्धसिंह का बर्ताव संतोषजनक न होने के कारण कुछ दिन ठहरकर ही चले आए थे। इसी छंद में श्रीनगर नरेश फतेह साहि और मित्र साहि बुँदेला के पुत्र स्वरूपसिंह की प्रशंसा वर्तमान काल में की है। इससे प्रतीत होता है कि छंदसार पिंगल बनाते समय इनका आवागमन फतह साहि और स्वरूपसिंह दोनों के यहाँ था। हिंदी नवरत्न में जो यह लिखा है कि छंद सार पिंगल शंभूनाथ सोलंकी के आश्रय में लिखा और उन्हीं के नाम समर्पित किया है, वह अशुद्ध प्रतीत होता है। और यह वृत्त कौमुदी* ग्रंथ भी कुरीच (कौंच) और कौंडार के जागीरदार बुँदेला के पुत्र स्वरूपसिंह† को समर्पित किया है।

* देखो वृत्तकौमुदी से उद्धृत छंद।

† बुंदेलखंड की उर्दू तवारीख पृ० २।

मतिराम ने अपने वंश का परिचय कुछ विस्तार से दिया है। यहाँ तक कि अपने पितृव्य (चचा) पं० श्रुतिधर तक का उल्लेख किया है; फिर अपने सहोदर अग्रज बधुभूषण जैसे सुप्रसिद्ध कवि का जिक्र तक न करने, यह कभी संभव न था इससे भी यही प्रतीत होता है कि भूषण और मतिराम सहोदर बंधु न थे। दोनों संबंधी या घनिष्ठ मित्र अथवा गुरुभाई हों तो हो सकता है, क्योंकि दोनों की कविता बहुत कुछ मिलती जुलती है, जैसा पहले ही बतलाया जा चुका है।

इस प्रमाण से यह निश्चित हो जाता है कि ललितललाम, रसराज, छंदसार, पिंगल तथा वृत्तकौमुदी के रचयिता महाकवि मतिराम ही हैं। अन्य कोई मतिराम वृत्तकौमुदी के रचयिता नहीं हो सकते।

जब यह प्रमाणित हो गया कि वृत्तकौमुदी के रचयिता प्रसिद्ध महाकवि मतिराम ही है, तो मतिराम और भूषण के अपने अपने वंश-परिचय से यह अवश्य मानना पड़ेगा कि मतिराम और भूषण कदापि सहोदर बंधु न थे, बल्कि एक वंश के भी न थे।

भूषण और मतिराम दोनों की वीर रस की कविता प्रभावशालिनी और ओजस्विनी होती है। फिर भी यही प्रतीत होता है भूषण की कविता की छाप मतिराम की कविता पर पड़ी है। जिन्होंने शिवराज भूषण और ललितललाम दोनों को ध्यानपूर्वक पढ़ा है, वे यह बात अवश्य मानेंगे। कम से कम इस लेख में वृत्तकौमुदी से उद्धृत छंदों से तो इसी अनुमान की पुष्टि होती है।

जब यह निश्चित हो गया कि भूषण और मतिराम सहोदर बंधु नहीं थे, तब स्वभावतः यह प्रश्न

होता है कि फिर यह भ्रम सर्व साधारण में कैसे फैला। इसका अन्वेषण करने से यही प्रतीत होता है कि ठाकुर शिवसिंह सेंगर कृत शिवसिंह सरोज की एक कथा से ही यह भ्रम फैला है। उसमें चिन्तामणि कवि के वर्णन में लिखा है—"इनके पिता दुर्गा पाठ करने नित्य देवी जी के स्थान पर आया करते थे। ये देवी जो वन की भुइयाँ कहलाती हैं। टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर हैं। एक दिन महारानी राजेश्वरी भगवती प्रसन्न है चारि मुँह दिखाय बोली, यही चारो तेरे पुत्र होंगे। निदान ऐसा ही हुआ कि (१) चिन्तामणि (२) भूषण (३) मतिराम (४) जटाशंकर या नीलकंठ चार पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें केवल नीलकंठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुए, शेष तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़ि ऐसे पंडित हुए कि उनका नाम प्रलय तक बाकी रहेगा*।"

यह ग्रंथ १८८३ ई० संवत् १९४० में नवल किशोर प्रेस में छपा है। इस ग्रंथ के बनाने में भी ठाकुर साहब को लग भग २० वर्ष से कम कदापि न लगे होंगे। इससे प्राचीन कोई ग्रंथ देखने में नहीं आया जिसमें भूषण और मतिराम को भाई माना गया हो। इसी आख्यायिका के आधार पर सर्वत्र यह भ्रांति फैल गई कि भूषण और मतिराम भाई भाई हैं। बंगवासी प्रेस से प्रकाशित शिवा-बावनी नामक पुस्तक की भूमिका में भी यही आख्यायिका कुछ परिवर्तन के साथ दी हुई है। समालोचक और देवनागर पत्रों में भी मिश्र बंधु महोदय ने भूषण को मतिराम का भाई लिखा है।

* शिवसिंह सरोज पृ० ४१२।

फिर धर्मामृत तथा सरस्वती आदि पत्रिकाओं में भी भूषण और मतिराम को भाई मानकर ही लेख लिखे गए। नागरीप्रचारिणी सभा से प्रकाशित "शिवराज भूषण" की भूमिका में भी भूषण और मतिराम को भाई ही लिखा गया है*। डाक्टर ग्रियर्सन ने इंडियन वर्नाक्युलर लिटरेचर में भी यही वर्णन किया है।

मिश्र बंधु महोदय ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ मिश्र बंधु विनोद† और हिंदी नवरत्न‡ में भी तथा पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने कविता कौमुदी प्रथम भाग× में भी इसी प्रकार उल्लेख किया है।

अस्तु अब तो किसी को भी यह सन्देह न रह गया होगा कि भूषण और मतिराम भाई न थे।

इस विषय में मैंने स्वयं भी चिंतामणि, भूषण और मतिराम इन बहुत से ग्रंथों को इसी विचार से देखा कि शायद कहीं भूषण को मतिराम का भाई बतलाया गया हो, परंतु मेरी यह आशा सफल न हुई। तब श्रीयुत पंडित शुकदेवबिहारी मिश्र और पंडित कृष्णबिहारी मिश्र को इस सम्बन्ध में पत्र लिखे। प्रथम महानुभाव ने तो पत्रोत्तर में केवल यही लिखा कि हमने किम्बदंती के आधार पर लिखा है। द्वितीय महोदय ने उत्तर दिया कि यह विषय आश्चर्यजनक है। मैंने बहुत सी पुस्तकों को देखा, परन्तु मुझे कहीं भूषण को मतिराम का भाई लिखा नहीं मिला। उन्होंने कुछ अन्य ग्रंथों को देखने की राय भी दी जो कि उनके पास नहीं थे और आज मैं प्राप्त हो चुके थे, परन्तु

* शिवराजभूषण की भूमिका पृ० ८-१०।
† मिश्रबंधु विनोद पृ०-४११।
‡ हिंदी नवरत्न पृ०-१००।
× कविताकौमुदी प्रथम भाग पृ०-१२१।

कई कारणों से मैं उनके देखने में असमर्थ रहा। खोज की रिपोर्टों में आज तक मिले हुए भूषण, मतिराम, चिन्तामणि और नीलकंठ के किसी ग्रंथ के उद्धृत भाग में यह वर्णन नहीं मिला। अतः यही मानना पड़ता है कि शिवसिंह सरोज की आख्यायिका से ही यह भ्रांति सर्व साधारण में फैली है।

अब तक तो मुझे भूषण और मतिराम के भाई होने ही में संदेह था, परंतु अब नीलकंठ या जटाशंकर भी भूषण के भाई प्रतीत नहीं होते। "वीर केशरी शिवा जी" नामक ग्रंथ में पंडित नंदकुमार देव शर्मा ने चिंतामणि, भूषण और मतिराम तीन ही भाइयों का जिक्र किया है*। नीलकंठ को भाई नहीं माना। ज्ञात नहीं, उनका इस विषय में क्या आधार है। परंतु मुझे तो मिश्रबंधु विनोद के ही आधार पर भूषण के नीलकंठ के भाई होने में संदेह है। मिश्रबंधु विनोद में वर्णित है कि नीलकंठ ने संवत् १६९८ में अमरेश विलास नामक ग्रंथ रचा था†। उनकी अवस्था उस समय २५-३० वर्ष से न्यून न होगी, इस कारण उनका जन्म संवत् १६७० वि० के लगभग पड़ता है। और विनोद में भूषण का जन्म संवत् १६९२ वि० माना है। जब भूषण के छोटे भाई नीलकंठ का जन्म १६७० के लगभग है, तो भूषण का जन्म उससे भी पूर्व होना चाहिए था। परंतु विनोद इसके २० वर्ष पीछे मानता है जो कि अशुद्ध है। भूषण के संवत् १७९७ वि० तक अवस्थित रहने का एक दृढ़ प्रमाण भी मिला है जो कि आगे दिया जायगा। अतः यह कभी सम्भव नहीं कि भूषण १२० वर्ष से भी अधिक काल तक जीवित रहे हों और वैसी ही ओजस्विनी भाषा में कविता करते रहे हों जैसी कि शिवराजभूषण की है। इससे भी यही प्रमाणित होता है कि नीलकंठ भूषण के भाई न थे।

इस प्रकार चिंतामणि और भूषण ही किंवदंती के आधार पर केवल भाई रह जाते हैं। इस किंवदंती में भी कहाँ तक सचाई है, यह अभी नहीं कहा जा सकता। आगे इस पर भी विचार किया जायगा।

इस लेख का मुख्य उद्देश तो यही था कि भूषण और मतिराम के भाई होने के संबंध में पड़ताल की जाय, परन्तु भूषण तथा मतिराम के संबंध में कुछ और भी भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। अतः उनको भी दूर करना उचित प्रतीत होता है।

मिश्रबंधु विनोद* तथा हिन्दी नवरत्न† में छंदसार पिंगल महाराज शम्भूनाथ सोलंकी के नाम पर लिखा बतलाया गया है; परंतु शिवसिंह सरोज‡ में छंदसार पिंगल से एक छंद उद्धृत किया गया है जो कि इस लेख में उद्धृत हो चुका है। उसमें श्रीनगर (बुंदेलखंड) नरेश महाराज फतह साहि और मित्र साहि बुंदेले के पुत्र सरूपसिंह की बहुत प्रशंसा की गई है। अतः प्रतीत होता है कि इन्हीं दोनों के आश्रय में यह ग्रंथ रचा गया है, महाराज शम्भूनाथ सोलंकी के आश्रय में नहीं लिखा गया।

मिश्रबंधु विनोद में वृंद कवि × को भूषण का वंशज माना है जो कि नितान्त अशुद्ध है। उसमें वृंद

* वीरकेशरी शिवाजी, पं० नंदकुमारदेव शर्मा कृत पृ० ६६२

† मिश्रबंधु विनोद पृ० ४६४

* मिश्रबंधु विनोद पृ० ४६१।

† हिंदी नवरत्न पृ० ३१०।

‡ शिवसिंह सरोज पृ० २४६।

× मिश्रबंधु विनोद पृ० ५४६ और हिंदी नवरत्न पृ० १५३।

के वंशादि का परिचय नहीं दिया गया है। परन्तु यह निश्चित है कि ये जोधपुर राज्य के रहनेवाले सेवक जाति के गौड़ ब्राह्मण थे और सं० १७४३ में वर्तमान थे*। यदि ये प्रसिद्ध वृंद कवि से भिन्न कोई हों तो सम्भव है। यदि मिश्रबन्धुओं ने इन्हीं को प्रसिद्ध कवि वृंद माना हो जो कि वृंदसतसई, शृंगार शिक्षा, भाव पचाशिका आदि ग्रंथों के रचयिता थे, तो उनका कथन अशुद्ध है। विनोद† और नवरत्न में भूषण का मृत्यु काल संवत् १७७२ माना गया है। भूषण ने एक कवित्त महाराज भगवत राय खीची असोथर नरेश के परलोक गमन के पश्चात् उनकी प्रशंसा में लिखा था। वह कवित्त इस प्रकार है:—

"उठि गये आलम से जंगुक सिपाहिन
की उठि गये वैंचैया सबै वीरता के बाने को।
भूषण भनत धर्म धरा से उठि गये,
उठि गये सिंगार सबै राजा राव राने को॥
उठिगे सुकवि सुशील उठिगे यशीले डील
फैल मध्य वश में समूह तुरकाने को।
फूटे भाल भिक्षुक के जूझ भगवंत राय,
अरराय टूटे कुलखंभ हिन्दुवाने को‡।

इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि भगवतराय खीची के मारे जाने के पश्चात् उनकी प्रशंसा में भूषण ने यह छंद रचा है।

सदानन्द कृत भगवतराय रासा में उनका मृत्यु काल संवत् १७९७ वि० लिखा है*। ये सदानन्द महाराज भगवतराय के राजकवि थे और उनके मरने पर यह रासा रचा गया है जो कि अभी हाल में ही खोज में मिला है। डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर यू पी ज़िला फतेहपुर† में लिखा है कि नवाब सआदत खाँ द्वारा भगवंत राय खीची सन् १७४५ संवत् १८०२ में मारे गए थे। परन्तु गजेटियर का समय अशुद्ध है और रासा का समय बिल्कुल ठीक प्रतीत होता है, क्योंकि यह उसी समय का रचा हुआ है। अतः यह निश्चित है कि भूषण कवि संवत् १७९७ वि० तक अवश्य वर्तमान थे। अतः इनका मृत्यु काल संवत् १७७२ मानना नितांत अशुद्ध है‡। उनका जन्म काल संवत् १६९२ अनुमान किया गया है। इस हिसाब से कम से कम भूषण की अवस्था संवत् १७९७ तक १०५ वर्ष की ठहरती है, और उस अवस्था में भी ऐसी प्रभावशालिनी कविता लिख सकना ठीक प्रतीत नहीं होता। अतः उनका जन्म काल संवत् १६९२ भी मानना अशुद्ध है। उनके जन्म काल के विषय में कोई ठीक ठीक अनुमान नहीं किया जा सकता।

शिवसिंह सरोज में इनका जन्म काल संवत् १७३८ वि० माना है×। सन् १९०३ की खोज

---

* शारदा मासिक पत्रिका अंक ४०, पृ० ४४४ आषाढ़ सं० १९८० में छपा था लेख।

† मिश्रबंधु विनोद पृ० ५११।

‡ यह छंद महाराज राजेंद्रबहादुरसिंह (मुन्ना साहब) सिंगरा के पुस्तकालय से मिला था।

* खीची के अंतिम युद्ध की तिथि—
सम्बत् सत्रह सतानवे कातिक मंगलवार।
सित नौमी संग्राम भो विदित सकल संसार॥
भगवंत राय रासा पृ० १।

† डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर यू पी जिल्द १०, पृ० १४०।

‡ शिवराजभूषण की भूमिका पृ० ८। विनोद पृ० ५११। नवरत्न पृ० १४८।

× शिवसिंह सरोज पृ० ४६७।

की रिपोर्ट में शिवराज भूषण का निर्माण काल संवत् १७३० वि० दिया है। वह कविता भूषण के नाम से शिवराज भूषण के अंत में इस प्रकार दी है—

संवत् सत्रह सैंतीस सुचि वदि तेरस मान।
भूषन शिव भूषन कियो पढ़ौ सुनौ सग्यान*॥३१६

चित्र कवित्व—एक प्रभुता कौ धाम सजै तीनै वेद काम रहै पञ्चानन षड़ानन राजी सर्वदा। सातौ वार आठौ जाम जाचिक निवाजे अवतार थिराजै क्रिपान ज्यौं हरि गदा। शिवराज भूषण अटल रहै तौ लौं जौ लौं त्रिदस भुवन सब गंग औ नरमदा। साहि तनै साहसीक भौसला सरजा बंस दासरथी जा रसता सरजा वि सरदा।३२०

उपर्युक्त कविता इतनी निकृष्ट श्रेणी की है कि जिसे कुछ भी साहित्य का ज्ञान है, वह तुरंत कह देगा कि यह कविता कदापि महाकवि भूषण की रची नहीं है। शिवराज भूषण के किसी छंद से उपर्युक्त छंद का मिलान करने से स्पष्ट विदित हो जायगा कि यह कविता किसी ने पीछे से मिला दी है। मेरा अनुमान है कि महाराज बनारस के किसी कवि की ही यह करतूत है।

बनारस राज्य के पुस्तकालय के अतिरिक्त अन्य जितनी प्रतियाँ शिवराज भूषण की प्राप्त हुई हैं, उनमें से किसी में भी उपर्युक्त छंद नहीं है और न छपी हुई प्रतियों में ही उक्त वर्णन पाया जाता है। अतः सिद्ध है कि वे दोनों छंद बनावटी हैं।

ज्योतिष-गणना के अनुसार आषाढ़ कृष्णा १३ को बुधवार पड़ता है, परंतु उक्त दोहे में रविवार पड़ता है। अत' यह निर्माण काल नितांत अशुद्ध है। यह कल्पित निर्माण काल पीछे से किसी व्यक्ति ने रचकर मिला दिया है और उसका समय शिवाजी के देहांत के समय का रख दिया है।

मेरे विचार से शिवराज भूषण महाराज साहु के समय में बना है जो शिवाजी के पौत्र थे।

उनके विषय की मिथ्या किंवदंतियाँ उनके जीवन को अंधकार में डाले हुए हैं जो कि ठीक ठीक निर्णय नहीं होने देतीं। एक ही बात भिन्न भिन्न रीति से कही जाती है। शिवराज भूषण* की भूमिका में बंगवासी में छपी शिवाबावनी के आधार पर लिखा है कि चिंतामणि का जन्म संवत् १६५८ और भूषण का संवत् १६७१ प्रतीत होता है; परंतु वे दोनों संवत् भी अशुद्ध ही प्रतीत होते हैं।

उसी भूमिका† में यह भी कथन किया गया है कि शिवाजी दिल्ली गए थे और वहीं औरंगजेब ने उन्हें कैद कर लिया। यथार्थ में शिवाजी दिल्ली नहीं आगरे में उपस्थित हुए थे और वहीं से मथुरा होकर चुपके निकल भागे थे‡।

आगे चलकर उसी भूमिका में लिखा है कि संवत् १६६७ में मतिराम अपने भाई भूषण को बूँदी ले गए थे। परंतु मेरे विचार से मतिराम राव राजा भाऊसिंह के मरने पर ही १७४५ में वहाँ से चले आए थे। संवत् १७५८ में तो वे बुंदेलखंड में स्वरूपसिंह बुँदेले के यहाँ रहते थे। तभी वृत्त कौमुदी ग्रंथ रचा था। और इससे पूर्व स्वरूपसिंह तथा फतह शाह के आश्रित रहकर छंदसार पिंगल ग्रंथ रचा था। मतिराम का कोई छंद राव राजा अनि-

* सन् १९०३ की खोज की रिपोर्ट पृ० ४३।

* शिवराज भूषण भूमिका पृ० ८।

† शिवराज भूषण पृ० १०।

‡ वीर केशरी शिवाजी पृ० ६७५।

रुद्रसिंह और बुद्धसिंह की प्रशंसा में नहीं मिला। इससे भी यही प्रतीत होता है कि भूषण मतिराम के साथ बूँदी नहीं गए बल्कि उन्होंने अपनी इच्छा से यात्रा की थी।

मिश्रबन्धु विनोद में वर्णित है कि राजा शम्भू नाथ सोलंकी सितारे के राजा थे जिनके आश्रित होकर मतिराम ने छन्दसार पिंगल रचा०* यह राजा बहुत से हिंदी के कवियों के आश्रयदाता तथा स्वयं भी कवि थे। इनकी भाषा से प्रतीत होता है कि ये हिंदी भाषी प्रांत के राजा थे। सितारा मरहठी प्रांत है, वहाँ हिंदी का इतना सम्मान होना कठिन है। मेरे विचार से यह सोलंकी राजा रोधोंगाज के वंशजों या भिन्न भूटाधिपतियों में होंगे। इन्हें सितारा के राजा बताना भ्रांतिमूलक है।

× ग्रंथ वृत्त कौमुदी में वर्णित बुंदेल वंश और इतिहास से भी मिलान कीजिए। इस ग्रंथ में मधुकर साहि के पुत्र वीरसिंह देव से वंश वर्णन किया गया है। ये वही वीरसिंह देव हैं जिन्होंने जहाँगीर के कहने से अब्बुल फज़ल का वध किया था। इनका शरीरांत सं० १६७८ में हुआ था। इनके बारह पुत्र थे जिनमें ज्येष्ठ पुत्र पहाड़सिंह मुख्य गद्दी के अधिकारी हुए, और तीसरे पुत्र चंद्रभान थे जिनको कुरीच, कौंच और कौंडार जागीर में मिला था। इन्हीं चंद्रभान के पुत्र मित्र साहि बुंदेला मतिराम के आश्रयदाता स्वरूपसिंह के पिता थे जिनके नाम से कवि ने वृत्त कौमुदी ग्रंथ रचा। यह ग्रंथ संवत् १७५८ वि० में रचा गया था।

* मिश्रबंधु विनोद पृ ४८१

† गदू तवारीख बुंदेलखंड पृ० १।

तब तक वीरसिंह देव को मरे ८० वर्ष हुए थे। इस बीच में तीसरी पीढ़ी का होना स्वाभाविक है, अतः इसमें कुछ भी संदेह नहीं रहता कि ग्रंथ में वर्णित वीरसिंह देव और चन्द्रभान बुंदेला तथा इतिहासवाले ओड़छा नरेश वीरसिंह देव तथा चंद्रभान बुंदेला एक ही हैं।

बुंदेलखंड के हिन्दी इतिहास * में दिए हुए वंशवृक्ष से भी यही निश्चित होता है कि मधुकरशाह के पुत्र वीरसिंह देव और उनके पुत्र चन्द्रभान हुए। ग्रंथ में भी उपर्युक्त तीनों महाशयों का वर्णन पाया जाता है।

इतिहास † से यह निश्चित होता है कि स्वरूपसिंह भी कुरीच, कौंच और कौंडार में से किसी एक अथवा उसके किसी भाग पर अधिकृत होंगे और वहीं पर मतिराम भी उनके आश्रय में रहते थे।

अभी भूषण और मतिराम के विषय में बहुत सी भ्रान्तियाँ फैली हैं जिनका दूर करना हिन्दी प्रेमियों का कर्तव्य है।

खोज की रिपोर्ट में अभी वे सब पुस्तकें भी प्राप्त नहीं हुई हैं जो मिश्रबन्धु विनोद में वर्णित हैं। त्रैवार्षिक रिपोर्ट सन् १९०९ ११ में‡ चिन्तामणि के एक पिंगल ग्रंथ का वर्णन है। ग्रंथ में सम्वत् आदि का कोई पता नहीं है। निरीक्षक महाशय ने उसमें ग्रंथकार का जन्म स० १६६६ वि० लिखा है। कविकुल कल्पतरु का रचना काल सं० १७०७ वि० दिया है ‡।

* बुंदेलखंड के हिन्दी इतिहास का वंश-वृक्ष।

† गदू तवारीख बुंदेलखंड, पृष्ठ १।

‡ त्रैवार्षिक रिपोर्ट १९०९ ११, पृष्ठ ८८।

× त्रैवार्षिक रिपोर्ट १९०९ ११, पृष्ठ १८४।

दूसरी रिपोर्ट में मतिराम सतसई का भी वर्णन है*; परन्तु उसमें निर्माण काल नहीं है और न वंश परिचय है। निरीक्षक महोदय ने मतिराम के जन्म और मृत्यु के आनुमानिक संवत् दिए हैं।

खोज की त्रैवार्षिक रिपोर्ट सन् १९०६–०८ में मतिराम के तीन ग्रंथों का वर्णन है—रसराज, साहित्य सार, और लक्षण शृङ्गार†। इन तीनों में से किसी में भी निर्माण काल अथवा कवि वंश का परिचय आदि नहीं दिया है इनका ललितललाम और रसराज तो छप भी चुका है, और छन्दसार पिंगल का उल्लेख शिवसिंह सरोज में किया गया है। और नीलकंठ ने अमरेश विलास सं० १६९८ वि० में रचा था‡। चिन्तामणि त्रिपाठी कृत कविकुल कल्पतरु भी छप चुका है×। उसमें भी निर्माण काल आदि का कोई वर्णन नहीं है। केवल सन् १९०२ की रिपोर्ट के परिशिष्ट में उसका निर्माण काल सन् १६५० १७०७ वि० दिया है। चिन्तामणि कृत पिंगल+ में भी कोई सम्वत् नहीं दिया है। मेरा तो अनुमान यह है कि चिन्तामणि भी भूषण के भाई नहीं थे; क्योंकि भूषण का जन्म सं० १७३८ वि० सिद्ध है जैसा कि शिवसिंह सरोज* में भी दिया है। लेख से भी यही सिद्ध होता है। विनोद के अनुसार चिन्तामणि के जन्म तथा भूषण के ठीक जन्म काल में ६२ वर्ष का अन्तर पड़ता है जो कि सहोदर भाइयों में कभी संभव नहीं। अत: चिन्तामणि भी भूषण के भाई नहीं माने जा सकते।

खोज की रिपोर्टों के आधार पर चिन्तामणि, भूषण, मतिराम और नीलकंठ के रचित ग्रंथों में से शिवराज भूषण को छोड़कर किसी ग्रंथ से कवि के समय और वंशादि का परिचय नहीं मिलता। शिवराज भूषण† में कवि ने केवल पिता का नाम, वंश, स्थान और आश्रयदाता का नाम दिया है। एक वृत्त कौमुदी ही ऐसा ग्रंथ है जिसमें मतिराम का विस्तार के साथ वंश-परिचय, समय और आश्रयदाता का वर्णन है। अत: यह ग्रन्थ साहित्य का इतिहास जाननेवाले सज्जनों के लिये बहुत उपयोगी है। इससे बहुत सी उलझी हुई बातें सुलझने की संभावना है। यह खोज का कार्य कितना उपयोगी और आवश्यक है, यह इसीसे प्रकट होता है। ज्यों ज्यों समय बीतता जाता है, पुस्तकें नष्ट होती जाती हैं। अशिक्षित लोग हलवाई, पसारी आदि के यहाँ रद्दी में पुस्तकें बेच देते हैं अथवा गंगा जी के हवाले कर देते हैं। अथवा वे स्वयं सड़ गलकर नष्ट हो रही हैं। उनका जितना शीघ्र प्रबंध हो सके, किया जाना चाहिए। उपर्युक्त दृश्य कई स्थानों पर मैंने स्वयं देखे हैं और पुस्तकों को रक्षित रखने का प्रबंध किया है।

---

* सन् १९०४ की रिपोर्ट नं० ११८।

† त्रैवार्षिक रिपोर्ट सन् १९०६-८ पृष्ठ ७८, सन् १९०१ की रिपोर्ट पृष्ठ ४८, १९०३ की रिपोर्ट पृष्ठ ४८ और १९०० की रिपोर्ट पृष्ठ ३८।

‡ सन् १९०३ की रिपोर्ट, पृष्ठ १।

× सन् १९०४ की रिपोर्ट का परिशिष्ट नं० ११९ और १९०३ की रिपोर्ट नं ११७।

+ सन् १९०१ की रिपोर्ट, पृष्ठ ७९ और १९०२ की रिपोर्ट नं० ११६।

* शिवसिंह सरोज, पृष्ठ ४६७।

† शिवराजभूषण, पृष्ठ २६-२९।

भूषण को महाराज शिवाजी के दरबार का राजकवि मानने से उनका कविता काल ६० वर्ष से भी अधिक ठहरता है, परन्तु इतने समय तक कविता करना असम्भव सा ही प्रतीत होता है। महाराज शिवाजी का देहान्त सन् १६८० ई० सं० १७३७ वि० में हुआ था। यदि भूषण शिवाजी के साथ रहे हों तो उसस पूर्व रुद्रराय सोलंकी चित्र कूटाधिपति और रीवां नरेश अवधूतसिंह * (सन् १७००-१७५५) के यहाँ भी रह चुके थे।

उनकी मावज के नमक के लिये ताना देने की कहावत से भी यही प्रतीत होता है कि कम से कम २० वर्ष की अवस्था में उन्होंने पढ़ना प्रारम्भ किया था। इन सब बातों पर विचार करके यही मानना पड़ता है कि उनकी अवस्था शिवाजी के देहान्त के समय ४०-५० वर्ष की अवश्य होगी और उनका भगवन्तराय खीची के मृत्यु काल के समय सं० १७८७ वि० तक जीवित रहना निश्चित सा है †। अतः उस समय उनकी अवस्था ११० वर्ष की होनी चाहिए। खीची की मृत्यु के समय जिस प्रकार की भावपूर्ण कविता उन्होंने रची है, उसस प्रतीत होता है कि उनकी रचना उस समय भी विकास पा रही थी। वृद्धावस्था क कारण उनमें कोई क्षीणता नहीं आई थी। परन्तु उस अवस्था में इतनी उच्च कोटि की कविता कर सकना कठिन है। मेरा तो विश्वास यह है कि महाकवि भूषण शिवाजी क दरबार में ही नहीं थे, वरन् वे उनक पौत्र साहू महाराज क दरबार में थे। और शिवाजी और भूषण क सम्मिलन की जो कथा प्रसिद्ध है, वह वास्तव में साहू और भूषण क विषय में घटित प्रतीत होती है। महाराज साहू के शिकार खेलने का वर्णन भी उसी घटना से सबद्ध प्रतीत होता है। भूषण ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ शिवराज भूषण शिवाजी को नायक मानकर लिखा था। अब बना चुके होंगे तब महाराज साहू की सेवा में उपस्थित हुए होंगे, जिस पर उनको बहुत सा धन और ग्रामादि मिले और वहाँ बहुत सम्मान हुआ। यह भी प्रतीत होता है कि उनका गमनागमन बहुत दिनों तक जारी था। उत्तरी भारत के बहुत से मनुष्य शिवाजी को डाकू और लुटेरा कहा करते थे और ऐसा ही मानते भी थे। परन्तु भूषण ने उनको बहुत से सद्गुणों से भूषित हिन्दू धर्म रक्षक और जातीय नेता माना है (जैसे कि वे यथार्थ में थे), और यही नहीं उनको ईश्वर का अवतार तक बतलाया है। इसी कारण भूषण का महाराष्ट्रों की ओर से अत्यधिक सम्मान प्राप्त हुआ था।

जब वे साहू महाराज के पास से लौटे तो महाराज छत्रसाल के यहाँ गए थे। उन्होंने देखा कि भूषण को धन तो बहुत मिल चुका है, मैं उससे अधिक दे क्या सकता हूँ, तब उन्होंने उनकी पालकी में कंधा लगा दिया था जिसको देखकर भूषण पालकी स कूद पड़े और उनको रोककर उसी समय कई कवित्त उनकी प्रशंसा में रचे जिनमें से एक का एक पद यह भी था—"साहू को सराहौं के सराहौं छत्रसाल कौं"। इससे भी यही प्रतीत होता है कि भूषण साहू क ही दरबार में थे, महाराजा शिवाजी के दरबार में नहीं थे।

उपर्युक्त पद से यह भी प्रतीत होता है कि भूषण के हृदय में साहू के प्रति अत्यधिक सम्मान था। शिवाजी क जीवन काल में भूषण जैसे

* हमीरपुर गजेटियर जिल्द ११ पृ० १८१।
† भगवन्तराय रासा हस्त-लिखित पृ० १।

राष्ट्रीय कवि का उनको ईश्वर मानना उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

जिस समय महाकवि भूषण ने 'शिवराज भूषण' नामक ग्रंथ बनाने का विचार किया था, उस समय केवल आदर्श चरित महाराज शिवाजी को देख कर ही उक्त ग्रंथ रचा था जैसा कि उन्होंने स्वयं उसी में वर्णन किया है—

शिवा चरित लखि यों भयो कवि भूषण के चित्त।
भाँति भाँति भूषणनि सों भूषित करौं कवित्त ॥२६॥

वर्तमान साहित्यिक इतिहास का इस लेख से पूर्ण विरोध और खंडन होता है। इसी से उक्त बातों के प्रकट करने का मुझे स्वयं ही साहस नहीं हो रहा था; क्योंकि बड़े बडे विद्वानों की राय को काटना धृष्टता है। परंतु अपनी राय और विचारों को सब पर प्रकट करने तथा ऐतिहासिक तथ्य को न छिपाने के उद्देश से ही मैं ऐसा करने को बाध्य हुआ हूँ। आशा है, इतिहास-प्रेमी साहित्यसेवी विद्वान् शांतिपूर्वक इस विषय पर विचार करेंगे और उनका जो निर्णय होगा, वह मुझे भी सहर्ष मान्य होगा।

इस लेख में जिन विषयों पर विचार हुआ है, उन सब की सामग्री मुझे खोज और उनकी रिपोर्टों में मिली है।"

पं० भगीरथप्रसाद जी की इन थोड़ी सी बातों से यह स्पष्ट हो गया है कि हस्त-लिखित हिंदी पुस्तकों की खोज का काम कितने महत्व का है और इसको सुचारु रूप से करने के लिये काशी नागरी-प्रचारिणी सभा को तथा इसके निमित्त आर्थिक सहायता देने के लिये संयुक्त प्रदेश की गवर्मेण्ट को जितना धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है। संयुक्त प्रदेश की गवर्मेंट के शिक्षा सचिव मिस्टर सी० वाई० चिंतामणि के कार्य्य काल में काशी नागरीप्रचारिणी सभा की वार्षिक सहायता १०००) से २०००) हो गई थी। इस कार्य के महत्व को समझकर उक्त शिक्षा सचिव का धनाभाव रहने पर भी वार्षिक सहायता दूनी कर देना उनकी सूक्ष्मदर्शिता और विद्याप्रेम का परिचायक है। अतएव हिंदीप्रेमी मात्र को उनका भी अनुगृहीत होना चाहिए।

इस विवरण के प्रस्तुत करने में खोज विभाग के एजेंटों ने जो कार्य किया है, उसके लिये मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। काशी नागरी-प्रचारिणी सभा के प्रकाशन विभाग के निरीक्षक बाबू रामचंद्र वर्मा ने इस विवरण के शुद्धतापूर्वक छपवाने में प्रशंसनीय परिश्रम किया है; अतएव उनके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह विवरण हिंदी साहित्य के विवेचन में सहायक और हिंदी-भाषियों तथा लेखकों के इतिहास-प्रेम का उत्तेजक होगा।

काशी
पौष शुक्ल ७, सं० १९८० } श्यामसुंदरदास।

——:※:——

रिपोर्ट में आए हुए संकेताक्षरों का विवरण

[संकेताक्षरों के साथ जो संख्याएँ दी गई हैं, वे नोटिसों की संख्याएँ हैं।]

अ०	=	अज्ञात
दे०	=	देखो
नि० का०	=	निर्माण काल
पं०	=	पंक्ति
ए	=	एशिया
लि० का	=	लिपि काल
लि०	=	लिपि
सं०	=	संवत्
क	=	सन् १९०० की खोज की रिपोर्ट
ख	=	,, १९०१ ,, ,,
ग	=	१९०२
घ	=	,, १९०३
ङ	=	१९०४
च	=	१९०५ ,,
छ	=	१९०६ १९०७ और १९०८ की रिपोर्ट
ज०	=	,, १९०९ १९१० और १९११ की रिपोर्ट
ए	=	रिपोर्ट के नम्बर का a हिस्सा
बी	=	,, b ,,
सी	=	,, ,, c
डी	=	, d
ई	=	रिपोर्ट के नम्बर का e हिस्सा
एफ्	=	f
जी	=	g ,,
एच	=	h ,,
आई	=	i ,,
जे	=	j ,,
के	=	k ,,
एल	=	l
एम	=	,, ,, m ,,
एन	=	,, n ,,
ओ	=	o ,,
पी	=	p ,,
क्यू	=	q ,,
आर	=	,, r
एस	=	s
टी	=	,, t ,,
यू	=	,, ,, u ,,
वी	=	,, , v
डब्लू	=	,, w
एक्स	=	,, x ,,
वाई	=	,, , ,, y
ज़ेड	=	,, z
ए̄	=	ā
बी̄	=	b̄ समझिए।

* इस विवरण में कहीं कहीं भूल से पता इन में "अ" के स्थान में "भ" छप गया है, पर "भ" वास्तव में कोई रिपोर्ट नहीं है। अतः जहाँ जहाँ "भ" आया हो, वहाँ वहाँ पाठक "अ" समझें और बना लें।

हस्त-लिखित हिंदी पुस्तकों का

संक्षिप्त विवरण

पहला भाग

अक्षरावली—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १९१२, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज-३२२ ए)

अंगदर्पण—अन्य नाम नखशिख रसलीन, गुलाम नबी उप० रसलीन कृत, लि० का० सं० १७९४, वि० राधा का नख शिख वर्णन। दे० (च-१५)

अंग्रेजी हिंदी फारसी बोली—लल्लूलाल कृत, लि० का० सं० १८६७, वि० कोष। दे० (ज—१७४ ए)

अंगुलि पुराण—फ़रासीसी हकीम कृत, लि० का० सं० १९३५, वि० वैद्यक। दे० (द-१११) (ग—११३)

अंतर्लापिका—रामदयाल गिरि कृत, वि० चित्र काव्य। दे० (ट—१६)

अंतरंग रहस्य दीपिका—अग्र राजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १९१०, वि० राम जानकी की लीला। दे० (ज—१३४ आई)

अंबरीष चरित्र—चिंतामणि शाह कृत, वि० राजा अंबरीष की कथा। दे० (ज—५१)

अंबिकादत्त व्यास—दुर्गादत्त व्यास के पुत्र, इनका देहान्त सं० १९५८ में हुआ। दे० (ज-७६)

अकबर—मुगल सम्राट्, राज्यकाल सं० १६१३ से १६६२ तक। भगवतरसिक ने अपने ग्रंथ सिद्धान्तात्मक उत्तरार्ध में इन्हें १२६ भक्तों की सूची में रक्खा है। दे० (क-३२)। गंगभाट, तानसेन, ब्रह्म कवि, चिंतामणि और नरहरि भट्ट के आश्रयदाता थे। दे० (ख १०) (घ ११) (छ-११८) (छ-२५०)

अकबरशाह—अवधगढ़ निवासी, सं० १८९७ के लगभग वर्तमान।

[illegible] दे० (छ-१)

अकबरनामा—सेवक कृत, वि० मुगल वं० का

इतिहास सं १४१४ से १८८८ तक। दे० (छ—३२६)

अक्षर-अनन्य—सं० १७१० के लगभग वर्तमान दतिया के कुँवर पृथ्वीराज के गुरु और महाराज छत्रसाल के समकालीन।

अनुभवतरंग दे० (छ—२ ए)
राजयोग दे० (छ—२ बी)
प्रेमदीपिका दे० (छ—२ सी)
ज्ञानबोध दे० (छ—२ डी)
ज्ञानपचासा (अनन्यपचासा) दे० (छ—२ई)
कविता दे० (छ—२ एफ)
दैवशक्ति पचीसी (शक्ति पचीसी या अनन्यपचीसी) दे० (छ—२ जी)
उत्तमचरित्र दे० (छ—२ एच)
भवानीस्तोत्र दे० (छ—२ आई)
वैराग्यतरंग दे० (छ—२ जे)
योगशास्त्र दे० (छ—२ के)

अक्षरखंड की रमैनी—कबीरदास कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज—१४२ सी)

अक्षरभेद की रमैनी—कबीरदास कृत वि० ज्ञान। दे० (ज—१४३ बी)

अखंडप्रकाश—सदाराम कृत, लि० का० सं० १८७२, वि० आत्मज्ञान। दे० (ज—२७२ ए)

अखंडबोध—जानकीदास कृत· लि० का० सं० १९५१ वि० वेदांत। दे० (ज—१३५)

अखरावट—मलिक मुहम्मद जायसी कृत; लि० का० सं० १९४३, वि० वेदांत ज्ञान। दे० (ग-१०)

अखरावली—नेवाज कृत नि० का० सं० १८२०, वि० वेदांत ज्ञान। दे० (ज—२१७)

अखरावली—रामसेवक कृत, लि० का० सं० १९४५ वि० ब्रह्मज्ञान, अन्य नाम शब्द अखरावली, बानी, शब्दमंगल बाजम। दे० (ज—२५८)

अगहन माहात्म्य—वैकुंठमणि शुक्ल कृत· लि० का० सं० १८७५ वि० अगहन मास के स्नानादि का माहात्म्य। दे० (छ—५ बी)

अगाध मंगल—कबीरदास कृत वि० योगाभ्यास का वर्णन। दे० (ज—१४३ ए)

अगुन सगुन निरूपन कथा—शिवानंद कृत, नि० का० सं० १८४६ लि० का० सं० १८६०, वि० वेदांत ब्रह्मज्ञान। दे० (घ—७७)

अग्निभू—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

भक्ति भयहर स्तोत्र, अन्य नाम भक्ति नो हरि स्तोत्र दे० (क—८५)

अग्रअली—वैष्णवसखी सम्प्रदाय के अनुयायी।

अष्टयाम दे० (ज—२)

अग्रदास (स्वामी)—सं० १६३२ के लगभग वर्तमान· वैष्णव सम्प्रदाय में; नाभादास के गुरु; कृष्णदास पयहारी के शिष्य; गलता, आमेर (जयपुर राज्य) के निवासी। दे० (ज—२०२)

हितोपदेश उपखाणा बावनी दे० (घ—६०)
ध्यानमंजरी दे० (छ—१२१ ए)
रामध्यान मंजरी दे० (क—७७)
कुंडलिया दे० (छ—१२१ बी)

अग्रनारायण—वैष्णवदास के समकालीन; रामानुज संप्रदाय के वैष्णव सं० १८४४ के लगभग वर्तमान थे।

भक्त रसबोधिनी टीका दे० (ङ—८८)

अचलसिंह—बीरसाहि के पुत्र और सबलसाहि के पौत्र बैस डौंडिया खेरा (अवध) के राजा शम्भूनाथ त्रिपाठी और दयानिधि के आश्रय-

दाता, सं० १८०६ के लगभग वर्तमान। दे० (ग—२५४) (छ—२३४) (ञ—१२)

अचलसिंह—अलीपुर (बुंदेलखंड) के जागीरदार, सं० १८०७ के लगभग वर्तमान, नीधराज के आश्रयदाता थे। दे० (छ—११५)

अजवेश—रीवाँ नरेश महाराज जयसिंह तथा महाराज विश्वनाथसिंह के आश्रित, सं० १८९२ के लगभग वर्तमान।

बघेल वंश वर्णन दे० (घ—१५)

अजामिल चरित्र—वृन्दावनदास कृत, वि० अजामिल कथा। दे० (ञ—१५ बी)

अजीतसिंह (महाराज)—जोधपुर नरेश महाराज जसवन्तसिंह के पुत्र, पिता की मृत्यु के मास पश्चात् उत्पन्न हुए, राज्य काल सं० १७३५—१७८१, इनके पुत्र अभयसिंह ने अपने छोटे भाई बख्तसिंह की सहायता से दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह को प्रसन्न करने के हेतु इन्हें मार डाला था। ये अपने को हिंगुलाज देवी का अवतार बतलाते थे।

दुर्गापाठ भाषा दे० (ग—४०)

गुणसागर दे० (ग—८२) (ग—१६३)

निर्वाण दूहा दे० (ग—८४)

महाराज श्री अजीतसिंह जी री कथा दूहा, दे० (ग-८१)

महाराज श्रीअजीतसिंह जी कृत दूहा श्री ठाकुरां रा दे० (ग-८६)

भवानी सहस्र नाम दे० (ग-८७)

महाराज श्रीअजीतसिंह जी री कविता दे० (ग-२०८)

महाराज श्रीअजीतसिंह जी रा गीत दे० (ग-२०५)

अजीतसिंह (महाराज)—महाराज रीवाँ नरेश, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, इन्होंने पन्ना के सरदार जसवन्तसिंह पर विजय प्राप्त की। दे० (क-४१)

अजीतसिंह (महाराज) कृत दूहा श्री ठाकुरां रा—जोधपुर नरेश महाराज अजीतसिंह कृत, वि० श्रीकृष्णजी की स्तुति। दे० (ग-८६)

अजीतसिंह (महाराज) जी रा कथा दूहा—जोधपुर नरेश महाराज अजीतसिंह कृत, वि० अजीतसिंह महाराज की जन्मकथा। दे० (ग-८१)

अजीतसिंह फतह ग्रंथ—मन्त्र नाम नायक राय भा, दुर्गाप्रसाद कृत, वि० रीवाँ नरेश महाराज अजीतसिंह के बघेला सरदारों के पन्ना सरदार जसवन्तसिंह को सं० १८५१ में चरहटा के मैदान में पराजित करने का वर्णन। दे० (क-४१)

अटक पचीसी—दयोदास कृत, नि० का० सं० १८०६, वि० शृंगार वर्णन। दे० (ट-८५)

अठपहरा—कबीरदास कृत, वि० भक्तों की दैनिक परिचर्या। दे० (छ-१७७ डी)

अड़नजी (भैया)—रूपाराम के गुरु, सेवापंथी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। दे० (ग-१६)

अद्भुत रामायण—भवानसिंह प्रधान कृत, लि० का० सं० १८६१, लि० का० सं० १९३१, वि० रामजानकी वर्णन। दे० (ख-२८)

अद्भुत रामायण—पं० शिवप्रसाद कृत, लि० का० सं० १८३०, वि० सीताराम कथा। दे० (ङ-२५५)

अध्यात्म प्रकाश—सुखदेव मिश्र कृत, लि० का०

सं० १६४५, लि० का० सं० १८५०, नि० का० सं० १७५५, वि० वेदान्त ज्ञान। दे० (च-६७) (छ-२४० सी)

अध्यात्मबोध—गरीबदास कृत; लि० का० सं० १७०६; वि० वेदान्त ज्ञान। दे० (ग-६५)

अध्यात्म रामायण—किशोरदास कृत, लि० का० सं० १६१३, वि० सीताराम वर्णन; अध्यात्म रामायण संस्कृत का भाषानुवाद। दे० (छ-६१ बी)

अध्यात्म रामायण—नवलसिंह (प्रधान) कृत; वि० संस्कृत अध्यात्म रामायण का भाषानुवाद। दे० (छ-७६ एस)

अनंतदास—सं० १६४५ के लगभग वर्तमान एक साधु, कृष्णदास के शिष्य। (ख-१३३) (छ-१२८) (ज-५)

नामदेवादि की परिचई दे० (ख-१३३)
पीपा परिचई दे० (छ-१२८ ए)
रैदास की कथा दे० (छ-१२८ बी)
रैदास की परिचई दे० (ज-५०) सं० में भूल है।
कबीर साहब की परिचई दे० (ज-५ बी)
त्रिलोचनदास की परिचई दे० (ज-५ सी)

अनंतराम—संभवतः १८ वीं शताब्दी के अंत में जयपुर नरेश महाराज सवाई प्रतापसिंह के आश्रित थे।

वैद्यक ग्रन्थ भाषा दे० (ज-६)

अनंतराय—कोल्हापुर (पाटन) के राजा, सं० १२४७ के लगभग वर्तमान, कँवाट कवि ने इनका वृत्तान्त लिखा है। दे० (ख-२६)

अनंतराय सारवत की वार्ता—कैवाट सरवरिया कृत, नि० का० सं० १८५४, वि० कोल्हापुर पाटन के राजा अनंतराय का वर्णन। दे० (ख-२६)

अनंद (आनंद) बनारस निवासी, सं० १८४० के लगभग वर्तमान; आनंद अनुभव के रचयिता भी यही मालूम होते हैं।

आनंद अनुभव दे० (घ-३७)
भगवद्गीता दे० (ज-४ ए)
दानलीला दे० (ज-४ बी)
प्रबोध चन्द्रोदय नाटक दे० (ज-४ सी)

अनंद—कवि का उपनाम मालूम होता है; सं० १७६१ के पूर्व वर्तमान।

कोकसार दे० (ग-५) (छ-१२६)

अनंदराम—जयपुर निवासी, सं० १८७८ के लगभग वर्तमान।

रामसागर दे० (ख-५६)

अनन्य-चिंतामणि—कृपानिवास कृत; लि० का० सं० १६५७, वि० रामभक्ति। दे० (छ-२७६ बी)

अनन्य-तरंगिनी—जनकराजकिशोरीशरण कृत; नि० का० सं० १८८८, लि० का० सं० १६५८; वि० भक्ति का विवरण। दे० (ज-१३४ बी)

अनन्य-निश्चयात्मक—भगवत् रसिक कृत; वि० वैष्णव सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का वर्णन। दे० (क-२६)

अनन्य-पचासिका—अक्षर अनन्य कृत, अन्य नाम ज्ञान पचासा, लि० का० सं० १६५७, वि० आत्मज्ञान। दे० (छ-२)

अनन्य पचीसी—अक्षर अनन्य कृत, अन्य नाम देव शक्ति पचीसी और शक्ति पचासी, लि० का० सं० १८६५, वि० दुर्गा-प्रार्थना। दे० (छ-२ जी)

अनन्य-प्रकाश—अक्षर अनन्य कृत, लि० का० सं० १६२२, वि० ब्रह्मज्ञान। दे० (ज-८ ए)

अनन्य—उप० अक्षर अनन्य, सेनहुरा राज्य दतिया निवासी, कायस्थ, कुँवर पृथ्वीराज (दतिया) के गुरु, स० १७१० में उत्पन्न हुए, कविता काल सं० १७५४।

प्रेमदीपिका दे० (ख-१) सं० में भूल है। (छ-२ सी)
राजयोग दे० (ख-२) (छ-२ बी)
अनुभव तरंग दे० (छ-२ ए)
ज्ञानबोध दे० (छ-२ डी)
ज्ञानपचासा दे० (छ-२ ई)
कविता दे० (छ-२ एफ)
दैवशक्ति पचीसी दे० (छ-२ जी)
उत्तमचरित्र दे० (छ-२ एच)
भवानीस्तोत्र दे० (छ-२ आई)
वैराग्य तरंग दे० (छ-२ जे)
योगशास्त्र दे० (छ-२ के)
अनन्य प्रकाश दे० (ज-८ ए)
सिद्धान्तदीपिका दे० (ज-८ बी)
देवसभा पचीसी दे० (ज-८ सी)
ब्रह्मज्ञान दे० (ज-८ डी)

अनन्यरसिकाभरन—भगवत रसिक कृत, वि० राधाकृष्ण नित्य विहार वर्णन। दे० (क—२१)

अनन्यसभा-मंडलसार—गोस्वामी गुलाबलाल कृत, वि० राधावल्लभी सम्प्रदाय की दृढ़ रसिक अनन्यता का विवरण, दे० (ज—१००)

अनरुद्धसिंह—अजबसिंह के पुत्र, चौधरी, आगरा निवासी, जाति के खत्री, कुशलमिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (क—५७)।

अनरुद्धसिंह (राना)—कुशराय के पिता। दे० (क—८१)

अनरुद्धसिंह—रणजीतसिंह के पिता। दे० (छ-१०२)

अनवरखाँ—रहतगढ़ राज्य भूपाल के पठान सुलतान मन्नाव मुहम्मद खाँ के कनिष्ठ भ्राता और शुभकरन कवि के आश्रयदाता थे। दे० (क—३१) (छ—१३०)

अनवरचंद्रिका—शुभकरन कवि कृत, नि० का० सं० १७१४, लि० का० स० १८५८, वि० बिहारी सतसई पर कुंडलियों में टीका, कवि ने यह टीका अपने आश्रयदाता अनवरखाँ के नाम पर की। दे० (क—३१) (छ—१३०) (ग्रंथ कर्त्ता के नाम में भूल है)

अनाथदास—उप० अनाथनाथ, सं० १७२६ के लगभग वर्तमान, मौनी बाबा के शिष्य थे।

रामरत्नावली दे० (छ—१२६ए)
विचारमाला दे० (छ—१२६ बी)
(छ-२६५) (ज-७)

अनुभव आनन्द सिंधु—सदारामकृत, लि० का० स० १८७३, वि० संसार-उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय भेद। दे० (ज—२७२ सी)

अनुभव-तरंग—अक्षर अनन्य कृत, लि० का० स० १९१२, वि० आत्मज्ञान। दे० (छ-२ ए)

अनुभव पर पदर्शनी टीका—महाराज विश्वनाथ सिंह कृत, नि० का० सं० १८९१, लि० का० स० १९०५, वि० कबीरदास की १२ पुस्तकों आदि मंगल, बीजक, रमैनी, शब्द, ककहरा, बसंत चौंतीसी, विप्र चौंतीसी, बेलि, चाँचरि, हिंडोल, बिरहली और साखी पर टीकायें। दे० (ख-२२)

अनुभव प्रकाश—महाराज जसवंतसिंह कृत, वि० ईश्वर माया निर्णय। दे० (ख-३२) (ग-१५)

अनुराग-बाग—दीनदयाल गिरि कृत नि० का० सं० १८८८ लि० का० स० १८६२. वि० राधा-कृष्ण विहार। दे० (ङ-४०)

अनुरागलता—ध्रुवदास कृत वि० राधाकृष्ण का प्रेम-वर्णन। दे० (ज-७३ जी)

अनुरागसागर—कबीर कृत, लि० का० सं० १८४७ वि० ज्ञान, उपदेश। दे० (ज-१४३ एफ) (छ-१७७ के) लि० का० सं० १६२०।

अनूपगिरि हिम्मत बहादुर—ये एक राजा थे कवि पद्माकर भट्ट के आश्रयदाता थे। दे० (च-४२)

अनूपगिरि हिम्मत बहादुर की विरुदावली—कवि पद्माकर भट्ट कृत, वि० राजा अनूपगिरि हिम्मत बहादुर का यश और शौर्य वर्णन। दे० (च-४२)

अनूप प्रकाश—(अज्ञात) वि० अनूपगिरि उप० हिम्मत बहादुर का इतिहास। दे० (च-६२)

अनूपरास—श्रीपति कृत, नि० का० सं० १७७७, लि० का० सं० १८७४; वि० काव्य का भेदाभेद। दे० (ज-३०४ बी)

अनूपसिंह—बीकानेर नरेश महाराज कर्णसिंह के पुत्र, लालचन्द कवि के आश्रयदाता। दे० (ग-७६)

अनेकार्थ नामावली—(अज्ञात) वि० कोष। दे० (ग-६६) (शायद जोधपुर निवासी जालंधर-नाथ के किसी भक्त ने रची।)

अनेकार्थ मंजरी नाममाला—नंददास कृत. वि० कोष। दे० (ग-५८) (ज-२०८ डी)

अनेमानंद—सं० १८३७ के लगभग वर्तमान।

नाटकदीप अर्थात् पंचदशी भाषा। दे०(ख-४६)

अपरोक्ष-सिद्धांत—(महाराज) जसवंतसिंह कृत; लि० का० स० १७८४। वि० कर्म और आत्म-तत्व विचार। दे०(ख-७१) (ग-१४)

अब्दुर्रहमान—फर्रुखसियर के समकालीन और मनसबदार, सं० १७७० के लगभग वर्तमान; उप० प्रेमी।

नखशिख दे० (ग्र-५०)

अब्दुर्रहीम (खानखाना)—जन्मकाल सं० १६१३; अकबर के दरबारी; उप० रहीम, बाण कवि के आश्रयदाता। (छ-१२४)।

बरवै नायिका भेद दे० (ज-१)

अब्दुलहादी (मौलवी)—सं० १६१० के लगभग वर्तमान, ऋतुराज कवि को गुलिस्ताँ का हिंदी अनुवाद करने में सहायता दी, जिसका नाम वसंतबहार नीति है।

वसंतबहार नीति दे० (ङ-१)

अभयराम—कुलपति मिश्र के पूर्वज छठवीं पीढ़ी पूर्व आगरा निवासी। दे० (क-७२)

अभयसिंह—जोधपुर नरेश, राज्य का० सं० १७८१-१८०५, कवि माधोराम के आश्रयदाता। दे० (ग-४३) रसचंद, सेवक, प्रयाग, मुं० माधो-राम, मुं० माईदास, भीवा सावंतसिंह, रतनू वीरभाण, देवीचंद महात्मा, सेवक प्रेमचंद, शिवचंद, अनंदराम, गुलालचंद, (ग—७२) (ग—८१) रसपुंज भी इन्हीं के समय में वर्तमान, (ग-४०) यह अपने पिता को मारकर गद्दी पर बैठे (ख-१०५), कविकरणीदान भीमचंद, पृथ्वीराज के आश्रयदाता।

अभिप्राय दीपक—शिवलाल पाठक कृत; नि० का० स० का दोहा स्पष्ट नहीं, लि० का० सं० १६२५; वि० रामायण की संक्षेप कथा। दे० (छ-११२)

सभिमान [illegible]—[illegible] कृत, लि० का० सं० १९४३, वि० [illegible] ग्रंथ [illegible]। दे० (ज-३६ बी) (ज-४१ बर) इस नाम से मूल है।

सदिनाम [illegible]—[illegible] कृत, वि० [illegible] व [illegible] और [illegible]। दे० (ज-१४१)

सदनसिंह—[illegible] राजा [illegible] के पुत्र, [illegible] सिंह द्वारा [illegible], कवि [illegible] सं० १९१८ में [illegible]। दे० (च-८३) (ट-४१) (ट-४३)

सदाकीर्ति—[illegible] भट्ट [illegible] निवासी कृत [illegible] नाम [illegible] ग्रंथ, लि० का० सं० १८३०, वि० [illegible] का अनुवाद। दे० (च-७) (ज-१६ ए)

सदाकाम [illegible]—[illegible] मिश्र कृत, लि० का० सं० १७१४, लि० का० सं० १८११, वि० [illegible] का हिन्दी अनुवाद। दे० (ज-११३)

सदार्चिका—[illegible] मिश्र कृत, लि० का० सं० १७११ १७१४, लि० का० सं० १८६३ [illegible] १८५०, वि० [illegible] की टीका। दे० (ट-३४१ ए) (ज ३१४ बी)

सदार्चिका—[illegible] कृत, वि० [illegible] की टीका। दे० (छ-३ ए)

सदानन्द—[illegible] व [illegible] के पुत्र [illegible] के शिष्य, सं० १८१३ के पूर्व [illegible]। दे० (ट-३३६) (ज-३६८)

सदानन्द—[illegible] का० सं० १७१४, [illegible] ग्रंथ कवि के [illegible] दिया है।

[illegible]। दे० (छ १६१)

सदानन्द—[illegible] लि० का० सं०

१८३४, लि० का० सं० १९०३ वि० [illegible] का अनुवाद। दे० (घ-३४) (ब-८९)

सदाशुन—[illegible] कृत, लि० का० सं० १९१६, वि० [illegible]। दे० (ट-१३३ डी)

सदानीर [illegible]—[illegible] कृत वि० [illegible]। दे० (छ-१४३ एफ)

सदाराम—[illegible] कृत लि० का० सं० १५४२, वि० [illegible]। दे० (ज-५५ ए)

सदासिंह—[illegible] निवासी, [illegible] सं० १८२० में जन्म और सं० १८८३ में मृत्यु।

[illegible] दे० (छ-३)

[illegible] दे० (छ-३ ए)

सदासिंह (राजा)—[illegible] सं० १११३ के लगभग [illegible], सं० १८३१ में [illegible] (राजपूत) [illegible] और [illegible] के [illegible] में [illegible]। वे [illegible] कवि के [illegible] थे। दे० (क १४)

सदासिंह—राजा [illegible] के भाई और [illegible] के शिष्य, [illegible] (बुंदेलखंड) निवासी, सं० १८११ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ-११६)

सदासिंह—[illegible] के शिष्य [illegible], सं० ११०१ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ट-३१)

सदासुखलाल—[illegible] कृत, लि० का० सं० १९१८ लि० का० सं० १८०८, वि० [illegible] के १०८ [illegible] का अनुवाद। [illegible] सिंह को [illegible] और [illegible]

छप्पय में राम तथा अमरेश की प्रशंसा है। दे० (घ—१)

अमान—गुमान कवि के भाई, महोबा निवासी; सं० १८३८ के लगभग वर्तमान। दे० (च-२३)

अमीर—मुसलमान कवि, संभवतः १६ वीं शताब्दी में बुंदेलखंड के किसी राजा के आश्रित थे।

रिसाला तीरदाजी दे० (छ—४)

अमीरखाँ—टोंक के नवाब, इनसे और जयपुर महाराज जगतसिंह के सेनापति चाँदसिंह गोगावत से, जो कि कवि चेतराम के आश्रयदाता थे, युद्ध हुआ था। दे० (ख—८३)

अमीरखाँ—यह देहली के बादशाह मुहम्मदशाह के कृपापात्र सं० १७८८-१८०० तक इलाहाबाद के सूबेदार थे; और देव कवि के आश्रयदाता थे। दे० (घ-१५५)

अमीरदास—सं० १८८७ के लगभग वर्तमान; इन्होंने साध सरोवर के किनारे पुस्तकें निर्माण कीं, संभवतः ये बुंदेलखंड के व हर भूपाल के निवासी थे।

सभा मदन दे० (छ-१२४ ए)
दूषणोल्लास दे० (छ-१२४ बी)

अमृतधारा—भगवानदास निरजनी कृत, नि० का० सं० १७२२; लि० का० स० १६०४ और १६२६, वि० वेदांतिक आत्म सिद्धांत। दे० (छ-१३६)

अमृतसंजीवनी—ठाकुर बाबा साहब मुजुमदार नेपाली कृत, लि०का० सं० १६५६, वि० वैद्यक। दे० (ज-१२ बी)

अयोध्याकांड—(रामायण) गोस्वामी तुलसीदास कृत; यह प्रति उनके निज कर की लिखी हुई राजपुर (बांदा) में सुरक्षित है; वि० रामकथा। दे० (ख-२८)

अयोध्याकांड राम रसायन—कवि पद्माकर भट्ट कृत, वि० वाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड का पद्यमय अनुवाद। दे० (ख-२)

अयोध्याप्रसाद—राजकिशोर लाल के पिता; घनश्यामपुर (जौनपुर)निवासी। दे०(ज-२४२)

अयोध्याबिंदु—रामदेवकृतः वि० रामचरित वर्णन। दे० (ज-२४६)

अयोध्या माहात्म्य—उमापति कृत, नि० का० स० १६२४; लि० का० सं० भी यही, वि० अयोध्या का माहात्म्य। दे० (ख-३१)

अरिमर्दनसिंह—एक राजा; सं० १८११ के लगभग वर्तमान· हरिदास कवि के आश्रयदाता थे। दे० (ङ-७२)

अरिल्ल—चद जू गोसाईं कृत लि० का०सं०१७८६; वि० कृष्णगोपियों का प्रेम वर्णन। दे० (छ-१६)

अरिल्ल भक्तमाल—व्रजजीवनदास कृत,वि० भक्तों का माहात्म्य वर्णन। दे० (ज-३४ बी)

अरिल्लाष्टक—महाराज सावन्तसिंह उप० नागरीदास कृत। दे० (ख-१२१ ग्यारह)

अरिल्लें—राजा पृथ्वीसिंह कृत, वि० सात्विकप्रेम। दे० (छ-८५ एल)

अरिल्लें—प्रेमदास कृत, वि० सदाचार वर्णन। दे० (छ-२०६ बी)

अर्क प्रकाश—(अज्ञात) वि० रावण कृत वैद्यक अर्क प्रकाश संस्कृत का अनुवाद। दे० (ङ-१०४)

अर्जनामा—कबीरदास कृत; वि० विनय प्रार्थना। दे० (ज-१४२ जी)

अर्जुन—सं० १८८० के लगभग वर्तमान, नरवर राज्य ग्वालियर के राजा माधोसिंह के दरबार में थे।

मर्दुमशुमार दे० (छ-१३१)

अर्जुन—उप० ललित,

अर्जुन के कवित्त दे० (अ-६)

अर्जुन के कवित्त—अर्जुन (ललित) कृत, वि० महाभारत के योद्धाओं का पराक्रम वर्णन। दे० (अ-६)

अर्जुनसिंह—लछमनसिंह प्रधान के आश्रयदाता थे, दे० (छ-६६)

अर्जुनसिंह—बनारस निवासी, किसी नारायण के शिष्य।

कृष्ण रास दे० (अ-१०)

अर्बुद विलास—राजा बेनीसिंह कृत,लि० का० सं०१८१४, वि० वैद्यक ग्रंथ। दे० (छ-२८ ई)

अलंकार—ग्वाल कवि कृत, वि० अलंकार, यह र० की निज हस्त लिखित लिपि से नोटिस किया गया है। दे० (च—१२)

अलंकार आशय-उत्तमचन्द्र भंडारी कृत, वि० अलंकार, यमक, ध्वनि आदि। दे० (ग-१८)

अलंकार चंद्रोदय-रसिक सुमति कृत, नि० का० सं० १७८५, लि० का० सं० १९६१, वि० अलंकार वर्णन। दे० (अ—२६५)

अलंकार चिंतामणि-प्रतापसिंह कृत, नि० का० सं० १८९४, लि० का० सं० १८९४, स्वयं कवि की हस्त लिखित, वि० अलंकार। दे (छ-९१६)

अलंकार-दर्पण-हरिनाथ कृत, नि० का० सं० १८२७, लि० का० सं० १९१४, वि० अलंकार। दे० (छ—१७० ए)

२

अलंकार दर्पण—हरिदास कृत, नि० का० सं० १८९८; लि० का० सं० १९५४, वि० अलंकार। दे० (छ—१६ सी)

अलंकार दर्पण—रतन कवि कृत, नि० का० सं० १८२७, लि० का० सं० १९०१, वि० अलंकार। दे० (छ-१०३)

अलंकार दीपक—शम्भूनाथ मिश्र कृत, लि० का० सं० १८५६, लि० का० १९५८, वि० अलंकार। दे० (क-२७) (छ-२३३)

अलंकार निधि—युगल किशोरी भट्ट कृत, नि० का० सं० १८०१, वि० अलंकार। दे० (अ-१४२)

अलंकार माला—सूरतसिंह कृत, नि० का० सं० १७६६, लि० का० सं० १८०५, दूसरी प्रति लि० का० सं० १८१६, वि० अलंकार। दे० (घ-१०४)

अलंकार मुक्तावली—महाराज धीरसिंह कृत,लि० का० सं० १९०८, वि० अलंकार। दे० (घ-३५)

अलंकार रत्नाकर—दलपतिराय कृत, नि० का० सं० १८९८, वि० अलंकार। दे० (क—१३)

अलंकृत माला—शंकर दयाल कृत, वि० अलंकार। दे० (अ-२८०)

अलखबानी—मलूकदास कृत, वि० ब्रह्मज्ञान वर्णन। दे० (छ-१९४ डी)

अलाउद्दीन (खिलजी)—खिलजी वंश का सब से प्रसिद्ध सम्राट्, इसने चित्तौर के राजा रत्नसेन से पद्मावती रानी के लिये युद्ध किया जिसमें गोरा, बादल नामक वीरों ने बड़ा पराक्रम दिखलाया। अंत में राजा रत्नसेन मारा गया और उसकी रानियाँ पद्मावती तथा नागमती सती हो गईं और अलाउद्दीन पद्मावती को प्राप्त न कर सका। दे० (क-५४)

अलायारखाँ—सुखदेव मिश्र के आश्रयदाता. सं० १७४० के लगभग वर्तमान थे। दे० (ज-२७४)

अलिफ नामा (१)—कबीरदास कृत; वि० ज्ञान उपदेश। दे० (ज-१४२ डी)

अलिफ नामा (२)—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज-१४३ ई०)

अलिरसिक गोविंद—जयपुर निवासी, अंत में वृंदावन में रहे, पिता का नाम शालिग्राम, भाई का बालमुकंद और गुरु का हरि व्यास था, सं० १८५७ के लगभग वर्तमान।

गोविंदानंदघन दे० (छ-१२२ ए)
अष्टदेश भाषा दे० (छ-१२२ बी)
युगलरस माधुरी दे० (छ-१२२ सी)
कलियुग रासो दे० (छ-१२२ डी)
पिंगल ग्रंथ दे० (छ-१२२ ई)
समय प्रबंध दे० (छ-१२२ एफ)
श्री रामायण सूचनिका दे० (छ-१२२ जी)

अली बहादुरखाँ—नवाब जुलफिकारखाँ के पिता, सं० १८०३ के पूर्व वर्तमान, बुंदेलखंड के शासक थे। दे० (क-२०)

अलीमुहिब्बखाँ—उप० प्रीतम कवि, स० १८८७ के लगभग वर्तमान; आगरा निवासी, एक समय यह दिल्ली गए थे, रास्ते में पानी बरसने से इनके साथी पीछे रह गए और उस रात को खटमलों ने इन्हें बहुत तंग किया; इसी पर इन्हों ने खटमलों पर कविता रची।

खटमल बाईसी, दे० (ग-७०)

अवतारगीता—अन्य नाम अवतार-चरित्र. नरहरि दास कृत, लि० का० सं० १८५८, वि० चौबीस अवतारों का वर्णन। दे० (ज-२१०) (ग-८८)

अवतार चेतावनी—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० ईश्वर अवतार का वर्णन। दे० (छ-१०० जे)

अवधविलास—लालदास कृत. नि० का० सं०१७००, वि० रामचंद्र जी का वनवास काल तक का वर्णन। दे० (ख—३२) (छ-१६०) सं० में भूल है। (ज—१६६)

अवधूतभूषण—देवकीनंदन कृत, नि० का० स० १८५६ लि० का० स० १८४? वि० अलंकार। दे० (ज—६५ बी)

अशरफ़ जहाँगीर—मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु। दे० (क-५४)

अशरफ़ जहाँगीर (सैयद)—कड़ा (इलाहाबाद) निवासी, बारण कवि के गुरु। दे० (ङ-७६)

अश्वमेध पर्व—घनश्यामदास कृत, नि० का० सं० १८६५; लि० का० सं० १९१४, वि० अश्वमेध पर्व संस्कृत का भाषानुवाद। दे (छ-२६ ए)

अश्वमेध पर्व—मानसिंह त, नि० का० सं० १६९२; लि० का० सं० १८३९ वि० राजा युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ की कथा। दे० (ज—१८९)

अष्टक—रामकृष्ण चौबे कृत, लि० का० सं०१९५३, वि० कृष्ण द्वारा भक्तों की रक्षा का वर्णन। दे० (छ—१०० के)

अष्टजाम—मान (खुमान) कृत, नि० का० सं० १८५२; लि० का० सं० १८७८, वि० चरखारी के राजा विक्रम साह की प्रतिदिन की दिन-चर्य्या। दे० (छ-७० जे)

अष्टजाम—अग्रअली कृत, लि० का० सं० १९३२, वि० राम जानकी की आठ पहर की दिन-चर्य्या। दे० (ज-२)

अष्टजाम—रूप मंजरी कृत, वि० राधाकृष्ण की आठ पहर की दिन-चर्य्या। दे० (ज-२६१)

अष्टजाम—देवकवि (देवदत्त) कृत, लि० का० सं० १८८४, वि० राधाकृष्ण की आठ पहर की दिन-चर्य्या, दे० (क-५३) लि० १६११, लि० १८१५, दे० (घ-१३८)

अष्टजाम—हरिआचार्य कृत, लि० का० सं० १६०३, वि० सीताराम की दिन-चर्य्या। दे० (छ-२६२)

अष्टजाम—कृपानिवास कृत, लि० का० सं० १८६४, वि० सीताराम की आठ पहर की दिन-चर्य्या। दे० (ज-२७६)

अष्टजाम का आह्निक—महाराज विश्वनाथसिंह कृत, लि० का० सं० १८८६, वि० सीताराम की दिन-चर्य्या। दे० (घ—४) (क—४२)

अष्टदेश भाषा—अलि रसिक गोविंद कृत, वि० राधाकृष्ण का आठ भाषाओं में शृङ्गार-वर्णन। दे० (छ—१२२ बी)

अष्टांगयोग—नानक गुरु कृत, वि० योगाभ्यास। दे० (छ—१६६)

अष्टांगयोग—चरणदास कृत, लि० का० सं० १६४१, वि० योग। दे० (ज—१७)

अष्टावक्र—मोहन कवि (सहज सनेही) कृत, लि० का० सं० १६६७, लि० का० सं० १७१४, वि० तत्व विचार, मायावाद और अद्वैत वेदान्त। दे० (ज—४)

अस्करणगिरि—कुँवर अस्करणगिरि, राजा हिम्मत बहादुर के शिष्य, गुसाईं समाज के नेता और धार्मिकाचार्य, सं० १६०५ के लगभग वर्तमान। रत्नमोदक दे० (ज-३२)

अहिल्या पूर्व प्रसंग—बारहट नरहरिदास कृत, वि० गौतम पत्नी अहिल्या की कथा। दे० (ग-५०)

आचाराम—एक जैनी आचार्य, सं० १७१५ के लगभग वर्तमान, नागौर (पंजाब) निवासी थे। शिक्षासार ग्रन्थ, दे० (क-१०३)

आचार्य जी महाप्रभून की द्वादश निज वार्ता—हरीराय कृत, वि० वल्लभ संप्रदाय के आचार्य की कथा। दे० (ज—११५ ए)

आचार्य जी महाप्रभून की निज वार्ता तथा घरू वार्ता—हरीराय कृत, वि० वल्लभ संप्रदाय की अन्तरंग बातें। दे० (ज—११५ सी)

आचार्य जी प्रभून के सेवक चौरासी वैष्णव तिनकी वार्ता—हरीराय कृत, वि० वल्लभ संप्रदाय के चौरासी शिष्यों की कथा। दे० (ज—११५ बी)

आजमखाँ—आजमगढ़ संस्थापक, हरिजूमिश्र सभाचन्द्र के आश्रयदाता, सं० १७८१ के लगभग वर्तमान, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के आश्रित, (ज—११२) (ज—२७०) भ भार दर्पण दे० (ज—११)

आजम शाह—दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के पुत्र और नेवाज कवि के आश्रयदाता। दे० (घ—७५)

आठों सासिक—सुखसखी कृत, लि० का० सं० १८५१, वि० राधाकृष्ण के हाव भाव वर्णन। दे० (ज—३०६ बी)

आतम—इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं। हरिरस दे० (ग—३६)

आतमप्रबोध—वेंकटेश स्वामी कृत, लि० का० सं० १६५०, वि० आत्मज्ञान। दे० (छ—२४१)

आत्म-संबंध दर्पण—जनक राजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १६३०, वि० ज्ञान उपदेश। दे० (ज—१३४ ई)

आत्मानुशासन—टोडरमल कृत, नि० का० सं० १८१८, लि० का० सं० १८२७; वि० गुणभद्र स्वामी के अध्यात्म-विषयक संस्कृत ग्रंथ की टीका। दे० (क—१३४)

आदित्य कथा वड़ी—भाऊ (दास) कृत; लि० का० सं० १७६५; वि० पार्श्वनाथ कथित जैन मतानुसार सूर्य नारायण के व्रत की कथा। दे० (क—११४)

आदि मंगल—विश्वनाथसिंह कृत, वि० कबीरदास के बीजक की टीका। दे० (ज०-३२६ प)

आनंद—उप० अनद; दे० (घ—३७)

आनंद (कवि)—उप० अनंद।

कोकसार (कोक मजरी) दे० (छ—१२६) (ग—५)

आनंद अनुभव—आनद कृत, नि० का० सं० १८४२; वि० उपासना-युक्त आत्म-ज्ञान। दे० (घ—३७)

आनंदघन—कायस्थ, जन्म का० स० १७१५, मृत्यु का० सं० १७९६, देहली के बादशाह मुहम्मद शाह के आश्रित, अंत समय वृंदावन चले गए और नादिरशाह के हमले में मारे गए। यह गान विद्या में भी निपुण थे। रीवाँ नरेश रघुराजसिंह ने अपने भक्तमाल में इनका वर्णन किया है। उप० घनानंद। दे० (क—७६)

आनदघन के कवित्त दे० (छ—१२५) (क—७६)

सुजान सागर दे० (क—७६)

रसकेलि बल्ली (कवित्त संग्रह) दे० (क—७६)

कृपाकद निबध दे० (घ—६६)

आनंदघन के कवित्त—अन्य नाम रसकेलि बल्ली; आनदघन कृत; वि० ईश्वरीय प्रेम के कवित्त। दे० (क—७६) (छ—१२५)

आनंद दशा विनोद—ध्रुवदास कृत वि० राधा कृष्ण विहार लीला भजन माहात्म्य। दे० (क—१३छ) (ज—७२ सी)

आनंद मंगल—मनीराम कृत, लि० का० सं० १८२६, वि० दशमस्कंध भागवत का अनुवाद। दे० (छ—२६०)

आनंद मसीह—ये पहले ब्राह्मण थे, सं० १८८० में ईसाई हो गए; इनके अन्य कुटुंबी अपने पहले धर्म में ही रहे; इनके पुत्र ने यंत्रराज विवरण नामक ज्योतिष ग्रंथ रचा। दे० (ख—५१)

आनंद-रघुनंदन नाटक—विश्वनाथसिंह महाराज कृत, लि० का० सं० १८८७, वि० रामचंद्र जी का वर्णन। दे० (छ—२४६) (ङ—३८)

आनंदराम—सं० १७६१ के लगभग वर्तमान।

भगवद्गीता भाषा दे० (ख—८४) (छ—१२७)

परमानद प्रबोध दे० (छ—१२७)

आनंदराम—दे० "अनंदराम"। (ख—५६)

आनंद रामायण—महाराज विश्वनाथसिंह कृत; इसमें बालकांड नहीं है। शेष कांडों का लि० का० सं० १८८० -१८६०, वि० रामचरित्र वर्णन। दे० (ख—६)

आनंदलता—ध्रुवदास कृत; वि० राधाकृष्ण विहार। दे० (ज—७२ डी)

आनंदलहरी—कृष्णगिरि कृत; वि० दुर्गा की वंदना। दे० (ज-१४८)

आनंदविलास—जसवंतसिंह कृत; लि० का० स० १७२४; वि० वेदांत अद्वैतवाद। दे० (क-७१) (ग-१७)

आनंदाम्बुनिधि—महाराज रघुराजसिंह कृत; लि० का० स० १६११; वि० भागवत का भाषानुवाद। दे० (घ-१७)

आयुर्वेदविलास—राजा देवीसिंह कृत; लि० का० स० १६०७; वि० वैद्यक। दे० (छ-२८ बी)

आरण्यकांड रामरसायन—पद्माकर भट्ट कृत; लि० का० स० १८७४; वि० वाल्मीकीय आरण्यकांड का भाषानुवाद। दे० (ज-२)

आरती—कबीरदास कृत; वि० गुरु की आरती उतारने की रीति। दे० (ज-१४३ एच)

x आरामचंद्र—यह पंडितजी काशी-निवासी थे और मनियार इनकी गुरु-भाव से सेवा करते थे। दे० (घ-४७)

आलमकवि—स० १७१२ के लगभग वर्तमान; पहले हिंदू थे, एक मुसलमान स्त्री पर जिसका नाम शेख था, आसक्त होने के कारण मुसलमान हो गए; बादशाह औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम के आश्रित थे; पश्चात् बहादुरशाह के पास रहे।

आलमकेलि दे० (घ-३३)

आलम कवि की कविता दे० (ज-२)

माधवानल कामकंदला दे० (छ-६)

आलम कवि की कविता—आलम कवि कृत; वि० विविध विषयों के छन्द। दे० (ज-२)

आलमकेलि—आलम कवि कृत; लि० का० स० १७१३; वि० राधाकृष्ण लीला। दे० (घ-३३)

आल्हा भारत—नवलसिंह (प्रधान) कृत; लि० का० स० १६२२; लि० का० सं० १६२३; वि० भारत के युद्ध का वर्णन। दे० (छ-७६ आ)

आल्हा रामायण—नवलसिंह (प्रधान) कृत; लि० का० सं० १६२२; लि० का० स० १६२३; वि० रामायण का आल्हा छंद में अनुवाद। दे० (छ-७६ एल)

आल्हासिंह—पटियाला नरेश; स० १८६७ के लगभग वर्तमान; कवि चंद्रशेखर के आश्रयदाता। दे० (घ-१०२)

आसकरण—शंभूदत्त जोशी के वंशज; जोधपुर कौंसिल के मेम्बर हैं। दे० (ग-३५)

इंद्रजीतसिंह—ओड़छा (बुंदेलखंड) नरेश राजा मधुकर शाह के कनिष्ठ पुत्र; केशवदास कविराज के आश्रयदाता। दे० (क-५२) (छ-५८) (घ-८६)

इंद्रमाण—कवि श्यामराम के पिता। दे० (ग-८०)

इंद्रामती—कवि प्राणनाथ की पत्नी; स० १७०७ के लगभग वर्तमान; यह दम्पति धामी (प्रनामी) संप्रदाय के आचार्य पन्ना (मध्य भारत) में रहते थे।

परावली दे० (ज—२२५)

इंद्रावत—नूरमुहम्मद कृत; लि० का० स० १७६६; लि० का० स० १६५६; वि० राजा कुमार और रानी इंद्रावती की कथा। दे० (ग—१०६)

इच्छाराम—लखनपुर (अवध) निवासी; स० १८२२ के लगभग वर्तमान।

ब्रज मेमावली दे० (ज—१२१ ए)

शालिहोत्र दे० (ज—१२१ बी)

इच्छाराम—ब्राह्मण; रामानुज संप्रदाय के वैष्णव;

सं० १८४७ के लगभग वर्तमान।

गोविंद चंद्रिका दे० (छ—२६३ ए)

हनुमत पचीसी दे० (छ—२६३ बी)

इतिहास भाषा—अन्य नाम इतिहास सार समुच्चय; लालदास कृत, नि० का० सं १६४. लि० का० स० १७४०, वि० महाभारत का सारांश। दे० (ग—२६) (ए—१०) लि० का० सं० १८३३।

इतिहास सार समुच्चय—अन्य नाम इतिहास भाषा लालदास कृत दे० "इतिहास भाषा"। (ख—१०), (ग-२६)

इश्कचमन—महाराज सावतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० प्रेम प्रशसा वर्णन। दे० (ख—१३१)

इश्कमाल—अन्य नाम मॉझ मक्तिमाल ब्रजजीवनदास कृत, वि० भक्तों का माहात्म्य वर्णन। दे० (ज—३४ आई)

ईश्वरदास—रसिक सुमनि के पिता· स० १७८५ के पूर्व वर्तमान। दे० (ज—२६५)

ईश्वरपचीसी—पद्माकर भट्ट कृत नि० का० स० १८७२; लि० का० सं० १८९३· वि० ईश्वर का ध्यान। दे० (ख—८५)

ईश्वरीप्रसाद—काशी-नरेश, पूरा नाम महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह; राज्य-का० सं० १८९२—१९४६, काष्ठजिह्वा स्वामी उप० देह के शिष्य। दे० (छ—१७९) (ख—१४) दे० (घ—९२) (ङ-१४) (ज-२८२) सरदार कवि के आश्रयदाता, दे० (ज—२८२) गणेश कवि व दर्शनलाल के आश्रयदाता; इनके कहने से महाराज रघुराजसिंह ने राम-स्वयंवर ग्रंथ की रचना की। दे० (ख-७) (ज—८३) (ज—५६)

उग्रगीता—कबीरदास कृत, लि० का० सं० १८३६, वि० कबीर और धर्मदास के आत्मिक विषय पर प्रश्नोत्तर। दे० (छ—१७७ एच)

उग्रज्ञान मूल सिद्धांत दशमात्रा—कबीरदास कृत लि० का० सं० १९१८ वि० ज्ञान सिद्धांत। दे० (छ—१७७ एल)

उत्कंठ माधुरी—चंद्रलाल कृत, नि० का० सं १८३५ वि० राधाकृष्ण विहार वर्णन। दे० (ज—४३ बी)

उत्कंठा माधुरी—माधुरीदास कृत, नि० का० सं० १६८७, वि० कृष्णलीला। दे० (ग-१०३ डी)

उत्तम काव्य प्रकाश—महाराज विश्वनाथसिं कृत, नि० का० सं० १८९६; लि० का० सं० भी वही है; वि० व्यंग्य काव्य। दे० (घ-५२)

उत्तमचंद—जन्म का० सं० १८३३, मृत्यु का० सं० १८६४, राजा मानसिंह के मुतसद्दी, जोधपुर नरेश महाराज भीमसिंह के दीवान।

अलंकार आशय दे० (ग—१८)

नाथचंद्रिका दे० (ख—६६)

तारकतत्व दे० (ख—६६)

रतना हम्मीर की बात दे० "

नीति की बात दे० "

उत्तमचरित्र—अक्षर अनन्य (अनन्य) कृत, लि० का० सं० १९५३; वि० दुर्गा सप्तशती का हिंदी अनुवाद। दे० (छ—२ एच)

उत्तमदास (मिश्र)—हीरामणि मिश्र के पुत्र।

स्वरोदय दे० (छ—२४० ए)

शालिहोत्र दे० (छ—२४० बी)

उचमनीतिचंद्रिका—अन्य नाम भुवायक नीति महाराज विश्वनाथसिंह कृत, लि० का० स० १६०४, वि० आचार और नीति का वर्णन। दे० (छ—२४६ प)

उत्सवमाला—महाराज नागरीसिंह (नागरी दास) कृत, लि० का० स० १६४२, वि० राधा कृष्ण के सर्वोत्सव का राग रागिनियों में वर्णन। दे० (ज—११०)

उदय—कदाचित् उदयनाथ कवींद्र का उप० बानपुरा (व्राप) निवासी, स० १७७७ के लगभग वर्तमान, कालीदास त्रिवेदी के पुत्र, दूल्हा कवि के पिता।

सोमचीना दे० (क-६८)

विनोद चंद्रिका दे० (घ-११८)

रसचंद्रोदय दे० (छ-२४६) (च २)

दूल्हा कवि के पिता दे० (घ-४२)

दे० (ज-७७) १० (च-३)(छ-१६८)

उदाहरण मंजरी—एल्लूभाई कृत, नि० का० स० १८३१, लि० का० स० १८४०, वि० अलकार दे० (ज-१३३)

उदित कीर्ति प्रकाश—प्रजलाल कवि कृत, नि० का० स० १८३६, लि० का० स० यही है, वि० काशीनरेश उदितनारायणसिंह का यश-वर्णन। दे० (घ-६२)

उदित नारायणसिंह—काशी-नरेश, स० १८४२ १८६२, महाराज परिचतसिंह के पुत्र, निम्न लिखित कवियों के आश्रयदाता—

दे० (घ-१५) गोकुलनाथ कवि,

मणिदेव और गोपीनाथ (ट-२५)

दे० (घ-४६) ब्रह्मदत्त कवि

दे० (घ-६३) प्रजलाल कवि

दे० (ज-२४६) राममहाय कवि

दे० (घ-२४) गणेश कवि

दे० (ट-२६) मुकुन्दलाल कवि।

गीतगोविंद, दे० (ट-१०६)

उद्योतसिंह—माडछा नरेश; स० १७४६-१७६२, कुँवर पृथ्वीराज के पिता, दे० (घ-१८) आश्रय दाता—

दे० (छ-११) वली कवि

दे० (छ-२५) धमराम कवि

दे० (छ-६२) काशिर कवि (चंद्रमणि)।

उपदेशारि—ठाकुर बाबा साहब मुजुमदार कृत, लि० का० स० १६५१, वि० वैद्यक। दे० (ज-१२)

उपदेश अष्टक—दामोदर देव कृत, लि० का० स० १६२५, वि० आचारिक उपदेश। दे० (छ-२४ सी)

उपदेश दोहा—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० स० १६१७, वि० उपदेश। दे० (ज-१२३ जे)

उपनिषद् भाष्य—(अज्ञात) नि० का० स० १७७३, लि० का० स० १८६६, यह पुस्तक दारा शिकोह की आज्ञा से संस्कृत से फारसी में सं० १७१२ में अनुवाद कराई गई, उसी का यह हिंदी अनुवाद है। वि० उपनिषदों का अनुवाद। (१) उपनिषद् को पढना (२) शुक्लोपनिषद् (३) शिवसंकल्पोपनिषद् (४) शतरुद्री उपनिषद् (५) मैत्रायणी (६) बृहदारण्यक (७) कराली (८) पडमली (६) मुण्डक (१०) कठोपनिषद् (११) कैवल्य (१२) अमृतबिंदु (१३) अथर्वशिर (१४) आत्मप्रबोध (१५) सर्वोपनिषद् (१६) नीलरुद्र (१७) तेजोबिंदु (१८) हंसोपनिषद् (१६) अथर्वशिखा (२०) नृसिंह तापनीय उपनिषद्। दे० (ज-३३) (ट-४१)

उपमालंकार नखशिख वर्णन—बलबीर कृत, वि० नखशिख की शोभा वर्णन। दे० (ग–२७)

उपलंभ शतक—अन्य नाम उपालंभशतक, रसरूप कृत, लि० का० स० १८८६; वि० ऊधो और गोपियों का संवाद। दे० (ज–२६१)

उपवन-विनोद—भोजकवि कृत, नि० का० सं० १८८४, लि० का० सं० १६०४; वि० बागबानी, शार्ङ्गधर के कुछ हिस्सों का अनुवाद। दे० (छ–१५ बी)

उपसुधानिधि—चदहित कृत, नि० का० सं० १८३५; वि० राधा जी की वंदना। दे० (ज–३६ ए)

उपाख्यानविवेक—पहलवानदास कृत; नि० का० सं० १८६५, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज-२२१)

उपालंभ शतक—रसरूप कृत; लि० का० सं० १८८६; वि० उद्धव और गोपियों का सम्वाद। दे० (ज–२६१)

उमराव-कोष—सुवंस कवि कृत, नि० का० स० १८६४, लि० का० सं १६४८, वि० कोष। दे० (च—८८)

उमरावगिरि—कुँवर सरफ़राज गिरि के, जो कि कवि देवकीनंदन के आश्रयदाता थे, पिता। द० (ख—५७)

उमरावसिंह—चौधरी शिवसिंह के पुत्र· विश्वनाथ पुरानरेश, सं० १८६४ के लगभग वर्तमान; कवि सुवंस शुक्ल के आश्रयदाता, इन्होंने कवि को हाथी, घोडे और जागीर आदि दी। दे० (च—८८)

इनकी वंशावली इस प्रकार है।

बालचंद–अमरसिंह–शिवसिंह + भवानीसिंह। भवानीसिंह के धौकलसिंह, भूपसिंह, उमरावसिंह, बख्तावरसिंह, ईश्वरीसिंह।

उमादास—पटियाला नरेश महाराज कर्मसिंह के आश्रित; सं० १८६४ के लगभग वर्तमान।

कुरुक्षेत्र माहात्म्य दे० (ट—६३)

माला दे० (ट—६४)

महाभारत भाषा दे० (ट—६७)

नवरत्न दे० (ट—६५)

पंचरत्न दे० (ट—६६)

पचजग्य दे० (ट—६७)

उमापति—सं० १६०४ के लगभग वर्तमान।

अयोध्या माहात्म्य दे० (ख—३१)

उर्वशी—शिरोमणि मिश्र कृत, लि० का० सं० १६३६, वि० कोश। दे० (छ—२३५)

उसमान—उप० मान, गाजीपुर निवासी, सं० १६७० के लगभग वर्तमान; बादशाह जहाँगीर के समकालीन, शेख़ हुसेन के पुत्र।

चित्रावली दे० (ङ—२२)

ऊदाजी—दौलतराव सेंधिया के सरदार; खांडेराव के पौत्र और रानाराव के पुत्र; स० १८७७ के लगभग वर्तमान; पदमाकर भट्ट के आश्रयदाता थे। दे० (च—४३)

ऊधोदास—कवि लालदास आगरा निवासी के पिता, बादशाह अकबर के समय में वर्तमान दे० (ख—१०) (ग—२६)

ऊषा अनिरुद्ध की कथा—रामदास कृत; तीन प्रतियों का लि० का० सं० १८६१, १८४३, १६५१ वि० ऊषा और अनिरुद्ध के विवाह की कथा दे० (छ—२१२ ए)

ऊषा अनिरुद्ध की कथा—भारत शाह कृत, लि० का० सं० १७६७, वि० ऊषा और अनिरुद्ध के विवाह का वर्णन। दे० (छ—१४ ए)

ऊषा-कथा—रामदास कृत, लि० का० सं० १८६९, वि० ऊषा अनिरुद्ध की कथा। दे० (ज—१७० ए)

ऊषा-चरित्र—मुरलीदास कृत, नि० का० सं० १८३१, लि० का० सं० १६४६, वि० ऊषा और अनिरुद्ध की कथा। दे० (छ—२८२)

ऋतुराज—सं० १६१० के लगभग वर्तमान, पटियाला नरेश महाराज नरेंद्रसिंह के आश्रित।

वसंत विहार दे० (छ—१)

ऋषभदेव की कथा—महाराज जयसिंह जू देव कृत, वि० ऋषभदेव भगवान की कथा। दे० (क—१५१)

ऋषिकेश—सं० १८०८ के लगभग वर्तमान, आगरा निवासी।

रसोदय दे० (छ—२२१)

ऋषिनाथ—कवि सेवकराम के, जो कि महाराज बनारस के भाई बाबू देवकीनन्दन के आश्रित था, प्रपितामह थे। दे० (ज—२८६) (क—१८)।

ऋषिपंचमी कथा—भासीराम कृत, वि० भादों शुक्ल पंचमी के पूजन का वर्णन, दे० (छ-२७)

ऋषिपंचमी कथा—कृष्णदास कृत, लि का० सं० १७८२, वि० भादों शुक्ल पंचमी के ऋषि-पूजन का वर्णन, भविष्य पुराण के आधार पर। दे० (छ—२४ बी)

एक सौ दो दोहों का संग्रह—लक्ष्मणदास कृत, लि० का० सं० १८८९, वि० ईश्वर भक्ति। दे० (छ—२८४)

एकादशस्कंध भाषा—चतुरदास कृत, नि० का० सं० १६६२, लि० का० सं० १७६५, वि० भागवत के ग्यारहवें स्कंध का भाषानुवाद, वैराग्य। दे० (ख—११०)

एकादशी माहात्म्य—कृष्णदास कृत, लि० का० सं० १८५०, वि० एकादशी का माहात्म्य-वर्णन। दे० (छ—१४ सी)

एकादशी माहात्म्य—रसिकदास कृत, लि० का० सं० १७७६, वि० एकादशी का माहात्म्य। दे० (छ-२१८ ई)

एकादशी माहात्म्य—विष्णुदास कृत, वि० एकादशी का माहात्म्य। दे० (छ—११७)

एकीभाव भाषा—द्यानति कवि कृत, वि० जैन मत का वर्णन। दे० (क—१०१)

ओंकार भट्ट—धारा (मालवा) निवासी, अनुमानतः १८ वीं शताब्दी में वर्तमान, विलिकसन एजेंट भूपाल के आश्रित थे।

भूगोलसार दे० (ज—२१६)

ओरछा समयो (रासो)—चंदबरदाई कृत, वि० युद्ध वर्णन। दे० (छ—१५६ सी)

ओरीलाल शर्मा—अनुमानतः १६वीं शताब्दी में वर्तमान।

रमल सारूप दे० (ज—२१८)

औरंगजेब—मुगलवंश का प्रसिद्ध सम्राट्, राज्य का० सं० १७१५-१७६४, निम्नलिखित कवियों का आश्रयदाता, मतिराम कवि दे० (क-४०), सुंदर कवि दे० (ग—३), वृंद कवि (ख—६४), कालिदास त्रिवेदी (छ—१७८)।

औषधि विधि—धन्वंतरि कृत लि० का० सं० १८३६, वि० औषध बनाने की रीति। दे० (ज—७०)

औषधिसार—छत्रशाल मिश्र कृत; लि० का० सं० १८३४, वि० वैद्यक। दे० (छ—२१ ए)

कंठाभरन—दूलह कवि कृत, लि० का० सं० १९३२; वि० अलंकार। दे० (ज-७१)

ककहरा—राजा विश्वनाथसिंह कृत· वि० आत्म-ज्ञान वर्णन। दे० (ज-३२९ ई)

ककहरा—जीवनदास कृत; वि० उपदेश। दे० (ज-१४१)

ककहरा—रामसहायदास कृत, लि० का० सं० १९३७, वि० उपदेश। दे० (ज-२५६)

कथा चार दुर्वेश—नारायन कृत, नि० का० सं० १८४१; लि० का० सं० १८५४, वि० उर्दू चहार दर्वेश अर्थात् चार फकीरों के किस्से का पद्य-मय हिंदी अनुवाद। दे० (ङ-१९)

कथा सुदामा—नरोत्तम कृत लि० का० स० १८७१; वि० विप्र सुदामा की कथा। दे० (क-२२)

कदम—बालकदास के गुरु। दे० (छ-१३३)

कनक मंजरी—काशीराम कृत, लि० का० सं० १८३४, वि० धनधीर साह की पत्नी कनक-मंजरी की कथा। दे० (व-७)

कपिलदेव की कथा—रीवाँ नरेश महाराज जयसिंह कृत; लि० का० स० १८९०, वि० कपिल मुनि की कथा। दे० (क-१३६)

कपूरचंद—उप० चंद; दिल्ली निवासी, बादशाह शाहजहाँ के समकालीन, सं० १७०० के लगभग वर्तमान।

भाषा रामायण दे० (घ-६९)

कपूर मिश्र—पत्तनपुर (चंद्रनपुरी) निवासी; कवि मोहनदास मिश्र के पिता। दे० (च-७२)

कबीर—कबीर पंथी सम्प्रदाय के सस्थापक, जन्म का० स० १४५५ मृत्यु का० सं० १५०५; रामानंद के शिष्य, काशी निवासी; जुलाहे; धर्मदास के गुरु थे। (छ-१५८।

अगाध मगल दे० (ज-१४३ ए)
अक्षरभेद की रमैनी दे० (ज-१४३ बी)
अक्षरखंड की रमैनी दे० (ज-१४३ सी)
अलिफनामा १ दे० (ज-१४३ डी)
अलिफनामा २ दे० (ज-१४३ ई)
अनुराग सागर दे० (ज-१४३ एफ)
(छ-१७७ के)
अर्जै नामा दे० (ज-१४३ जी)
आरती दे० (ज-१४३ एच)
बलखकी पैज दे० (ज-१४३ आई)
बारहमासी दे० (ज-१४३ जे)
भक्ति का अग दे० (ज-१४३ के)
बीजक दे० (ज-१४३ एल)
छप्पै दे० (ज-१४३ एम)
चौका पर की रमैनी दे० (ज-१४३ एन)
चौंतीसा दे० (ज-१४३ ओ)
गोरख फकीर की गोष्ठी दे० (ज-१४३ पी)
ज्ञान चौंतीसा दे० (ज-१४३ क्यू)
ज्ञान गूदरी दे० (ज-१४३ आर)
ज्ञान सागर दे० (ज-१४३ एस)
ज्ञान स्वरोदय दे० (ज-१४३ टी)
कबीर गोरख की गोष्ठी दे० (ज-१४३ यू)
कबीरजी की साखी दे० (ज-१४३ वी)

(ग–१४) दे० (ग–५३) (ज–१६६)
कबीर ग्रन्थ दे० (ज–१४३ डब्ल्यू)
करम कोर की रमैनी दे० (ज–१४३ एक्स)
पंचम शब्द दे० (ज–१४३ वाइ)
मुहम्मद बोध दे० (ज–१४३ जेड)
नाम माहात्म्य १ दे० (ज–१४३–ए)
नाम माहात्म्य २ दे० (ज–१४३–बी)
पिया पहचानबे को अंग दे० (ज–१४३–सी)
पुकार दे० (ज–१४३–डी)
शब्द अलापुक दे० (ज–१४३–ई)
शब्द राग गौरी और राग भैरव दे० (ज–१४३–एफ)
शब्द राग काफी और राग फगुवा दे० (ज–१४३–जी)
साधु को अंग दे० (ज–१४३–एच)
सतसंग को अंग दे० (ज–१४३–आई)
स्वाँस गुंजार दे० (ज–१४३–जे)
तीसा जंत्र दे० (ज–१४३–के)
जन्म बोध दे० (ज–१४३–एल)
कबीर साहब की बानी दे० (ज–१४३–एम) दे० (छ–१३३ ए, बी)
बलोना मंद चौंतीसा दे० (ज–१४३–एन)
निर्भय ज्ञान दे० (ज–१४३–ओ) दे० (छ–१३३ आर)
रेखता दे० (ज–१४३ पी) दे० (छ–१३३ डी)
सतनाम (सतकबीर) दे० (ज–१४३ क्यू)
ज्ञान संबोध दे० (ज–१४३–आर)
रामसार दे० (ग–१०८)
ज्ञानस्तोत्र दे० (छ–१३३ सी)
रमैनी दे० (छ–१३३ ई) दे० (ग–१८७)
सतकबीर बंदी छोर दे० (छ–१३३ एफ)
शब्द बंशावली (दे० छ–१३३ जी)
ज्ञानगीता दे० (छ–१३३ एच)
कबीर धर्मदास की गोष्ठी दे० (छ–१३३ आई)
अमर मूल दे० (छ–१३३ जे)
ध्यान मूल सिद्धान्त कथा भाषा दे० (छ–१३३ एल)
अक्षर निरूपण दे० (छ–१३३ एम)
हंस मुक्तावली दे० (छ–१३३ एन)
कबीर परिचय की साखी दे० (छ–१३३ ओ)
शब्दावली दे० (छ–१३३ पी) (छ–१३३ क्यू)
राम रक्षा दे० (छ–१३३ एस)
मन्तपरा दे० (छ–१३३ टी)
कबीर के हीरे दे० (ग–५४)
कबीर की का पद दे० (ग–५२) (ग–१८४)
कबीर की को और दे० (ग–१८८)
राग सोरठा का पद दे० (ग–२४६)

कबीर अष्टक—कबीरदास कृत, वि० ईश्वर माहात्म्य। दे० (ज–१४३ डब्ल्यू)

कबीर और धर्मदास की गोष्ठी—कबीरदास कृत, वि० आत्मज्ञान विषय पर कबीर और धर्मदास की बात-चीत। दे० (छ–१३३ आई)

कबीर की बानी—कबीरदास कृत, समय का० स० १५६६, वि० आत्म ज्ञान। दे० (छ–१३३ ए) (छ–१३३ बी)

कबीर की साखी—कबीरदास कृत, लि०का०स० १८२१, वि० कबीर का ज्ञान। दे० (क–२५) (ज–१४३ पी)

कबीर के दोहे—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान चर्चा और उपदेश। दे० (ग–५५)

कबीर के द्वादश पंथ—धर्मदासकृत, वि० कबीर के मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति के बारह उपाय। दे० (छ-१५८)

कबीर के बीजक की टीका—पूरणदास कृत; नि० का० सं० १८८४, लि० का० सं० १६३८, वि० कबीर के बीजक पर टीका। दे० (छ-२०६)

कबीर गोरख की गोष्ठी—कबीरदास कृत, लि० का० सं० १८७०; वि० कबीर गोरख का संवाद। दे० (ज-१४३ यू)

कबीर जी का पद—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान उपदेश। दे० (ग-५२) (ग-१८४)

कबीर की साखी—कबीरदास कृत, लि० का० स० १७४०; दूसरी प्रति का सं० १८२१, वि० आत्मज्ञान। दे० (ग-५३) (ज-१४३ वी) (ग-१८६) (ख-३५) (ग-१८७)

कबीर परिचय की साखी—कबीरदास कृत; लि० का० सं० १६४२, वि० उपदेश। दे० (छ-१७७ ओ)

कबीर साहब की परिचयी—अनंतदास कृत, वि० कबीर जी की कथा। दे० (ज-५ वी)

कबीर साहब की बानी—कबीरदास कृत; लि० का० सं० १८५५, वि० ज्ञान का वर्णन। दे० (ज-१४३ एम)

कमरुद्दीन—उप० मीर मुहम्मद फाज़िल, स० १७८५ के लगभग वर्तमान, बादशाह मुहम्मद शाह का वज़ीर; सं० १८०५ में अहमद शाह अब्दाली द्वारा बध किया गया; गंजन कवि का आश्रयदाता। दे० (ख-६५)

कमरुद्दीनखाँ हुलास—गंजन कवि कृत, नि० का० सं० १७८५, लि० का० सं० १८५६, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८६१; वि० जमुना, दिल्ली, राजमहल, वजीर-वंश, ऋतु, नवरस और नायिकादि का वर्णन। दे० (घ-६५)

कमलनयन—पन्ना निवासी; रूपसाहि कवि के पिता। दे० (च-८३)

कमलजन—सम्भवतः कोंच या जालौन निवासी; स० १८४७ के लगभग वर्तमान।

दस्तूर-मालिका दे० (छ-५६)

करणकवि—बंसीधर के पुत्र; सं० १८५७ के लगभग वर्तमान, पन्नानरेश महाराज हिन्दूपति के आश्रित।

रसकल्लोल दे० (ङ-१५)

करणभट्ट—सं० १७६७ के लगभग वर्तमान, क्रमशः पन्ना के महाराज सभासिंह, अमनसिंह और हिन्दूपति के आश्रित।

साहित्य-चद्रिका दे० (छ-५७)

करणसिंह—महाराणा अमरसिंह के पुत्र, चित्तौड़ निवासी, राणा अमरसिंह के शाहज़ादा खुर्रम द्वारा पराजित होने पर कुँवर करणसिंह दिल्ली दरबार में उपस्थित हुए और बादशाह जहाँगीर ने इनका बड़ा सत्कार किया। सं० १६१४-१६१६ तक दिल्ली में रहे। कवि दयालदास के आश्रयदाता। दे० (क-६४) (ख-३०) (ज-६१)

करणसिंह—बीकानेर नरेश; राठौर अनूपसिंह के पिता। दे० (ग-७६)

करनीदान—सं० १७८१-१८०५ के मध्य में वर्तमान; जोधपुर नरेश महाराज अभयसिंह के आश्रित; आश्रयदाता ने इन्हें जागीर और कविराज की उपाधि दी।

धर सिंगार दे० (ख-१०५)

करमखंड की रमैनी—कबीरदास कृत, वि० उपदेश। दे० (ग-१४३ पक्स)

करीमशाह—कनरपुर (बुंदेलखंड) निवासी, फ़ाज़िलशाह के पिता। दे० (ख-६५)

करुणा-बत्तीसी—माधवदास कृत, वि० करुणा भक्ति। दे० (ख-७८)

करुणाभरण नाटक—कृष्णजीवन लछीराम कृत, लि० का० स० १७७२, वि० कृष्णलीला। दे० (ग-६२) (छ-२८५) उप० लछीराम, (क-७४)

कर्णपर्व—सबलसिंह चौहान कृत, नि० का० स० १७३४, लि० का० स० १६३६, वि० कर्ण-पर्व का भाषानुवाद। दे० (छ-२२४)

कर्म बत्तीसी—(अज्ञात) लि० का० स० १७६५, वि० जैनमतानुसार जीव और कर्म का वर्णन। दे० (क-१०७)

कर्म विवेक—सूप (सूरज) कवि कृत, लि० का० सं० १८७२, वि० ज्योतिष। दे० (ज-३०५)

कर्मसिंह—पटियाला नरेश, स० १८६३ के लगभग वर्तमान, कवि निहाल और भूपति के आश्रयदाता थे। दे० (घ-१०५) (ङ-२)

कलानिधि—इस नाम के दो कवि पाए जाते हैं, उनमें से एक १७ वीं शताब्दी के प्रारंभ और दूसरे १८ वीं शताब्दी के मध्य में हुए।

नखशिख, दे० (ख-४)

कलाप्रवीन—उप० प्रवीन, स० १८३८ के लगभग वर्तमान।

प्रवीनसागर। दे० (छ-३०७)

कलाभास्कर—रणजीतसिंह कृत, नि० का० स० १६००, लि० का० स० १६३२, वि० पहलवानी। दे० (छ-१०२)

कलिचरित्र—बालकवि कृत, नि० का० सं० १६७४, वि० कलियुग का वर्णन। दे०(छ-१३४)

कलिचरित्र—रामचन्द्र कृत, नि० का० स० १७००, वि० कलियुग का चरित्र-वर्णन। दे० (ज-२७०)

कलियुगरासो—भक्ति रसिकगोविंद कृत, नि० का० सं० १८६५, लि० का० स० वही, वि० कलियुग का दूषित जीवन। दे० (छ-१२२ डी) (ज-२६१ बी)

कल्किचरित्र—प्राणनाथ त्रिवेदी कृत, नि० का० सं० १७६५, लि० का० स० १८४६, वि० कल्कि अवतार की भविष्य-कथा। दे० (घ-२६) (ङ-१३५)

कल्याणदास—प्रसिद्ध केशवदास के भाई, हर सेवक के प्रपितामह थे। दे० (छ-५१)

कल्याण-मंदिर भाषा—बनारसी कवि कृत, वि० जैनस्तोत्र कल्याण-मंदिर संस्कृत का भाषानुवाद। दे० (क-१०४)

कल्याणमल्ल—पृथ्वीराज राठौर के पिता, बीकानेर नरेश, स० १५६८ में गद्दी पर बैठे, और अंत में राज्य का भार अपने ज्येष्ठ पुत्र राव रायसिंह को सौंपा। दे० (क-८७)

कल्याणसिंह—अमरावती के राजा, स० १७५७ के लगभग वर्तमान, सुबसिंह के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२३)

कविकुल कंठाभरण—कवि दूलह कृत, वि० अलंकार काव्य। दे० (घ-४३) (छ-१६२) (ज-७३)

कविकुल कल्पतरु—चिंतामणि त्रिपाठी कृत,

वि० श्रृंगार रस, राधा कृष्ण वर्णन। दे० (क–१२७) नि० का० स० १७०७, दे० (घ–१३७) (ङ–११८)

कवि-चरित्र—सभाचंद्र कृत नि० का० स० १७००, वि० कलियुग के पुरुषों का चरित्र-वर्णन। दे० (ज–२७०)

कवि-जीवन—नवलसिंह (प्रधान) कृत; नि० का सं० १६१८, लि० का० सं० १६२८, वि० हिंदी पिंगल वर्णन। दे० (छ–७६ एम)

कविता—अक्षर अनन्य कृत, वि० स्फुट कवितों का संग्रह। दे० (छ–२ एफ़)

कवितावली—किशोरीशरण कृत, लि० का० स० १६२०, वि० राम का वर्णन। दे० (छ–१८१ सी) (ज–१३४ सी) (ङ–१०)

कवितावली—रामचरणदास कृत, वि० रामायण की कथा; दे० (ज–२४५ जे)

कवित्त—वेनी कृत, संग्रह का० सं० १८१७, वि० श्रृंगार रस। दे० (घ–८६)

कवित्त—लाल कवि कृत, नि० का० स० १८३२, वि० काशी नरेशों के पूर्वजों की प्रशंसा। दे० (घ–११४)

कवित्त—पंचमसिंह कृत, वि० श्रृंगार रस। दे० (छ–८५)

कवित्त—राजा पृथ्वीसिंह कृत, वि० श्रृंगार रस। दे० (छ–६५ वी)

कवित्त—राजा पृथ्वीसिंह कृत, वि० प्रेम भक्ति-वर्णन। दे० (छ–६५ एम)

कवित्त—सेनापति कृत, वि० प्रेम। दे० (छ–२३१)

कवित्त—लघुराम कृत, वि० श्रीकृष्णचद्र की प्रशंसा। दे० (छ–२८७)

कवित्त कुसुम वाटिका—मृगेंद्र कवि कृत; नि० का० सं० १६१७, वि० षट् ऋतु तथा राधा कृष्ण का नख शिख वर्णन। दे० (ङ–५०)

कवित्त प्रबंध—माणिकदास कृत; वि० वेदान्त. उपासना। दे० (ख–१३२)

कवित्त माता जी रा—रसपुंज कृत, वि० दुर्गा देवी की स्तुति। दे० (ग–८१)

कवित्त रत्न मालिका—पं० रामनारायण (रस-राशि) कृत, नि० का० स० १६२७. वि० भिन्न भिन्न कवियों का सग्रह। दे० (ख–६३)

कवित्त रत्नाकर—सेनापति कृत, नि० का० सं० १७०६, लि० का० सं० १६३८, वि० स्फुट। दे० (ज–२८७)

कवित्त रामायण—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० स० १८५६, वि० रामचंद्र जी का संक्षिप्त इतिहास। दे० (घ–१२५)

कवित्त संग्रह—दुर्गादत्त कृत· वि० स्फुट। दे० (ज–७६)

कवि-प्रिया—केशवदास कृत; वि० अलंकार और नायिका भेद। दे० (क–५२) नि० का० स० १६५८, लि० का० १८५६। (ग–१८३) (ङ–१२५) (ङ–१२६)

कवि-प्रिया का तिलक—धीर कृत, लि० का० स० १६३७; वि० कवि प्रिया पर टीका। दे० (छ–२६)

कवि प्रिया सटीक—हरचरणदास कृत; नि० का० सं० १८३५; लि० का० सं० १८३७, दुसरी प्रति का लि० का० सं० १८८३; वि० केशवदास की कवि-प्रिया पर टीका; अन्य नाम कवि-प्रियाभरण। दे० (ङ–५८) (ज–१०८)

कवि प्रभुम—हरिचरणदास कृत; नि० का० सं० १८२५, लि० का० सं० १६००; वि० हिंदी भाषा साहित्य-अलंकार, नायिका, भेद आदि। दे० (छ-२५५ ए)

कवि मुखमंडन—गोकुलनाथ कृत; लि० का० सं० १८७०; वि० चमत्कार। दे० (घ-२५) (छ-१२३)

कवि-रत्न मालिका—रामनारायण (उप० रस रास) कृत; लि० का० सं० १८२७; वि० भक्ति संबंधी कविताओं का संग्रह। दे० (ज-६३)

कवींद्र—अमेठी के राजा गुरुदत्तसिंह के आश्रित, सं० १७६६ के लगभग वर्तमान; कदाचित् दूलह कवि के पिता। दे० (क-६८)

रसदीप दे० (छ-२८) (घ-४२)

कवींद्र—उप० सरस्वती, बनारस निवासी, सं० १६८७ के लगभग वर्तमान।

समरसार दे० (छ-३६)

कवींद्राचार्य—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

योगवाशिष्ठसार दे० (छ-२३६)

कहरा—महाराज विश्वनाथसिंह कृत; वि० ज्ञान पदेश। दे० (ग-३२६ ई)

काजिमअली जवान—सं० १८५७ के लगभग वर्तमान, कवि लल्लू लाल की सहायता से ब्रजभाषा की पुस्तक सिंहासन-बत्तीसी का खड़ी बोली में अनुवाद किया।

सिंहासन बत्तीसी दे० (छ-१८०)

कादंबरी—बलदेव कृत; नि० का० सं० १८४?, लि० का० सं० वही; वि० बाणभट्ट की कादंबरी का पद्यात्मक भाषानुवाद। दे० (घ-५८)

कान्यकुब्ज वंशावली—(अज्ञात र०) लि० का० सं० १८६४; वि० कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की वंशावली। दे० (ग-३६)

कादू—जन्म का० सं० १६१४।

नवशिख दे० (घ-६०)

दैनी-शिक्षा दे० (छ-२७७)

कामरूप की कथा—हरिसेवक मिश्र कृत; वि० राजकुमार कामरूप और राजकुमारी की कथा; लि० का० सं० १८५४। दे० (घ-६०) (छ-५?)।

कालिदास—प्रसिद्ध कालिदास त्रिवेदी नहीं ज्ञात पड़ते, इनके विषयों में कुछ भी ज्ञात नहीं।

अमरगीता दे० (ग-१४४)

कालिदास—दूलह कवि के पितामह; उदयनाथ कवींद्र के पिता बादशाह औरंगज़ेब के आश्रित, सं० १७५१ के लगभग वर्तमान, अंत में जंबू नरेश जगजीतसिंह के आश्रित।

राधा माधव मिलन बुध विनोद दे० (क-३८)

जंजीराबंद दे० (ह-५) (छ-१७८ ए)

वधू विनोद दे० (छ-१७८ बी)

कालिदास हजारा दे० (छ-१६२) अन्य नाम रत्नहजारा दे० (घ-४३) (ज-७७) (घ-३) (ङ-५) (घ-११८)

कालीचरण—सं० १६०२ के लगभग वर्तमान, माझपुर के राजकुमार रामेश्वरसिंह के आश्रित थे।

हंसायन बकरण दे० (ङ-८१)

काव्य कलाधर—रघुनाथ भाट कृत; नि० का० सं० १८०२, लि० का० सं० १८३५; वि० नायिका-भेद, अलंकारादि। दे० (घ-१४) (ज-२३५ ए)

काव्यनिर्णय—भिखारीदास कृत, लि० का० स० १८७१, वि० काव्य के अंग और लक्षणादि। दे० (घ–६१)

काव्य-प्रभाकर—रामरात राजा कृत, वि० संस्कृत-काव्य-प्रकाश का अनुवाद। दे० (छ–३१५)

काव्यमंजरी—प्रद्युम्नदास कृत, नि० का० सं० १७३९; वि० काव्य ग्रथ भावरस वर्णन। दे० (ङ–१४)

काव्यरत्नाकर—रणधीरसिंह कृत; नि० का० सं० १८९७, लि० का० सं० १९२५; वि० अलकार। दे० (छ–३१६ बी)

काव्यरसायन—देवकवि (देवदत्त) कृत, वि० नायिका, रस, अलंकारादि वर्णन। दे० (च–२६) (छ–१५६)

काव्यविनोद—अन्य नाम काव्य-गुणनिरूपण, प्रतापसिंह कृत, नि० का० सं० १८९६, लि० का० सं० १८९९, वि० काव्य-भेद, लक्षणादि वर्णन। दे० (छ–९१ एच)

काव्य-विलास—प्रतापसिंह कृत, नि० का० स० १८८६; लि० का० १८९४, वि० लक्षणा, व्यजना, भावानुभाव आदि का वर्णन। दे० (च–४९) (छ–९१ बी)

काव्य-सरोज—श्रीपति कृत, नि० का० सं० १७७७, वि० कविता की रीति का वर्णन। दे० (ज–३०४ ए)

काव्य-सिद्धान्त—सूरत मिश्र कृत, वि० काव्य-रीति, नायिका भेदादि। दे० (छ–२४३ ई)

काव्याभरण—चंदन कवि कृत; नि० का० सं० १८४५, लि० का० सं० १९४४, वि० अलंकार के भेदों का वर्णन। दे० (ज–४०)

काव्यार्णव—संग्रामसिंह कृत, नि० का० सं० १८६६, लि० का० सं० १८९५; वि० पिंगल, रसों का रूप, काव्य दोष, भूगोल, खगोल आदि का वर्णन। दे० (ज–२७६)

काशिराज प्रकाशिका—सरदार कवि कृत; वि० कविप्रिया की टीका; दे० (ङ–५६)

काशी और चिंतामणि—इन दोनों कवियों के विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

ज्ञान सुहेला दे० (छ–२७८)

काशीखंड भाषा—जयनारायण कृत, वि० काशी खंड का भाषानुवाद। दे० (ज–१२९)

काशीनाथ—केशवदास के पिता। दे० (क–५२)

काशी पंचरत्न—दीनदयाल गिरि कृत, वि० काशी की शोभा का वर्णन। दे० (ङ–९१)

काशीयात्रा—माधवप्रसाद कृत, वि० काशी की १६ यात्राओं में आनेवाले स्थानों और देव-मंदिरों का वर्णन। दे० (ज–१७८)

काशीराज—लक्ष्मीनारायण के पुत्र थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

चित्रचंद्रिका दे० (ज–१४५)

काशीराम—जन्म का० सं० १७१५, औरंगजेब के सूबेदार निजामतखाँ के आश्रित; राजकुमार लक्ष्मीचंद के हेतु पुस्तक का निर्माण।

कनकमंजरी दे० (घ–७)

काष्ठजिह्वा स्वामी—उप० देव, काशी-नरेश महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के अध्यापक तथा आश्रित, सं० १८९७ के लगभग वर्तमान।

पदावली दे० (ख–१४)

रामलग्न दे० (छ–१७९)

रामायण परिचर्या दे० (ङ–६९)

कासिम—काजिर का पुत्र।

रसिकप्रिया की टीका दे० (ज-१४७)

लि० का० सं० १६४८ अशुद्ध जान पड़ता है।

कासिम शाह—दरियाबाद (बाराबंकी) निवासी, सं० १७८८ के लगभग वर्तमान।

हंस जवाहिर दे० (ग-१११)

किशोर—मारवाड़ी कवि जान पड़ते हैं, भाड़खा नरेश राजा विक्रमाजीत (लघुसम) के आश्रित।

दोहा मावरा टोरा दे० (ग-५६)

किशोरदास—टीकमगढ़ निवासी, सं० १६०० के लगभग वर्तमान।

गणपति माहात्म्य दे० (छ-६१ ए)

अध्यात्म रामायण दे० (छ-६१ बी)

हनुमतनाट्य टीका दे० (छ-६३ ए)

किशोरीअली—सं० १८३७ के लगभग वर्तमान।

सार चंद्रिका दे० (ज-१५१)

किशोरीदास—राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव।

किशोरीदास के पद दे० (क-५६)

वंशावली रूपानुराग की दे० (ज-१५२)

किशोरीदास के पद—किशोरीदास कृत, वि० राधा कृष्ण विहार पर्योत्सव वर्णन। दे०(क-५६)

किशोरीशरण—उप० रसिक या रसिक बिहारी (अन्य नाम किशोरी शरण), गुजराती ब्राह्मण, सुदामापुरी निवासी, अंत में अयोध्या में रहने लगे थे, सखी-संप्रदाय के वैष्णव साधु।

भाव सखी दे० (ट-१०)

रघुवर करुणाभरण दे० (छ-१८१ ए)

(ज-१५४ एम)

सीताराम रसतरंगिणी दे० (छ-१८१ बी)

कवितावली दे० (छ-१८१ सी)

(क-१०) (ज-१५४ सी)

सीताराम सिद्धांत मुक्तावली दे० (छ-१८१ डी)

(ज-१५४ ए)

किशोरीसरन—ब्रजवासी, उप० गोस्वामी किशोरीलाल, वल्लभी संप्रदाय के वैष्णव।

अभिलाषमाला दे० (ज-१५३)

किष्किंधाकांड—रामगुलाम कृत, लि० का० सं० १६०१, वि० किष्किंधा कांड की कथा। दे० (ज—२४७ सी)

कीनाराम (गोसाईं)—रामनगर (बनारस) निवासी।

रामरसाल दे० (ज-१५०)

कीर्तन—प्राणनाथ कृत, वि० उपदेश। दे० (छ-६० ए)

कुंज-कौतुक—रसिकदास कृत, वि० कुंजलीला। दे० (ग-६८)

कुंजदास—सं० १८३१ के लगभग वर्तमान।

कृष्णचरित्र दे० (छ-२८२)

कुंडलिया—ब्रजदास कृत, वि० भिन्न भिन्न विषयों पर कुंडलिया छंद में कविता। दे०(छ-१२१ए)

कुंडलिया—गिरधर कविराय कृत, लि० का० सं० १६१६, वि० भिन्न भिन्न विषयों पर सामयिक कविता। दे० (छ-१६७)

कुंडलिया पलटू साहेब कृत—पलटू साहब कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज-२२७)

कुतबन—चिश्तीवंश के शेख बुरहान के शिष्य, शेरशाह सूर के पिता हुसैनशाह के आश्रित, सं० १५५८ के लगभग वर्तमान।

मृगावती काव्य दे० (क-४)

कुमारमणि—जन्म का० सं० १८०३, गोकुल (ब्रज)

निवासी, वल्लभ भट्ट के पुत्र, दतिया नरेश के आश्रित।

रसिक रसाल दे० (च-५) (छ-१८६)

कुरुक्षेत्रमाहात्म्य—उमादास कृत, नि० का० स० १८६४, वि० कुरुक्षेत्रमाहात्म्य। दे० (ङ-६३)

कुरुक्षेत्रलीला—चरनदास कृत, वि० राधाकृष्ण का कुरुक्षेत्र में सम्मिलन। दे० (ज-४५)

कुलपति (मिश्र)—आगरा निवासी, परशुराम माथुर के पुत्र, सं० १७२७ के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश महाराज रामसिंह के आश्रित।

द्रोणपर्व दे० (क-७२)

रसरहस्य दे० (घ-५१)

युक्ति तरंगिणी दे० (छ-१८५ ए)

नखशिख दे० (छ-१८५ बी)

संग्रामसार दे० (ज—१६०)

कुशल (मिश्र)—ज्योंधरा (आगरा) निवासी, सं० १८२६ के लगभग वर्तमान; ज्योंधरी के ठाकुर अनिरुद्धसिंह, दलेलसिंह और दयाराम के आश्रित जान पड़ते हैं।

गंगानाटक दे० (क—५७)

कुशलविलास—देवदत्त (उप०देव) कृत, लि० का० सं० १८६३, वि० नायिकाभेद। दे० (ङ-२७)

कुशलसिंह—फफूँद के राजा, राजा मधुकर साहि के पुत्र, कवि देवदत्त के आश्रयदाता सं० १६७७ के लगभग वर्तमान। दे० (ङ—३७)

कुशल सिंह—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, कवि शिवनाथ के साथ इन्होंने पुस्तक निर्माण की।

नखशिख दे० (ज—१६१)

कूबा जी—रामानुज संप्रदाय के आचार्य्य इनकी गद्दी पर चौथी पीढ़ी में कवि भगवानदास हुए। दे० (क—६६)

कृपाकंद निबंध—घनानंद (आनंदघन) कृत; वि० शृंगाररस की कविता। दे० (घ—६६)

कृपानिवास—ये सखी संप्रदाय के वैष्णव थे, इनके गुरु का नाम हनुमानप्रसाद था, अयोध्या के महंत, सं० १६०० के पूर्व वर्तमान।

सम्प्रदाय निर्णय और प्रार्थना शतक दे० (छ-२७६ ए)

अनन्य चिंतामणि दे० (छ-२७६ बी)

माधुरीप्रकाश दे० (छ—२७६ सी)

भावनासत दे० (छ—२७६ डी)

अष्टयाम दे० (छ—२७६ ई)

सीताराम रहस्य दे० (छ—२७६ एफ)

रासपद्धति दे० (ज—१५४ ए)

समयप्रबंध दे० (ज—१५४ बी)

प्रीतिप्रार्थना दे० (ज—१५४ सी)

लगनपचीसी दे० (ज—१५४ डी)

वर्षोत्सव दे० (ज—१५४ ई)

रामरसामृत सिंधु दे० (ज—१५४ एफ)

कृपाराम—सेवा पंथी भाई अड्डन जी के शिष्य।

मोहम्मद गज़ाली किताब ऊपर भाषा-पारस भाग दे० (ग-११)

कृपाराम—रामानुज संप्रदाय के साधु, अंत में चित्रकूट में निवास किया और वहीं पुस्तकें निर्माण कीं, सं० १८१५ के लगभग वर्तमान।

भागवत भाषा दे० (च—६)

चित्रकूट माहात्म्य दे० (छ—१८३)

भागवत दशमस्कंध दे० (ज—१५५)

भाष्य प्रकाश दे० (ङ—४६)

कृपाराम—शाहजहाँपुर निवासी, कायस्थ, सं० १७६० के लगभग वर्तमान।

भाषा ज्योतिषसार दे० (छ—१८२)

कृपाराम—सं० १५९८ के लगभग वर्तमान।

हित-तरंगिनी द० (छ—२८०) (ज—१५७)

कृपाराम—नागर ब्राह्मण, उज्जैन में पुस्तक निर्माण की, सं० १७७० के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश महाराज सवाई जयसिंह के आश्रित।

समय-बोध दे० (ज—१५९)

कृपाराम—धीरजराम के पिता, जाति के ब्राह्मण, सं० १८१० के पूर्व वर्तमान। दे० (ज—७०)

कृपा सहचरी—रामानुज सम्प्रदाय के सखी समाजी वैष्णव थे।

रहस्योपास्य दे० (छ—२८१)

कृष्ण—ओड़छा के निकट मांडेर ग्राम-निवासी सनाढ्य ब्राह्मण, महाकवि बिहारी के शिष्य भी यही जान पड़ते हैं। सं० १७७५ के लगभग वर्तमान।

विदुर प्रजागर द० (घ—७) (छ—६३ बी)

धर्म संवाद कथा द० (घ—८) (छ—६३ ए)

बिहारीसतसई टीका द० (ख—५२) (ट—१२९)

कृष्ण कवि—उप० कलानिधि, राजा बुधराव के आश्रित।

रसचंद्रिका द० (क—८३)

कृष्ण कवि (भट्ट)—१८ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में वर्तमान, जयपुर नरेश जयसिंह द्वितीय के आश्रित।

मंगर युद्ध दे० (ज—३०१)

कृष्ण कवि—ठाकुर मनियारसिंह के गुरु। दे० (घ—४७)

कृष्णकिशोर—सरयू नदी के तट पर गोपालपुर के स्वामी, सं० १८८० के लगभग वर्तमान, कवि श्रीगोविंद के आश्रयदाता। दे० (ज—१००)

कृष्ण-गीतावली—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८५६, वि० दशमस्कंध भागवत में कृष्ण-कथा। द० (छ—१०७)

कृष्ण गुणकर्म सूक्ष्म सूदन—देव (देवदत्त) कृत, वि० दशमस्कंध भागवत की सूक्ष्म कथा। दे० (छ—१०५)

कृष्ण-चंद्रिका—गुमान कवि कृत, नि० का० सं० १८३८, लि० का० सं० १९११, दूसरी और तीसरी प्रतियों का लि० का० सं० १९२२, १९२२, वि० पहले पिंगल, परीक्षित की कथा, पांडवों की कथा, और अंत में दशमस्कंध के पूर्वार्द्ध का अनुवाद। दे० (घ—२३) (छ—७४ ए)

कृष्ण चंद्रिका—मोहनदास मिश्र कृत, नि० का० सं० १८३६, लि० का० सं० १९१८, वि० भागवत के दशमस्कंध की कथा। दे० (ज—१९९ ए)

कृष्ण-चरितामृत—क्षेमकरण मिश्र कृत, लि० का० सं० १९२६, वि० श्रीकृष्ण चन्द्र की कथा। द० (ज—४९)

कृष्ण चरित्र—तुलसीदास (गोस्वामी) कृत, लि० का० सं० १८९२, वि० कृष्ण चरित्र। दे० (ज—३२३ ई)

कृष्ण चैतन्यदेव—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

सौंदर्य चंद्रिका दे० (ज—१०२)

कृष्ण चौंतीसी—परमानंद किशोर कृत, लि० का०

सं० १८५८, वि० कृष्ण का मथुरा-गमन और कंस-वध; इसमें ४० छद हैं। दे० (छ–३०६)

कृष्णजी की लीला—(र० अज्ञात) लि० का० सं० १७६७, वि० कृष्ण लीलाओं का वर्णन। दे० (ग–६६)

कृष्णजीवन लच्छीराम—उप० लच्छीराम, दे० "लच्छीराम"। (ग–६२) (छ–२८५) (क–७४)

कृष्णजीवन कल्याण—लच्छीराम के गुरु थे। दे० (छ–२८५)

कृष्ण जू की पाती—हसराज बरशी कृत; नि० का० सं० १७८६, लि० का० सं० १८६६, वि० श्रीकृष्ण जी के राधिका के लिये प्रेमपत्र। दे० (छ–४५ ए)

कृष्ण जू को नखशिख—ग्वाल कवि कृत, नि० का० सं० १८७६ या सं० १८८४, लि० का० सं० १८७६ या सं० १८८४, वि० श्रीकृष्ण जी के नखशिख अर्थात् सपूर्ण अंग का वर्णन। दे० (ख–८६)

कृष्ण-तरंगिणी—महाराज जयसिंह देव जू कृत; नि० का० सं० १८७३, लि० का० सं० १६०८, वि० कृष्ण भगवान की व्रजलीला। दे० (क–१३६)

कृष्णदास—ब्राह्मण, दतिया राज्य के निवासी; सं १७३७ के लगभग वर्तमान।

तोता की कथा दे० (छ–६४ ए)

महालक्ष्मी की कथा दे० (छ–६४ बी)

एकादशी माहात्म्य दे० (छ–६४ सी)

ऋषि पचमी की कथा दे० (छ–६४ डी)

हरिश्चन्द्र कथा दे० (छ–६४ ई)

कृष्णदास—उज्जैन (मालवा) के निवासी; ब्राह्मण; राजा भीमसिंह के आश्रित।

सिंहासन बतीसी दे० (छ–१८४)

कृष्णदास—हृदयराम के पिता; सं० १६८० के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ङ–१७)

कृष्णदास—विंध्याचल के निकट गंगा तट पर गिरिजापुर निवासी, संभव है कि यह गाजीपुर के निवासी हों; सं० १८५२ के लगभग वर्तमान।

भागवत भाषा बारहवाँ स्कंध दे० (ज–१५८ ए)

भागवत माहात्म्य दे० (ज–१५८ बी)
(च–६)

कृष्णदास (पयाहारी)—अष्टछाप में से हैं; अनंतदास गदाधर भट्ट, अग्रदास के गुरु; सं० १६०७ के लगभग वर्तमान। (ज–८१) (छ–१२८)

जुगुलमान चरित्र दे० (ज–२०३) दे० (छ–१२१)

(अष्टछाप में अन्य कवि सूरदास, परमानंददास, कुंभकदास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी, नंददास और गोविंददास थे।)

कृष्णदेव—माथुर ब्राह्मण, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रासपंचाध्यायी दे० (ज–१५६)

कृष्णदेव रुक्मिणी वेलि—पृथ्वीराज राठौर कृत; लि० का० सं० १६६६, वि० कृष्ण रुक्मिणी विवाह वर्णन। दे० (क—८७)

कृष्णपचीसी—जन गूजर कृत; वि० दानलीला। दे० (छ—२७०)

कृष्ण-प्रकाश—कुँवर मेदिनीमल्ल जू कृत; नि० का० सं० १७८७, लि० का० सं० १६६२; ग्रंथ की अन्य प्रतिलिपियाँ सं० १७८८ और १८२६ की हैं, वि० हरिवंश पुराण का पद्यात्मक भाषानुवाद। दे० (च—६६)

कृष्णगोपिका—रघुराम कृत, नि० का० सं० १७११, लि० का० सं० १७६२, वि० कृष्ण गोपियों की भेंट और राधा सत्यभामा की बातचीत। दे० (ङ—६८)

कृष्णरहस्य—अर्जुनसिंह कृत, लि० का० सं० १६३४, वि० कृष्णचरित्र। दे० (अ—१०)

कृष्णलीला—प्रेमदास कृत, वि० कृष्ण की माखन चोरीलीला। दे० (ङ—६१ बी)

कृष्ण लीलावती—(पंचाध्यायी) सोमनाथ कृत, नि० का० सं० १८००, वि० श्रीकृष्ण का ब्रज गोपियों के साथ व्यवहार। दे० (अ—२६८ बी)

कृष्णविनोद—पद्य विनोदीलाल कृत, नि० का० सं० १८३६, वि० भागवत दशमस्कंध का भाषानुवाद। दे० (ग—१०२)

कृष्णविलास—बका कृत, वि० कंस-वध और कृष्णार्जुन संवाद। दे० (ङ—१०)

कृष्णविलास—रामकृष्ण चौबे उप० मानदास कृत, नि० का० सं० १८१७, लि० का० सं० १६२६, वि० कृष्णचरित्र। दे० (ङ—१०० ए) दे० (ङ—१६५ ए)

कृष्णसिंह (कविराज)—इन्होंने कर्नल टाड को पृथ्वीराज रासो पढ़ाया। दे० (क—१२)

कृष्णानंद व्यासदेव—सं० १८६६ के लगभग वर्तमान, इन्होंने अपने ग्रंथ में ब्रजजीवनदास की चर्चा की है।

राग रत्नाकर एवं राग कल्पद्रुम। दे० (अ—३४)

कृष्णायन—जगन्नाथ त्रिपाठी कृत, नि० का० सं० १८४५, लि० का० सं० १८८८, वि० कृष्णचरित्र। दे० (अ—१७५)

केदारपंथ प्रकाश—दास कवि कृत, नि० का० सं० १६१०, वि० केदारयात्रा वर्णन, इस ग्रंथ के र० भिखारीदास उप० दास नहीं हैं। दे० (च—१०६)

केशव कवि—यह प्रसिद्ध कवि केशवदास ओड़छा वाले से भिन्न हैं, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

वक्रिचरित्र दे० (अ—१४६ ए)

हनुमान-जन्म-लीला दे० (अ—१४६ बी)

केशवगिरि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

भार्गवखरी दे० (ख—१४८)

केशवदास—जाति के चारण थे, मारवाड़ नरेश महाराज गजसिंह के आश्रित, सं० १६८१ के लगभग वर्तमान।

महाराज गजसिंह जी का गुणरूपकबंध दे० (ग—२०)

विवेकवार्त्ता दे० (ग—३०१)

केशवदास—हरसेवक मिश्र के भाई, परमेश्वरदास के पुत्र, सं० १८०८ के लगभग वर्तमान थे। दे० (छ—५१)

केशवदास—ओड़छा (बुंदेलखंड) निवासी, सनाढ्य ब्राह्मण, काशीनाथ के पुत्र, सं० १६३७ के लगभग वर्तमान, ओड़छा-नरेश महाराज मधुकर शाह और उनके पुत्र महाराज इंद्रजीतसिंह के आश्रित, बलभद्र कवि इन्हीं के भ्राता थे। दे० (क—१११)

कविप्रिया दे० (क—५२)

(क०-१२५-१२६)

रसिकप्रिया दे० (क—५२) (घ-८६)

(क-१२८)

विज्ञानगीता दे० (क—५२) (क-१२७)

रामचंद्रिका दे० (क—५२) (घ-२१)

रामालकृत मजरी दे० (क—५२)

बीरसिंह देवचरित्र दे० (छ—५८ ए)

रस-चावनी दे० (छ—५८ बी)

नखशिख दे० (घ—२६)

केशवदास—ये राजपुताने के जान पडते हैं इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

अमर बतीसी दे० (ग-३४)

केशव मिश्र—सं० १६६६ के लगभग वर्तमान; बादशाह जहाँगीर के आश्रित।

जहाँगीर चद्रिका दे० (घ—४०)

केशवराज—सं० १६४६ के पूर्व और सं० १५६८ के लगभग वर्तमान थे, ये कुछ समय तक काश्मीर में रहे थे, कवि नयनसुख के पिता। दे० (क—३४)

केशवराय—माधवदास के पुत्र और मुरलीधर के भ्राता; सं० १७५२ के लगभग वर्तमान, ओडछा नरेश महाराज नरसिंह के आश्रित महाराजा नरसिंह के पिता महाराज छत्रसाल से इन्हें एक ग्राम प्राप्त हुआ था।

जैमुनि की कथा दे० (च—१०)

केशवराय—जन्म का० सं० १७३६, बघेलखंड निवासी।

रसललित दे० (ज—१४६)

केसरीसिंह—राठौर आसोप (जोधपुर) के जागीरदार; चारण कवि सागरदान के आश्रयदाता। दे० (ख—८१)

केसरीसिंह—जाति के गौड क्षत्री, मणि-मंडन मिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (छ—२६१)

केसरीसिंह—उप० नंद, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

सगारथ लीला दे० (च—२७)

कैंवाट (सरवरिया)—सं० १८५४ के लगभग वर्तमान, सरजूपारी ब्राह्मण।

अनतराय साखल की वार्ता दे० (घ—२६)

कैंमास-वध—चंद बरदाई कृत; नि० का० सं० १२४७ के लगभग. वि० महाराज पृथ्वीराज के मत्री कैंमास का पृथ्वीराज द्वारा वध, यह ग्रंथ पृथ्वीराज रासो का एक खंड है। दे०(छ-१४६बी)

कोक भाषा—मुकुददास कृत, नि० का० स० १६५२; लि० का० स० १९००, वि० स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ लक्षण और औषध। दे० (ज—१८३ ए)

दूसरी प्रति स० १६७५ की निर्माण की हुई है जिसकी छंद संख्या पहिली से अधिक है। दे० (ज—१८३ बी)

कोकसार—आनंद कवि कृत, लि० का० सं० १७६१; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८०५; अन्य नाम कोक-मंजरी; वि० स्त्री-पुरुषों के लक्षणादि और औषध। दे० (ग—५) (छ—१२६)

कोकसार—ताहिर कृत, नि० का० सं० १६७८, लि० का० सं० १८११, वि० स्त्री-पुरुषों के शुभाशुभ लक्षण तथा आसन आदि। दे० (ज-३१६)

कोविद—इनका पूरा नाम चंद्रमणि मिश्र था, सं० १७७७ के लगभग वर्तमान, ओड़छा-नरेश महाराज उदोतसिंह और महाराज पृथ्वीसिंह के आश्रित।

रामभूषन दे० (छ—६२ ए)

भाषा हितोपदेश दे० (छ—६२ बी)

कोशल-पथ—रुद्र प्रतापसिंह कृत; नि० का०

स० १८७७, वि० वाल्मीकीय रामायण अयोध्या कांड कालकाण्ड का भाषानुवाद। दे० (ख–२५)

कौशलेंद्र रहस्य—अन्य नाम रामरहस्य, राम चरणदास कृत, लि० का० स० १८८६, वि० ज्ञान, भक्ति और प्रेम आदि का वर्णन। दे० (घ–६८)

क्षेमकरन मिश्र—नगर मौली (बाराबंकी) निवासी, जन्म का० स० १७५७, मृत्यु का० स० १८६१, भाषा काव्य संग्रह के संग्रहकर्ता पंडित महेशदत्त के नाना के पिता थे।

कृष्णचरितामृत दे० (ज–४६)

खड्ग कवि—पडोखर या दिलीपनगर (दतिया) के निवासी, कायस्थ, मलूकचंद के पुत्र, स० १७८१–१८१६ के लगभग वर्तमान; राजा रामचंद्र दतिया नरेश के समकालीन थे।

सुदामा समाज दे० (छ–५६ ए)

राधामोहमर्दन की कथा दे० (छ–५६ बी)

भूषदाम दे० (छ–५६ सी) (ख–६६)

नाम प्रकाश दे० (छ–५६ डी)

जैमिनि अश्वमेध दे० (छ–५६ ई)

खटमल बाईसी—अली मुहिब्बखाँ (उप० प्रीतम) कृत, लि० का० स० १८८७, वि० खटमलों का प्रभाव वर्णन। दे० (घ–७०)

खड़िया जगा जी—स० १७१५ के लगभग वर्तमान, मारवाड़ के राजा जसवंतसिंह के दरबारी कवि थे, इन्होंने पुस्तक में रतलाम के राजा रतनमहेश का जो कि जसवंतसिंह की ओर से औरंगज़ेब से लड़कर युद्ध में मारे गए थे, यश वर्णन किया है।

रतनमहेश दासोत वचनिका दे० (ग–२६)

खाँ शुजा—दिल्ली का उमराव, बादशाह मुहम्मद शाह का समकालीन, स० १८०५ के लगभग वर्तमान, कवि जुगलकिशोर भट्ट के आश्रयदाता थे। दे० (ज–१४२)

खानेजहाँ—बादशाह औरंगज़ेब के वज़ीर, हिम्मत खाँ के पिता। दे० (ख–८२)

खालिकनामा—शेख सुलेमान कृत, वि० मुसलमानों के पैगंबर मुहम्मद साहब का खुदा के पास जाना और अपनी उम्मत बख्शवाना। दे० (ज–२८६)

खुमान—गुमान कवि के भाई, गोपालमणि त्रिपाठी के पुत्र, महोबा निवासी, स० १८३८ के लगभग वर्तमान। दे० (ख–२३)

खुमान कवि—उप० मान, बसरीग्राम निवासी, जाति के बन्दीजन, पन्ना नरेश महाराज विक्रम सिंह के आश्रित, इनके पूर्वज महाराज छत्रसाल और उनके वंशजों के आश्रित होते आए थे, सं० १८३६ के लगभग वर्तमान।

अमर प्रकाश दे० (ख–८५) (घ–२४) (छ–७०) दे० मान (छ–१६)

खुमानसिंह—चरखारी (बुंदेलखंड) के राजा, सं० १८८७ के लगभग वर्तमान, कविदत्त (देवदत्त) प्रयागदास के आश्रयदाता। दे० (घ–६१) (घ–५५) (ज–५६)

खुर्रम (शाहजादा)—उप० शाहजहाँ, दिल्ली के बादशाह जहाँगीर के पुत्र, स० १६१४ के लगभग वर्तमान, चित्तौर के राणा अमरसिंह के साथ इनका युद्ध हुआ था, ये कुंवर करणसिंह को अपने साथ बादशाह जहाँगीर के दरबार में ले गए थे। दे० (क–२४)

खेतसिंह—सं० १८७८ के लगभग वर्तमान; दतिया नरेश राजा परीक्षित के आश्रित।

बारहमासी दे० (छ–६० ए)

चौंतीसी दे० (छ–६० बी)

वैद्यप्रिया दे० (छ–६० सी)

खेमदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं।

सुखसंवाद दे० (ख–१३४) (ग–६४)

ख्याल टिप्पा—(र० अज्ञात) इस ग्रंथ में निम्नलिखित ५६ भक्तों और कवियों के भजन पदादि संग्रह किए गए हैं।

(१) कृष्णदास (२) रसिक पीतम (३) आसकरन (४) नंददास (५) श्रीधर (६) सूरदास (७) परमानंद (८) गोविंद (९) श्री भट्ट (१०) हरिवंश (११) कृपानाथ (१२) दास मुरारि (१३) कुंभनदास (१४) चतुर विहारी (१५) हरिदास (१६) चतुर्भुजदास (१७) जानि राजा (१८) गोपालदास (१९) व्यास (२०) हरिजीवन (२१) तुलसीदास (२२) रसिक (२३) मुकुंद (२४) तानसेन (२५) विहारीदास (२६) मीराँ (२७) हितहरिवंश (२८) निर्मल (२९) वल्लभदास (३०) मुरारीदास (३१) रामराय (३२) श्रीविट्ठल (३३) आनंदघन (३४) हितध्रुव (३५) जन त्रिलोक (३६) श्यामदास (३७) दास मनोहर (३८) मानदास (३९) रसिकराय (४०) गोवर्धन (४१) जन हरिया (४२) खेमदास (४३) किशोरीदास (४४) नागरीदास (४५) भगवान (४६) चंद्रावलि (४७) नामदेव (४८) दयातन (४९) मेन (५०) पेम (५१) मंगल (५२) लच्छीराम (५३) नरंद (५४) कल्याणदास (५५) गदाधर (५६) अग्रदास। दे० (ग–५७)

ख्यालहुलास लीला—ध्रुवदासकृत; वि० ईश्वरभक्ति दे० (ज–७३ एफ)

गंगकवि—ये अकबर के दरबार के प्रसिद्ध कवि गंग से भिन्न हैं और दादू पंथी जान पड़ते हैं; रघुनाथ कवि के गुरु थे। दे० (छ—२१०)

सुदामाचरित्र दे० (क—२८)

गंगा—यह कोई बुंदेलखंडी स्त्री है, इसके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

विष्णुपद दे० (छ–२३)

गंगा (भाट)—सं० १६२७, के लगभग वर्तमान; बादशाह अकबर के आश्रित।

चंद छंद बरनन की महिमा दे० (ज–८४)

गंगादास—चंदेल क्षत्री; हरीसिंह के पुत्र; नवनदास के शिष्य।

संत सुमिरिनी दे० (छ–२५२ ए)

शब्दसार बानी दे० (छ–२५२ बी)

महालछमी जू के पद दे० (छ–२५२ सी)

गंगादास—कायस्थ सं० १८१९ के लगभग वर्तमान, बलरामपुर (गोंडा) के महाराज के आश्रित।

सुमनघन दे० (ज–८५)

गंगाधर—स्वामी हरीदास वृंदावनवाले के नाना थे, वृंदावन निवासी। दे० (क–३७)

गंगाधर—प्रसिद्ध कवि सेनापति के पिता, अनूपशहर (बुलंद शहर) निवासी; इनके पिता का नाम परसुराम दीक्षित था। दे० (ज–२८७) (ड–५१)

गंगाधर—सं० १७३९ के लगभग वर्तमान, मथुरा निवासी; मिश्र चौबे; उप० गंगेस।

विक्रमविलास दे० (ज–८६)

गंगा नाटक—ट्यान मिश्र कृत; लि० का० सं० १८२६; लि० का० सं० १६०२; वि० पृथ्वी पर गंगा के अवतरण की कथा। (यह नाटक नहीं है जैसा कि पुस्तक के नाम से प्रगट होता है।) द० (छ-१३)

गंगाप्रसाद (उर्द्दनिया)—ब्राह्मण; सं० १८५४ के लगभग वर्तमान; समथर के राजा विष्णु सिंह के आश्रित।
राम ग्रनुप द० (छ-२४)

गंगाराम—गिरधारी के पिता। दे० (ज-८४)

गंगाराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
सिंहासन बत्तीसी द० (घ-६)

गंगाराम—मालवीय त्रिपाठी; सं० १८४६ के लगभग वर्तमान।
ब्रज-मरीच दे० (घ-११)

गंगाराम—सं० १७५४ के लगभग वर्तमान, साँगानेर (जयपुर) के महाराज रामसिंह के आश्रित।
नखा-भूषण दे० (ज-८७)

गंगाराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
देवी स्तुति और राम कवित्त दे० (ज-८८)

गंगाराम—प्रातिक मिश्र ब्राह्मण; चँदेरी निवासी, ब्रजमान मिश्र के पिता, सं० १८४४ के पूर्व वर्तमान थे। द० (छ-२१)

गंगालहरी—पद्माकर भट्ट कृत; वि० गंगाजी का वर्णन और राम-स्तुति, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६१०। द० (ज-२२० बी)

गंगाष्टक—जयमंगलप्रसाद कृत; वि० गंगा जी की स्तुति। द० (ज-१०८)

गंजन—सं० १७८४ के लगभग वर्तमान, नवाब कमारुद्दीन खाँ उमराव और मुहम्मद फाजिल के जो कि दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के वज़ीर थे, आश्रित थे; उन्हीं के नाम पर ग्रंथ रचा।
कमरुद्दीनखाँ हुलास दे० (घ-१५)

गजनसिंह—कायस्थ; सं० १८४० के लगभग वर्तमान; पिता का नाम शिवप्रसाद।
शान्ति नेम दे० (ज ८६)

गज प्रकाश—महदेव कृत; लि० का० सं० १६१७; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६४६; वि० हाथियों के रोग और उनकी चिकित्सा। द० (छ-२२२)

गजराज—बनारस निवासी; सं० १६०३ के लगभग वर्तमान।
वृत्तहार दे० (घ-७१)

गज विलास—गोपाल कवि कृत; वि० हाथी के रोग और उनकी चिकित्सा। द० (छ-४१)

गजसिंह—जोधपुर नरेश महाराज जसवंतसिंह के पिता थे, जहाँगीर और खुर्रम के युद्ध में इन्होंने जहाँगीर की सहायता की और उसमें भीमसिंह सिसोदिया का वध किया; सं० १६७४ में गद्दी पर बैठे; कवि केशवदास, चारण नरहरिदास बारहट इनके आश्रित थे। द० (ग-१४) (ग-२०) (ज-२१०)

गजसिंह महाराज जी का गुण-रूपक बंध—केशवदास चारण कृत, लि० का० सं० १६८१, लि० का० सं० १७८०; वि० महाराज गजसिंह का यश वर्णन। दे० (ग-२०)

गजेंद्र-मोक्ष—दुर्गाप्रसाद कृत, लि० का० सं० १६०८; वि० संस्कृत ग्रंथ से अनुवादित गज का ग्राह से छुटकारा। दे० (घ-४२)

गणपति कृष्ण चतुर्थी व्रत कथा—दरियाव राय

कृत. वि० चतुर्थी व्रत का माहात्म्य दे० (छ-२६१ वी)

गणपति-माहात्म्य—किशोरदास कृत, नि० का० सं० १६००, लि० का० सं० १६१३, वि० गणेश-महिमा वर्णन दे० (छ-६१ ए)

गणित-चद्रिका—धीरजसिंह कृत, लि० का० सं० १८६६, विषय गणित। दे० (छ-३० ए)

गणितसार—भीम जू कृत, नि० का० स० १८७३, लि० का० सं० १६२६, वि० गणित और माप विद्या का वर्णन। दे० (छ-१३७)

गणेश—गुलाब कवि के पुत्र, स० १८६२ के लगभग वर्तमान, बनारस नरेश महाराज ईश्वरीनारायणसिंह और उदितनारायणसिंह के आश्रित, पूरा नाम गणेशप्रसाद ।

बाल्मीकि रामायण श्लोकार्ध प्रकाश दे० (घ-२४)

प्रद्युम्न विजय नाटक

हनुमत पचीसी दे० (ज-८३)

गणेश—सं० १८८२ के लगभग वर्तमान, पनवारी (दतिया राज्य) निवासी; कायस्थ, दतिया नरेश राजा परीक्षित के आश्रित।

गुणनिधिसार दे० (छ-३२ ए)

दफ़्तर नामा दे० (छ-३२ बी)

गणेश—सं० १८१८ के लगभग वर्तमान, मलावाँ (हरदोई) निवासी ।

रसवल्ली दे० (ज-८२)

गणेश जू की कथा—माखनलाल कृत, लि० का० सं० १६५३; वि० गणेश चौथ की पूजा का वर्णन। दे० (छ-६६ ए)

गणेशपूजा की कथा—हरीशंकर कृत, नि० का० सं० १८५१ लि० का० स० १८५५ दूसरी प्रति लि० का० स०१८५४ वि० गणेश कथा वर्णन। दे० (छ-२५८)

गणेशपुराण—मोतीलाल कृत लि० का० सं० १८५५; वि० गणेश पुराण सस्कृत का भाषानुवाद संक्षेप। दे० (ख-१६) (ज-२००)

गणेश-स्तोत्र—रतन द्विज कृत; लि० का० सं० १६४५ वि० गणेश स्तुति; पुस्तक के प्रारम्भ में 'बिहारी' नाम मिलता है; यह या तो कवि का उपनाम होगा या किसी अन्य का कुछ उल्लेख किया होगा। दे० (छ-३२१)

गदाधर भट्ट—कृष्णदास के शिष्य; वल्लभ संप्रदाय के, सं० १५७५ के लगभग वर्तमान, वृंदावन निवासी।

गदाधर भट्ट की बानी दे० (ज-८१) (क-३)

गदाधर भट्ट की वानी—गदाधर भट्ट कृत लि० का० स० १६२६, दूसरी प्रति का लि० का० स० १६५३ ; वि० राधाकृष्ण चरित्र। दे० (क-३) (ज-८१)

गरीबदास—दादू पंथी साधु, दादू जी के शिष्य।

अध्यात्म बोध दे० (ग-६५)

गाजरयुद्ध—चद बरदाई कृत, वि० युद्ध। दे० (छ-१४६ जी)

गाडूराम—बागीराम के भाई; जालधरनाथ के शिष्य मारवाड़ निवासी; सं० १८८२ के लगभग वर्तमान।

जसभूषण दे० (ग-३२)

जसरूपक दे० (ग-३३)

गिरिधर—हमीरपुर निवासी, सुदर्शन वैद्य के पिता। दे० (च-८७)

गिरिधर—संभवतः होलपुर (बारावकी) निवासी, ई० १८४४ के लगभग वर्तमान।
रसमसार दे० (अ–६२)

गिरिधर—गोपाललाल के पुत्र, बनारस गोपाल मंदिर के महंत, वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव, सं० १८३६ के लगभग वर्तमान, कविता का० सं० १८८५–१६०० तक।
गुसांइयाँ जी की वार्ता द० (अ–६१) (क–६)

गिरिधर (कविराय)—जन्म का० सं० १७७०, गंगा यमुना के मध्य भाग में किसी स्थान में उत्पन्न हुए।
कुंडलिया द० (छ–१६७)

गिरिधर (गोस्वामी)—रघुनाथ गोस्वामी के वंशज, विठ्ठलनाथ के पुत्र, व्रज निवासी।
मुहूर्त मुक्तावली द० (छ–१६८)

गिरिधर भट्ट—गौरीहर (बाँदा) निवासी; सं० १८८६ के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण।
राधा नखशिख दे० (छ–३८ ए)
गुरुनैमाला द० (छ–३८ बी)
मानमकरन्द द० (छ–३८ सी)

गिरिधरलाल जी (गोस्वामी)—बालकृष्णदास के गुरु, बनारस निवासी वल्लभ कुल के थे, सं० १८८५–१६०० तक के लगभग वर्तमान।
द० (क–६)

गिरिधारी—सं० १७०५ के लगभग वर्तमान, गंगाराम के पुत्र।
भक्ति माहात्म्य द० (अ–६४)

गीत—रामसखे कृत, लि० का० सं० १६३१, वि० राम-महिमा। द० (छ–२१६ ए)

गीतगोविंद भाषा—वैष्णवदास कृत, नि० का० सं० १८१४, लि० का० सं० १८३०, वि० कृष्ण राधिका का विहार। दे० (अ–३२४)

गीत चिंतामणि—संग्रहकर्ता अज्ञात, वि० राधा कृष्ण चरित्र वर्णन, यह ग्रंथ कई कवियों की कविताओं का संग्रह है। दे० (क–११)

गीत रघुनन्दन प्रभातिका टीका सहित—महाराज विश्वनाथसिंह देव कृत, लि० का० सं० १६०१, वि० जमुनादास कृत गीत रघुनंदन प्रभातिका पर टीका। दे० (क–४४)

गीत शत्रुञ्जय—महाराज उदितनारायण सिंह उप० उदितप्रकाश सिंह देव कृत, लि० का० सं० १६०४, वि० हनुमान स्तुति। दे० (क–१०६)

गीत संग्रह—पृथ्वीसिंह राजा कृत, वि० कृष्ण संबंधी गीतों का संग्रह। द० (छ–६५ बी)

गीता भाषा—तुलसीदास कृत, परन्तु प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास नहीं, वि० श्रीमद्भगवत गीता का भाषानुवाद। दे० (क–५६)

गीतावली (पूर्वार्द्ध)—महाराज विश्वनाथसिंह कृत, लि० का० सं० १८८७, वि० श्रीरामचन्द्र जी का यश, विहार और अयोध्यापुरी की शोभा का वर्णन। दे० (क–११४)

गीतावली रामायण—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८५६, वि० गीतों में रामायण की कथा का वर्णन। दे० (ट–६०)

गीतासार—भगवद्दास उपनाम सनेही कृत, लि० का० सं० १६०६, वि० भगवद्गीता का सारांश। द० (छ–३०४)

गीतों का संग्रह—राजा छत्रसाल कृत, वि० राधा कृष्ण के प्रेम-गीत। दे० (छ–२२)

गुणनिधि सार—गणेश कृत, नि० का० स० १८८२, लि० का० स० १८८७, वि० अलंकार, नायिका भेद, सामुद्रिक, ज्योतिष, वैद्यकादि का संग्रह। दे० (छ-३२ ए)

गुणप्रकाश—फतेसिंह कृत वि० गणित। दे० (छ-३१ बी)

गुणभद्र (स्वामी)—सं० १४१८ के लगभग वर्तमान।

आत्मानुशासन संस्कृत दे० (क-१३४)

गुणराम रासो—अन्य नाम राम रासो, माधवदास चारण कृत नि० का० सं० १६७५। लि० का० सं० १८७१, वि० रामचंद्र जी के गुण और चरित्र का वर्णन। दे० (ख-८०)

गुणविलास—सागरदान चारण कृत, लि० का० सं० १८६७, वि० आसोप (जोधपुर) के ठाकुर केसरीसिंह कूपावत राठौर का यश और जीवन-चरित्र वर्णन। दे० (ख-८१)

गुणसागर—नाहिर कृत, वि० दम्पति रहस्य वर्णन। दे० (छ-३३५)

गुणसागर—जैन मतावलंबी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

सत्रह भेद पूजा दे० (क-६४)

गुणसार—महाराज अजीतसिंह कृत, लि० का० सं० १७६६, वि० राजा सुमति और रानी सत्य रूपा की कथा द्वारा धर्म का महत्व वर्णन। दे० (ग-८३)

गुनवती चंद्रिका—चंद्रस कुन्द कृत, वि० नख शिख और शृङ्गार रस की कविता। दे० (ज-४१)

गुन्नलाल—बाँदा निवासी जाति के उपाध्याय ब्राह्मण, लक्ष्मणप्रसाद के पिता स० १६०० के पूर्व वर्तमान। दे० (छ-१६२)

गुमान [द्विज]—महोबा (बुंदेलखंड) निवासी. गोपालमणि के पुत्र. इनके अन्य तीन भाई दीपसाहि, खुमान और अमान थे, सं० १८३८ के लगभग वर्तमान।

कृष्ण चंद्रिका दे० (च-२३) (छ-४४ ए)

छंदाटवी दे० (छ-४४ बी)

गुमानसिंह—गोंडा (अवध) के राजा; सुखलाल द्विज के आश्रयदाता थे। दे० (ज-३१०)

गुरु आयुस लाडूनाथ—कवि मनोहरदास के आश्रयदाता, इन्होंने २५ कवियों को २५ हाथी और २५ लाख रुपए दिए थे। दे० (ग-१३)

गुरु चरितामृत—लखनदास कृत; वि० गुरुमाहात्म्य। दे० (ज-१६८)

गुरुचरित्र—जगन्नाथदास कृत; नि० का० सं० १७६०; लि० का० स० १८६५, वि० गुरुमाहात्म्य। दे० (ज-१२६)

गुरुदत्तसिंह—उप० भूपति, अमेठी (सुलतानपुर) नरेश, सं० १७६६ के लगभग वर्तमान; कवींद्र के आश्रयदाता। दे० (ज-२८)

रसदीपक दे० (घ-४२)

गुरुदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

रत्नपरीक्षा दे० (छ-३२६)

गुरुदीन—दास मनोहरनाथ के शिष्य; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

श्रीरामचरित राग सैरा दे० (च-२४)

रामाश्वमेध दे० (ज-१०१)

गुरु मकारी भजन—मिट्ठोलाल कृत, वि० गुरुवंदना। दे० (क-५८)

गुरुप्रताप—मलूकदास कृत; वि० गुरुप्रभाव वर्णन। दे० (छ-१६४ बी)

गुरुप्रताप महिमा—परमानंद हित कृत; लि० का० सं० १८२८, वि० हित गुलाब गुरु की प्रशंसा। दे० (छ-२०४ सी)

गुरुप्रसाद—सं० १७१५ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रत्नसागर दे० (ख-२५) (छ-२२६)

गुरुभक्तिविलास—परमानंद हित कृत; लि० का० सं० १८६३, वि० गुरु के प्रति भक्ति और सम्मान, ग्रंथ वाराह पुराण के आधार पर लिखा गया है। दे० (छ-२०४ बी)

गुरुसंतदास—चतुरदास के गुरु। दे० (ग-११०)

गुलजार चमन—महंत शीतल प्रसाद कृत; लि० का० सं० १९४३, वि० श्रृंगाररस की कविता। दे० (ज-२६२)

गुलाब—गणेश कवि के पिता और लाल कवि के पुत्र थे। दे० (घ-२४)

गुलाबलाल (गोस्वामी)—अनुमानतः १६ वीं शताब्दी के मध्य में वर्तमान, ग्रंथ के मालिक गोस्वामी गोवर्धनलाल जी के प्रपितामह थे।

स्मरण तथा मंत्रसार दे० (ज-१००)

गुलाबसिंह—अमृतसर निवासी, सं० १८३५ के लगभग वर्तमान, गारीराम के पुत्र, मानसिंह के शिष्य थे।

मोक्षपंथ प्रकाश दे० (घ-७८) (ज-१६०)

गुलामनबी—उप० रसलीन, बिलग्राम (हरदोई) निवासी; सैयद बाकर के पुत्र, सं० १७६४ के लगभग वर्तमान।

नखशिख रसप्रबोध (अंग दर्पण) दे० (ख-१५)
रसप्रबोध दे० (ग-११) (छ-१६६)

गुलाबसिंह [बख्शी]—पन्ना (बुंदेलखंड) निवासी; सं० १७१२ के लगभग वर्तमान।

रुस्तमनामा दे० (ग-८२)

गोकुल—बलरामपुर (गोंडा) निवासी; कायस्थ, महाराज दिग्विजयसिंह के आश्रित, सं० १९०० के लगभग वर्तमान।

नामरत्नाकर दे० (ज-९५ ए)
नामविनोद दे० (ज-९५ बी)

गोकुलकांड—श्रीमद्दास कृत, लि० का० सं० १८५५, वि० कृष्ण का गोकुल-चरित्र। दे० (छ-१६१)

गोकुलनाथ—रघुनाथ बंदीजन के पुत्र, बनारस निवासी, काशी नरेश महाराज चेतसिंह, महाराज बरिवंडसिंह और महाराज उदित नारायणसिंह के आश्रित; सं० १८३२ के पूर्व से सं० १८७० के पश्चात् तक वर्तमान थे।

नामरत्नमाला कोष (अमरकोष) दे० (क-२) (ज-९६ ए) (घ-१४२)
राधा कृष्ण विलास दे० (घ-१५)
सीताराम गुणार्णव दे० (घ-२३) (छ-१२४)
कवि मुख मंडन दे० (घ-३५) (छ-१२३)
चेत चंद्रिका दे० (छ-१२) (ज-९६ बी)
महाभारत दर्पण दे० (छ-३५)
राधा जू को नख सिख दे० (ज-९६ सी)

गोधन आगम—महाराज सावंतसिंह उप० नागरीदास कृत, वि० गोवर्धन पूजा वर्णन। दे० (क-१२१ पाँच)

गोप कवि—गोकुल (ब्रज) निवासी, सं० १७६७ के लगभग वर्तमान, उप० गोपाल,

जाति के भाट, निमन के पुत्र जदुनाथ के पुत्र. इनके केशवराय तथा बालकृष्ण दो और भ्राता थे, कवि ने गोकुल के सरदार दीक्षित बलभद्र का जो वल्लभ सम्प्रदाय के थे, वर्णन किया है, महाराज पृथ्वीसिंह ओडछावाले के आश्रित थे।

रास अलकार दे० (छ–३६ ए)

पिंगल प्रकरण दे० (छ–३६ बी)

(गोकुल (मथुरा) में प्रथम नदनाथ दीक्षित दक्षिण से आए, उनके पुत्र रामकृष्ण हुए जो गोकुल के एक रईस थे। उनके बलभद्र हुए जिनके वल्लभ संप्रदाय के गुरु ने चरण छुए।)

गोपाल—दादू पंथी साधु और दादू दयाल जी के शिष्य; सं० १६५७ के लगभग वर्तमान, उप० जनगोपाल।

ध्रुव चरित्र दे० (क–२५)

प्रह्लाद चरित्र दे० (क–२३)

राजा भरथ चरित्र दे० (क–२८)

दादू की जीवनी

गोपाल—उप० गोप कवि। दे० (छ–३६)

गोपाल—वंदीजन, सं० १८६१ के लगभग वर्तमान; श्यामदास के पुत्र; चरखारी नरेश राजा रतन सिंह के आश्रित; संभव है नम्बर (घ–२५३) और (ज–६८) भी यही हों।

शिख नख दर्पण दे० (छ–४०)

बलभद्र व्याकरण दे० (छ–४०)

गोपाल—यह अधिकतर अजयगढ़ में रहते थे और पहले वहाँ विद्यार्थी की दशा में गए थे।

गज विलास दे० (छ–४१)

गोपाल—सं० १८५३ के लगभग वर्तमान, यह भक्त मालूम होते हैं। संभव है कि नम्बर (छ–४०) और (ज–६८) भी यही हों।

सुदामा चरित्र दे० (छ–२५३)

गोपाल—प्रवीन राय के पुत्र, वृन्दावन निवासी।

मान पचीसी दे० (ज–६७ ए)

वृंदावन धामानुरागावली दे० (ज–६७ बी)

गोपाल—सं० १८७१ के लगभग वर्तमान, महाराज भगवतराय खीची के आश्रित, संभव है नम्बर (घ–४०) और (घ–२५३) भी यही हों।

भगवत राय की विरुदावली दे० (ज–६८)

गोपालदत्त—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

ग्यारह पचीसी दे० (छ–२५४)

गोपाल पचीसी—हरिदास कृत; लि० का० सं० १६२२, वि० कृष्ण-स्तुति। दे० (छ–४६ बी)

गोपाल मनि—गुमान कवि के पिता। दे० (च–२३)

गोपाललाल—गिरिधर के पिता, बनारस निवासी, गोपाल मंदिर के संरक्षक; सं० १८८५ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (क–६)

गोपालसिंह (कुँवर)—महाराज तिलोकसिंह के पुत्र, सं० १७५८ के लगभग वर्तमान, बुंदेलखंड निवासी। दे० (ज–३२१)

राग रत्नावली दे० (छ–४२)

गोपीनाथ—गोकुलनाथ वंदीजन बनारसवाले के पुत्र; सं० १८७० के लगभग वर्तमान; काशी नरेश महाराज उदितनारायण सिंह के आश्रित, गोकुलनाथ, गोपीनाथ और मणिदेव ने मिलकर महाभारत का पद्यमय अनुवाद किया।

महाभारत दर्पण दे० (छ–६५)

गोपीपचीसी—श्याम कवि कृत, वि० गोपियों की विरह व्यथा। दे० (छ-९०)

गोपी-माहात्म्य—सुन्दर कुँवरि बाई कृत, नि० का० सं० १८४६, वि० स्कन्ध पुराण के आधार पर गोप-महत्त्व वर्णन। दे० (छ-१००)

गोमतीदास—अयोध्या-निवासी, सं० १९१५ के लगभग वर्तमान, रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव।

रामायण दे० (घ-९)

गोरखनाथ—गोरखपंथी सम्प्रदाय के संस्थापक, सं० १४०७ के लगभग वर्तमान, मत्स्येंद्रनाथ के शिष्य और कोई कोई पुत्र भी बतलाते हैं। यह कहा जाता है कि गोरखपुर नगर इन्हीं के नाम से बसाया गया है और यहाँ का प्राचीन मंदिर भी गोरखनाथ का बनवाया हुआ ठीक माना जाता है। कबीर ने अपनी कविता में इनका वर्णन किया है और कबीर का समय विक्रमी १५वीं शताब्दी के मध्य का है। अतः गोरखनाथ का काल कबीर से पूर्व होना निश्चित है। इनकी पुस्तकों में से निम्न लिखित पुस्तकों का संग्रह एक जिल्द में मिला है।—(१) गोरख बोध (२) राम बोध (३) गोरख गणेश गोष्ठी (४) महादेव गोरख संवाद (५) गोरखदत्त गोष्ठी (६) कपड़ बोध (७) अष्टमुद्रा (८) पंचमात्री योग (९) अभय मात्रा (१०) दयाबोध (११) नरवाबोध (१२) अवलिसिलूक (१३) काफ़र बोध (१४) गोरखनाथ जी की सत्रह कला (१५) आत्मबोध (१६) ज्ञानमौंदरी (१७) ज्ञान चौंतीसा (१८) ज्ञान तिलक (१९) सिष्या दर्शन (२०) रहरास (२१) नाथ जी की तिथि (२२) बत्तीस लक्षण (२३) ग्रंथ रामावली (२४) पद गोरखनाथ जी का (२५) कृष्णस्तुति (२६) सिद्धि इकीसा गोरखनाथ जी का (२७) सिसट परमाण ग्रंथ। दे० (ग-६१)

इनकी निम्न लिखित पुस्तकें भी खोज में प्राप्त हुई हैं—

ज्ञान सिद्धांत योग दे० (ग-६१ एक) (ग—१६६)

योगेश्वरी साखी दे० (ग-६१ दो) (ग-१७९)

गोरखनाथ जी के पद दे० (ग-६१ तीन) (ग-१५६)

ज्ञान तिलक दे० (ग-६१ चार) (ग-१६८)

दत्त गोरख संवाद दे० (ग-६१ पाँच) (ग-१४३)

विराट पुराण दे० (ग-६१ छः) (ग-२९९)

नरवै बोध दे० (ग-६१ सात) (ग-२१९)

गोरखनाथ जी के फुटकर ग्रंथ दे० (ग-१५७)

गोरखसार दे० (घ-८५)

गोरखनाथ की बानी दे० (ज-९९)

गोरखनाथ की बानी—गोरखनाथ कृत, नि० का० सं० १४०७, लि० का० सं० १८५५, वि० ज्ञान वैराग्य। दे० (ज-९९)

गोरख-बोध—गोरखनाथ कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ग-६१)

गोरखसार—गोरखनाथ कृत, लि० का० सं० १८१९, वि० योग-साधन। दे० (घ-८५)

गोरा बादल—चित्तौर के सरदार, सं० १३६० के लगभग वर्तमान, चित्तौर की लड़ाई में राणा रत्नसेन की ओर से अलाउद्दीन से लड़कर मारे गए। दे० (च-५४) (छ-४८)

गोरा बादल की कथा—जटमल कृत, नि० का०

स० १६८०, वि० मेवाड़ की रानी पद्मावती की रक्षा में गोरा बादल का युद्ध वर्णन। दे० (ख-४८)

गोरेलाल (पुरोहित —उप० लाल कवि; सं० १७७२ के लगभग वर्तमान, पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल के आश्रित मऊ निवासी।

बरवै दे० (छ-४३ ए)

छत्र प्रकाश दे० (छ-४३ बी)

राजविनोद दे० (छ-४३ सी)

गोविंदगिरि—विष्णुगिरि के गुरु। दे०(ग-१०६)

गोविंदचंद्रिका—इच्छाराम कृत, नि० का० सं० १८४७; लि० का० स० १६३१; वि० दशम स्कंध भागवत का भाषानुवाद और एकादशी माहात्म्य वर्णन। दे० (छ-२६३ ए)

गोविंदसिंह गुरु—सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरु; जन्म का० स० १७२३।

चंडी-चरित्र दे० (घ-५)

गोविंदानंदघन—अलि रसिक गोविंद कृत, नि० का० सं० १८५८, वि० अलंकार। दे०(छ-१२२ए)

गोष्ठी गोरख कबीर की—कबीरदास कृत, वि० गोरखनाथ का संवाद। दे० (ज-१४३ पी)

गोष्ठी दरिया साहब व गनेश पंडित—दरिया साहब कृत, लि० का० सं० १६४६, वि० दरिया साहब और गणेश पंडित का ब्रह्म विषयक संवाद। दे० (ज-५५ जी)

गौरी बाई की महिमा—सुन्दरसिंह कृत, वि० गौरी बाई की महिमा। दे० (ङ-७४)

गौरीराय—गुलाबसिंह के पिता। दे० (ज-७४)

ग्रीष्म-विहार—महाराज सावंतसिंह (नागरी दास) कृत, वि० कृष्णलीला। दे० (ख-१२१ नौ)

ग्वाल कवि—ब्रह्म भट्ट वंशीय सेवाराम के पुत्र; वृंदावन (मथुरा) निवासी, सं० १८७६ के लगभग वर्तमान, महाराज जसवंतसिंह व स्वामी लहनासिंह के आश्रित। (ज-प०३- ६)

रसिकानंद दे० (क-८४)

यमुना लहरी दे० (ख-८८)

रसरंग दे० (च-११)

अलंकार दे० (च-१२)

कृष्ण जू को नखशिख दे० (ख-८६)

हम्मीर हठ दे० (च-१३)

भक्त भावन दे० (च-१४)

दूषण दर्पण दे० (ज-१०२)

गोपी पचीसी दे० (ख-६०)

ग्वाल पहेली—बालकृष्ण नायक कृत, लि० का० सं० १८१४, वि० पहेलियों का संग्रह। दे० (छ-६ बी)

ग्वाल पहेली लीला—बालकृष्ण चौबे कृत, वि० कृष्ण का ग्वालों से पहेली पूछने का वर्णन। दे० (छ-१०० एल)

घनआनंद—उप० आनंदघन, दे० "आनंदघन" (क-७६) (छ-१२५) (घ-६६)

घनआनंद कवित्त—घनानंद (आनंद घन) कृत, वि० राधाकृष्ण लीला और शृंगार के कवित्त। दे० (क-७६)

घनराम—स० १७५७ के लगभग वर्तमान; ये जाति के कायस्थ; ओड़छा नरेश राजा उदोतसिंह के आश्रित थे।

लीलावती दे० (छ-३५)

घनश्याम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। जाति के ब्राह्मण त्रिवेदी थे।

मानस पर प्रश्नावली दे० (ज-६०)

घनश्यामदास—जाति के कायस्थ, सं० १८८५ के लगभग वर्तमान, चरखारी नरेश राजा रतन सिंह के आश्रित।

अश्वमेधपर्व दे० (छ–३१ ए)

मधुरेश मोचनी टीका दे० (छ–३१ बी)

साँझी दे० (छ–३१ सी)

घासीराम—समथर (बुंदेलखंड) निवासी; जाति के उपाध्याय ब्राह्मण थे।

ऋषि पंचमी की कथा दे० (छ–३७)

घासीराम—जाति के ब्राह्मण; मलायाँ (हरदोई) निवासी, जन्म काल सं० १९२३।

पक्षी विलास दे० (ज–९१)

चंडी चरित्र—गुरु गोविंदसिंह कृत, लि० का० सं० १८८०, पुस्तक का अन्य नाम चंडी चरित्र उक्त विलास है; वि० चंडी देवी का चरित्र वर्णन। दे० (घ–५)

चंडी चरित्र—मारकंडे मिश्र कृत; लि० का० सं० १८९९; वि० चंडी और मधुकैटभ का युद्ध वर्णन। दे० (ज–१८४)

चंडी चरित्र नाटक—गुरु गोविंदसिंह कृत, लि० का० सं० १८८० वि० दुर्गा और महिषासुर के युद्ध का वर्णन। दे० (घ–५)

चंद—बुंदेलखंड निवासी, सं० १७१५ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

नागलीला की टीका दे० (छ–१८)

चंदछंद वर्णन की महिमा—गंगा भाट कृत, लि० का० सं० १९२३, लि० का० सं० १९२६, वि० बादशाह अकबर का गंगा कवि का चंद बरदाई के रासो की कथा सुनाने का वर्णन। दे० (ज–८४)

चंदजू (गोसाईं)—बुंदेलखंड निवासी; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

चरित्र दे० (छ–१६)

चंदन कवि—सं० १८४५ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

काव्याभरण दे० (ज–४०)

चंदन सतसई दे० (ज–४०)

तत्त्व संज्ञा दे० (ग–२६)

चंदरस छंद—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

गुणवती चंद्रिका दे० (ज–४१)

चंद बरदाई—जन्म भूमि लाहौर, सं० १२४७ के लगभग वर्तमान, सं० १२५० में मृत्यु हुई। दिल्ली के प्रसिद्ध हिंदू सम्राट् महाराज पृथ्वी राज के मंत्री तथा सम्मानित राजकवि।

पृथ्वीराज रासो दे० (क–५६)

(क–६२) (क–६३) (ख–३८)

(ख–३६) (ख–४०) (ख–४१)

(ख–४२) (ख–४३) (ख–४४)

(ख–४५) (ख–४६) (ख–४७)

(छ–१४६) (ग–७१)

संयोगता नेम प्रस्ताव दे० (ग–२७५)

चंद्रहित—उप० चन्द्रलाल; दे० "चन्द्रलाल" हित हरिवंश के अनुयायी, सं० १८३५ के लगभग वर्तमान, नम्बर (ज–३६) और (ज–४३) चन्द हित तथा चन्द्रलाल एक ही हैं, इनको पृथक् मानना भूल है।

रूपसुधानिधि टीका दे० (ज–३६ ए)

अभिलाष बतीसी दे० (ज–३६ बी)

भावना पचीसी दे० (ज–३६ सी) (ज–४३ डी)

समय पचीसी दे० (ज–३६ डी) (ज–४३ जी)

चंद्र—सं० १७५७ के लगभग वर्तमान शायद ये वही चंद्र हैं जो नवाब मुहम्मदखाँ (पठान सुलतान) के आश्रित थे और जिन्होंने बिहारी सतसई पर टीका लिखी थी।

पिंगल (च–२०)

चंद्र—यह रामानुज सम्प्रदाय के वैष्णव जान पड़ते हैं, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

चंद्रप्रकाश रसिक अनन्य सिंगार दे० (ज–४२)

चंद्र कवि—सं० १४२८ के लगभग वर्तमान; जाति के चौबे सनाढ्य ब्राह्मण हीरानंद के पुत्र और रामराय के पौत्र थे।

चंद्र प्रकाश दे० (छ–१४५)

चंद्रकवि—सं० १९०४ के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश महाराज रामसिंह सवाई के आश्रित।

भेद प्रकाश दे० (छ–१४४)

चंद्रघन (गोसाईं)—उप० चंद्रलाल; यह जयपुर महाराज के आश्रित थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

भागवतसार भाषा (भागवत पचीसी) दे० (क–६६)

[७ यह ग्रंथ चंद्रघन का निर्माण किया हुआ नहीं है बल्कि चंद्रलाल का है। दे० (ज–४३ सी) नाम में भूल है।]

चंद्रदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं; संभव है कि ये नम्बर (च–२०) वाले ही चंद्र हों।

नेह तरंग दे० (ज–३८ ए)

रामायण भाषा दे० (ज–३८ बी)

चंद्रप्रकाश—चंद्रकवि कृत, नि० का० सं० १८२८, लि० का० सं० १८८६, वि० ज्योतिष। दे० (छ—१४५)

चंद्रप्रकाश रसिक अनन्य शृङ्गार—चंद्र कृत, लि० का० सं० १९४५, वि० सीताराम का विहार। दे० (ज–४२)

चंद्रलाल—उप० चंदहित, राधा वल्लभी संप्रदाय के गोस्वामी और वृंदावन निवासी थे, सं० १८२४–१८५४ तक के लगभग वर्तमान, नम्बर (ज–४३) और (ज–३९) चंतहित तथा चंद्रलाल एक ही हैं, पृथक् मानना भूल है।

रूपसुधानिधि की टीका दे० (ज–३९ ए)

वृंदावन प्रकाशमाला दे० (ज–४३ ए)

उत्कंठा माधुरी दे० (ज–४३–बी)

भागवतसार पचीसी (भागवतसार भाषा) दे० (ज–४३ सी)

वृंदावन महिमा दे० (ज–४३ डी)

भावना सुबोधनी दे० (ज–४३ ई)

अभिलाष पचीसी दे० (ज–४३ एफ) (ज–३९ बी)

समय पचीसी दे० (ज–४३ जी) (ज–३९ डी)

समय प्रबंध दे० (ज–४३ एच)

स्फुट कविता दे० (ज–४३ आई)

भावना पचीसी दे० (ज–४३ जे) (ज–३९ सी)

चंद्र शेखर—सं० १९०२ के लगभग वर्तमान, पटियाला नरेश महाराज नरेंद्रसिंह के आश्रित।

हम्मीरहठ दे० (घ–१००)

हरिभक्त विलास दे० (घ–१०१)

विवेक विलास दे० (घ–१०२)

रसिक विनोद दे० (घ–१०३)

चंद्रसेन—मिश्र ब्राह्मण, इन्होंने संस्कृत के माधव

निदान का भाषान्तर किया, स० १७२६ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

माधव निदान दे० (अ-४४)

चकोर पचक—दीनदयाल कृत, वि० चकोर का चन्द्रमा के प्रति स्नेह। दे० (ख-७१)

चतुरदास—मिश्र ब्राह्मण, स० १६६२ के लगभग वर्तमान, संतदास के शिष्य, इनका नाम चतुर्भुज मिश्र था, साधु होने पर चतुरदास नाम पड़ा।

भागवत एकादश स्कंध दे० (क-७१) (ख-११०) (छ-१४६)

चतुर्भुज (मिश्र)—इनका साधु होने पर चतुरदास नाम पड़ा। दे० (क-७१) (ख-११०) (छ-१४६)

चतुर्भुज [शुक्ल]—सोमनाथ के पिता, १६६१ के पूर्व वर्तमान थे, भृगवेपुर (प्रयाग) निवासी थे। दे० (अ-३१६)

चतुर्भुजदास—यह जाति के कायस्थ थे, और ग्रंथ से राजपूताना निवासी जान पड़ते हैं।

मधुमालतीरी कथा दे० (ग-४४)

चतुर्भुजदास—यह ब्रज के प्रसिद्ध हित-हरिवंश के शिष्य थे, परन्तु अष्टछापवाले चतुर्भुजदास नहीं हैं, स० १६३२ के लगभग वर्तमान।

द्वादश यश दे० (छ-१४८ ए)

भक्ति प्रताप दे० (छ-१४८ बी)

श्री हित जू की मंगल दे० (छ-१४८ सी)

चरणचिह्न—रामचरण दास कृत, लि० का० सं० १८७७ वि० सीता राम के चरणों का माहात्म्य तथा चिह्नों का वर्णन। दे० (अ-२४१ आर)

चरणदास—इनका पहिला नाम रणजीत था, शुकदेव के शिष्य, डहरा (अलवर, राजपूताना) निवासी, जाति के धूसर बनियाँ, सहजो बाई नामी एक स्त्री इनकी शिष्या थी, जन्म काल स० १७६०, मृत्यु का० स० १८३८।

राम माला दे० (छ-१४७ ए)

मन विरक्त करन गुटकासार दे०(छ-१४७बी)

जन्म दे० (छ-१४७ सी)

ज्ञान स्वरोदय दे० (छ-१४७ ई) (ख-७०)

अमरलोक अखंड धाम दे० (छ-१४७ एफ)

दान लीला दे० (छ-१४७ जी)

चरणदास सागर दे० (ख-७०)

दूरदन्त लीला दे० (अ-४५)

अष्टांग योग दे० (घ-१७)

नासिकेत दे० (घ-१८)

संदेह सागर दे० (घ-१६)

दे० (क-१२६)

चरणदास—श्यामदास के शिष्य, यह प्रसिद्ध चरणदास ज्ञान-स्वरोदयवाले नहीं हैं, यह स० १७४६ लगभग वर्तमान बालकृष्ण माथव के गुरु थे। दे० (छ-६)

नेह प्रकाशिका दे० (क-३५)

चर-नायिका—देवमणि कृत, वि० राजनीति। दे० (अ-६६)

चरनायके—मधुमति कृत, वि० संस्कृत चाणक्य नीति का पद्यमय भाषानुवाद। दे० (छ-२८६)

चाँदसिंह—दुनी (जयपुर) के गागावत ठाकुर शंभूसिंह के पुत्र और जयपुर नरेश महाराज जगतसिंह के सेनापति थे, इन्होंने कई बार टौंक के नव्वाब अमीरखाँ का लड़ाई में परा

जित किया; ये कवि चेतराम के आश्रय-दाता थे। दे० (ख-८३)

चार दरवेश कथा—नारायण कृत, नि० का० सं० १८४१, लि० का० सं० १८५४; वि० उर्दू चहार दर्वेश अर्थात् चार फकीरों के किस्से का हिन्दी पद्यमय अनुवाद। दे० (ङ—१६)

चिंतामणि—प्रसिद्ध कवि मतिराम और भूषण के बड़े भाई थे; जन्म का० सं० १६८०, यह नागपुर नरेश महाराज श्रीमत मकरंद शाह के आश्रित थे, तिकमापुर (कानपुर) निवासी, जाति के कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण ।

कविकुल कल्पतरु दे० (क-१२७) (ङ-११८) (घ-१३७)

पिंगल भाषा दे० (घ-३६) (ज-५०) (छ-१५१) (क-४०) (ङ-११६)

चिंतामणि—यह अकबर महान् या द्वितीय अकबर के आश्रित थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रसमंजरी दे० (छ-१५०)

चिंतामणिदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

अंबरीष चरित्र दे० (ज-५१)

चिकित्सासार—धीरजराम कृत; नि० का० सं० १८१०, लि० का० सं० १६०२; वि० वैद्यक। दे० (ज-७२)

चित्रकूट माहात्म्य—कृपाराम कृत, लि० का० सं० १८६२; वि० चित्रकूट की महिमा का वर्णन। दे० (छ-१८३)

चित्रकूट शतक—रामनाथ कृत; नि० का० सं० १८७४; वि० चित्रकूट माहात्म्य। दे०(ज-२५३)

चित्रगुप्त-प्रकाश—सयसुख कृत, नि० का० सं० १८७३; लि० का० सं० १६११; वि० कायस्थों की उत्पत्ति का वर्णन। दे० (छ-१०६)

चित्रगुप्त प्रकाश—प्रताप कृत; नि० का० सं० १८७५; लि० का० सं० १६१६; वि० कायस्थों की उत्पत्ति का वर्णन। दे० (छ-६२ प)

चित्र-चंद्रिका—काशीराज कृत; वि० काव्य करने की रीति का वर्णन। दे० (ज-१४५)

चित्र-मीमांसा—जगतसिंह कृत, लि० का० सं० १६१७, वि० अलंकार। दे० (ज-१२७)

चित्रमुकुट राजा की कथा—(र० अज्ञात) वि० उज्जैन के राजा चित्रमुकुट का वृतांत। दे० (ङ-७)

चित्रांगद—जाति के क्षत्री; बुंदेलखंड निवासी; कवि यशवंतसिंह के पिता थे। दे० (छ-१२०)

चित्रावली—उसमान कवि (मान) कृत; नि० का० सं० १६७०; लि० का० सं० १८०२, वि० नैपाल के राजा धरनीधर के पुत्र सुजान और रूपनगर के राजा चित्रसेन की कन्या चित्रावती के प्रेम की कहानी। दे० (ङ-३२)

चिद-विलास—(र० अज्ञात) लि० का० सं० १७७२, वि० वेदांत मतानुसार सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय आदि का वर्णन। दे० (क-७३)

चिरंजीलाल—विनोदीलाल के पिता; हिंडौन (जयपुर) के कानूनगो थे, पीछे रघुनाथ पेशवा के मंत्री हो गए; सं० १८७४ के लगभग वर्तमान, जब उदयपुर और बृटिश गवर्नमेंट में संधि हो गई, तब यह महाराणा भीमसिंह के दर्बार में फिर नौकर हो गए; सं० १८५१ में इनके पुत्र विनोदीलाल का जन्म हुआ। दे० (ग-१०२)

चुरिहारिन लीला—हसराज बख्शी कृत; लि० का० स० १८६३, वि० कृष्ण के मनहारिन का वेश धरकर राधा के पास आने की लीला का वर्णन। दे० (छ-४५ ई)

चूक विवेक—रतन कवि कृत; लि० का० स० १८५५, वि० नीति वर्णन। दे० (ट-१००)

चूड़ामणि—मोहनलाल के पिता; जाति के मिश्र ब्राह्मण, चरखारी निवासी। दे० (च-७०)

चूड़ामणि शकुन—मथुरानाथ कृत; वि० शकुना वली। दे० (ज-१८५ डी)

चेत चंद्रिका—गोकुलनाथ कृत; लि० का० स० १८८६; वि० अलंकार। दे० (ज—९६ बी) (क—१५)

चेतन-कर्मचरित—भगवतीदास कृत; नि० का० स० १७३२, लि० का० सं० १७८३, वि० चेतन (आत्मा) और कर्म का युद्ध वर्णन। दे० (क-१२२)

चेतनचंद्र—स० १८१० के लगभग वर्तमान; महा राज जगतजीत के आश्रित।

शालिहोत्र दे० (ज-४६)

चेतसिंह—काशी नरेश, राज्य का० स० १८२७ से १८३८ तक, कवि गोकुलनाथ और लाल कवि के आश्रयदाता।

लक्ष्मीनारायण विनोद दे० (ज-४६) (क-२) (घ-११३)

चैनराम—सं० १८८५ के लगभग वर्तमान; कुमी (जयपुर) के गोगावत ठाकुर चाँदसिंह के आश्रित।

मारवाड़ गाथा दे० (ज-८३)

चैनराय—प्रियादास के शिष्य, स० १७६६ के लग भग वर्तमान।

भक्त सुमिरनी दे० (च-१४३)

चौका पर की रमैनी—कबीरदास कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज-१४३ एन)

चौंतीसा—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान। दे० (ज-१४३ ओ)

चौंतीसी—खेतसिंह कृत, नि० का० स० १८७८ वि० शिक्षा। दे० (छ-९० बी)

चौंतीसी—विश्वनाथसिंह कृत, वि० ज्ञान। दे० (ज-३२ सी)

चौरासी जी का माहात्म्य—वृजजीवनदास कृत, वि० राधावल्लभी संप्रदाय के चौरासी वैष्णवों का माहात्म्य वर्णन। दे० (ज-३४ डी)

चौरासी रामायणी—विश्वनाथ सिंह कृत; लि० का० सं० १९०४, वि० कबीरदास की रमैनी पर टीका "ज्ञानोपदेश कथन"। दे० (ज-३२६ डी)

चौरासी सार—वृजजीवन दास कृत, वि० हरि वंश जी के पदों की आलोचना। दे० (ज-३४सी)

चौसार चक्र—मथुरानाथ कृत; नि० का० स० १८३७, लि० का० स० १८५५, वि० जवाहरात की तौल, दर आदि जानने की रीति का वर्णन। दे० (ज—१८५ बी)

छंद प्रकाश—भिखारीदास कृत, वि० कविता के प्रस्तार, वृत्ति और छंद आदि का वर्णन। दे० (घ—३२)

छंद-मंजरी—श्रीराम कृत, वि० पिंगल वर्णन। दे० (छ—२३१)

छंद-रत्नाकर—मनसाराम भट्ट कृत; नि० का० स० १८८१, वि० पिंगल वर्णन। दे० (ड—१६)

छंद-रत्नावली—हरिराम कृत, लि० का० सं० १६५१; वि० पिंगल। दे० (छ—२५७)

छंद-विचार—सुखदेव मिश्र कृत; नि० का० सं० १७३३, लि० का० सं० १६१६; वि० पिंगल वर्णन। दे० (ज—३०७ ए) (छ—२४० बी)

छंद-सार—नारायणदास कृत, नि० का० सं० १८२६, लि० का० स० १८६६, वि० पिंगल वर्णन। दे० (छ—७८)

छंदाटवी—गुमान द्विज कृत, वि० पिंगल। दे० (छ—४४ बी)

छंदार्णव—भिखारीदास कृत, नि० का० सं० १७९९, वि० पिंगल वर्णन। दे० (घ—३१)

छंदावली रामायण—गोस्वामी तुलसीदास कृत, वि० विविध छंदों में रामायण। दे० (घ—८२)

छंदोनिधि पिंगल—मनराखनदास कृत, नि० का० सं० १८६१; लि० का० सं० १६५३; वि० काव्य रीति वर्णन। दे० (ज—१८७)

छत्रधारी—रामजीवन के पुत्र, सं० १६१४ के लगभग वर्तमान, इन्होंने रामायण के प्रथम तीन कांडों का अनुवाद किया है।

वाल्मीकीय रामायण दे० (ङ—६८)

छत्र-प्रकाश—गोरेलाल पुरोहित कृत, नि० का० सं० १७७२, लि० का० सं० १८८६; वि० पन्ना नरेश महाराज छत्रशाल का वर्णन। दे० (छ-४३ बी) सं० में भूल है।

छत्रशाल—पन्नानरेश, जन्म का० सं० १७०६, मृत्यु का० सं० १७८८, कवि केशवराज, हरिकेश द्विज और गोरेलाल पुरोहित के आश्रयदाता; राजा विक्रम साहि के पूर्वज; पंचमसिंह के पितृव्य। दे० (च—१०) (छ—४३ बी) (छ—२२) (घ—७२) (छ—८५)

राजविनोद दे० (छ—२२ ए)

गीतों का संग्रह दे० (छ—२२ बी)

छत्रशाल मिश्र—चँदेरी निवासी गंगाराम के पुत्र, चँदेरी के राजा दुर्जनसिंह के सेनापति थे; दर्बार से इन्हें कुँवर की उपाधि मिली थी; सं० १८४४ के लगभग वर्तमान।

औषधिसार दे० (छ—२१ ए)

शकुन परीक्षा दे० (छ—२१ बी)

स्वप्न परीक्षा दे० (छ—२१ सी)

छत्रसाल—सं० १८३३ के लगभग वर्तमान; मोध (झाँसी) निवासी; हित हरिवंश के अनुयायी थे।

प्रेम प्रकाश दे० (छ—२०)

छत्रसिंह—सं० १७५७ के लगभग वर्तमान, अटे (भदावर, ग्वालियर) निवासी, जाति के श्रीवास्तव कायस्थ, अमरावती के राजा कल्याण सिंह के आश्रित।

विजय मुक्तावली दे० (छ—२३) (ज—४८

छत्रसिंह—नरवर (राज्य ग्वालियर) के जागीरदार रामसिंह के पिता थे। दे० (छ—२१७

छत्रसिंह—जोधपुर नरेश महाराज मानसिंह के पुत्र, सं० १८७३ के लगभग वर्तमान; मृत्यु का० सं० १८७६, जोशी शम्भूदत्त पोकरण ब्राह्मण इनके शिक्षक थे। दे० (ग—३६)

छद्म-चौअनी—व्रजजीवन दास कृत, वि० श्रीकृष्ण के छद्मवेश का वर्णन। दे० (ज—३४ ई)

छप्पै कबीर के—कबीरदास कृत, वि० संतों का वर्णन तथा ज्ञानोपदेश। दे० (ज—१४३ एम)

छप्पै रामायण—रामचरणदास कृत, वि० सीता का पिनाक धनुष उठाना और जनक का सीता के विवाह के लिए प्रतिज्ञा करना। दे० (ज—२४१ जी)

छप्पै रामायण—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० स० १९२८, वि० छप्पय छंद में रामायण का वर्णन। दे० (छ—२४५ ऐच्)

छीहल कवि—सं० १५७५ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

पंच सहेली रा दूहा दे० (क-६३) (ग-१५)

छूटक दोहा—नागरीदास (राजा सावतसिंह) कृत, वि० भक्ति रसमय उपदेश के स्फुट दोहे। दे० (ज—११६)

जंजीरा या जंजीराबंद—कालिदास त्रिवेदी कृत, वि० राधा कृष्ण का प्रेम और रूप वर्णन। दे० (क—५) (छ—१७८)

जगजीत—उप० जोगजीत, दे० " जोगजीत "। (ज—६८)

जगजीवनदास—दादूजी के शिष्य, चंदेल ठाकुर, कोटवा (बाराबंकी) निवासी थे, इन्होंने सत्यनामी सम्प्रदाय चलाया और सं० १८१८ के लगभग वर्तमान थे, दामोदरदास, दूलन दास के गुरु।

जगजीवनदास की बानी दे० (ज—१२२) (ज—७८)

जगजीवनदास की बानी—जगजीवनदास कृत, लि० का० सं० १८५५, वि० ज्ञान-वर्णन। दे० (ज—१२२)

जगतमोहन—रघुनाथ कृत, नि० का० सं० १८०७, लि० का० स० १८१२ वि० वेदांत, न्याय, सामुद्रिक, ज्योतिष, वैद्यक, कोक, पिंगल, चित्र काव्य, अलंकार, नायिका और संगीतादि वर्णन। दे० (घ—११२) (ज—२३५ बी)

जगतराम—जयतपुर (बुंदेलखंड) के राजा, राज्य का० स० १७८६—१७६६, हरिकेश द्विज के आश्रयदाता थे। दे० (छ—४६)

जगतराज दिग्विजय—हरिकेश द्विज कृत, लि० का० सं० १८५६, वि० जैतपुर के राजा जगत राज का दिग्विजय तथा जीवनी वर्णन। दे० (छ—४६)

जगतविनोद—पद्माकर भट्ट कृत, नि० का० स० १८७२, लि० का० स० १८८५ वि० नायिका भेद, नव रस वर्णन। दे० (ग-६) (छ-८२ ए)

जगतसिंह—जयपुर नरेश महाराज प्रतापसिंह सवाई के पुत्र, राज्य का० सं० १८६०—१८७५, कवि पद्माकर भट्ट के आश्रयदाता, बुंदी के राजा चाँदसिंह इनके सेनापति थे। दे० (ख—१) (ख—८३) (क—८५) (ग—६)

जगतसिंह—उदयपुर नरेश, स० १८६८ के लगभग वर्तमान, कवि दलपतिराय के आश्रयदाता। दे० (ङ—१३)

जगतसिंह—सं० १७०० के लगभग वर्तमान, समाचन्द्र के आश्रयदाता। दे० (ज—२७०)

जगतसिंह—भिनगा (बहराइच) के तालुकेदार दिग्विजयसिंह के पुत्र, कविता का० सं० १८५८—१८७७ के लगभग।

साहित्य सुधानिधि दे० (ज—१२७ ए)

चित्रमीमांसा दे० (ज—१२७ बी)

नखशिख दे० (ज—१२७ सी)

जगदीश-शतक—रीवाँनरेश रघुराजसिंह कृत,

वि० जगन्नाथ जी की स्तुति। दे० (ङ—८२)

जगन्नाथ—बिसेन ठाकुर, धिंगवास (प्रतापगढ़) निवासी, सं० १८८७ के लगभग वर्तमान।

जुद्धोत्सव दे० (ज—१२३)

जगन्नाथ (मिश्र)—सं० १५६० के लगभग वर्तमान जौनपुर निवासी, मुग़ल सम्राट् अकबर के आश्रित थे और कुछ जमीन भी उनसे मिली थी; ये अकबर के नवरत्नवाले जगन्नाथ नहीं हैं।

राजा हरिश्चंद्र की कथा दे० (ज—१२४)

जगन्नाथ (रिचार्य)—जुगलदास के पुत्र; छतरपुर (बुंदेलखंड) में रहते थे; सं० १८४५ के लगभग वर्तमान।

कृष्णायन दे० (ज—१२५)

जगन्नाथदास—सं० १७६८ के लगभग वर्तमान; ये किसी तुलसीदास साधु के शिष्य थे।

मन बत्तीसी और गुरु महिमा दे० (छ—२६९)

गुरुचरित्र दे० (ज—१२६)

जगन्नाथप्रसाद—छतरपुर (बुंदेलखंड) निवासी, रसनिधि के दोहों के संग्रहकर्त्ता। दे० (च—७५)

जगन्नाथ-माहात्म्य—मकरंद कृत, वि० ईश्वर-वंदना। दे० (ज—१८२)

जटमल—सं० १६८० के लगभग वर्तमान; मेवाड़ निवासी।

गोरा बादल की कथा दे० (ख—४८)

जटाशंकर—उप० नीलकंठ, कवि मतिराम के तीसरे भाई थे। तिकमापुर (कानपुर) निवासी, त्रिपाठी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। दे० (क—४०)

जतनलाल (गोस्वामी)—सं० १८६१ के पूर्व वर्तमान; स्वामी हितहरिवंश के अनुयायी थे।

रसिक अनन्यसार दे० (ज—१३७)

जदुराज-विलास—महाराज रघुराजसिंह कृत, नि० का० सं०-१९३३; लि० का० सं० १९४१; वि० श्रीकृष्ण जी की स्तुति और चरित्र वर्णन। दे० (क—४९)

जन अनाथ—उप० अनाथदास; सं० १७१६ में उत्पन्न, मौनी बाबा के शिष्य, साधु।

विचारमाला दे० (छ—२६५)

जन अनाथ भाट—यह जन अनाथ उप० अनाथदास नहीं हैं, सं० १७२६ में वर्तमान; राजा मकरंद बुँदेला के आश्रित।

सर्वसार उपदेश दे० (ज—१३१)

मोहमर्दन राजा की कथा दे० (ज—२१४)

जनकनंदिनीदास—ये रामानुज संप्रदाय के वैष्णव साधु थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

भेद भास्कर दे० (छ—२६६)

जनक-पचीसी—मंडन कृत, लि० का० सं० १८९२; दूसरी प्रति का सं० १८९४; वि० रामचंद्र जी की शोभा और मुकुट का वर्णन। दे० (छ—७२)

जनकराजकिशोरीशरण—उप० किशोरीशरण या रसिक तथा रसिकविहारी, ये सुदामापुरी (गुजरात) से आए थे, अयोध्या के महंत रघुवरदास के शिष्य थे और अंत में गद्दी के स्वामी हुए; सं० १८७५ के लगभग वर्तमान; वैष्णव महंत।

सीताराम सिद्धांत मुक्तावली दे० (ज—१३४ ए) (छ—१८१ डी)

अनन्य तरंगिनी दे० (ज—१३४ बी)

कवितावली दे० (ज—१३४ सी) (छ—१८१ सी)

सीताराम रसतरंगिणी दे० (अ-१३४ डी)
आत्म-सम्बन्ध दर्पण दे० (अ-१३४ ई)
तुलसीदास चरित्र दे० (अ-१३४ एफ)
प्रेमिका विनोद दीपिका दे० (अ-१३४ जी)
वैराग्यसार वृत्तिप्रदीपिका दे० (अ-१३४ एच)
चंद्रीरहस्य दीपिका दे० (अ-१३४ आई)
रास दीपिका दे० (अ-१३४ जे)
जानकी करुणाभरण दे० (अ-१३४ के)
दोहावली दे० (अ-१३४ एल)
सिद्धांत चौंतीसा दे० (अ-१३४ एम)
रघुवर करुणाभरण दे० (अ-१३४ एन) (छ-१८१ ए)
कवित्त श्रृंगार दीपिका दे० (अ-१३४ ओ)
सीताराम रस दीपिका दे० (छ-१८१ बी)

जनक-लाड़िली शरण—अयोध्या के महंत, सं० १६०३ के लगभग वर्तमान।
नेहप्रकाशिका दे० (अ-१३३)

जनगूजर—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
कृष्णपचीसी दे० (छ-२३०)

जनगोपाल—उप० दास प्रतीत होता है, सं० १८३३ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
समर सार दे० (छ-३)

जनगोपाल—सं० १६५७ के लगभग वर्तमान, दादूदयाल के अनुयायी, गुरु दादू की जीवनी लिखी है, उप० गोपाल।
ध्रुवचरित्र दे० (छ-१७५) (क-२५)
राजा भरत चरित्र दे० (क-२८)
प्रह्लाद चरित्र दे० (क-२३)
दादू की जीवनी दे० (क-२८)

जनभगवंत—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
ध्रुव-चरित्र दे० (छ-१७२)

जनदयाल—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
प्रेम लीला दे० (छ-२६८)

जन मुरारि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
भगवत-गीता दे० (अ-१३२)

जनम-बोध—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान। दे० (अ-१४३ एल)

जनमुकुंद—उप० मुकुंददास, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
भ्रमर-गीता दे० (छ-२७२) (ग-१०४ डी) (अ-१=४)

जनमोहन—जाति के ब्राह्मण, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, ओड़छा (बुंदेलखंड) के राज मंदिर के पुजारी थे।
सनेहलीला दे० (छ-५४)

जनहम्मीर—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
राम-रहस्य दे० (छ-२३१)

जनार्दन भट्ट—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
बाज-विवेक दे० (छ-२६७ ए)
वैद्यरत्न दे० (छ-२६७ बी) (ग-१०५)
हाथी को शालिहोत्र दे० (छ-२६७ सी)

जन्मखंड—भवसिंह (प्रयाग) कृत, लि० का० सं० १६२१, वि० रामचन्द्र के जन्मोत्सव का वर्णन। दे० (छ-७६ डी)

जमुनादास—यह कोई भक्त साधु जान पड़ते हैं, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
जमुनालहरी दे० (छ-२६४)

जमुना मनाप वेलि—वृन्दावनदास कृत, लि० का०

सं० १८१७; लि० का० स० १८३७; वि० जमुना की महिमा।

जमुना-महिमा वर्णन दे० (छ-२५० सी)

जमुना मंगल—परमानंद कृत; लि० का० सं० १८६६, वि० जमुना नदी का वर्णन। दे० (छ-२०४ एफ)

जमुना माहात्म्य—परमानंद कृत, लि० का० स० १८६६; वि० जमुना जी की महिमा का वर्णन। दे० (छ-२०४ जी)

जमुनालहरी—ग्वाल कवि कृत, नि० का० सं० १८७६, लि० का० सं० भी वही है; वि० जमुना जी की महिमा। दे० (ख-८८)

जमुना-लहरी—पद्माकर भट्ट कृत; वि० जमुना जी की स्तुति। दे० (छ-८२ सी)

जमुना-लहरी—जमुनादास कृत; लि० का० सं० १९३५, वि० जमुना जी की प्रशंसा। दे० (छ-२६४)

जयकृष्ण—भवानीदास के पुत्र, सं० १७७६ के लगभग वर्तमान; जाति के पोकरण ब्राह्मण।

तामरूपदीप पिंगल दे० (ज-१३८) (क-८०)

छंदसार दे० (ज-१३८)

जयकृष्ण—जोधपुर निवासी, जाति के पुष्करण ब्राह्मण, सँ० १८२५ के लगभग वर्तमान, यह महाराज वख्तसिंह के दीवान सिंघवी फ़तहमल के बेटे सिंघवी ज्ञानमल के आश्रित थे, नम्बर (क-८०) वाले भी यही कवि जान पड़ते हैं।

(कवि) जयकृष्ण कृत कवित दे० (ग-९८)

शिव माहात्म्य दे० (ग-८९)

शिवगीता भाषार्थं दे० (ग-९१)

जयकृष्ण कविकृत कवित्त—जयकृष्ण कृत; वि० यह कवित्तों का संग्रह शृंगार विषयक है जिसमें ९ कवियों की कविताएँ संगृहीत हैं—(१) रस-पुंज (२) रसचंद (३) भूषण (४) रामराय (५) कुंदन (६) मकरंद (७) बलभद्र (८) वृंद (९) काशीराम। दे० (ग-९८)

जयगोपालदास—बनारस निवासी, स० १८७४ के लगभग वर्तमान, मिर्जापुर निवासी संत रामगुलाम के शिष्य।

जयगोपालदास विलास व तुलसी शब्दार्थ प्रकाश दे० (ग-१०३) (ट-६)

जयगोपालदास-विलास—अन्य नाम तुलसी-शब्दार्थ प्रकाश, जयगोपालदास कृत; नि० का० सं० १८७४, लि० का० सं० १८८३, वि० प्रथम प्रकाश में अनेक वस्तुओं की संख्या तथा राम-कृष्ण की प्रशंसा, दूसरे में शब्दार्थ और तीसरे में कठिन भावों का अर्थ वर्णन दे० (ङ-६) (ग-१०३)

जयगोपालसिंह—बेसहनीसिंह के पुत्र, चैमलपुर परगना सिकंदरा के जमींदार; जाति के वर्मा थे; सं० १८९५ के लगभग वर्तमान, कवि विष्णुदत्त के आश्रयदाता। दे० (ङ-७०)

जयचंद वंशावली—सतीप्रसाद कृत; वि० राजा जयचंद की वंशावली, यह वंशावली कमौली ग्राम जिला बनारस में किसी पीतल के पत्र पर के लेख से प्राप्त की गई थी। दे० (छ-२३०)

जयराम—सं० १७९५ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

सदाचार प्रकाश दे० (ज-१४०)

जयनारायण—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

काशीखंड भाषा दे० (ज-१२९)

जयमंगलप्रसाद—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

संगाष्टक दे० (ज–१९८)

जयमाल संग्रह—रामचरणदास कृत; वि० आदि में अयोध्या का वर्णन और अंत में रामचन्द्र विहार। दे० (ज–२४५)

जयरामदास—यह कोई ब्रह्मचारी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

अमर विलास दे० (ज–१३०)

जयलाल—सूंदर कवि के वंशज और राजा कृष्णगढ़ के वर्तमान दरबारी कवि हैं, जाति के सेवक भट्ट हैं। दे० (ग–४२)

जयसिंह (महाराज)—जयपुर नरेश; राज्य का० सं० १७५६—१८०० तक; कवि कृपाराम के आश्रयदाता। दे० (ज–१५९)

जयसिंह जू देव—रीवाँ नरेश; सं० १८७१ के लगभग वर्तमान, इनके वंश की नामावली इस प्रकार है:—भायसिंह व्याघ्रदेव के वंश में उत्पन्न हुए जिन्होंने पायवगढ़ का किला जीता और बघेल वंश की नींव डाली, उनके भ्रम रुद्रसिंह हुए, उनके अवधूतसिंह, उनके अजीत सिंह और उनके जयसिंह सुदेव हुए, शिवनाथ और अजवेश कवि के आश्रयदाता। दे० (ख–१०६) (ख–१५)

कृष्ण तरंगिनी दे० (क–१३६)

हरिचरितामृत दे० (क–१४०)

वलिद कथा दे० (क–१४१)

वामन कथा दे० (क–१४२)

परशुराम कथा दे० (क–१४३)

हरिचरितामृत दशम दे० (क–१४४)

हरिचरित चंद्रिका दे० (क–१४५)

कपिलदेव की कथा दे० (क–१४६)

पृथु कथा दे० (क–१४७)

नारद सनत्कुमार कथा दे० (क–१४८)

स्वायम्भुवमनु कथा दे० (क–१४९)

दत्तात्रय कथा दे० (क–१५०)

ऋषभदेव की कथा दे० (क–१५१)

व्यास चरित दे० (क–१५२)

बलदेव कथा दे० (क–१५३)

नर नारायण कथा दे० (क–१५४)

हरि अवतार कथा दे० (क–१५५)

हयग्रीव कथा दे० (क–१५६)

जयसिंह (द्वितीय—)जयपुरेश कृष्ण भट्ट के आश्रयदाता, राज्य काल सं० १७५६ से १८०० तक। दे० (ज–३०१)

जयसिंह मिर्जा—जयपुरनरेश; बादशाह औरंगजेब ने इन्हें मिर्जा की उपाधि दी थी, सं० १७०७ के लगभग वर्तमान, प्रसिद्ध कवि बिहारीलाल के आश्रयदाता। दे० (क–२१५)

जयसिंह रायरायान—जाति के कायस्थ, सं० १८१२ के लगभग वर्तमान, किसी मुगल सम्राट् के आश्रित, अंत में अयोध्या चले आए और सन्यासियों की भाँति रहने लगे।

सतसई दे० (ज–१३६)

जयसिंह सवाई—महाराज जयसिंह मिर्जा के पुत्र और महाराज प्रतापसिंह के पितामह थे, इनके समय में जयपुर नगर बसाया गया। दे० (क–७८)

जलधरनाथ—महाराज मानसिंह के गुरु, सं० १८८० के लगभग वर्तमान, इन्हीं के आशीर्वाद से राजा मानसिंह को राज्य मिला था। दे० (ज–२४)

जलंधरनाथ जी रा चरित्र—महाराज मानसिंह कृत; वि० जलंधरनाथ गुरु का चरित्र वर्णन। दे० (ग–२४)

जलंधरनाथ जी रो गुण—दौलतराम कृत, लि० का० सं० १८७२; वि० जलंधरनाथ की महिमा और महाराज मानसिंह की प्रशंसा। दे० (ग–२०)

जस-आभूषन चंद्रिका—मनोहरदास कृत, नि० का० सं० १८७६; वि० पिंगल, अलंकार और महाराज मानसिंह का यश वर्णन। दे० (ग–१३)

जस-भूषण—वागीराम गाडूराम कृत, वि० सिद्धेश्वर श्रीजालंधर नाथ की महिमा वर्णन। दे० (ग–३२)

जस रूपक—वागीराम गाडूराम कृत; लि० का० सं० १८८३, वि० जोधपुर के महाराज मानसिंह का वर्णन। दे० (ग–३३)

जसवंतसिंह—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

रामावतार दे० (छ–२७४ ए)

दशावतार दे० (छ–२७४ बी)

जसवंतसिंह—इंदौर के हुलकर; सं० १८५३ के लगभग वर्तमान, रीवाँ नरेश अजीतसिंह से चरहटा (रीवाँ) के मैदान में इनसे युद्ध हुआ जिसमें इनका पराजय हुआ। दे० (क–४१)

जसवंतसिंह—महाराज हम्मीरसिंह के पुत्र; ओड़छा नरेश; राज्य का० सं० १६७५–१६८४ तक; रघुराम, वैकुंठमणि शुक्ल के आश्रयदाता। दे० (छ–५) (छ–६८)

जसवंतसिंह—महाराज हमीरसिंह के पुत्र; तिरवाँ (फरुखाबाद) के राजा; सं० १८५४ के लगभग वर्तमान; बघेलवंशी; स्यात् ग्वाल कवि के आश्रयदाता; दे० (क–८४) यह महाराज स्वयं भी कवि थे।

शृंगार शिरोमणि दे० (ज–१३६)

जसवंतसिंह—महाराज गजसिंह के पुत्र और सूरसिंह के पौत्र; सं० १६९२–१७३५ तक जोधपुर की गद्दी पर रहे; बादशाह शाहजहाँ के कृपापात्र थे; बलख और कंधार की लड़ाइयों में शाही सेना के साथ कई बार अटक पार गए थे; दक्षिण, मालवा और गुजरात के सूबेदार भी थे, औरंगजेब के भाई शुजा के साथ इन्होंने औरंगजेब के प्रतिकूल युद्ध किया था और उसका खजाना तथा जनाना लूटकर जोधपुर चले गए थे; औरंगजेब ने इन्हें फिर गुजरात का सूबेदार बनाया था और शिवाजी को दमन करने को भेजा था; किन्तु इन्होंने उन्हें विशेष दुःख नहीं दिया; अतः बादशाह ने अप्रसन्न हो इन्हें काबुल भेज दिया जहाँ ६ वर्ष रहकर पठानों को दबाया और वहीं जमुरुंद नदी के तट पर सं० १७३५ में शरीर त्याग किया; सूरत मिश्र से इन्होंने कविता करना सीखा था; नरहरिदास और नवीन कवि के आश्रयदाता और स्वयं बड़े कवि थे; अजीतसिंह के पिता थे। दे (ग–४०)

अपरोक्ष सिद्धांत दे० (ख–७१) (ग–१४)

अनुभव प्रकाश दे० (ख–७२) (ग–१५)

आनंद विलास दे० (ख–७३) (ग–१७)

भाषाभूषण दे० (ग–४७) (छ–१७६) (छ–२५१)

सिद्धांत बोध दे० (ग–१६)

प्रबोध चंद्रोदय नाटक दे० (ग–२२)

सिद्धांत सार दे० (ग-४९) (ग-२०)
(ख-८९) (ख-३६)

जसुराम चारण—बादशाह आलमगीर के समकालीन, सं० १८१४ के लगभग वर्तमान, अभयपुर (दक्षिण) के राजा जीतराय के आश्रित।

राजनीति विस्तार दे० (ज-१११)

जहाँगीर—बादशाह अकबर का पुत्र, राज्य का० सं० १६६२-१६८४ तक, इन्होंने चित्तौर के राजकुमार कर्णसिंह का बड़ा सम्मान किया, और वह ५ वर्ष तक इनके दरबार में रहे। दे० (क-९४)

जहाँगीर चंद्रिका—केशव मिश्र कृत, नि० का० सं० १६६९, लि० का० सं० १८७८, वि० बादशाह जहाँगीर का यश वर्णन। दे० (घ-४०)

जातक चंद्रिका—शंभूनाथ त्रिपाठी कृत, वि० ज्योतिष। दे० (छ-२३४ सी)

जाति-विलास—देवकवि (देवदत्त) कृत, वि० अनेक जातियों की स्त्रियों का वर्णन तथा पद्मिनी, चित्रिनी, शंखिनी, हस्तिनी आदि के लक्षण। दे० (ज-६४ सी)

जानकी करुणाभरण—जनककिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १९३०, वि० अलंकार। दे० (ज-११४ के)

जानकी जू को मंगलाचरण—रघुवरशरण कृत, वि० सीता का स्वयंवर वर्णन। दे० (छ-२०९ए)

जानकीदास—केशव कृत रामचंद्रिका के टीकाकार, सं० १८७२ के लगभग वर्तमान।

रामभक्ति प्रकाशिका। दे० (घ-२०)

जानकीदास—ये वैष्णव सम्प्रदाय के साधु थे, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

धर्म बोध। दे० (ज-१३५)

जानकीदास—दतिया निवासी, सं० १८९९ के लगभग वर्तमान, दतिया नरेश महाराज परीक्षित के आश्रित।

स्फुट दोहा कवित्त और विष्णुपद दे० (छ-५३ए)

नाम पचीसी दे० (छ-५३ बी)

जानकी मंगल—गोस्वामी तुलसीदास कृत, वि० श्रीराम जानकी का विवाह वर्णन, महाराज बनारस के पुस्तकालय में दो प्रतियाँ हैं, एक अशुद्ध और दूसरी शुद्ध है। दे० (घ-७९) तीसरी प्रति का लि० का० सं० १८७४। दे० (छ-२४५ एफ)

जानकीरसिकशरण—सं० १६१६ के लगभग वर्तमान, अयोध्या निवासी थे।

रसिक सुबोधिनी टीका दे० (छ-८७)

जानकीराम को नखशिख—प्रेमसखी कृत, वि० राम जानकी का नखशिख। दे० (ज-२३० बी)

जानकी रामचरित्र नाटक—हरिराम कृत, वि० रामायण की कथा नाटक रूप में। दे० (ज-११६)

जानकी सहस्रनाम—श्रीनिवास कृत, लि० का० सं० १८९९, वि० सीता जी के हजार नामों का वर्णन। दे० (छ-२३०)

जिनरस—बेनीराम कृत, नि० का० सं० १७७३, लि० का० सं० १८०५, वि० जैन मत के सिद्धांतों का वर्णन। दे० (ज-१०६)

जीतराय—अभयपुर (दक्षिण) के राजा, सं० १८१४ के लगभग वर्तमान, बादशाह आलमगीर के समकालीन, कवि जसुराम के आश्रयदाता। दे० (ज-१११)

जीवदशा—ध्रुवदास कृत, वि० श्रीकृष्ण नाम

का माहात्म्य वर्णन। दे० (ज-७२ एच)

जीवनदास—कवि हरसहाय के गुरु, सं० १८८५ के पूर्व वर्तमान, गाज़ीपुर निवासी। दे० (ज-१०५ ए)

जीवनदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
ककहरा दे० (ज-१४१)

जीवन मस्ताने—प्राणनाथ पन्नावाले के शिष्य, सं० १७५७ के लगभग वर्तमान।
पचक दहाई दे० (च-३३)

जीवराज (सिंगी)—महाराज प्रतापसिंह के दीवान, रामनारायण कवि के आश्रयदाता; स० १८२७ के लगभग वर्तमान। दे० (ख-६२)

जुगल आन्हिक—जुगलकिशोर कृत; वि० राधाकृष्ण की दिनचर्य्या। दे० (छ-२७५)

जुगलकिशोर—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
जुगल आन्हिक दे० (छ-२७५)

जुगलकिशोरी भट्ट—ये बालकृष्ण के पुत्र और निहचलराम के पौत्र थे। सं० १८०५ के लगभग वर्तमान; जन्मभूमि कैथल ग्राम थी और फिर दिल्ली में जाकर रहे। खाँ शुजा के आश्रित; बादशाह मुहम्मद शाह ने इन्हें राजा की उपाधि दी थी।
अलंकार निधि दे० (ज-१४२)

जुगलदास—जगन्नाथ रिचार्य के पिता; छतरपुर बुन्देलखंड निवासी; सं० १८४५ के पूर्व वर्तमान। दे० (ज-१२५)

जुगल नखशिख—अन्य नाम नखशिख रामचन्द्र जू को; प्रताप साहि कृत; नि० का० सं० १८८६; लि० का० सं० १९०९; वि० राम सीता का नखशिख वर्णन। दे० (छ-६१ आई) (ज-२२७)

जुगल पद—रामप्रसाद कृत; वि० राम कृष्ण युगल रूप का वर्णन। दे० (ज-२५४ श्री)

जुगलभक्त विनोद—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, नि० का० सं० १८०८; वि० मिथिला देश के दो भक्तों, एक ब्राह्मण और दूसरे राजा, की कथा। दे० (ख-१२०)

जुगलमान चरित्र—श्रीकृष्णदास (पयाहारी) कृत; लि० का० सं० १९११; वि० राधाकृष्ण का परस्पर मान करना। दे० (ज-३०३)

जुगल रसमाधुरी—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत; वि० कृष्णलीला वर्णन। दे० (ख-१२१ तीन)

जुगलसत—श्रीभट्ट कृत; लि० का० सं० १९३९; वि० राधाकृष्ण विहार वर्णन। दे० (क-३६)। इसी ग्रंथ की तीन प्रतियाँ और प्राप्त हुई हैं जिनके लि० का० सं० १९२८, १८४३ और १८७७ है। दे० (छ-२३७) (ज-२९९)

जुगल सिखनख—प्रताप कवि कृत; नि० का० सं० १८८६; लि० का० सं० १९०६; वि० रामजानकी का सिख नख वर्णन। दे० (च-५०)

जुगल स्वरूप विरहपत्रिका—दे० "युगल स्वरूप विरह पत्रिका"। दे० (छ-६१ आई) (छ-४५ बी)

जुद्धजोत्सव—जगन्नाथ कृत; नि० का० सं० १८८७; लि० का० सं० १८९८; वि० युद्धरीति-वर्णन। दे० (ज-१२३)

जुलफिकार खाँ—अली बहादुर खाँ के पुत्र; बुन्देलखंड के शासक, सं० १९०३ के लगभग वर्तमान।
जुलफिकार सतसई दे० (ङ-२०)

जुलफिकार सतसई—जुलफिकार खाँ कृत, नि० का० सं० १९०३; वि० बिहारी सतसई पर कुण्डलियों में टीका। दे० (ङ-२०)

जेठमल पचौली—नागौर निवासी, सं० १७१० के लगभग वर्तमान, लालजी के पुत्र, जाति के माथुर कायस्थ।

नारद चरित्र दे० (ग-१००)

नरसी मेहता की हुंडी दे० (ल-७७)

जेम्स ईकन ठाकुर—सं० १८४१ के लगभग वर्तमान, ये बनारस में ठाकुर थे, दयाल कवि के आश्रयदाता। दे० (ज-६०)

जैकेहरि—पटियाला निवासी, सं० १८६० के लगभग वर्तमान, पटियाला नरेश महाराज पृथ्वी पाल सिंह के आश्रित।

मृगनृप्य दे० (घ-११७)

जैन छंदावली—वृंदावन कृत, नि० का० सं० १८६१, वि० पिंगल वर्णन। दे० (क-११७)

जैमिनि अश्वमेध—बदन कवि कृत, नि० का० सं० १८१६, लि० का० सं० १८७७, वि० युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन। दे० (ख-४६ ई)

जैमिनि की कथा—केशवराय कृत, नि० का० सं० १७५३, लि० का० सं० १८५८, वि० जैमिनि अश्वमेध का भाषा पद्यानुवाद। दे० (च-१०)

जैमिनि पुराण—पीतांबर कवि कृत, नि० का० सं० १८०१, लि० का० सं० १८२९, वि० जैमिनि पुराण का भाषानुवाद। दे० (च-४१)

जैमिनिपुराण—रामप्रसाद कृत, नि० का० सं० १८०५, लि० का० सं० १८८५, वि० जैमिनि पुराण का भाषानुवाद। दे० (ज-२५४ प)

जैसिंह प्रकाश—प्रतापसाहि कृत, नि० का० सं० १८५२, लि० का० सं० १८६४, वि० राजपूताने के राजा जयसिंह की प्रशंसा। दे० (छ-६१ प)

जोगगीत—उप० "जगजीत, दे० जगजीत", कालिदास के आश्रयदाता, जम्बू नरेश सं० १७७७ के लगभग वर्तमान। दे० (ग-९८) (छ-१७८)

जोगराम—सं० १८२२ के लगभग वर्तमान, यह बुंदेलखंड के रहनेवाले साधु जान पड़ते हैं।

जोग रामायण दे० (छ-५५)

जोगरामायण—जोगराम कृत, नि० का० सं० १८२२, लि० का० सं० १८२९, वि० राम का राजतिलक और बनवास वर्णन। दे० (छ-५५)

जोगलीला—कवि उदय (उदयनाथ त्रिवेदी) कृत, लि० का० सं० १९०४, वि० कृष्ण का योगी के वेश में राधा से मिलन। दे० (क-९८)

जोगलीला—नरदास कृत, वि० कृष्ण का योगी के वेश में राधा के पास जाना। दे० (ज-२०० डी)

जोबनाथ कथा—प्राणनाथ कृत, (यह पन्नावाले प्राणनाथ नहीं हैं) लि० का० सं० १८९८, वि० जोबनाथ का पांडवों से युद्ध वर्णन। दे० (ज-२२१)

जौहरिन तरंग—नवलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १८७५, लि० का० सं० १८७६, वि० कृष्ण लीला वर्णन। दे० (छ-७६ एच)

ज्ञान अली—अयोध्या के महंत, रामानुज सम्प्रदाय के सखी समाज के वैष्णव थे।

सियावर केलि पदावली दे० (ज-१०३)

ज्ञान को प्रकरण—तुलसीदास गोस्वामी कृत, लि० का० सं० १९५८, वि० ज्ञान का वर्णन। दे० (ज-३२३ सी)

ज्ञान-गुदरी—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान। दे० (ज-१४२ आर)

ज्ञान-चूर्णिका—मनोहरदास (निरंजनी) कृत,

लि० का० सं० १८४०, वि० वेदांत। दे० (छ-२६३ ई)

ज्ञान-चौंतीसी—शंकर कवि कृत; लि० का० सं० १६४८, वि० आत्मिक सत्यता। दे० (छ-३२८ बी)

ज्ञान-चौंतीसी—कबीरदास कृत; वि० ज्ञान। दे० (ज-१४३ क्यू)

ज्ञानदीप—शेख नबी कृत, नि० का० सं० १६७६; लि० का० सं० १६३२; वि० राजा ज्ञानदीप और रानी देवजानी की कथा। दे० (ग-११२)

ज्ञानदीपक—दरिया साहब कृत; लि० का० सं० १६०७, वि० ज्ञान। दे० (ज-५५ आई)

ज्ञानदीपिका—तुलसीदास कृत; (गोस्वामी तुलसीदास नहीं) नि० का० सं० १६३१; लि० का० सं० १६२०, वि० वेदांत ज्ञान। दे० (च-२१) (छ-३२८ बी)

ज्ञानधीर—सनाढ्य ब्राह्मण ब्रह्मधीर के पुत्र, हरिदासपुर निवासी, स्वामी हरिदास के पितामह। दे० (क-३७)

ज्ञान पचासा—अन्य नाम अनन्य पचासिका; अक्षर अनन्य कृत; लि० का० सं० १६५८; वि० आत्मज्ञान। दे० (छ-२६)

ज्ञान-प्रकाश—राघवदास कृत; नि० का० सं० १७१०; लि० का० सं० १८४२; वि० रानी हरदेवी को आत्म-ज्ञान की शिक्षा देना। दे० (छ-६७)

ज्ञान-प्रदीप—गंगाराम त्रिपाठी कृत; नि० का० सं० १८४६; लि० का० सं० १८५७, वि० भगवत ज्ञान। दे० (घ-१६)

ज्ञान वचन चूर्णिका—मनोहरदास निरंजनी कृत, लि० का० सं० १८३१; वि० वेदांत। दे० (घ-८४)

ज्ञान-बोध—अक्षर अनन्य कृत; लि० का० सं० १६३१; वि० धार्मिक शिक्षा। दे० (छ-२ डी)

ज्ञान मंजरी—मनोहरदास (निरंजनी) कृत, नि० का० सं० १७१६; लि० का० सं० १८४०; वि० वेदांत। दे० (छ-२६३ ए)

ज्ञानमल—फतेहमल के पुत्र, जोधपुर नरेश महाराज बख्तसिंह के दीवान थे, कवि जयकृष्ण के आश्रयदाता; सं० १८२५ के लगभग वर्तमान। दे० (ग-८६)

ज्ञान-महोदधि—हरिभक्तसिंह कृत, नि० का० सं० १६०५; लि० का० सं० १६१८; वि० ब्रह्मज्ञान का वर्णन। दे० (ज-१०६)

ज्ञान-रतन—दरिया साहब कृत; नि० का० सं० १८३७, लि० का० सं० १८६६; वि० रामायण की कथा। दे० (ज-५५ एच)

ज्ञान-वैराग्य संदीपिनी—सतसिंह कृत, नि० का० सं० १८८८, लि० का० सं० १६३१; वि० तुलसीदास के किष्किंधाकांड रामायण पर टीका। दे० (ज-२८२ डी)

ज्ञान संबोध—कबीरदास कृत; वि० संतमहिमा वर्णन। दे० (ज-१४३ आर)

ज्ञानसतसई—हरिदास कृत; नि० का० सं० १८११; लि० का० सं० १८२०; वि० भगवत गीता का भाषानुवाद। दे० (ट-७२)

ज्ञानसमुद्र—सुंदरदास कृत; नि० का० सं० १७१०; लि० का० सं० १८५७; वि० वेदांत। दे० (घ-३४) (छ-२४२ बी)(ग-२५ डी) (ग-१६५)

ज्ञानसागर—सुंदरदास कृत, लि० का० सं० १६२५,

वि० गुरु माहात्म्य ईश्वर भक्ति और आत्म धर्म वर्णन। दे० (ज-३११ ए)

ज्ञानसागर—कबीरदास कृत, लि० का० सं० १८४७, वि० ज्ञान और उपदेश। दे० (ज-१४३ एस)

ज्ञानसुरेला—कासी और चिंतामणि कृत, वि० अध्यात्म। दे० (छ-२७८)

ज्ञानस्तोत्र—कबीरदास कृत, सत्य तथा आत्म धर्म पर पद। दे० (छ-१७७ सी)

ज्ञानस्वरोदय—कबीरदास कृत, वि० साधन सिद्धांत और आत्मज्ञान। दे० (ज-१४३ टी)

ज्ञानस्वरोदय—चरणदास कृत, वि० प्राणायाम और योगविद्या का वर्णन। दे० (छ-१४७ ई)। दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८९०। दे० (ख-३०) नि० का० १८१७, लि० का० १८५२। दे० (प-१६५)

ज्ञानस्वरोदय—दरियासाहब कृत, लि० का० सं० १८८७, वि० ज्ञान। दे० (ज-७१ एफ)

ज्वरचिकित्सा—बाबा साहब मुसुमदार कृत, वि० वैद्यक। दे० (ज-१२ ए)

ज्वरविनाशन—जयरामदास कृत, लि० का० सं० १८८४, वि० हनुमान जी की स्तुति, तिजारी बुखार का दूर होना। दे० (ज-११०)

झामदास—जाति के ब्राह्मण, साधु, सं० १८१८ के लगभग वर्तमान, विंध्याचल (मिर्जापुर) निवासी। (घ-१४१)

रामायण झामदास कृत दे० (घ-२१)

झुनरी—धुवनाथ के पिता, जाति के बंदीजन, काकुपा निवासी, सं० १६०५ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ-११२)

झूलना बलिराय का—बलिराम कृत, लि० का० सं० १७६४, वि० ज्ञानोपदेश और ब्रह्म का वर्णन। दे० (ज-१७)

टिकैतराय—अवध के किसी राजा के दीवान, सं० १८८६ के लगभग वर्तमान, बेनी कवि के आश्रयदाता थे। दे० (ज-१४)

टिकैतराय प्रकाश—बेनी कवि कृत, नि० का० सं० १८८६, लि० का० सं० १९५४, वि० अलंकार। दे० (ज-१४)

टोडरमल—जयपुर निवासी, सं० १८१८ के लगभग वर्तमान, संस्कृत आत्मानुशासन के भाषानुवाद कर्त्ता।

आत्मानुशासन दे० (क-११४)

टोडरमल—बादशाह अकबर के माल विभाग के मंत्री, सं० १६४६ में इनकी मृत्यु हुई, आलम कवि इनका समकालीन था। दे० (क-६)

ठाकुर कवि—असनी (फतहपुर) निवासी, सं० १८६१ के लगभग वर्तमान, ऋषिनाथ के पुत्र और कवि सेवकराम के पितामह थे, काशी के बाबू देवकीनंदन के आश्रित।

सतसैया बरनार्थ दे० (ट०-१८)
(ज-२८६)

ठाकुर कवि—बुंदेलखंड निवासी, जन्म का० सं० १८२३।

ठाकुर के कवित्तों का संग्रह दे० (प-६८)

ठाकुर के कवित्तों का संग्रह—ठाकुर कृत, संग्रह कर्त्ता का नाम अज्ञात है, वि० स्फुट कविता। दे० (प-६८)

ठाकुरदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

दर्शनी मंडन दे० (छ-३१७)

डालचंद—राजा शिवप्रसाद सी एस आई के

प्रपितामह थे, मुरशिदाबाद नरेश, सं० १८२७ के पूर्व वर्तमान, कवि रामचंद्र और पं० मथुरा नाथ शुक्ल के आश्रयदाता। दे० (ज-२३९) (ज-१९५)

देकी-सुवंस कवि कृत लि० का० स० १८८९, वि० श्रीकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (ग-१०७)

दोला मारवणी चउपई—हरराज कृत; नि० का० सं० १६०७, लि० का० सं० १६६६, वि० पिंगल (मारवाड़) के राजा ढोला मारु की कथा। दे० (क-९६)

दोला मारू रा दोहा—किलोल कवि कृत; वि० ढोला मारू की कहानी। दे० (ग-५६)

तखतसिंह—ये जोधपुर के महाराज थे; सं० १९०० में गद्दी पर बैठे; महाराज मानसिंह के अपुत्र मरने पर इनको अहमदनगर (गुजरात) से लाकर जोधपुर की गद्दी पर बैठाया गया था। दे० (ग-३६)

तत्त्वबोध—सर्वसुख कृत, लि० का० सं० १९०३; वि० ज्ञान, वैराग्य और भक्ति वर्णन। दे० (ज-२८४)

तत्त्वमुक्तावली—सितकंठ कृत; नि० का० सं० १७२७; लि० का० सं० १९२६, वि ज्योतिष। दे० (ज-२९१)

तत्त्वसंज्ञा—चंदन कवि कृत, लि० का० सं० १८६१; वि० योग संबंधी क्रियाओं का वर्णन। दे० (ख-२६)

तानसेन—नाम त्रिलोचन पांडे, सं० १६१७ के लगभग वर्तमान, मकरंद पांडे के पुत्र, गवालियर निवासी, स्वामी हरिदास से पिंगल शास्त्र और संगीत विद्या का अध्ययन किया; शेख मौस मुहम्मद से भी गानविद्या सीखी थी; पहले शेरखाँ (शेरशाह) के पुत्र दौलतखाँ के आश्रित थे, फिर रीवाँ नरेश महाराज रामसिंह के यहाँ रहे; उन्होंने इन्हें सम्राट् अकबर के दरबार में भेजा और उनके आश्रित रहे, यह भारत के प्रसिद्ध संगीताचार्य थे।

सगीत सार दे० (ख-१२)

राग माला दे० (ग-४१)

तामरूप दीप पिंगल—अन्य नाम रूप दीप, जयकृष्ण कृत, नि० का० सं० १७७६; लि०का० सं० १९१०; वि० पिंगल शास्त्र का वर्णन। दे० (क-८०) (ज-१३८)

तारक तत्त—उत्तमचन्द्र कृत। दे० (ग-१८ दो)

तारपाणि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

भागीरथी लीला दे० (छ-२२६)

तारापति—चतुर्वेदी ब्राह्मण, अभयराम के पुत्र; कवि कुलपति से ४ पीढ़ी पूर्व हुए। दे० (क-७२)

ताहिर—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। आगरा निवासी; सं १६७५ के लगभग वर्तमान।

गुणसागर दे० (छ-२३५)

कोकसार दे० (ज-३१६)

(ये दोनों पुस्तकें एक ही प्रतीत होती हैं।)

तिथि-निर्णय—प्रियादास कृत, लि० का० सं० १९२३, वि० राधावल्लभी संप्रदाय के अनुसार तिथियों का निर्णय। दे० (ज-२२१ डी)

तिरजा (टीका)—परिपूरणदास कृत, वि० ज्ञानोपदेश, कबीर के शब्द, हिंडोल और साखी की टीका। दे० (ज-२२३)

तिलोक—मेड़ता (मारवाड़) निवासी; सं० १७२९ के लगभग वर्तमान; ये सेवक जाति के कवि

थे, मीराबाई भी मेड़ता निवासी थीं, साधु लोग इसे मधुपुरी कहते हैं, टूटे फूटे महल और मंदिर उनके स्मृति-स्वरूप यथावधि वर्तमान हैं, स्थान प और भ० (अ-१२०) वाले एक ही हैं।

मान लीला द० (ग-६३)

भगवानजी द० (अ-१२०)

तीर्थ कथा—चारों युग ३ का त्रिपौ आ पावनी ओं का प्रथम स्थानों है उनका वर्णन किया है, इसे हस्तामलिका मत भी कहते हैं, कृष्णदास कृत, लि० का० सं० १७३०, वि० हस्तामलिका मत का विधान व कथा वर्णन। दे० (छ-६४ ए)

तीर्थयात्रा—रामचरणदास कृत, लि० का० सं० १६०७, वि० तीर्थों का वर्णन और उनका माहात्म्य। द० (अ-२४५ एल)

*तीर्थराज—उप० प्रयागीलाल, कायस्थ, मानिक लाल के पुत्र, इन्द्रजीतलाल के पौत्र, कन्हैया लाल के भतीजे और भगवतप्रसाद के दादा भाई, सं० १८३० के लगभग वर्तमान, चरखारी नरेश के आश्रित मुनशी थे।

रसानुराग द० (घ-७१)

तीर्थराज—सं० १८०७ के लगभग वर्तमान, अली पुर (मध्य भारत) के राजा अचलसिंह के आश्रित।

समरसार द० (छ-११५)

*तीर्थानंद ब्रज—महाराज मानसिंह उप० नाम [illegible] कृत, लि० का० सं० १८१०, वि० ब्रज यात्रा का वर्णन। द० (ग-१०१)

तीसा जंत्र—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान। द० (अ-१४७ बी)

तुलसी चिंतामणि—हरिजन कृत, लि० का० सं० १६०३, वि० रामायण का वर्णन। द० (छ-४८)

तुलसीदास (गोस्वामी)—राजापुर निवासी, सं० १६३१ के लगभग वर्तमान, सं० १६८० में देहांत हुआ, ये हिंदी के प्रसिद्ध महाकवि हैं, इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है।

रामायण बालकांड द० (ग-२२)

रामचरितमानस द० (क-१) (घ-१६७) (घ-१६८) (घ-१६२) (ट-१४५)

वैराग्य संदीपनी द० (क-७) (छ-२४५) (घ-८१)

हनुमान बाहुक दे० (क-१०) (छ-२४५ बी) (घ-१७०) (अ-१२२ डी)

जानकी मंगल दे० (घ-७६) (छ-२४५ एफ)

गीता भाषा (भगवद्गीता) दे० (ट-४७) (अ-३२८ ए)

बरवै रामायण द० (घ-८०) (छ-२४५ ए)

कुंडलिया रामायण दे० (घ-८२)

रामायण शकुनावली दे० (घ-८३) (अ-१२३ एच)

(इसकी प्रति संवत् १६८६ की लिखी हुई महाराज काशी नरेश के यहाँ मौजूद है।)

राम शलाका द० (घ-६८)

कवित्त रामायण दे० (घ-१७५)

रामाज्ञा द० (घ-१२६)

रामायण छंदावली द० (ग-२८)

पार्वती मंगल द० (घ-१२३)

नहछू छन्द द० (घ-७३)

दोहावली रामायण द० (ट-६२) (अ-१-१ बी)

गीतावली रामायण द० (ट-६०)

श्रीकृष्ण गीतावली द० (अ-१०३)

तुलसी सतसई दे० (छ–२४५ सी)
रामाज्ञा दे० (छ–२४५ डी)
विनय पत्रिका दे० (छ–२४५ जी) (ज–३२३ एल)।
छप्पै रामायण दे० (छ–२४५ एच)
झूलना दे० (ज–३२३ ए)
ज्ञान को प्रकरण दे० (ज–३२३ सी)
कृष्णचरित्र दे० (ज–३२३ ई)
मंगल रामायण दे० (ज–३२३ एफ)
पदावली रामायण दे० (ज–३२३ जी)
उपदेश दोहा दे० (ज–३२३ जे)
नाटक दे० (ज–३२३ के)
सूरज पुराण दे० (ज–३२३ एम)
ध्रुव प्रश्नावली दे० (ज–३२३ एन)

तुलसीदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। पर ये प्रसिद्ध तुलसीदास नहीं हैं; उनके समकालीन सं० १६३१ के लगभग वर्तमान।
राम मुक्तावली दे० (घ–६७)
ज्ञान दीपिका दे० (छ–२३८ बी) (च–२१)
तुलसीदास की बानी दे० (ज–३२३ आई)
बृहस्पति कांड दे० (घ–३०)

तुलसीदास—सं०१७११ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
रसकल्लोल दे० (छ–३९ ए)
रस भूषण दे० (छ–३३९ बी)

तुलसीदास की बानी—तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८५६; वि० ज्ञान, विज्ञान, वैराग्य और उपदेशादि। दे० (ज–३२३ आई)

तुलसीदास-चरित्र—जनकराजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १९३०; वि० गोस्वामी तुलसीदास जी की प्रशंसा। दे० (ज–१३४ एफ)

तुलसी-भूषण—रसरूप कृत; नि० का० सं० १८११, लि० का० सं० १८९७, दूसरी प्रति लि० का० सं० १८८६. वि० छंद और अलंकार; उदाहरण में गोस्वामी कृत रामायण आदि के छंद दिए हैं। दे० (ङ–११)

तुलसी-शब्दार्थ प्रकाश—अन्य नाम जयगोपालदास विलास, जयगोपालदास कृत; नि० का० सं० १८३४, लि० का० सं० १८८२, वि० देव वंदना, ज्योतिष, रामायण के शब्द के अर्थ और गूढ भावों का वर्णन, इसमें तीन प्रकरण हैं। दे० (ट–६) (ग–१०३)

तुलसी-सतसई—तुलसीदास गोस्वामी कृत; लि० का० सं० १९०१; वि० उपदेश के दोहे। दे० (छ–२४५ सी)

तेजसिंह—बालकृष्ण के पुत्र, सं० १८२७ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ थे, फारसी के ग्रन्थ दफ़्तरनामा से इन्होंने हिन्दी अनुवाद किया।
दफ्तरनामा (दफ्तर रस) दे० (च–३४) (छ–११४)

तोंवरदास—दूलनदास के शिष्य; सं० १८८७ के लगभग वर्तमान, सत्यनाम संप्रदाय के अनुयायी।
शब्दावली दे० (ज–३१८)

तोषमणि—चतुर्भुज शुक्ल के पुत्र; भृगुमेरुपुर (इलाहाबाद) के निवासी; सं० १६९१ के लगभग वर्तमान।
सुधानिधि दे० (ज–३१९)

त्रिलोकदास—उप० तिलोक, सं० १७२९ के लगभग वर्तमान, मेडता (जोधपुर) में किसी के

आश्रित जान पड़ते हैं, इनके विषय में और कुछ भी बात नहीं, स्यात् य और न० (ग-६७) वाले एक ही हैं।

मयनाष्टकी (ज-३२०)

समबत्तीसी दे० (ग-६७)

त्रिलोकनाथसिंह—उप० भुवन, अयोध्या नरेश महाराज मानसिंह के भतीजे थे, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान।

भक्ति चिंतामणि दे० (ज-२८)

त्रिलोकसिंह—ये कुँवर गोपालसिंह के पिता जान पड़ते हैं, बुँदेलखंड के वासी, अनुमानतः १८ वीं शताब्दी के आरम्भ में हुए।

समायप्रकाश दे० (ज-३२१) (छ-४२)

त्रिलोकीनाथसिंह (भैया)—उप० भावन। दे० 'भावन' (ज-२८)

त्रिलोचन (पाँडे)—उप० तानसेन। दे० 'तानसेन'।

त्रिलोचनदास—वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य, अनंतदास ने इनके नाम की परिचई बनाई। दे० (ज-५ सी)

त्रिलोचनदास की परिचयी—अनंतदास कृत, वि० त्रिलोचनदास की भक्ति का वर्णन। दे० (ज-५ सी)

त्रिविक्रमसेन—सं० ११६४ के लगभग वर्तमान, राजा हम्मीरसिंह के पुत्र।

शालिहोत्र दे० (ज-३२२)

थानराम—सं० १८४८ के लगभग वर्तमान, चंद्र नगर के राजा दलेलसिंह के आश्रित थे, इनके विषय में और कुछ भी बात नहीं।

रसैवप्रकाश दे० (ज-३१७)

दंपताचार्य—ये स्वामी रामानंद के अनुयायी थे, इनके संवत् आदि के विषय में कुछ भी बात नहीं।

रसमंजरी दे० (ज-५४)

दंपति विलास—बलवीर कृत, नि० का० सं० १७१६, वि० नायिका भेद। दे० (ग-२८)

दत्त कवि—उप० देवदत्त, सं० १७६१ के लगभग वर्तमान, टिकारी (गया) के कुँवर फतेहसिंह और चरखारी के राजा खुमानसिंह के आश्रित, जाजमऊ (असनी, कन्नौज के बीच में गंगा तट पर) निवासी,

सज्जन विलास दे० (घ-१६)

लालित्यलता दे० (घ-५५) (ज-५६)

दौपद पर्व भाषा। दे० (ख-११)

दत्त कवि—इनके विषय में कुछ भी बात नहीं।

स्वरोदय दे० (घ-१२०)

दत्तात्रय-कथा—जयसिंह जू देव कृत, लि० का० सं० १८६०, वि० दत्तात्रय अवतार का वर्णन। दे० (क-१५०)

दफ़रनामा—गुलाबसिंह बख्शी कृत, नि० का० सं० १७५२, लि० का० सं० १८१३, वि० दफ्तर का हिसाब रखने की रीति। दे० (च-२२)

दफ़रनामा—अन्य नाम दफ्तर रस, तेजसिंह कृत, नि० का० सं० १८९७, लि० का० सं० १८९२, वि० रियासतों का हिसाब किताब रखने की रीति। दे० (च-१४) (छ-११४)

दफ़रनामा—गणेश कवि कृत, नि० का० सं० १८५२, लि० का० सं० १९३१, वि० हिसाब किताब रखने की रीति। दे० (छ-३२ बी)

दफ्तरनामा—हिम्मतसिंह कृत, नि० का० सं० १७७४, लि० का० सं० १६०४, वि० हिसाब रखने की रीति। दे० (छ-५२)

दयाकृष्ण—ये बुंदेलखंड निवासी जान पड़ते हैं, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
फुटकर कविता दे० (छ–२६ ए)
पदावली दे० (छ–२६ बी)

दयादास—ये बुंदेलखड निवासी जान पडते हैं।
विनयमाल दे० (छ–२५)

दयादास (भट्ट)—सं० १६७५ के लगभग वर्तमानः जाति के भाट थे, मेवाड़ के राणा कर्णसिंह के आश्रित।
रानारासा दे० (ज–६१)

दयादीपक—दयाल कवि कृत; नि० का० सं० १८८७, लि० का० सं० १८८८ वि० धर्म और नीति। दे० (ज–६०)

दयानंद सरस्वती स्वामी–सं० १८८० से १९४० तक वर्तमान, आर्य समाज के संस्थापक; प्रसिद्ध संन्यासी; जाति के ब्राह्मण; मोरवी राज्य (काठियावाड़) निवासी, इन्होंने प्रारंभ में प्राचीन रीत्यानुसार शिक्षा पाई थी; कर्नल अलकाट से इनकी भारतेन्दु हरिश्चंद और राजा शिवप्रसाद सी० एस० आई० के सामने बात चीत हुई थी।
स्वामीदयानंद का जीवनचरित्र दे० (ज–३१५)

दयानंद स्वामी का जीवनचरित्र—स्वामी दयानंद सरस्वती कृत, नि० का० सं० १९३९; लि० का० सं० भी वही है, वि० स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र और उनके सिद्धांत। दे० (ज–३१५)

दयानिधि—डौंडियाखेरा (अवध) के राजा अचलसिंह के आश्रित।
शालिहोत्र दे० (ज–६२)

दयाराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
सामुद्रिक दे० (छ–१५४)

दयाराम—लच्छीराम के पुत्रः सं० १७७९ के लगभग वर्तमान, दिल्ली निवासी; वेनीराम के गुरु।
दया विलास (ग–११४) (ख–५०) (ज–६३) (ख–१०६)

दयाराम—घटन कवि के पितामह थे। दे० (च–५७)

दयाराम—जौंधरी (आगरा) के जमींदार, अनिरुद्धसिंह और दलेलसिंह के भाई; सं० १८२६ के लगभग वर्तमान, कुशल मिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (क–५७)

दयाराम—बख्तावर कवि के आश्रयदाता; सं० १८६० के लगभग वर्तमान। दे० (ख–५६)

दयाविलास—दयाराम कृत; नि० का० सं० १७७९; लि० का० सं० १९१३, वि० वैद्यक। दे० (ख–५०) (ग–११४) (ज–६३)

दयाल कवि—सं० १८८८ के लगभग वर्तमान; गुजराती ब्राह्मण, बनारस निवासी, डाक्टर जेम्स डंकन के कहने से इन्होंने ग्रंथ की रचना की।
दयादीपक दे० (ज–६०)

दयाल जी का पद—संग्रहकर्त्ता अज्ञात, वि० निम्न लिखित साधुओं के पदों का संग्रह; (१) हरीदास (२) मीरा (३) तुलसीदास (४) दास गोविन्द (५) बुधानद (६) परमानंद (७) सूरदास (८) जन छीतम (९) वाजिन्द (१०) कबीर (११) भीम (१२) नंददास (१३) जन तुलसी (१४) सुंदरदास (१५) अग्रदास (१६) व्यास (१७) नरसी (१८) रामा (१९) कूबी

(२०) मलूकदास (२१) दादू (२२) माधोदास। दे० (ग-६४)

दयालदास—पूरणदास के गुरु, महाराणा के महंत; सं० १८८५ के लगभग वर्तमान। दे० (ग-६५)

दयालदास—सं० १७३१ १७३९ तक के लगभग वर्तमान। उदयपुर के राणा जयसिंह के आश्रित थे।

राणारासो दे० (क-७५) (ग-२०) (ज-६१)

दयासागर सूरि—जैनधर्मानुयायी, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

धर्मरत्न चरित्र दे० (क-१७०)

दरसनलाल—ये महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह बनारस-नरेश के यहाँ नौकर थे और १९वीं शताब्दी के अंत में पड़ते हैं, इन्होंने रामायण में से मुख्य मुख्य भावों का संग्रह किया है।

रामायण तुलसी कृत दे० (ज-५१)

दरियासागर—दरियासाहब कृत, लि० का० सं० १८८१, वि० धर्मोपदेश। दे० (ज-५५ ई)

दरिया साहब—ये १८वीं शताब्दी में हुए और सं० १८३७ में इनकी मृत्यु हुई, धरकंधा निवासी, ये अपने को कबीर का अवतार समझते थे, इन्होंने बहुत से ग्रंथ निर्मित किए।

अमरसार दे० (ज-५५ ए)
ब्रह्मविवेक दे० (ज-५५ बी)
भक्ति हेतु दे० (ज-५५ सी)
बीजक दरियासागर दे० (ज-५५ डी)
दरिया सागर दे० (ज-५५ ई)
ज्ञान स्वरोदय दे० (ज-५५ एफ)
गोष्ठी दरिया साहब और गणेश पंडित दे० (ज-५५ जी)
ज्ञान रतन दे० (ज-५५ एच)
ज्ञान दीपक दे० (ज-५५ आई)
रेखता दरिया साहब दे० (ज-५५ जे)
शब्द दरिया साहब दे० (ज-५५ के)
सतसैया दरिया साहब दे० (ज-५५ एल)

दलपतिराय—सं० १७९५ के लगभग वर्तमान, अहमदाबाद निवासी, महाराणा जगतसिंह (उदयपुर) और महाराज दिग्विजयसिंह बलरामपुर (अवध) नरेश के आश्रित, वंशीधर कवि के समकालीन थे।

अलंकार रत्नाकर दे० (ट-१३)
भावपाल्लास दे० (ज-५२)

दलपतिराय—हीरालाल कवि के पितामह। दे० (घ-६४)

दलपतिराव—दतिया नरेश, कुँवर पृथ्वीराज के पिता, राज्य काल सं० १७४४ से १७६६ तक। दे० (छ-२)

दलसिंहानंद प्रकाश—दास (दलसिंह) कृत, नि० का० सं० १८९०, वि० स्फुट कविता। दे० (घ-११०)

दलेल प्रकाश—थानराम कृत; नि० का० सं० १८४८, लि० का० सं० १९४६, वि० काव्य रीति और नायिका भेद। दे० (ज-३१७)

दलेलसिंह—चौधरी (आगरा) के जमींदार, सं० १८२६ के लगभग वर्तमान, जाति के खत्री, अनिरुद्धसिंह और दयाराम के भाई, कुशल मिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (छ-५७)

दलेलसिंह—पाइपनगर के राजा, सं० १७३६ के लगभग वर्तमान, कवि मधुसूदनदास के आश्रयदाता। (ट-१४)

दलेलसिंह—चंद्रनगर के राजा, स० १८४६ के लगभग वर्तमान; थानराम के आश्रयदाता थे। दे० (ज-३१७)

दशमस्कंध टीका—सूरदास कृत; वि० भागवत के दशमस्कंध का पद्यात्मक अनुवाद। दे० (छ-२४४ डी)

दशम स्कंध भागवत—नंददास कृत, लि० का० सं० १८३३, वि० भागवत का भाषानुवाद। दे० (ख-११)

दशमस्कंध भाषा—नरहरदास बारहट कृत, वि० कृष्णावतार की कथा। दे० (ग-४८)

दशरथ—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
पिंगल दे० (छ-१५३)

दशरथ—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
वृत्तविचार दे० (ज-५७)

दशरथराम—असनी (फतेहपुर) निवासी; ये नरहर महापात्र भाट के वंशज थे, स० १७६२ के लगभग वर्तमान।
नवीनाख्य दे० (ज-५८)

दशावतार—पर्वतदास कृत, नि० का० सं० १७२१, लि० का० सं० १७६६; वि० ईश्वर के दस अवतारों का वर्णन। दे० (छ-८७ ए)

दशावतार—जसवंत कृत, लि० का० सं० १८४०; वि० ईश्वर के दस अवतारों का वर्णन। दे० (छ-२७४ बी)

दस्तूर-अमल—सुखलाल कृत; नि० का० सं० १६०८, वि० शासकों की नीति। दे० (छ-११३ ए)

दस्तूर चिंतामणि—धीरजसिंह कृत; वि० मापविद्या का वर्णन। दे० (छ-३० बी)

दस्तूर माल का—रामसिंह कृत; वि० गणित गणित संबंधी सिद्धांत लीलावती के आधार पर। दे० (छ-१०१)

दस्तूर माल का—फतेहसिंह कृत; लि० का० सं० १६०७; रियासतों के हिसाब किताब और दफ्तर की रीति। दे० (च-५४)

दस्तूर माल का—कमलाजन कृत; नि० का० सं० १८४७, लि० सं० १८६०, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६१२, वि० गणित। दे० (छ-५६)

दस्तूर माल का—वसीधर कृत, नि० का० स० १६६५; लि० का० स० १७८६, वि० हिसाब आदि की रीति वर्णन। दे० (ज-१८)

दस्तूर सागर—परमेश्वरीदास कृत; नि० का० सं० १८७६; वि० लीलावती के ग्रंथ का अनुवाद। दे० (च-४५)

दादू—इनका पूरा नाम दादूदयाल; दादूपंथी सम्प्रदाय के संस्थापक, ये १७वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुए हैं; जनगोपाल, जगजीवनदास, और सुंदरदास के गुरु थे। दे० (क-२८) (ङ-१७५) (छ-२४२) (ग-६३)

दादू जी की बाणी दे० (ख-३७)
अध्यातम दादू जी को दे० (ग-११८)
दादू जी का पद दे० (ग-१४०) (ग-१४१)
समरथी को अंग दे० (ग-२७१)
दादूदयाल को कीरत दे० (ग-२६३)

दादू जी की बाणी—दादूदयाल जी (दादू) कृत; लि० का० स० १८२१; वि० दादू जी के वेदांत का संग्रह। दे० (ख-३७)

दान-चौंतीसी—माखन लखेरा कृत, लि० का० सं० १६५२, वि० कृष्ण दान लीला का वर्णन। दे० (छ-६८)

दानमाधुरी—माधुरीदास (माधुरी) कृत, नि० का० सं० १६८७, वि० कृष्ण दानलीला का वर्णन। दे० (ग—१४० सात) (छ—१६१)

दानलीला—रामसखे कृत, वि० रामचन्द्र जी की दधिदान या रासलीला। दे० (घ—८१)

दानलीला—मनचित कृत, वि० मथुरा से श्री कृष्ण के आने पर वसुदेव का दान पावन वर्णन। दे० (छ—७१)

दानलीला—श्यामदास कृत, वि० श्रीकृष्ण का गोपियों से दान माँगना। दे० (छ—१६० ए)

दानलीला—चरणदास कृत, वि० कृष्ण जी का गोपियों से दान माँगना। दे० (छ—१४७ जी)

दानलीला—आनंद कृत, नि० का० सं० १८४०, लि० का० सं० १८४१, वि० कृष्ण जी का गोपियों से दूध दही का दान माँगना। दे० (ज—४ बी)

दानलीला—ध्रुवदास कृत, वि० कृष्ण जी का गोपियों से दही का दान माँगना। दे० (ज—७२ ज)

दानलाभ संवाद—नयनसिंह (प्रधान) कृत, वि० दान और लोभ के विवाद का वर्णन। दे० (छ—७६ सी)

दानविलास—विविध कवि कृत, नि० का० सं० १७४०, लि० का० सं० १८२८, वि० श्री कृष्ण जी का गोपियों से दान माँगना। दे० (छ—१४२)

दामा—सं० १५१६ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

लखमसेन पदमावती कथा दे० (क—८८)

दामोदरदास—भगवतदास के गुरु, सं० १७१६ के पूर्व वर्तमान। दे० (क—६०)

दामोदरदास—दादूपंथी, जगजीवनदास के शिष्य १७ वीं शताब्दी में वर्तमान।

मार्कंडे पुराण दे० (ग—६३)

दामोदरदास—प्रद्युम्न, हरिशंकर, लालमणि और कृष्णमणि के पिता, सं० १७२६ के पूर्व वर्तमान दे० (ट—१४)

दामोदरदास—मदन कवि के पिता, गिरगाँव (बाँदा) निवासी, आगि के अग्निहोत्री ब्राह्मण सं० १८०८ के पूर्व वर्तमान। दे० (घ—५७)

दामोदरदास—पहले राधावल्लभी सम्प्रदाय के वैष्णव थे, अंत में दादूपंथी हुए।

समय सार दे० (ज—५३)

दामोदरदेव—ये दक्षिणी ब्राह्मण थे, पद्मदेव के पुत्र, महाराज हम्मीरसिंह ओड़छा नरेश के आश्रित, सं० १८८८ के लगभग वर्तमान।

रसकल्लोल दे० (छ—२४ ए)

नखशिख शतक दे० (छ—२४ बी)

कवित्त संग्रह दे० (छ—२४ सी)

इंद्रजीत चंद्र शिख नख ध्यान मंजूषा दे० (छ—२४ डी)

नखपद पचीसी दे० (छ—२४ ई)

दामोदर लीला—देवीदास कृत, लि० का० सं० १८८५, वि० श्री कृष्ण चरित्र। दे० (ज—६८)

दाराशाह—जन्म का० सं० १६७२, मृत्यु का० सं० १७१६, बादशाह औरंगजेब का बड़ा भाई था, इसने हिंदी कविताओं के संग्रह और उनका अनुवाद फारसी में कराने के लिये बहुत से आदमियों को नियुक्त किया था।

सार संग्रह दे० (छ—१५२)

दास कवि—हरसेवक मिश्र के पिता, परमेश्वर

कवि के पुत्र, जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। दे० (च-९०)

दास कवि—सं० १७९१ के लगभग वर्तमान, प्रतापगढ़ निवासी जान पड़ते हैं।

रससार दे० (घ-४५)

दास कवि—पूरा नाम दलसिंह उप० दास है, अनुमानतः सं० १९१० के लगभग वर्तमान, पटियाला नरेश महाराज नरेंद्रनाथ सिंह के आश्रित।

केदार पथ प्रकाश दे० (घ-१०९)

दलसिंघानंद प्रकास दे० (घ-११०),

दास मनोहरनाथ—कवि गुरुदीन के गुरु; इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं। दे० (च-२४)

दिग्गज—सं० १७६६ के लगभग वर्तमान, महाराज उद्योतसिंह के पुत्र पृथ्वीसिंह दीवान के आश्रित।

भारत विलास दे० (घ-३८)

दिग्विजय सिंह (महाराज)—ये बलरामपुर (गोंडा) के राजा थे, सं० १९२५ के लगभग वर्तमान, कवि दलपति राम, गोकुल, कुँवर राना जी, ललित और वंसीधर के आश्रयदाता। दे० (ज-५२) (ज-९५) (ज-परि०-३) (२४-२५)

दिग्विजयसिंह—भिनगा (बहराइच) के राजा थे, जगतसिंह के पिता, सं० १८५८ के लगभग वर्तमान। दे० (ज-१२७)

दीनदयाल गिरि—गोस्वामी; सं० १८७१ के लगभग वर्तमान; काशी निवासी, शिवभक्त थे।

विश्वनाथ नवरत्न दे० (ङ-४४)

चकोर पचक दे० (ङ-७१)

दृष्टांत तरंगिनी दे० (ङ-७७) (ज-७४ ए)

काशी पचरत्न दे० (ङ-९१)

दीपक पचक दे० (ङ-९२)

अन्योक्तिमाला दे० (ङ-९९)

वैराग्य दिनेश दे० (ज-७४ बी)

अनुराग बाग दे० (ङ-८०)

दीनदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

गोकुल दाह दे० (छ-१६१)

दीनानाथ—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं; ये दीनानाथ मोहर (फतेहपुर) वाले से भिन्न हैं।

भक्त मंजरी दे० (ज-७५)

दीनानाथ—लक्ष्मीनाथ के पिता, बालकृष्ण के पुत्र; जाति के बोड़ा पुष्करणी ब्राह्मण, सं० १८८३ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ग-२१)

दीपक-पंचक—दीनदयाल गिरि कृत, वि० दीपक पर उत्प्रेक्षा। दे० (ङ-९३)

दीपनारायण—काशी नरेश महाराज उदितनारायण सिंह के लघु भ्राता; कवि ब्रह्मदत्त के आश्रयदाता, सं० १८६६ के लगभग वर्तमान। दे० (घ-४६)

दीप-प्रकाश—ब्रह्मदत्त कृत, नि० का० सं० १८६६; लि० का० सं० १८६६, वि० नायिकाभेद। दे० (घ-४६)

दीप साहि—गुमान कवि के भाई; सं० १८३८ के लगभग वर्तमान। दे० (च-२३)

दीरघ—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

वसी वर्णन (दीरघ पचीसी) दे० (ज-७६)

दीरघ पचीसी—अन्य नाम वशी वर्णन, कवि

हीरा कृत, लि० का० सं० १६३८, वि० वसी का वर्णन। दे० (ज-७६)

दुर्गादत्त—भविकादत्त व्यास के पिता, ये १६ वीं शताब्दी के अन्त में हुए, बनारस निवासी, ठाकुर दलेलसिंह के आश्रित।

कवित्त संग्रह दे० (ज-७६)

दुर्गापाठ भाषा—मजीतसिंह कृत, नि० का० स० १७७६, वि० दुर्गा सप्तशती का भाषानुवाद। दे० (ग-४०)

दुर्गाप्रसाद—स० १८४३ के लगभग वर्तमान, पं० राजाराम के आश्रित, इन्होंने अपने ग्रंथ में रीवाँ के महाराज अजीतसिंह के सरदारों और पेशवा के सरदार जसवतसिंह के बीच चार हट (रीवाँ) के मैदानवाले युद्ध का वर्णन किया है।

अजीतसिंह कृत ग्रंथ (नायक रासो) दे० (क-४१)

दुर्गाप्रसाद—प्रयागीलाल के पुत्र, जाति के कायस्थ, स० १९२८ के लगभग वर्तमान, इनके तीन भाई (१) गया प्रसाद (२) देवीप्रसाद और (३) गणेशप्रसाद थे।

मर्मप्रबोध दे० (ख-४२)

दुर्गाशतक—विष्णुदत्त कृत, वि० दुर्गा-स्तुति। दे० (ज-३२८)

दुर्जनदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, ये राम-कृष्ण भक्ति की कविता से साधु ज्ञात पड़ते हैं।

रागमाला दे० (छ-१६३)

दुर्जनसिंह—ये १८ वीं शताब्दी में हुए, सुखदेव कवि के आश्रयदाता थे। दे० (ख-६७)

दुर्जनसिंह—चँदेरी के राजा, स० १८४४ के लगभग वर्तमान, क्षमसाल मिश्र के आश्रयदाता। दे० (छ-२१)

दुर्जनसिंह—पचौर (बुंदेलखंड) के जागीरदार, छत्रसाल के पौत्र, स० १७६७ के लगभग वर्तमान, भाने व्यास के आश्रयदाता। दे० (छ-८१)

दूहासार—(र० अज्ञात) नि० का० स० १७२०, लि० का० स० १७६१, वि० स्फुट काव्य का संग्रह। दे० (ग-४)

दूलनदास—जगजीवन दास के शिष्य, स० १८१७ के लगभग वर्तमान, तोंवरदास और पहलवान दास के गुरु थे। दे० (ज-२२१) (ज-३१८)

भ्रमावली दे० (ज-७८)

दूल्हा—ये कवि कालिदास त्रिवेदी के पौत्र और कवि उदयनाथ त्रिवेदी के पुत्र थे, सं० १८०७ के लगभग वर्तमान, अन्तरवेद, कानपुर के निवासी थे।

कविकुल कंठाभरण दे० (घ-४१) (छ-१६२) (ज-७७)

दूल्हा—सुवर कवि के पिता, जाति के कायस्थ, काशी निवासी, स० १८६७ के पूर्व वर्तमान। दे० (ख-५७)

दूषण दर्पण—ग्वाल कवि कृत, नि० का० स० १८६१, वि० काव्य भेद वर्णन। दे० (ज-१०२)

दूषण विचार—बलभद्र कृत, नि० का० स० १६१४, लि० का० स० १८७४, वि० काव्य भेद वर्णन। दे० (ज-१६)

दूषणोल्लास—अमीरदास कृत, लि० का० स० १९५१, वि० हिंदी काव्य-रचना के दोषों का उल्लेख। दे० (छ-१२४ बी)

दृष्टांत तरंगिणी—दीनदयाल गिरि कृत; नि० का० सं० १८७६; वि० अनेक उपयुक्त वार्ताओं पर दृष्टांतयुक्त दोहे। दे० (ङ–७७) (ज–७४ ए)

दृष्टांत-बोधिका—रामचरन कृत लि० का० सं० १६४३; वि० राम-महिमा वर्णन। दे० (छ–२११) (ज–२४५ के)

देव—व्यास जी के शिष्य, सं० १६७७ के लगभग वर्तमान।

देवमाया प्रपंच नाटक दे० (ङ–३५)

देव कवि—उप० देवदत्त। दे० (ङ–१२०) (घ–२८) (ग–१२१)

देव कवि—सं० १७६७ के लगभग वर्तमान, अमीर-खाँ के आश्रित, बादशाह मुहम्मद शाह के समकालीन और कृपापात्र।

रागमाला दे० (छ–१५५)

देवकीनंदन—सं० १८४३ के लगभग वर्तमान, कुँवर सरफ़राज के आश्रित; मकरंदपुर (फरुख़ाबाद) निवासी, शिवनाथ कवि के पुत्र; जाति के कान्यकुब्ज शुक्ल ब्राह्मण थे।

सरफ़राज चंद्रिका दे० (ख–५७)

शृङ्गार चरित्र दे० (ज–६५ ए)

अवधूत भूषण दे० (ज–६५ बी)

देवकीनंदनसिंह—महाराज बनारस के भाई थे, सं० १८६७ के लगभग वर्तमान, कवि धनी-राम, सेवकराम और ठाकुर कवि इनके आश्रित थे। दे० (घ–११६) (ज–२८६) (ङ–१८)

देवदत्त—उप० दत्त, जाजमऊ निवासी। दे० (घ–५५) (घ–३६) (ज–५६)

देवदत्त—उप० दत्त, सं० १८२३ के लगभग वर्तमान; जम्मू नरेश महाराज रणजीतसिंह के पुत्र कुँवर ब्रजराज के आश्रित।

द्रोणपर्व भाषा दे० (ख–६३)

देवदत्त—उप० देव कवि; हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि; जन्म का० सं० १७३०, जन्म-स्थान धौसरिया (इटावा), समनेगाँव (मैनपुरी) निवासी; इनके निर्माण किए लगभग ७० ग्रन्थ कहे जाते हैं, ये फफूँद (इटावा) के राजा मधुकर साहि के पुत्र राजा कुशलसिंह के आश्रित थे।

कृष्ण गुण कर्म सूक्ष्म सूदन दे० (ङ–१०५)

रस विलास दे० (ग–७)

अष्टयाम दे० (ग–१२१) (क–५३) (ङ–१२०)

काव्य रसायन दे० (छ–१५६) (च–२६)

प्रेम तरंग चंद्रिका दे० (घ–२८) (ङ–१२२)

भावविलास दे० (घ–४१) (ज–६४ एफ) (ङ–१२१)

सुजन विनोद दे० (घ–१०८)

कुशल विलास दे० (ङ–३७)

प्रेम दर्शन दे० (ज–६४ ए)

प्रेम तरंग दे० (ज–६४ बी)

जाति विलास दे० (ज–६४ सी)

सुखसागर तरंग दे० (ज–६४ डी)

सभा रसायन दे० (ज–६४ ई)

देवमणि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

राजनीति के भाव दे० (छ–१५७)

देवमणि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

चर नायिका दे० (ज–६६)

देवमाया प्रपंच नाटक—देव कवि कृत; वि० ज्ञानोपदेश; नाटक ६ अङ्कों में समाप्त हुआ है। दे० (ङ–३५)

देव-शक्ति पचीसी—अन्य नाम दैवी शक्ति

पचीसी या अनन्य पचीसी; अनन्य (अक्षर अनन्य) कृत; वि० शक्ति का वर्णन। दे० (अ-८ सी) (छ-२ बी)

देवीचंद—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

हितोपदेश (हिंदी गद्य) दे० (अ-६७)

देवीदत्त—सं० १८१२ के लगभग वर्तमान, जैत पुर नगर निवासी; जाति के भाट थे।

बैताल पचीसी दे० (ख-२७)

भ्रमर पचीसी दे० (अ-८५)

देवीदास—बुंदेलखंड निवासी; सं० १७४२ के लगभग वर्तमान, ये अग्रजीवन दास के शिष्य नहीं हैं, जाति के कायस्थ जान पड़ते हैं, करौली (राजपूताना) के राजा रतनपाल के आश्रित।

राजनीति रा कवित्त दे० (ग-१) (ग-४२)

प्रेम रत्नाकर दे० (छ-२२०)

देवीदास—ये दो प्रसिद्ध देवीदासों (अग्रजीवन दास क शिष्य और बुंदेलखंडी) से भिन्न हैं, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

रामीदर लीला दे० (अ-६८)

भाषा भागवत द्वादश स्कंध दे० (अ-८२)

देवी विनय—कान्ह कवि कृत; वि० दुर्गा-स्तुति। दे० (छ-२७७)

देवीसहाय—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

मदन दे० (अ-६६)

देवीसिंह (राजा)—चँदेरी नरेश, सं० १७११ क लगभग वर्तमान, आड़छा नरेश मधुकर साहि से पाँचवीं पीढ़ी में थे।

नसिंह लीला दे० (छ-२८ ए)

आयुर्वेद विलास दे० (छ-२८ बी)

रहस्य लीला दे० (छ-२८ सी)

देवीसिंह विलास दे० (छ-२८ डी)

नृसिंह विलास दे० (छ-२८ ई)

बारह मासी दे० (छ-२८ एफ)

देवीसिंह (राजा)—मुरारमऊ के राजा; सुख देव मिश्र के आश्रयदाता; सं० १७२७ के लगभग वर्तमान थे। दे० (छ-२८ जी)

देवीसिंह विलास—राजा देवीसिंह कृत। वैद्यक निदान। दे० (छ-२८ डी)

देवी स्तुति और राम-चरित्र—गंगाराम कृत; वि० देवी स्तुति और राम चरित्र वर्णन। दे० (अ-८८)

दैवी शक्ति पचीसी—अन्य नाम अनन्य पचीसी; अक्षर अनन्य (अनन्य) कृत; लि० का० सं० १८६७, वि० दुर्गा-स्तुति। दे० (छ-२ बी) (अ-८ सी)

दोहनानंदाष्टक—महाराज सावंतसिंह (नागरी दास) कृत; वि० कृष्णलीला का वर्णन। दे० (ख-१२१ ख)

दोहा—राजा पृथ्वीसिंह कृत; वि० स्फुट दोहों का समह। दे० (छ-८५ ओ)

दोहा—रतन कवि कृत, लि० का० सं० १८५५; वि० प्रेम वर्णन। दे० (अ-१०१)

दोहा व पद—सुखनिधान कृत, वि० कृष्ण-भक्ति विषयक गान। दे० (छ-१३३)

दोहावली—गोस्वामी तुलसीदास कृत; लि० का० सं० १८८४, वि० राम कथा दोहों में। दे० (ख-९२) (अ-३२३ बी)

दोहावली—जनकराजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १९१०, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (अ-१३४ एल)

दोहों का संग्रह—सम्मन कृत, वि० शिक्षा संबंधी दोहों का संग्रह। दे० (छ-२२८)

दौलतखाँ—शेरशाह सूर के पुत्र, सं० १६१७ के लगभग वर्तमान त्रिलोचन मिश्र उप० तानसेन के प्रथम आश्रयदाता। दे० (ख-१२)

दौलतनामा—अन्य नाम बाजनामा, र० अज्ञात, इस ग्रंथ को कई हकीमों ने फीरोजशाह बादशाह के हुक्म से बनाया, अनुमानतः नि० का० सं० १८५० के लगभग जान पड़ता है। वि० पक्षी-चिकित्सा। दे० (ग्र-६६)

दौलतराम—ये सेवक जाति के थे, मारवाड़ निवासी, सं० १८६० के लगभग वर्तमान, मारवाड़-नरेश महाराज मानसिंह के आश्रित।

जलंधरनाथ जी रो गुण दे० (ग-३०)

दौलतराव सेंधिया—ग्वालियर नरेश, राज्य का० सं० १८५१-१८८४ तक; लछमणराव शिव कवि के आश्रयदाता। दे० (छ-२३६) (छ-१८७)

द्यानति कवि—ये जैन मतावलंबी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

एकीभाव भाषा दे० (क-१०१)

द्रोणपर्व भाषा—कुलपति कृत, लि० का० सं० १८७२, वि० महाभारत के द्रोणपर्व का भाषानुवाद। दे० (क-७२)

द्रोणपर्व भाषा—देवदत्त (दत्त) कृत, नि० का० सं० १८२३ लि० का० सं० १८२५, वि० महाभारत के द्रोण पर्व का भाषानुवाद। दे० (ख-६३)

द्रोणाचार्य—प्रियादास के शिष्य थे, सं० १८९० के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण त्रिवेदी; रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिंह के आश्रित।

प्रियादास चरितामृत दे० (ख-१६)

द्वादश यश—चतुर्भुजदास कृत; लि० का० सं० १८९६ वि० भक्ति, धर्म, शिक्षादि १२ विषयों का वर्णन। दे० (छ—१४८ ए)

द्वारिकादास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं

माधव निदान भाषा दे० (क—१३६)

द्वारिकेश—व्रज निवासी, वल्लभाचार्य के अनुयायी थे।

द्वारिकेश की भावना दे० (छ—१६४)

द्वारिकेश जी की भावना—द्वारिकेश कृत; वि० वैष्णवों का जीवन-कर्तव्य। दे० (छ-१६४)

द्विज कवि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं ये बनारसवाले मन्नालाल उप० द्विज नहीं हैं।

श्रीराधा नख शिख दे० (घ-२७)

द्विज कवि—सं० १८३६ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, न तो ये बनारस के मन्नालाल (द्विज कवि) हैं और न अयोध्या के महाराज मानसिंह (द्विज कवि)।

सभा-प्रकाश दे० (छ-१६५)

धनंतर—इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

औषधि विधि दे० (ज-७०)

धनधन—नागरीदास (महाराज सावंतसिंह) कृत; वि० वृन्दावन की प्रशंसा का वर्णन। दे० (छ-१९८ ए)

धनीराम—सं० १८६७ के लगभग वर्तमान, काशी-नरेश के भाई बाबू देवकीनंदन के आश्रित।

रामगुणोदय दे० (घ-११६)

धनुर्विद्या मूल टीका—विश्वनाथसिंह कृत, लि० का० सं० १९११, वि० धनुर्विद्या का वर्णन। दे० (क-४७)

धनुर्वेद—यशवंतसिंह कृत; वि० धनुर्विद्या। दे० (छ-१२०)

धनुष विद्या—नामे ब्यास कृत, नि० का० स० १७६८, लि० स० १८११, वि० धनुष विद्या। दे० (छ–८१)

धनुष विद्या—महाराज विश्वनाथसिंह कृत, वि० धनुष चलाने की विधि और क्रिया का वर्णन। दे० (ग–२०)

धरनीधर—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
ग्रन्थ प्रकाश दे० (ञ–७१)

धर्मचंद—बनारस निवासी, जाति के अग्रवाल वैश्य, कवि वृंदावन के पिता, सं० १८६१ के पूर्व वर्तमान। दे० (क–११७)

धर्मदत्त चरित्र—दयासागरसूरि कृत, नि० का० स० १७५५, लि० का० स० १८६३, वि० जैन सम्प्रदाय के महात्मा धर्मदत्त का चरित्र वर्णन। दे० (क–११०)

धर्मदास—कबीरदास के शिष्य, स० १४५७ के लगभग वर्तमान।
कबीर के द्वादश पंथ (छ–१५८)

धर्मप्रकाश—विजावर नरेश राजा लक्ष्मणसिंह कृत, नि०का० स० १६०४, वि० वर्ण और श्रेणी का धर्म वर्णन। दे० (छ–६५ बी)

धर्मपरीक्षा—मनोहर कृत, नि० का० स० १७५१, वि० जिनदेव का चरित्र वर्णन। दे० (क–१२२)

धर्म मंदिर गणि—सं० १७४१ के लगभग वर्तमान, जैनमत के अनुयायी। इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
प्रबोध चिंतामणि विवेक दे० (क–१२०)

धर्म संवाद की कथा—कृष्णकवि कृत, नि० का० स० १७७५, लि० का० स० १६०५, वि० धर्म राज और युधिष्ठिर का संवाद। दे० (घ–८) (छ–६१)

धर्म सुबोधिनी—लाडलीदास कृत, नि० का० स० १८४२, वि० राधावल्लभी सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का वर्णन। दे० (ज–१६४)

धातु नाम शोधन मारण विधि सटीक—(र० अज्ञात) वि० वैद्यक। दे० (क–१०६)

धीर—स्वामी हरिदास के पिता, ब्रह्मधीर के पुत्र, हरिदासपुर निवासी, स० १६०० के लगभग वर्तमान, जाति के सनाढ्य ब्राह्मण। दे० (क–३७)

धीर—स० १८५७ के लगभग वर्तमान, राजा धीरकिशोर के आश्रित।
कवि प्रिया पर तिलक दे० (छ–२६)

धीर को समयो—चंद बरदाई कृत, वि० पृथ्वी राज रासो का एक खंड जिसमें पृथ्वीराज के सामन्त धीर के पराक्रम का वर्णन है। दे० (छ–१४६ ए)

धीरजराम—सं० १८१० के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण, कृपाराम के पुत्र।
चिकित्सासार दे० (ज–७२)

धीरजसिंह—जाति के श्रीवास्तव कायस्थ, हिम्मतसिंह के पुत्र, धारवई (ओड़छा) ग्राम निवासी, कवि-वंशावली इन्होंने स्वयं इस प्रकार दी है:-इनके पूर्वज गोरखपुर निवासी थे, वहाँ से उकसा ग्राम में चले आए, इनके पूर्वज तीन भाई थे—धर्मदास, मानदास और माधवसिंह, इनके पुत्र नंद हुए, नंद के आलम साहि, उनके हिम्मतसिंह हुए जो कवि के पिता थे जो धोरवई राज्य ओड़छा में आकर बसे।
गणित चंद्रिका दे० (छ–३० ए)
दस्तूर चिंतामणि दे० (छ–३० बी)

धीरसिंह—ये कोई महाराज थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

अलकार मुक्तावली दे० (च-२५)

ध्यानदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, स्यात नम्बर (ग-१०७) और ये एक ही हों; ये साधु चरणदास के गुरु थे। दे० (छ-६)

दानलीला दे० (छ-१६० ए)

मानलीला दे० (छ-१६० बी)

हरिचद सत दे० (ख-१०७)

ध्यान मंजरी—बालकृष्ण नायक कृत; नि० का० सं० १७२६ लि० का० सं० १८७५; वि० सीता राम का वर्णन। दे० (छ-६ ए)

ध्यान मंजरी—अन्य नाम राम ध्यान मजरी; स्वामी अग्रदास कृत, लि० का० सं० १६५१, वि० श्री राम-स्तुति वर्णन। दे० (क-७७) (छ-१२१ ए)

ध्रुवचरित्र—गोपाल (जनगोपाल) कृत; लि० का० सं० १८३६, वि० ध्रुव का चरित्र-वर्णन। दे० (छ-१७५) (क-२५)

ध्रुवचरित्र—जन जगदेव कृत, वि० ध्रुव-चरित्र-वर्णन। दे० (छ-२७२)

ध्रुवचरित्र—परमानंद कृत; नि० का० स० १६८६, लि० का० सं० १७६१; वि० ध्रुव-चरित्र-वर्णन। दे० (छ-२०३)

ध्रुवदास—स्वामी हित हरिवंश के शिष्य; सं० १६८६ के लगभग वर्तमान, ये एक प्रसिद्ध कवि हुए हैं जिन्होंने बहुत से ग्रन्थ लिखे हैं· उप० हित ध्रुवदास था।

वृन्दावन सत दे० (क-८) (ज-७३सी)

शृंगार सत दे० (क-६) (छ-१५६ ई)
(ज-७३ एस)

रस रत्नावली दे० (क-१०) (ज-७३ क्यू)

नेह मंजरी दे० (क-११) (ज-७३ एम)

रहस मंजरी दे० (क-१२) (ज-७३ डी)

सुख मंजरी दे० (क-१३ एक) (ज-७३के)

रति मंजरी दे० (क-१३ दो) (ज-७३ एल)

वन विहार दे० (क-१३ तीन) (ज-१३जेड)

रंगविहार दे० (क-१३ चार) (ज-७३एक्स)

रस विहार दे० (क-१३ पाँच) (छ-१५६ए)
(ज ७३ वाई)

आनंददशा विनोद दे० (क-१२ छ)
(ज-७३ सो)

रंग विनोद दे० (क-१२ सात) (ज-७३ यू)

नृत्य विलास दे० (क-१३ आठ) (ज ७२ बी)

रंग हुलास दे० (क-१३ नौ) (ज-७३ के)

सभामंडल शृंगार दे० (ग-२६४) (स०१६८६)

मानरस लीला दे० (क-१३ दस)

रहस्यलीला दे० (क-१३ ग्यारह) (ज-७३ई)

प्रेमलता दे० (क-१३ बारह) (ज-७३एफ़)

प्रेमावली दे० (क-१३ तेरह) (ज-७३ वी)

भजनकुंडली दे० (क-१३ चौदह)(ज-७२ यू)

बावन वृहत पुराण की भाषा दे० (क-१४)
(ज-७३ एच)

भक्त नामावली दे० (क-१५) (ज-७३ जी)

मन शृंगार दे० (क-१६)

भजनसत दे० (क-१७) (ज-१५६ एफ)
(ज-७२ आर)

मन शिक्षा दे० (क-१८) (ज-७२ ई)

प्रीति चौवनी दे० (क-१६) (ज-७२ जे)

रस मुक्तावली दे० (क-२०) (छ-१५६ बी)
(ज-७३ ओ)

सभा मंडली दे० (छ-२१) (ज-७३ एम)

प्रीति चौबनी ग्रंथ दे० (ग-२४४)

मान विनोद दे० (छ-१५६ सी) (ज-७३ वी)

ब्याहलो बानी दे० (छ-१५६ डी)

रसानंदलीला दे० (ज-७३ ए)

रंग हुलासलीला दे० (७३ एफ)

सिद्धांत विचार दे० (ज-७३ आई)

रस हीरावली दे० (ज-७३ पी)

हित सिंगार लीला दे० (ज-७३ टी)

ब्रज लीला दे० (ज-७३ वी)

आनंदलता दे० (ज-७३ डी)

अनुराग लता दे० (ज-७३ ओ)

जीवदशा दे० (ज-७३ एच)

वैद्यकलीला दे० (ज-७३ आई)

दानलीला दे० (ज-७३ जे)

ब्याहुली दे० (ज-७३ एल)

सिद्धांत चरित्र प्रेममाला दे० (ग-२७६) (नि० १६४२)

ध्रुव प्रश्नावली—गोस्वामी तुलसीदास कृत; वि० ज्योतिष। दे० (ज-३२३ एन)

ध्रुवाष्टक—महाराज विश्वनाथसिंह कृत; वि० राजनीति। दे० (छ-२५६ बी)

नंद कवि—उप० केसरीसिंह; इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

नगारथ लीला दे० (छ-२६६) (च-३७)

नंददास—प्रसिद्ध कवि तुलसीदास के भाई; इनका अष्ट-छाप में सातवाँ नम्बर था, स्वामी विट्ठलदास के शिष्य, जाति के ब्राह्मण थे, सं० १६२५ के लगभग वर्तमान।

दशमस्कंध भागवत दे० (च-११) (छ-२०० बी)

रासपंचाध्यायी दे० (ज-६६) (छ-२०० ए)

अनेकार्थ मंजरी (नाम माला) दे० (ग-५८) (घ-१५३) (ज-२०८ बी) (ज-२०८ डी)

नाम चिंतामणि माला दे० (छ-२०० सी)

जोग लीला दे० (छ-२०० डी)

श्याम सगाई दे० (छ-२०० ई)

नासिकेत पुराण भाषा दे० (ज-२०८ ए)

मानमंजरी नाममाला दे० (ज-२०८ सी) (ग-२०६)

रस मंजरी दे० (ज-२०८ ई)

विरह मंजरी दे० (ज-२०८ एफ) (ग-७०)

नन्ददास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

राजनीति हितोपदेश दे० (च-३६)

रूप मंजरी दे० (छ-२०१)

नन्दराम—अमरावती निवासी, पहिराम के पुत्र, सं० १७४४ के लगभग वर्तमान, जाति के खंडेलवाल वैश्य थे।

नंदराम पचीसी दे० (क-१२६)

नन्दराम पचीसी—नन्दराम कृत, नि० का० सं० १७४४; वि० कलियुग के कुप्रभाव का वर्णन। दे० (क-१२६)

नन्द व्यास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं; सं० १७६६ के पूर्व वर्तमान।

मानलीला दे० (छ-३०० ए)

दानलीला दे० (छ-३०० बी)

नकुल पांडव—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

शालिहोत्र दे० (ज-२०४)

नखशिख—अब्दुर्रहमान मिर्ज़ा कृत; नि० का० सं० १६१५; नायिका के अंग प्रत्यंग का वर्णन। दे० (घ-५०)

नखशिख—कुलपति मिश्र कृत. लि० का सं० १६१५; वि० राधाकृष्ण का नख शिख। दे० (छ–१८५ बी)

नखशिख—कलानिधि कृत लि०का० सं० १८५१; वि० राधा का नखशिख वर्णन। दे० (च–४)

नखशिख—बलभद्र कृत, लि० का० स० १६४०, लि० का० सं० १८७२, वि० नखशिख वर्णन। दे० (ज–१५)

नखशिख—कान्ह कवि कृत, वि० नखशिख-वर्णन। दे० (ग्र–६०)

नखशिख—जगतसिंह कृत, नि० का० सं० १८७७, वि० राधा कृष्ण का नखशिख-वर्णन। दे० (ज–१२७ सी)

नखशिख—कुशलसिंह कृत, लि० का० स० १६२१; वि० नायिका के अंग प्रत्यंग की शोभा का वर्णन। दे० (ज–१६१)

नखशिख—प्रेम सखी कृत, लि० का० स० १६२३; वि० सीता जी का नखशिख वर्णन। दे० (ज–२३० ए)

नखशिख—श्रीगोविंद कृत, लि० का० स० १८६४ वि० राधिका का नखशिख वर्णन। दे० (ज–३०० बी)

नखशिख—केशवदास कृत, नि० का० स० १६५७, लि० का० सं० १८५३, वि० नायिका के अंग प्रत्यंगों का वर्णन। दे० (ग्र–२६)

नखशिख—बिहारी कृत, वि० रामचंद्र जी का नखशिख वर्णन। दे० (ज–३०)

नखशिख—प्रताप कृत, नि० का० सं० १८८६; लि० का० सं० १६३८, वि० रामचंद्र जी के अंग प्रत्यगों की शोभा का वर्णन। दे० (ज–२२७)

नटनागर विनोद—रतनसिंह कृत; वि० शृंगार रस का वर्णन। दे० (ग–१०१)

नयनसिंह—उप० नाथन जी; नेतसिंह के पिता; जाति के भाट स० १८०८ के पूर्व वर्तमान। दे० (क–१३८) (ज–२१५)

नयनसुख—केशवराज के पुत्र; सरहिंद पंजाब निवासी, स० १६४६ के लगभग वर्तमान; बादशाह अकबर के समकालीन थे।

वैद्यमनोत्सव (नयनसुख ग्रंथ) दे० (ज–२१४) (क–३४) (ग्र–१५५) (ट–१३३)

नयनसुख ग्रंथ—अन्य नाम वैद्य मनोत्सव, नयनसुख कृत, नि० का० सं० १६४६; वि० वैद्यक। दे० (क–३४) (ज–२१४)

नर-नारायण की कथा—जयसिंह जू देव कृत; वि० भगवान के नर-नारायण रूप का वर्णन। दे० (क–१५४)

नरपतिनाल्ह—सं० १३५५ से लगभग वर्तमान. इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

बीसलदेव रासो दे० (क–६०)

नरसिंह—ओड़छा-नरेश महाराज छत्रसाल के धर्म पुत्र, स० १७५३ के लगभग वर्तमान; कवि केशवराज के आश्रयदाता। दे० (च–१०)

नरसिंह अवतार कथा—नरहरदास बारहट कृत, वि० नृसिंह अवतार की कथा। दे० (ग–५१)

नरसी महता की हुंडी—जेठमल कृत, नि० का० सं० १७१०, वि० भगवान द्वारा नरसी महता की हुंडी चुकाने का वृत्तांत। दे० (ख–७७)

नरहरि—सं० १६०७ के लगभग वर्तमान, जाति के भाट, बादशाह अकबर के आश्रित, इनके

वंश में शिवनाथ हुए जिन्होंने वंशावली की रचना की। इन्हीं नरहरि की प्रार्थना पर बादशाह ने गोवध बंद कर दिया था।

रुक्मिणी मंगल दे० (घ-११) (ज-२०६)

नरहरिदास—बारहट जाति के चारण, टहला गाँव परगना, मेड़ता (जोधपुर) के निवासी, जोधपुर के नरेश महाराज सूरसिंह, गजसिंह और जसवंतसिंह के आश्रित, ये १७ वीं शताब्दी में वर्तमान थे।

अवतार चरित्र दे० (ग-८८)

दशम स्कंध भाषा दे० (ग-४८)

अवतार गीता दे० (ज-२१०)

नरसिंह अवतार कथा दे० (ग-५१)

अहिल्या पूर्व प्रसंग दे० (ग-५०)

रामचरित्र कथा काकभुशुंड गरुड़ संवाद दे० (ग-४६)

नरहरिदास—ये साधु थे, सरसदास के शिष्य और रसिकदास के गुरु थे, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। दे० (ज-२१२) (छ-२१८)

नरहरिदास की बानी दे० (छ-३०२)

नरहरिदास (बख्शी)—बुंदेलखंड निवासी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

बारहमासी दे० (छ-७७)

नरहरिदास की बानी—नरहरिदास कृत, वि० राधाकृष्ण संबंधी पद। दे० (छ-३०२)

नरेंद्रसिंह—पटियाला नरेश, सं० १९१० के लगभग वर्तमान; सं० १९१६ में इनकी मृत्यु हुई, निम्नलिखित कवि इनके आश्रित थे—(१) चंद्रशेखर० (२) ब्रजराज (३) रामनाथ (४) अमृतराय (५) चंद (६) कुंवर (७) निहाल (८) हंसराज (९) मनसाराय (१०) उमादास (११) देवीदित्ता राय। दे० (घ-१००) (ज-२) (ज-१७)

नरोत्तम—वाड़ीग्राम (सीतापुर) निवासी, जन्म का० सं० १६१०।

सुदामा चरित्र दे० (छ-२०१) (क-४२)

नवनदास अलखसनेही—ये एक साधु थे, गंगा दास के गुरु, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं। दे० (छ-२५२)

गीतासागर दे० (छ-३०४)

नवनिधि—कबीर के अनुयायी जान पड़ते हैं, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

सकलमोचन दे० (ज-२१२)

नवरत्न—उमादास कृत, वि० नीति-वर्णन। दे० (ज-६५)

नवरस तरंग—बेनी प्रवीन कृत, नि० का० सं० १८७८, लि० का० सं० १६४१, वि० नव रसों का वर्णन। दे० (ज-१६)

नवलकृष्ण—दयाकृष्ण के पुत्र, लखनऊ के नवाब गाज़ीउद्दीन हैदर के दीवान, सं० १८७८ के लगभग वर्तमान, बेनी प्रवीन के आश्रय दाता। दे० (ज-१६)

नवलदास—सं० १८०७ के लगभग वर्तमान, महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) के शिष्य, धनेड़ा (लखनऊ) निवासी, ग्राम कटघा (बाराबंकी) के मंदिर के पुजारी थे।

नवलदास की बानी दे० (छ-२८)

भागवत दशम स्कंध भाषा दे० (ज-२१३)

भागवत पुराण भाषा जन्म खंड दे० (ज-२१६)

नवलदास जी की बानी—नवलदास कृत, वि० राधाकृष्ण जी के पद। दे० (छ-३८)

नवलराम—रामचरण जी के शिष्य, रामसनेही संप्रदाय के अनुयायी।
नवलसागर दे० (ख–६४)

नवलसागर—नवलराम कृत; वि० ज्ञानोपदेश और राम-भजन की महिमा। दे० (ख–६४)

नवलसिंह (प्रधान)—उप० रामानुजदास शरण; जाति के श्रीवास्तव कायस्थ झाँसी निवासी; वैष्णव रामानुज सप्रदाय के अनुयायी; समथर-नरेश महाराज हिंदूपति के आश्रित, सं० १८९७ के लगभग वर्तमान दतिया व टीकमगढ राज्य के दरबार में भी रहे थे।

नाम रामायण दे० (च–३०)
रामायण कोश दे० (छ–७९ ए)
शका मोचन दे० (छ–७९ बी)
रसिक रञ्जनी दे० (छ–७९ सी)
विज्ञान भास्कर दे० (छ–७९ डी)
ब्रजराज दीपिका दे० (छ–७९ ई)
शुक रम्भा सवाद दे० (छ–७९ एफ)
नाम चितामणि दे० (छ–७९ जी) (च–२९)
जौहरिन तरंग दे० (छ–७९ एच)
मूल भारत दे० (छ–७९ आई)
भारत सावित्री दे० (छ–७९ जे)
अद्भुत रामायण दे० (च–२८)
भारत कवितावली दे० (छ–७९ के)
भाषा सप्तशती दे० (छ–७९ एल)
कवि जीवन दे० (छ–७९ एम)
आल्हा रामायण दे० (छ–७९ एन)
आल्हा भारत दे० (छ–७९ ओ)
रुक्मिणी मंगल दे० (छ–७९ पी)
मूल ढोला दे० (छ–७९ क्यू)
रहस्य लावनी दे० (छ–७९ आर)
अध्यात्म रामायण दे० (छ–७९ एस)
रूपक रामायण दे० (छ–७९ टी)
नारी प्रकरण दे० (छ–७९ यू)
सीता स्वयंवर दे० (छ–७९ वी)
राम-विवाह खंड दे० (छ–७९ डब्ल्यू)
भारत वार्तिक दे० (छ–७९ एक्स)
रामायण सुमिरनी दे० (छ–७९ वाई)
विलास खंड दे० (छ–७९ जेड)
पूर्व शृंगार खण्ड दे० (छ–७९ ए ए)
मिथिला खण्ड दे० (छ–७९ बी बी)
दान लोभ संवाद दे० (छ–७९ सी सी)
जन्मखण्ड दे० (छ–७९ डी डी)

नवीन—स० १७३० के लगभग वर्तमान, जोधपुर नरेश महाराज जसवंतसिंह के आश्रित।
नेह निधान दे० (च–३९)

नवीनाख्य—दशरथराय कृत; नि० का० सं० १७९१; वि० नायिका भेद। दे० (ज–५८)

नसरुल्लाखाँ—दिल्ली के सरदार; सं० १७७७ के लगभग वर्तमान, सूरत मिश्र के आश्रयदाता। दे० (छ–२४३)

नसीहतनामा—सुखलाल कृत; नि० का० सं० १९०८, वि० आचारिक शिक्षा। दे० (छ–११३बी)

नागनौर की लीला—चद कवि कृत, नि० का० सं० १७१५, लि० का० सं० १८४४; वि० श्रीकृष्ण का कालीनाग को नाथना। दे० (छ–१८)

नागरीदास—उप० महाराज सावतसिंह; ये किशनगढ़ के राजा थे; इनका जन्म स० १७५५ और मृत्यु सं० १८२० में हुई; ये पक्के वैष्णव और भक्त तथा अच्छे कवि थे; रूपनगर में उत्पन्न

हुए जहाँ उस समय किशनगढ़ की राजधानी थी, इन्होंने अपने भाई बहादुरसिंह द्वारा दुःख दिए जाने पर सं० १८१४ में गद्दी छोड़ दी और अपने पुत्र सरदारसिंह को गद्दी सौंपकर वृंदावन में आकर रहने लगे, नवल सिंह के गुरु थे। दे० (ग-३८)

उत्सवमाला दे० (ख-११२)
बिहार चंद्रिका दे० (ख-११३)
भोर लीला दे० (ख-११४)
मजलिस मंडन (छूटक दोहा) दे० (ख-११५)
निकुंज विलास दे० (ख-११६)
वनजन प्रशंसा पद प्रबंध दे० (ख-११७)
ब्रज संबंध नाम माला दे० (ख-११८)
छूटक दोहा दे० (ख-११९)
जुगल भक्ति विनोद दे० (ख-१२०)
प्रात रस मंजरी दे० (ख-१२१ एक)
भोजनानंदाष्टक दे० (ख-१२१ दो)
जुगल रस माधुरी दे० (ख-१२१ तीन)
फूल विलास दे० (ख-१२१ चार)
गोधन आगम दे० (ख-१२१ पाँच)
दोहनानंदाष्टक दे० (ख-१२१ छः)
लगनाष्टक दे० (ख-१२१ सात)
फाग विलास दे० (ख-१२१ आठ)
ग्रीष्म विहार दे० (ख-१२१ नौ)
पावस पचीसी दे० (ख-१२१ दस)
कलिकाष्टक दे० (ख-१२१ ग्यारह)
वन विनोद लीला दे० (ख-१२२)
दीपोत्सव पद दे० (ख-१२३)
भक्ति मग दीपिका दे० (ख-१२४)
मनमार रस दे० (ख-१२५)
रैन रूपा रस दे० (ख-१२६)
सुजनानंद पद दे० (ख-१२७)
बाल विनोद दे० (ख-१२८)
रास रस लता दे० (ख-१२९)
श्री नागरीदास की स्फुट कविता दे० (ख १३०)
इश्क चमन दे० (ख-१३१)
नागरीदास के पद दे० (ज-२०२)
बन जन दे० (छ-१९८ ए)
भक्तिसार दे० (छ-१९८ बी)
पद प्रसंग माला दे० (छ-१९८ सी)

नागरीदास—उप० सावंतसिंह। दे० "सावंतसिंह"। (ख-१२१) (छ-१९८)

नागरीदास—बिहारिनदास के शिष्य, वैष्णव संप्रदाय के अनुयायी साधु, महाराज सावंत सिंह (नागरीदास) से भिन्न हैं।

नागरीदास की बानी दे० (घ-३१)
स्वामी हरिदास जी को मंगल दे० (घ-४०)

नागरीदास की स्फुट कविता—महाराज सावंत सिंह (नागरीदास) कृत, लि० का० सं० १९५०, वि० अनेक विषयों के स्फुट छंद। दे० (ख-१३०)

नागरीदास के पद—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० राधाकृष्ण का शृंगार वर्णन। दे० (ज-२०२)

नागरीदासजी की बानी—नागरीदास साधु कृत, वि० श्री राधाकृष्ण का शृंगार-वर्णन। दे० (घ-३१)

नागलीला—सूरदास कृत, लि० का० सं० १८७७, वि० कालीनाग के नाथने का वर्णन। दे० (छ-२४५ ई)

नाटक दीप—अन्य नाम पंचदशी भाषा, स्वामी अनेमानंद कृत, नि० का० सं० १८३७, वि० वेदांत। दे० (ख–४६)

नाटकदीपिका—सदाराम कृत; लि० का० स० १८७३, वि० वेदांत वर्णन। दे० (ज–२७२ डी)

नाथ कवि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

भागवत पचीसी दे० (ज–२०६)

नाथ-चंद्रिका—उत्तमचंद कृत, वि० जलंधरनाथ के गुणों का वर्णन। दे० (ख–८६) (ग–१८ एक)

नाथ-चरित—राजा मानसिंह कृत, वि० सिद्धेश्वर श्री जलंधरनाथ के गुण और यश का वर्णन। दे० (ग–३१)

नाथ-प्रशसा—राजा मानसिंह कृत; वि० चार ऋतुओं का वर्णन। दे० (ग–७८)

नादार्णव—अन्य नाम नादोदधि, पूरन मिश्र कृत; लि० का० सं० १८५६; वि० संगीत। दे० (ङ–४३)

नादिरशाह—ईरान का बादशाह, जन्म स्थान खुरासान, इसने सं० १७६६ में भारत पर आक्रमण किया और इसके मथुरा के धावे में आनंदघन (घनानंद) कवि मारे गए। दे० (क–७६)

नादोदधि—अन्य नाम नादार्णव, पूरन मिश्र कृत; लि० का० सं० १८५६, वि० संगीत। दे० (ङ–४३)

नानक—सं० १५२६–१५६६ तक; सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक; तिलावरी (पंजाब) निवासी; जाति के वेदी खत्री थे; इन्होंने अपनी कविता हिंदी में लिखी है; नामदेव छीपी के समकालीन थे। दे० (ज–२०५)

सुखमनी दे० (ज–२०७)

अष्टांग योग दे० (छ–१६६)

नानक जी की साखी दे० (ग–२१८)

नाना कवि कृत शंकर-पचीसी—निम्न लिखित कवियों द्वारा कृत—(१) रसचंद (२) रसपुंज (३) सेवक प्रयाग (४) मुंशी माधोराम (५) कविया करनीदान (६) मुंशी माईदास (७) भींवा सावनसिंह (८) रतनूवीर भाण (९) देवीचंद महात्मा (१०) सेवक पेमचंद (११) सेवक शिवचंद (१२) आनंदराम (१३) सेवक गुलालचंद (१४) मथेना भीमचंद (१५) साधु पृथ्वीराज; यह पुस्तक इन कवियों के आश्रयदाता जोधपुर नरेश महाराज अभयसिंह के राजत्वकाल में लिखी गई थी, वि० शंकर और पार्वती की स्तुति। दे० (ग–७२)

नाभादास—उप० नारायणदास; स्वामी अग्रदास के शिष्य, प्रियादास के गुरु; सं० १६५७ के लगभग वर्तमान, ध्रुवदास के समकालीन।

रामचरित्र के पद दे० (ज–२०२)

भक्तमाल दे० (ज–२११) (क–१५) (क–७७) (छ–१२१)

नामचक्र—लक्ष्मणप्रसाद कृत, नि० का० सं० १६००, वि० वैद्यक कोश। दे० (ज–१६२)

नाम चिंतामणि—नवलसिंह प्रधान कृत; नि० का० सं० १६०३; लि० का० सं० १६४१; वि० कोश। दे० (च–२६) (छ–७६ जी)

नाम-चिंतामणि माला—नंददास कृत; वि० कृष्ण की नामावली। दे० (छ–२०० सी)

नामदेव—प्रसिद्ध स्वामी रामानंद के शिष्य; जाति के छीपी; १५ वीं शताब्दी में वर्तमान थे; नानक जी के समकालीन थे।

नामदेव की बानी दे० (ज-२०५)

नामदेव जी की साखी दे० (ग-६५)

नामदेव जी का पद दे० (ग-२१७)

राग सोरठ का पद दे० (ग-२४६)

नामदेव आदि की परचयी संग्रह—मनसदास कृत, लि० का० सं० १६५५, वि० नामदेव, कबीर, रैदास, सेयसर्यत, त्रिलोचन, अंगद, राका बांका और धन्ना आदि भक्तों के प्रशंसा मय पद। दे० (ज-१ ३)

नामदेव की बानी—नामदेव कृत, वि० ब्रह्मज्ञान। दे० (ज-२०५)

नामदेव की साखी—नामदेव कृत, लि० का० सं० १७४०, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ग-६५)

नाम-प्रकाश—अक्षर कवि कृत, नि० का० सं० १८१५, लि० का० सं० १८३२, वि० कोष। दे० (छ-५६ बी)

नाम बत्तीसी—ज्ञानकीदास कृत, नि० का० सं० १८६७, वि० देव स्तुति वर्णन। दे० (छ-५३)

नाम महात्म्य (१)-कबीरदास कृत, वि० परमेश्वर के नाम की महिमा। दे० (ज-१४३ ए)

नाम महात्म्य (२)-कबीरदास कृत, वि० परमेश्वर के नाम की महिमा। दे० (ज-१४३ बी)

नाममाला-नंददास कृत, लि० का० सं० १६०४, वि० कोष। दे० (ज-२०८ बी)

नाम-रत्नमाला कोष—अन्य नाम अमरकोष भाषा, गोकुलनाथ कृत, नि० का० सं० १८७०, वि० कोष। दे० (क-२)

नाम रत्नाकर—गोकुल कृत, नि० का० सं० १६००, वि० ईश्वर के अवतार और उनके नाम की महिमा। दे० (ज-६५)

नाम रामायण—मयसमिंह कृत, नि० का० सं० १६०३, वि० काव्य। दे० (घ-३०)

नामार्णव—अन्य नाम पिंगल, रघुवीरसिंह राजा कृत, नि० का० सं० १८६४, लि० का० सं० १६५१, वि० पिंगल। दे० (छ-११६)

नायक रायसा—अन्य नाम अजीतसिंह फतेह मय, दुर्गाप्रसाद कृत, नि० का० सं० १८५४, लि० का० सं० १६४२, वि० युद्ध-वर्णन। दे० (क-४१)

नायिका भेद—रामकृष्ण कृत, लि० का० सं० १६०७, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (घ-७७)

नायिका भेद बरवा छंद—(र० अज्ञात) वि० नायिका भेद का वर्णन। दे० (घ-७६)

नायिका लक्षण—हरदेव कृत, वि० नायिका भेद और उनके लक्षण का वर्णन। दे० (छ-१७१)

नारद चरित्र—पचाली मेठमल कृत, नि० का० सं० १८७३, वि० नारद-चरित्र वर्णन। दे० (ग-१००)

नारद सनत्कुमार की कथा—जयसिंह जू देव कृत, वि० नारद मुनि और व्यास के संवाद द्वारा भागवत धर्म तथा सनत्कुमार का वर्णन। दे० (क-१४८)

नारायण—अर्जुनसिंह के गुरु थे। दे० (ज-१०)

नारायण—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

हितोपदेश दे० (ज-१०)

हरिचंद की कथा दे० (छ-२०३)

नारायण—सं० १८८१ के लगभग वर्तमान थे।

कथा बाराद्वेश दे० (ग-१६)

नारायणदास—उप० नाभादास, सं० १६५७ के

लगभग वर्तमान· ये प्रसिद्ध वैष्णव साधु थे, प्रियादास के गुरु, स्वामी अग्रदास के शिष्य, ध्रुवदास के समकालीन।

भक्तमाल दे० (ज-२११) (क-१५)

रामचरित्र के पद दे० (ज-२०२)

नारायणदास—शिवदयाल के पिता, प्रयाग निवासी, जाति के खत्री; सं० १८९१ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ज-२९३)

नारायणदास—सं० १८२६ के लगभग वर्तमान; कुछ समय तक ये चित्रकूट में रहे।

छंदसार दे० (छ-७८ ए)

भाषा भूषण की टीका दे० (छ-७८ बी)

पिंगल मात्रा दे० (छ-.८ सी)

नारायणदेव—सं० १७५२ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

हरिचंद पुराण कथा दे० (क-८६)

नारायण लीला—माधवदास कृत, वि० नारायण के अवतारों की कथाएँ। (.-१७७ ए)

नारी-प्रकरण—नवलसिंह (प्रधान) कृत, लि० का० स० १६३२, वि० नाडी ज्ञान का वर्णन। दे० (छ-७६ यू)

नासकेत—चरणदास कृत; लि० का० सं० १८८४, वि० नासिकेत पुराण का भाषानुवाद। दे० (च-१८)

नासिकेत उपाख्यान—सदल मिश्र कृत; नि० का० सं० १८६०, वि० रघु की कन्या चंद्रावती के साथ उद्दालक ऋषि के विवाह की तथा उनके पुत्र नासिकेतु के परलोकवर्णन की कथा। दे० (ख-३४)

नासिकेत की कथा—प्रेमदास कृत, नि० का० सं० १८२५, लि० का० सं० १८६०, वि० चौरासी नरकों का वर्णन। दे० (छ-९३ बी)

नासिकेत पुराण भाषा—नंददास कृत· लि० का० सं० १८१३; वि० नासिकेत की कथा। दे० (ज-२०८ ए)

निकुंज विलास—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, नि०का० स० १७९४, वि० राधाकृष्ण का निकुंज-विलास वर्णन। दे० (ख-११६)

निघंटु भाषा—मदनपाल कृत, लि० का० सं० १६३१; वि० ओषधियों के नाम तथा उनके गुणों का वर्णन। दे० (ज-१७६)

निजामतखाँ—औरंगजेब बादशाह के सूबेदार; कवि काशीराम के आश्रयदाता थे। दे०(घ-७)

नित्यलीला—हरीराम (रसिक प्रीतम या रसिक राय) कृत वि० वल्लभी संप्रदाय द्वारा श्रीकृष्ण की सेवा की रीति का वर्णन। दे० (क-३८)

नित्य-विलास—ध्रुवदास कृत; वि० राधाकृष्ण का रहस्य वर्णन। दे० (ज-९३)

नित्य विहारी जुगलध्यान—भगवत रसिक कृत; वि० राधाकृष्ण की जुगल मूर्ति तथा वृंदावन समाज का ध्यान वर्णन। दे० (क-३०)

नित्यानंद—श्यामशरणदास (भवभोगी) के शिष्य, सं० १८०७ के लगभग वर्तमान।

भ्रमनिवारण दे० (च-४१)

निमादित्य—श्री भट्ट के गुरु। दे० (क-३६)

निरंजनदास—सं० १७८५ के लगभग वर्तमान; अयोध्या से ४० मील दक्षिण गोमती नदी के किनारे आनंदपुर में निवास करते थे; इनके पिता का नाम बसंत था और ये पीताम्बर के शिष्य थे।

हरिनाम माला दे० (छ-२०२)

निरमै ज्ञान—कबीरदास कृत, लि० का० सं० १८५५; वि० ज्ञान-वर्णन। दे० (ज-१४३-जी) (छ-१७७ चार)

निर्तविलास—अन्य नाम नृत्य विलास; ध्रुवदास कृत; वि० राधाकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (क-१३ आठ)

निर्वाण दूहा—महाराज अजीतसिंह कृत, वि० भक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्ति का वर्णन। दे० (ग-८४)

निर्वाण रमैनी—सक्षिमन कृत, वि० आत्मिक सिद्धांत वर्णन। दे० (छ-२८३)

निर्विरोध मनरंजन—भगवती रसिक कृत, वि० वैष्णव मतानुसार उपदेश और सिद्धांत वर्णन। दे० (क-३२)

निवाज (नेवाज)—सं० १७२७ के लगभग वर्तमान; बादशाह औरंगजेब के पुत्र आजमशाह के आश्रित।

अर्थुनका नाटक द० (घ-३५) (छ-१२४)

निश्चयात्मक ग्रंथ उत्तरार्ध—भगवत रसिक कृत, वि० वैष्णवमत संबंधी सिद्धांत वर्णन। दे० (क-३२)।

निहचलसिंह—सं० १८१७ के लगभग वर्तमान, बेनी कवि के आश्रयदाता। द० (घ-६२)

निहाल (द्विज)—सं० १८६६ के लगभग वर्तमान, पटियाला नरेश कर्मसिंह के आश्रित।

महाभारत भाषा दे० (छ-६७)

साहित्य शिरोमणि दे० (घ-१०५)

सुनीतिदीप प्रकाश दे० (घ-१०६)

सुनीत रत्नाकर दे० (घ-१०३)

नीत की बात—उत्तमचंद कृत। दे०(ग-१८चार)

११

नीति निधान—नाम कवि (गु का० सं० १८५७, वि० नीति व वर्णन। दे० (छ-७० एफ)

नीति-मंजरी—महाराज प्रतापसिंह कृत, लि० का० सं० १८५२, वि० भर्तृहरी कृत नीति शतक का भाषानुवाद। दे० (छ-२०५ बी)

नीलकंठ—उप० जटाशंकर, सं० १६६८ के लगभग वर्तमान, ये कवि चिंतामणि, भूषण और मतिराम के भाई थे, तिकवाँपुर (कानपुर) निवासी। दे० (क-४०)

अमरेश विलास दे० (घ-१)

नीलकंठ—सोमनाथ कवि के पिता, सं० १७६४ के पूर्व वर्तमान; जाति के माथुर ब्राह्मण। दे० (ज-२६८)

नूरमुहम्मद—सबरहद (जौनपुर) निवासी, सं० १७९६ के लगभग वर्तमान।

इंद्रावत द० (ग-१०६)।

नृत्य राघव ग्रंथ—रामसखे कृत, नि० का० सं० १८०४, लि० का० सं० १९११, वि० राम विवाह वर्णन। द० (घ-७८)

नृत्य विलास—ध्रुवदास कृत, वि० राधा कृष्ण का विहार वर्णन। दे० (क-१३ आठ)

नृपनीति शतक—राजा लक्ष्मणसिंह कृत, नि० का० सं० १९००, लि० का० सं० १९०१, वि० राजनीति। दे० (छ-६५ ए)

नृसिंह कथा—जयसिंह जू देव कृत, वि० नृसिंह अवतार की कथा का वर्णन। द० (क-१४१)

नृसिंह-चरित्र—नाम कवि कृत, नि० का० सं० १८३६, वि० नृसिंह की कथा का वर्णन। द० (छ-८५) (छ-७० एच)

नृसिंह पचीसी—मान (खुमान) कृत, लि० का० स० १८५३, वि० नृसिंह अवतार का वर्णन। दे० (छ-७० आई)

नृसिंहलीला—देवीसिंह राजा कृत; वि० नृसिंह अवतार की कथा का वर्णन। दे० (छ-२८ ए)

नेतसिंह—नथनसिंह के पुत्र; जाति के भाट, स० १८०८ के लगभग वर्तमान।

सारंगधर संहिता दे० (क-१३८) (ज-२१५)

नेवाज—बुंदेलखंड निवासी; जाति के ब्राह्मण, ये चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी थे, सं० १८२० के लगभग वर्तमान।

अवरावती दे० (ज-२१७)

नेवाज—(निवाज) सं० १७३७ के लगभग वर्तमान, औरंगज़ेब के पुत्र आज़मशाह के आश्रित।

शकुंतला नाटक दे० (घ-७५)

नेहतरंग—चंद्रदास कृत; लि० का० सं० १८२३, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ज-३८ ए)

नेहनिदान—नवीन कृत, लि० का० सं० १९०७, वि० स्नेह के रूप का वर्णन। दे० (च-३६)

नेहनिधि—सुंदरि कुँवरि (स्त्री) कृत, नि० का० सं० १८१७, वि० राधाकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (ख-६७)

नेह प्रकाशिका—चरनदास कृत, नि० का० सं० १७४६, वि० जानकी जी के प्रेम, विहार और सखी-समाज के रहस्यों का वर्णन। दे० (क-३५)

नेह प्रकाशिका—जनक लाडिली शरण कृत, नि० का० सं० १९०४, लि० का० सं० १९२५, वि० श्रीराम सिया का प्रेम और रहस्य वर्णन। दे० (ज-१३३)

नेहमंजरी (लीला)—ध्रुवदास कृत; वि० राधा-कृष्ण का प्रेम वर्णन। दे० (क-११) (ज-७३एम)

नैनायोगिनी—इनके विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं।

सावर तंत्र दे० (ज-२०६)

नोने व्यास—सं० १७६८ के लगभग वर्तमान; बंधोर के राजा छत्रसाल के नाती दुर्जनसिंह के आश्रित।

धनुष विद्या दे० (छ-८१)

नोने शाह—सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ, खुजा ग्राम, परगना पेरिछ ज़िला झाँसी के रहनेवाले थे।

वैद्य मनोहर दे० (छ-८० ए)

सूरि प्रभाकार दे० (छ-८० बी)

संजीवन सार दे० (छ-८० सी)

नौरता की कथा—पंचमसिंह कृत; नि० का० १७९९; वि० किसी राजा गदाधर के लिए नवरात्रि के व्रत की कथा का वर्णन। दे०(छ-८६)

पंचक दहाई—जीवन मस्ताने कृत, वि० आत्मज्ञान और उपदेश। दे० (च-३३)

पंचदशी भाषा—अन्य नाम नाटक दीप; अनेमानंद कृत; नि० का० सं० १८३७ वि० वेदांत, दे० (ख-४६)

पंचमसिंह—सं० १७९२ के लगभग वर्तमान, महाराज छत्रसाल के भतीजे, पन्नानरेश हृदय साहि के समकालीन, प्राणनाथ के शिष्य थे।

कवित्त दे० (छ-८५)

पंचमसिंह—सं० १७९९ के लगभग वर्तमान, ओड़छा निवासी; जाति के कायस्थ; ओड़छा-नरेश पृथ्वीसिंह के आश्रित।

नौरता की कथा दे० (छ-८६)

पंचपद्र—उमादास कृत, वि० राम धर्मयुक्त कवि का आशीर्वाद। दे० (ङ०-६३)

पंचरत्न—उमादास कृत; वि० सिद्धांत वर्णन। दे० (ङ-६६)

पचरंग गेंदलीला—प्रेमदास कृत; नि० का० १८५५; लि० का० सं० १६२४; वि० श्रीकृष्ण की गेंद लीला का वर्णन। दे० (छ-६३ सी)

पंच सहेली रा दुहा—छीहल कविकृत; नि० का० सं० १५७५; वि० पाँच स्त्रियों का विरह वर्णन। दे० (क-६१) (ग-३५)

पंचांग दर्शन—रघुनाथ शुक्ल कृत; नि० का० सं० १८५७; लि० का० सं० १८८७; वि० ज्योतिष। द० (घ-११६) (ज-२३३)

पंचाध्यायी—अन्य नाम रास पंचाध्यायी; स्वामी नंददास कृत, लि० का० सं० १८४८; वि० रास लीला का वर्णन। दे० (ख-६६) (छ-२००ए)

पंचाध्यायी—सुदर्शनसिंह कृत; नि० का० सं० १८६६; वि० श्रीकृष्ण की रास-क्रीड़ा। दे० (ङ-७३)

पचोली जेठमल—नागोर निवासी, जाति के माथुर कायस्थ, सं० १८४३ के लगभग वर्तमान, लाल जी के पुत्र।

बारह चरित्र दे० (ग-१००)

पक्षी विलास—खासीराम कृत, वि० शृंगार रस वर्णन, प्रत्येक कवित्त में एक पक्षी का नाम है। दे० (ज-६१)

पजन कुँवरि (स्त्री)—बुंदेलखण्ड निवासी, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

बारहमासी दे० (छ-८३)

पजन मरन ज्योतिष—पजनसिंह कृत, लि० का० सं० १६५०; वि० ज्योतिष। दे० (छ-८४)

पजनसिंह—जाति के कायस्थ, मदनसिंह के पुत्र।

पजन मरन ज्योतिष दे० (छ-८४)

पजनेस—जन्म का० सं० १८७२; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

मधुप्रिया दे० (च-६३)

पद—मोहनदास भट्टारी कृत, वि० ईश्वर स्तुति और प्रार्थना। दे० (छ-२६६)

पद प्रसंग माला—नागरीदास (महाराज सावंत सिंह) कृत; वि० वैष्णव कवियों के पदों का संग्रह। दे० (छ-१६८ सी)

पदम कुंवर विवाहलो—अन्य नाम रुक्मिणी ब्याहलो, पदुम भगत कृत; नि० का० सं० १६६६; वि० श्रीकृष्ण-रुक्मिणी विवाह वर्णन। दे० (क-६२) (क-२४)

पदमदेव—महाराष्ट्र ब्राह्मण, सं० १८८८ के पूर्व वर्तमान, दामोदर देव के पिता थे। दे० (ख ७४)

पदम भगत—जाति के तेली, सं० १६६६ के लग भग वर्तमान।

रुक्मिणी ब्याहलो दे० (क-२४) (क-६२)

पदमराग—जैन धर्मानुयायी, कवि रामचन्द्र मिश्र के गुरु, सं० १७२० के पूर्व वर्तमान; बादशाह औरंगजेब के समकालीन। दे० (ज-६२)

पदमाकर भट्ट—इनकी जन्मभूमि सागर (बाँदा) में थी, सं० १८३२ के लगभग वर्तमान, मोहन लाल भट्ट के पुत्र, इनके पूर्वजों के संबंधी मथुरा निवासी थे, जयपुर नरेश महाराज प्रतापसिंह सवाई और महाराज जगतसिंह सवाई के आश्रित, ये और भी स्थानों में रहे हैं।

रामरसायन रामायण दे० (ख-१) (ज-२) (ख-३) (ख-४) (ख-५)

पद्मावती—मलिक मुहम्मद जायसी कृत; नि० का० सं० १५९७ (सन् ९४७ हिजरी), लि० का० तीन प्रतियों का स० १७५८, १८४२ और १८७९ अलग अलग है, वि० चित्तौर के राजा रत्नसेन और सिंघल द्वीप के राजा की पुत्री पद्मावती की कथा तथा अलाउद्दीन खिलजी के उसको प्राप्त करने का यत्न करने आदि का वर्णन। दे० (क–५४) (ख–२४) (ख–२५) (ख–५३) (घ–१५०) (ङ–१३१)

पद्मावती समया—चंद वरदाई कृत, वि० सम्राट् पृथ्वीराज का पद्मावती से विवाह होने का वर्णन। दे० (छ–१४६ डी)

पद राग मालावती—लघुजन (महाराज विक्रमाजीत) कृत, वि० ईश्वर-भक्ति के भजन, मुकुंद ब्रह्मचारी के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद। दे० (छ–६७ सी)

पद-संग्रह—सूरदास कृत; नि० का० सं० १६९७, वि० पदों का संग्रह। दे० (छ–२४४ बी) (ग–२९२)

पदावली—काष्ठजिह्वा स्वामी (देव) कृत, नि० का० सं० १८९७, लि० का० सं० १८९८; वि० रामचंद्र जी का वर्णन पदों में। (इसमें सात कांड हैं।) दे० (ग्र–१४)

पदावली—दयाकृष्ण कृत, वि० बलदेव जी की स्तुति। दे० (छ–२६ बी)

पदावली—प्राणनाथ और इंद्रामती कृत; वि० स्फुट कविताओं का संग्रह। दे० (ज–२२५)

पदावली—रामसखे कृत, लि० का० सं० १९३६; वि० ईश्वर के प्रति प्रेम और गुण कीर्तन का वर्णन। दे० (ज–२५७ बी)

पदावली—व्यास जी कृत; लि० का० स० १९१६; वि० कृष्ण भक्ति और कृष्ण लीला वर्णन। दे० (ज–३३२ बी)

पदावली रामायण—गोस्वामी तुलसीदास कृत; लि० का० स० १९१४; वि० रामचंद्र जी की कथा का पदों में वर्णन। दे० (ज–३२३ जी)

पद्माभरण—कवि पद्माकर भट्ट कृत, नि० का० सं० १८५७, लि० का० सं० १९५८; वि० अलंकार। दे० (च–४४) (छ–८२ बी)

परतीत परीक्षा—बालकृष्ण नायक कृत; वि० श्रीकृष्ण का स्त्री वेश में राधिका से मिलने जाना। दे० (छ–९ डी)

परतीत परीक्षा—रामकृष्ण कृत, वि० श्रीकृष्ण द्वारा राधिका के प्रेम की परीक्षा करने का वर्णन। दे० (ज–२४८)

परब्रह्म की बारहमासी—सेवादास कृत, वि० आत्मिक सिद्धांत वर्णन। दे० (छ–२२७ ए)

परम तत्व प्रकाश—विश्वनाथसिंह देव कृत; वि० भगवत-भक्ति का वर्णन। दे० (क–४८)

परम धर्म निर्णय प्रथम खंड—विश्वनाथसिंह

पुत्र और मयलाल के पौत्र, नारापनि के प्रपौत्र थे, आगरा निवासी। दे० (फ-७२)

परशुराम कथा—जयसिंह जू देव कृत, लि० का० सं० १८८६; वि० परशुराम अवतार की कथा का वर्णन। दे० (क-१४३)

परिपूरनदास—ये कबीर पथ के अनुयायी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

तिरजा (टीका) दे० (ज-२२३)

परीक्षित राजा—दतिया नरेश; राज्य का० सं० १८०१-१८३६, शिवप्रसाद राय, जानकीदास, गणेश कवि, सेतसिंह और सीताराम के आश्रयदाता। दे० (छ-३२) (घ-५३) (छ-६०) (छ-१०६)

पर्वतदास—ये जाति के सुनार थे, सं० १७२१ के लगभग वर्तमान, ओड़छा निवासी; राजा सुजानसिंह के समकालीन और ईश्वर-भक्त थे।

दशावतार कथा दे० (छ-८७ ए)

राम रहस्य कलेवा दे० (छ-८७ बी)

पलटू साहब—ये कबीर पंथ के अनुयायी थे, अन्त समय में अयोध्या में रहते थे।

कुंडलिया दे० (छ-२२२)

पवन विजय स्वरोदय—मोहनदास कृत, नि० का० सं० १६२१; लि० का० सं० १८६५; वि० योग, प्राणायाम विधि। दे० (छ-१८७ ए)

पहलवानदास—दूलनदास के शिष्य; मीरपुर (राय बरेली) निवासी, तिलोई (रायबरेली) के जागीरदार राजा शंकरसिंह के आश्रित; सं० १८६५ के लगभग वर्तमान।

उपाख्यान विवेक दे० (ज-२२१)

पहाड़सिंह—सुजानसिंह के पिता; ओड़छा नरेश, राज्य का० सं० १६८८-१७१०, कवि रामदास के आश्रयदाता। दे० (च-८५) (छ-८५)

पहार सैयद—ये जाति के मुसलमान थे; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

बेद मनोहर दे० (छ-२०५ ए)

रसाकर दे० (छ-२०५ बी) (ज-२५३)

रसगार दग दे० (छ-२०५ सी)

पाखंड खंडिनी—महाराज विश्वनाथसिंह कृत; वि० कबीरदास के ग्रंथ पर टीका। दे० (छ-२५६ सी)

पातंजलि टीका—मथुरानाथ शुक्ल कृत, नि० का० सं० १८४६; वि० योग का वर्णन। दे० (ज-१६५ ई)

पातंजलि भाषा—मथुरानाथ शुक्ल कृत; नि० का० सं० १८४६; वि० योग वर्णन। दे० (ज-१६५ डी)

पार्वती मंगल—गोस्वामी तुलसीदास कृत; लि० का० सं० १६३६; वि० महादेव पार्वती के विवाह का वर्णन। दे० (घ-१२७)

पावस पचीसी—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत; वि० श्रीकृष्ण का पावस ऋतु विहार वर्णन। दे० (ख—१२१ दस)

पिंगल (ग्रंथ)—अलि रसिकगोविंद कृत; वि० पिंगल। (छ-१२२ ई)

पिंगल—चिंतामणि त्रिपाठी कृत; लि० का० सं० १८५६, वि० पिंगल। दे० (ग-३६) (छ-१५१)

पिंगल—सुखदेव मिश्र कृत; नि० का० सं० १७५७; वि० काव्य करने की रीति का वर्णन। दे० (घ-१२३)

पिंगल—चन्द्र कृत; लि० का० स० १६०८ वि० पिंगल। दे० (च-२०)

पिंगल—ब्रजनाथ कृत, नि० का० सं० १७१२ लि० का० सं० १८६७, वि० छंद-रीति वर्णन। दे० (छ-१४२)

पिंगल—दशरथ कृत, लि० का० सं० १८५७, वि० पिंगल। दे० (छ-१५३)

पिंगल—रामचरणदास कृत, लि० का० सं० १८४१, वि० छंद रीति वर्णन। दे० (ज-२५४ ए)

पिंगल—सुवंश शुक्ल कृत, लि० का० सं० १८६५, वि० पिंगल। दे० (ज-३०६)

पिंगल—अन्य नाम नागार्णव, राजा रणधीरसिंह कृत, नि० का० सं० १८६४, लि० का० सं० १९५१, वि० पिंगल। दे० (छ-२१६ ए)

पिंगलकाव्य भूषण—बख्शी हमतसिंह कृत, नि० का० सं० १८७६, लि० का० सं० १८८६, वि० पिंगल। दे० (क-४२)

पिंगल प्रकरण—गोप कवि कृत, लि० का० सं० १९४८, वि० छन्दों के लक्षण का वर्णन। दे० (छ-३६ बी)

पिंगल मन हरन—जसधीर कृत, नि० का० सं० १७४१, वि० पिंगल शास्त्र के सब अंगों का वर्णन, चित्र काव्य सहित। दे० (ग-८२)

पिंगल भाषा—नारायणदास कृत, लि० का० सं० १९१६, वि० पिंगल। दे० (छ-७८ सी)

पिया पहिचानवे को अंग—कबीरदास कृत, वि० आत्मिक ज्ञान। दे० (ज-१४३ सी)

पीतांबर—निरंजनदास के गुरु, सं० १७८५ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ-२०२)

पीतांबरदास—सं० १८०१ के लगभग वर्तमान।

नेमिनि पुराण दे० (घ-४६)

पीतांबरदास (स्वामी)—स्वामी हरीदास जी के शिष्य थे।

स्वामी पीतांबरदास की बानी दे० (ख-७७)

पीतांबरदास की बानी—स्वामी पीतांबरदास कृत, लि० का० सं० १९२०, वि० गुरु-महिमा, राधा-कृष्ण अष्टयाम, सखा, लीला और प्रेम आदि अनेक विषयों का वर्णन। दे० (ख-७७)

पीपाजी—ये दादू पंथी थे, प्रसिद्ध भक्त १७ वीं शताब्दी में वर्तमान।

पीपाजी की बानी (ज-२२४)

पीपाजी की बानी—पीपाजी कृत, वि० आत्मिक ज्ञान। दे० (ज-२२४)

पीपा परिचय—अनंतदास कृत, नि० का० सं० १६५७, लि० का० सं० १८२६, वि० पीपा भक्त का वर्णन। दे० (छ-१२८ ए) (ग-२४१)

पुकार—कबीरदास कृत, वि० ईश्वर विनती। दे० (ज-१४३ डी)

पुरंदर माया—मणिभद्र मिश्र कृत, लि० का० सं० १९४७, वि० नागार्जुन के आधार पर जादू का ग्रंथ। दे० (छ-२६१)

पुरुष विलास—मलूकदास कृत, वि० ब्रह्म विचार वर्णन। दे० (छ-१६४ सी)

पुरुषोत्तम—सं० १७१५ के लगभग वर्तमान, फतेह शाह के आश्रित।

रामविनोद दे० (घ-४८)

पुरुषोत्तमदास—सं० १८०७ के पूर्व वर्तमान, मानदास के गुरु थे। दे० (छ-१६५)

पुष्टि दृढ़ाभापा—(र० अज्ञात) लि० का० सं० १८३५, वि० भक्ति। दे० (ग-१०)

पुष्पांजली पूजा जयमाल—(र० अज्ञात) वि०

जैनमतानुसार पच विधि पूजा का वर्णन। दे० (क-११३)

पुहकर—सं० १६७३ के लगभग वर्तमान; कायस्थ, प्रतापपुरा (मैनपुरी) निवासी; मोहनदास के पुत्र थे।

रसरत्न दे० (च-४८) (छ-२०८)

पूजा विभास—अन्य नाम पूजा विलास; रसिकदास कृत, वि० पूजाविधि वर्णन। दे० (ग-६६) (छ-२०८ डी)

पूरण (मिश्र)—इनके विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं।

राग निरूपण दे० (ङ-४२)

नादोदधि (नादार्णव) दे० (ङ-४३)

पूरणदास—खेडापा के महत; दयालदास जी के पश्चात् सं० १८८५ में गद्दी पर बैठे।

पूरणदास की बानी दे० (ख-६५)

पूरणदास—बुरहानपुर के महंत के शिष्य और कबीरपंथी साधु थे। नगझरिया निवासी; सं० १८६४ के लगभग वर्तमान।

कबीर के बीजक की टीका दे० (छ-२०६)

पूरणदास जी की वाणी—पूरणदास कृत, वि० ज्ञान, भक्ति और उपदेश वर्णन। दे० (ख-६५)

पूर्व श्रृंगार खंड—नवलसिंह (प्रधान) कृत; लि० का० सं० १६५५, वि० रामविहार वर्णन। दे० (छ-७६ ए)

पृथुकथा—जयसिंह जूदेव कृत; वि० राजा पृथु की कथा। दे० (क-१४७)

पृथ्वीचंद्र गुणसागर गीत—(र० अज्ञात) वि० जैनमत के ऋषि पृथ्वीचद्र गुणसागर का वर्णन। दे० (क-६५)

पृथ्वीपालसिंह—पटियाला नरेश; सं० १८४० के लगभग वर्तमान; कवि जैकेहरि के आश्रयदाता। दे० (घ-११७)

पृथ्वीराज—राजपूत वंश में चौहान घराने के अंतिम भारत सम्राट् थे, दिल्ली और अजमेर इनकी राजधानी थी। चन्द बरदाई इनके मंत्री और प्रसिद्ध कवि थे महोबा के चन्देल राजा परमाल और गजूरपुर तथा कालिंजर के राजाओं को इन्हों ने पराजित किया; इन्होंने अपने कई विवाह किए जिनमें से कन्नौज के राजा जयचन्द की कन्या संयोगिता के लाने में इनके बहुत से वीर सामंत मारे गए; ये अपना बहुत सा समय शिकार और विलास में बिताते थे; इन्होंने मुहम्मद गोरी को कई बार पराजित करके छोड़ दिया, अंतिम युद्ध में ये पराजित हुए और पकड़े गए। दे० (क-५६) (क-६३) (क-६२) (ख-३८) (ख-३६) (ख-४०) (ख-४१) (ख-४२) (ख-४३) (ख-४४) (ख-४५) (ख-४६) (ख-४७) (ग-७१) (छ-१४६)

पृथ्वीराज—दतिया नरेश राजा दलपति राय के पुत्र; सं० १७६६ के लगभग वर्तमान; कवि अक्षर अनन्य (अनन्य) के आश्रयदाता थे। दे० (च-१) (छ-२)

पृथ्वीराज (प्रधान)—बुंदेलखण्ड निवासी; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

शालिहोत्र दे० (छ-६४)

पृथ्वीराज (राठौर)—बीकानेर नरेश राजा कल्याणमल के पुत्र; बादशाह अकबर के दरबार में थे, महाराणा प्रतापसिंह के बड़े हितैषी और उत्तेजना देनेवाले कवि थे, सं० १६३७ के लगभग वर्तमान।

श्रीकृष्ण देव रुक्मिणि बेली दे० (क-८७)

पृथ्वीराज रासो—कवि चंद बरदाई कृत, वि० भारत के अंतिम हिंदू सम्राट् महाराज पृथ्वी राज चौहान के जीवन की घटनाओं का वर्णन, इस ग्रंथ में ६९ खण्ड हैं जो समयो के नाम से लिखे हैं, यह ग्रंथ बहुत बड़ा है। दे० (छ–१४६ एफ) (क–५६) लि० का० सं० १८७८, (ख–४७) (ख–४६) लि० का० स० १९२५, (ख–४४) (ख–४३) (ख–४२) (क–६१), लि० का० स० १९४०, (ख–४१) लि० का० स० १८३९, (ख–४०), लि० का० स० १८७९, (ख–३९), लि० का० सं० १८७९, (ख–३८), लि० का० स० १८७९, (ग–७१) (ख–४५) (क–९२) (क–५६) (छ–११६)

पृथ्वीसिंह—कोटा के राजा, स० १८०८ के लगभग वर्तमान, बूँदी नरेश छत्रसाल के वंशज, बदन कवि के आश्रयदाता थे। दे० (च–५७)

पृथ्वीसिंह—उप० पृथ्वीराज, उद्योतसिंह राजा के पुत्र, बुंदेलखण्डी, सं० १७६६ के लगभग वर्तमान, कवि दिग्गज, गोप कवि, कोविद और हरिसेवक के आश्रयदाता। दे० (घ–३८) (च–९०) (छ–२९) (छ–६२)

पृथ्वीसिंह (राजा) उप० रसनिधि, दतौनी (दतिया) के जागीरदार, स० १७१७ के लगभग वर्तमान, ये स्वयं कवि थे।

रिष्णुपद और कीर्तन दे० (छ–९५ ए)

कवित्त दे० (छ–९५ बी)

बारहमासी दे० (छ–९५ सी)

गीत संग्रह दे० (छ–९५ डी)

स्फुट दोहा दे० (छ–९५ ई)

रतनिधि सागर दे० (छ–९५ एफ)

रतनिधि सागर दे० (छ–९५ जी)

रसनिधि की कविता दे० (छ–९५ एच)

रसनिधि की कविता दे० (छ–९५ आई)

रसनिधि के दोहा दे० (छ–९५ जे) (च–७४)

विष्णुपद दे० (छ–९५ के)

चरित्र दे० (छ–९५ एल) (च–७३)

कवित्त दे० (छ–९५ एम)

हिंडोरा दे० (छ–९५ एन)

दोहा दे० (छ–९५ ओ) (च–७५)

रसनिधि सागर दे० (छ–९५ पी)

रस हजारा दे० (घ–९४)

पौहकर—स० १६७३ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ, प्रतापपुरा (मैनपुरी) निवासी, मोहन दास के पुत्र थे, ये सात भाई थे:–(१) पुहकर (२) सुंदर (३) रायचरन (४) मुरलीधर (५) शंकर (६) मकरंदराय (७) सकतसिंह, बादशाह जहाँगीर के समकालीन थे।

रसरत्न दे० (च–४८) (छ–२०८)

प्रगट बानी—प्राणनाथ कृत, लि० का० सं० १७९७, वि० धार्मिक सत्यता। दे० (छ–९० बी)

प्रजापति—जाति के दीक्षित ब्राह्मण, भोलानाथ के पिता, बेलाहारी (छतरपुर राज्य) के जागीर दार थे। दे० (छ–१६)

प्रताप—झाँसी निवासी, जाति के कायस्थ, राव रामचंद्र झाँसीवाले के समकालीन, स० १८७५ के लगभग वर्तमान।

त्रिगुण प्रकाश दे० (छ–९२ ए)

श्री वास्तव के वंश की चरक दे० (छ–९२ बी)

प्रताप साहि—स० १८८६ के लगभग वर्तमान, चरखारी (बुंदेलखंड) नरेश विक्रमसाहि और

रत्नसेन के आश्रित, जाति के वंदीजन और कवि रतनेश के पुत्र थे।

जैसिंह प्रकाश दे० (छ–९१ ए)

काव्य विलास दे० (छ–९१ बी) (च–४६)

श्रृंगार मंजरी दे० (छ–९१ सी)

श्रृंगार शिरोमणि दे० (छ–९१ डी)

अलंकार चिंतामणि दे० (छ–९१ ई)

रस चंद्रिका दे० (छ–९१ एफ)

रसराज तिलक दे० (छ–९१ जी)

काव्य विनोद दे० (छ–९१ एच)

जुगल नखशिख (नखशिख रामचंद जू को (च–५०) दे० (छ–९१ आई) (ज–२२७)

व्यंग्यार्थ कौमुदी दे० (छ–९१ जे) (घ–५२)

बलभद्र नखशिख दे० (छ–९१ के)

प्रतापसिंह—छतरपुर (बुंदेलखंड) नरेश; सं० १९०५ के लगभग वर्तमान; फाज़िल शाह के आश्रयदाता थे। दे० (च–५६)

प्रतापसिंह—अलवर नरेश, सं० १७९४ के लगभग वर्तमान, सोमनाथ कवि के आश्रयदाता। दे० (ज–२९८)

प्रतापसिंह (सवाई)—उप० ब्रजनिधि; जयपुर नरेश, राज्य का० सं० १८३५–१८६०, महाराज सवाई जयसिंह के पौत्र और महाराज जगतसिंह के पिता थे; कवि अनंतराय, पदमाकर भट्ट और रामनारायण (रसरासि) के आश्रयदाता; ये स्वयं एक अच्छे कवि थे। दे० (ख–१)

सनेह (स्नेह) संग्राम दे० (क–७८)

श्रृंगार मंजरी दे० (छ–२०५ ए)

नीति मंजरी दे० (छ–२०५ बी)

वैराग्य मंजरी दे० (छ–२०५ सी)

प्रद्युम्नदास—दामोदर के पुत्र; सं० १७३६ के लगभग वर्तमान, हरिशंकर, लालमणि और कृष्णमणि इनके भाई थे, जाति के कायस्थ, बांदा नगर के राजा दलेलसिंह के आश्रित थे।

काव्य मंजरी दे० (ट–१८)

प्रधाननीति—रामनाथ प्रधान कृत; वि० राजनीति की मुख्य मुख्य बातों का वर्णन। दे० (ख–६)

प्रपन्नगनेसानंद—स्वामी रामानंद के अनुयायी और अनंतानंद के शिष्य थे, सं० १६११ के लगभग वर्तमान, मथुरा निवासी थे।

भक्ति भावती दे० (ख–१३८)

प्रपन्न प्रेमावली—इच्छाराम कृत, नि० का० सं० १८२२, वि० भक्तों की कथाएँ और ज्ञान-वर्णन। दे० (ज–१२१ ए)

प्रबंध रामायण—रामगुलाम कृत; लि० का० सं० १९२८, वि० रामचंद्र जी का चरित वर्णन। दे० (ज–२४७ बी)

प्रबोधचंद्रोदय नाटक—ब्रजवासीदास कृत, नि० का० सं० १८१७, संस्कृत से अनुवाद; वि० वैराग्य। दे० (छ–१४१) (ट–८)

प्रबोधचंद्रोदय नाटक—आनंद कृत, नि० का० सं० १८६७, लि० का० सं० १८९८, वि० संस्कृत नाटक का भाषानुवाद। दे० (ज–४ सी)

प्रबोधचंद्रोदय नाटक—महाराज जसवंतसिंह कृत; वि० संस्कृत नाटक का हिंदी अनुवाद। दे० (ग–२२)

प्रबोध चिंतामणि (मोह) विवेक—धर्ममंदिर गणि कृत, नि० का० सं० १७४१, लि० का० सं० १८७४, वि० जैन धर्मानुसार ज्ञान वर्णन। दे० (क–१२०)

प्रबोध पचासिका—पद्माकर भट्ट कृत, वि० ईश्वर के प्रति विनय और प्रार्थना। दे० (ज-२२० ए)

प्रयागदास—बसवां छतरपुर राज्य (बुंदेलखंड) निवासी; जाति के भाट; मानदास के पुत्र, सं० १८७७ के लगभग वर्तमान, चरखारी नरेश राजा खुमानसिंह और विजय विक्रमा, जीत तथा बिजावर-नरेश महाराज रतनसिंह के आश्रित थे।

रिपोवरेश दे० (घ-६९)

छन्द रत्नावली (तथा रत्नावली) दे० (छ-८६ए) (ज-२२८)

कोकमंजरी दे० (छ-८६ बी)

प्रयागीलाल—उप० तीर्थराज, टीकमगढ़ निवासी; मालिकलाल के पुत्र तथा इन्द्रजीत लाल के पौत्र, ये चरखारी-नरेश की ओर से वृन्दावन में पधारे और उन्हीं के आश्रित थे, सं० १९३० के लगभग वर्तमान; जाति के कायस्थ, दुर्गाप्रसाद के पिता। (घ-५०)

रतनुराग दे० (घ-५१) (छ-परि० १-३८)

प्रवीन—उप० कला प्रवीन, सं० १८३८ के लगभग वर्तमान।

प्रवीन सागर दे० (छ-२०७)

प्रवीन सागर—प्रवीन (कला प्रवीन) कृत, लि० का० सं० १८३८ वि० अलंकार। दे० (छ-२०७)

प्रभावली—हरीसिंह कृत, लि० का० सं० १८२८, वि० प्रश्नोत्तर। दे० (छ—२४६)

प्रसादलता—रसिकदास कृत, वि० विष्णु के प्रसाद का वर्णन। दे० (छ—२१८ ए)

प्रह्लाद-चरित्र—गोपाल कवि कृत, वि० प्रह्लाद चरित्र वर्णन। दे० (क—२१)

प्रह्लाद चरित्र—ब्रजमनमदास कृत, वि० प्रह्लाद भक्त की कथा। दे० (ज—२५ ए)

प्रह्लाद-लीला—रामदास कृत, लि० का० सं० १७७७ और दूसरी प्रति का लि० का० सं० १७८२, वि० नृसिंह अवतार का वर्णन। दे० (छ—२१० बी)

प्राणदीपाख्यान—(र० अज्ञात) वि० विश्वामित्र का रामचन्द्र से सांसारिक दुःखों से मुक्ति पाने के उपाय वर्णन करना। दे० (क—७०)

प्राणचंद—ये जाति के क्षत्री चौहान थे, सं०१६६७ के लगभग वर्तमान, बादशाह जहाँगीर के समकालीन।

रामायण महानाटक दे० (घ—६५)

प्राणनाथ—सं० १७७७ के लगभग वर्तमान, जाति के गुजराती ब्राह्मण, पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल के गुरु, प्राणनाथ (धामी) संप्रदाय के संस्थापक, इन्होंने अपने पंथ द्वारा हिंदू मुसलमानों को मिलाना चाहा था; पंचमसिंह जीवन मस्तान के गुरु, इनकी स्त्री इन्द्रमती भी इनके साथ कविता करती थी। दे० (ज—२२५) (छ—८५) (घ—३३)

कीर्तन दे० (छ—६० ए)

प्रगट बानी दे० (छ—६० बी)

चौदह सिलोकी का भाष्य दे० (छ—६० सी)

बड़बानी दे० (छ—६० डी)

रासविलास दे० (छ—६० ई)

बानी दे० (ज—२२५)

प्राणनाथ—गजाराम के पुत्र, महोबा (बुंदेलखंड) निवासी, सं० १८७० के पूर्व वर्तमान।

सुदामा चरित्र दे० (घ—५३)

प्राणनाथ—ये बैसवाड़ा निवासी जान पड़ते हैं। सं० १८५० के लगभग वर्तमान ।

जोगनाथ की कथा दे० (ज—२२६)

प्राणनाथ (त्रिवेदी)—सं० १७६५ के लगभग वर्तमान; जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे।

कविक चरित्र दे० (घ—२६)

प्राणनाथ और इंद्रमती—सं० १७०७ के लगभग वर्तमान; पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल के गुरु; इन्हीं के आत्मिक ज्ञान से हीरे की खान का पन्ना में प्रादुर्भाव हुआ; इनकी स्त्री का नाम इंद्रमती था जो इनकी कविता में योग देती थी। दे० "प्राणनाथ"। (ज—२२५)

प्राणसुख—परमेश्वरीदास के पिता; सं० १८७६ के पूर्व वर्तमान। दे० (ञ-४१)

प्राणसुख—(२० अज्ञात) किसी मुसलमान कवि कृत, लि० का० सं० १७११(सन १०६५ हिजरी); वि० वैद्यक। दे० (घ-३)

प्रावरस मंजरी—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत; वि० कृष्णलीला वर्णन। दे० (ख—१२१ एक)

प्रियाजी की बधाई—ब्रजजीवनदास कृत, लि० का० सं० १९२०; वि० राधा जी का जन्मोत्सव-वर्णन। दे० (ज-२४ जे)

प्रियादास—उप० कृष्णदत्त; जाति के महाराष्ट्र ब्राह्मण, रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथसिंह और द्रोणाचार्य के गुरु; सं० १८०५ के लगभग वर्तमान। दे० (क-१९)

प्रियादास—राधावल्लभी साधु; स्वामी हित हरिवंश के अनुयायी; सं० १८०५ के लगभग वर्तमान; इन्होंने कई ग्रंथ लिखे हैं।

प्रियादास जी की बानी दे० (ज-२३१ ए)

सेवा दर्शन दे० (ज-२३१ बी)

शृंगार टीका दे० (ज-२३१ सी)

तिथि निर्णय दे० (ज-२३१ डी)

भाव वर्णन निर्णय दे० (ज-२३१ ई)

प्रियादास—प्रसिद्ध नाभादास के शिष्य; वैष्णवदास के पिता; सं० १७६० के लगभग वर्तमान; वृंदावन निवासी; रस आनिशान के गुरु। दे० (क-६४)

भक्तमाल रस बोधिनी टीका दे० (ख-५५) (ज-२२४) (छ-२४३)

प्रियादास चरितामृत—द्रोणाचार्य त्रिवेदी कृत; लि० का० सं० १९१०; वि० प्रियादास के जीवन का वर्णन। दे० (ख-१९)

प्रियादास जी की बानी—प्रियादास कृत; लि० का० सं० १८५०, वि० हित हरिवंश जी की वंदना। दे० (ज-२३१ ए)

प्रियाभक्ति रसबोधनी राधा मंगल—रसिक सुंदर कृत, लि० का० सं० १९१२; वि० राधा-चरित्र वर्णन। दे० (क-१२८)

प्रियासखी—उप० जानकीचरण; अयोध्या के महंत; रामानुज सम्प्रदाय के सखी समाज के अनुयायी।

रस रत्न मंजरी दे० (ज-२२२)

प्रियासखी—वृंदावन निवासी; राधावल्लभी संप्रदाय के सखी समाज के अनुयायी।

प्रियासखी की बानी दे० (छ-२०७ ए)

प्रियासखी की गारी दे० (छ-२०७ बी)

प्रियासखी (स्त्री)—उप० बखत कुँवरि। दे० "बखतकुँवरि" (छ-८)

प्रियासखी की गारी—प्रियासखी कृत, लि० का० सं० १८५४, वि० वरसगों में गाने के पदों का समह। दे० (छ-२०७ बी)

प्रियासखी की बानी—प्रियासखी कृत, वि० राधाकृष्ण का प्रेम-वर्णन। दे० (छ-२०७ ए)

प्रीतम—उप० अलीमुहिब्बखाँ, आगरा निवासी, सं० १८८७ के लगभग वर्तमान।

खटमल बाईसी दे० (घ-७०)

प्रीति चौअनी लीला—ध्रुवदास कृत, वि० कृष्ण रहस्य वर्णन। दे० (अ-७१ ओ) (क-१६)

प्रीति-प्रार्थना—कृपानिवास कृत, वि० ईश्वर के प्रति प्रेम, विनय और उपदेश वर्णन। दे० (अ-१५४ सी)

प्रेम-तरंग—देवदत्त (देव) कृत, वि० प्रेम और नायिका भेद का वर्णन। दे० (अ-६४ बी)

प्रेम-तरंग चंद्रिका—देवदत्त (देव) कृत, लि० का० सं० १६७७, लि० का० सं० १८५७, वि० प्रेम स्वरूप भेद वर्णन। दे० (घ-२८) (छ-१२२)

प्रेम-तरंगिनी—लक्ष्मीनारायण कृत, लि० का० सं० १६०१, वि० ऊधो और गोपियों का सवाद वर्णन। दे० (अ-१६६)

प्रेम-दर्शन—देवदत्त (देव) कृत, लि० का० सं० १६११, वि० श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों का प्रेम वर्णन। दे० (अ-६४ ए)

प्रेमदास—जाति के अग्रवाल वैश्य, अजयगढ़ निवासी, सं० १८२७ के लगभग वर्तमान थे।

प्रेमसागर दे० (छ-६१ ए)

नासकेत की कथा दे० (छ-६१ बी)

पंचरत्न गेंद लीला दे० (छ-६१ सी)

श्रीकृष्णलीला दे० (छ-६१ डी)

प्रेमदास—सं० १७६१ के लगभग वर्तमान, ये हित हरिवंश व्रजवासी के शिष्य जान पड़ते हैं।

हरिवंश चौरासी टीका दे० (छ-२०६ ए)

चरित्र दे० (छ-२०६ बी)

प्रेमदास—ये स्वामी रामानुज के अनुयायी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

प्रेम परिचय दे० (अ-२२६ ए)

सिसालिन लीला दे० (अ-२२६ बी)

मनवत विहार लीला दे० (अ-२२६ सी)

प्रेम-दीपिका—अनन्य (अक्षर अनन्य) कृत, लि० का० सं० १६१०, वि० ऊधो के व्रज आगमन की कथा का वर्णन। दे० (घ-१) (छ-२ सी)

प्रेम-दीपिका—वीर कवि कृत, नि० का० सं० १८१८, लि० का० सं० १८३६, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८४०, वि० कृष्ण गोपी सयोग, कृष्ण को गोपियों का सँदेसा और कृष्ण रुक्मिणी-विवाह वर्णन। दे० (छ-१४०)

प्रेम-पयोनिधि—मृगेंद्र कृत, नि० का० सं० १६१२, लि० का० सं० १६१८, वि० जगत प्रभाकर और राजा सहपाल की कन्या की कथा। दे० (क-४६)

प्रेम-परिचय—प्रेमदास कृत, वि० राधा का कृष्ण की प्रेम-परीक्षा लेना। दे० (अ-२२६ ए)

प्रेम परीक्षा—बालकृष्ण नायक कृत, वि० राधा द्वारा कृष्ण के प्रेम की परीक्षा लेने का वर्णन। दे० (छ-६ सी)

प्रेम प्रकाश—ब्रजलाल कवि कृत, नि० का० सं० १८३३, लि० का० सं० १८३१, वि० राधा और कृष्ण का प्रेम वर्णन। दे० (छ-२०)

प्रेमरत्न—फ़ाज़िलशाह कृत, नि० का० सं० १६०५, लि० का० सं० १६३७, वि० नूरशाह और माहे मुनीर का किस्सा। दे० (च–५६)

प्रेमरत्न—रतन कुँवरि कृत, नि० का० सं १८४४, वि० राधा और कृष्ण के कुरुक्षेत्र में मिलने की कथा। दे० (ज–२६७)

प्रेमरत्नाकर—देवीदास कृत; नि० का० स० १७५२, लि० का० सं० १८०१, दूसरी प्रति का० लि० का० सं० १८२६; वि० प्रेम वर्णन। दे० (छ–२२०)

प्रेमलता—ध्रुवदास कृत; वि० राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन। दे० (क–१२ बारह) (ज–७२ एफ़)

प्रेमलीला—जनदयाल कृत, लि० का० स० १८८७, वि० कौशल्या का सीता और राम पर प्रेम-वर्णन। दे० (छ–२६८)

प्रेम संपुट—सुंदरि कुँवरि कृत, नि० का० सं० १८४५; वि० राधा और कृष्ण के नित्य विहार का वर्णन। दे० (ख–६५)

प्रेमसखी—ये रामानुज सम्प्रदाय के सखी समाज के वैष्णव थे; सं० १७९१ में उत्पन्न हुए; अयोध्या निवासी।

प्रेमसखी की कविता दे० (क–३६)

होरी दे० (छ–२०८)

नखशिख दे० (ज–२३० ए)

जानकी-राम को नखशिख दे० (ज–२३० बी)

प्रेमसखी की कविता—प्रेमसखी कृत; वि० सीताराम की लीला का वर्णन। दे० (क–३६)

प्रेमसागर—प्रेमदास कृत, नि० का० स० १८२७, लि० का० स० १८६८, वि० ऊधो और गोपियों का संवाद वर्णन। दे० (छ–६२ ए)

प्रेमसागर—लल्लूलाल कृत; नि० का० सं० १८६७; लि० का० सं० १६०४, वि० भागवत दशम स्कंध का भाषानुवाद। दे० (छ–१६२ए)

प्रेम सुमन माला—शंभूनाथ त्रिपाठी कृत; वि० प्रेम के दोहे। दे० (ज–२७४)

प्रेमावली—ध्रुवदास कृत; नि० का० सं० १६७१; वि० राधाकृष्ण का प्रेम-वर्णन। दे० (क–१३ तेरह) (ज–७३ बी)

प्रेमी—उप० अब्दुलरहमान मिर्ज़ा सं० १७७५ के लगभग वर्तमान. बादशाह फर्रुखसियर के आश्रित।

नखशिख दे० (घ–५०)

फतेहचंद—भागचंद पंचौली के पुत्र, सं १७१५ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ; कवि पुरुषोत्तम के आश्रयदाता थे। दे० (घ–४८)

फतेह-प्रकाश—रतन कवि कृत; लि० का० स० १६१०. वि० अलंकार वर्णन। दे० (ज–२६६)

फतेहमल सिंगी—मारवाड़ नरेश बख्तसिंह के दीवान ज्ञानमल सिंगी के पुत्र, कवि जयकृष्ण के आश्रयदाता। दे० (ग–८६)

फतेहसिंह—टिकारी (गया) के नरेश के उत्तराधिकारी, सं० १८०४ के लगभग वर्तमान; कवि दत्त के आश्रयदाता थे। दे० (घ–३६)

फतेहसिंह—पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल के वंशज, सं० १८०० के लगभग वर्तमान; रतन कवि के आश्रयदाता थे। दे० (ज–२६६)

फतेहसिंह—कौंच (जालौन) निवासी, सं० १८१२ के लगभग वर्तमान; पन्नानरेश महाराज सभासिंह के आश्रित; इन्होंने अपने ग्रन्थ मुहर्रम में जहाँदार शाह के पुत्र खुर्रम का वर्णन किया है।

हस्तामलका दे० (च-५४)
मुहर्रम दे० (च-५५)
मत चंद्रिका दे० (छ-३१ ए) (ज-८०)
गुण प्रकाश दे० (छ-३१ बी)

फरजंद खेला—मुकुन्दलाल (ब्रह्मचारी) कृत, लि० का० स० १८२१, वि० राम और कृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन। दे० (ज-२९)

फरासीसी (हकीम)—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
मधुकि पुराण दे० (छ-१६६)

फर्रुखसियर—दिल्ली के बादशाह, राज्य-काल स० १७६० १७६६, मिर्जा अब्दुलरहमान (प्रेमी) के आश्रयदाता। दे० (च-५०)

फाग तरंगिनी—हंसराज बख्शी कृत, लि० का० स० १९०२, वि० राधा और कृष्ण के फाग खेलने का वर्णन। दे० (छ-४५ बी)

फागविलास—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० कृष्ण फाग लीला वर्णन। दे० (ख-१२१ आठ)

फाजिल अली (मिर्जा)—नवाब इनायतखाँ के पुत्र, स० १७३३ के लगभग वर्तमान, सुखदेव मिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (ज-३०७)

फाजिलअली प्रकाश—सुखदेव मिश्र कृत, नि० का० स० १७३३, लि० का० सं० १९१६, वि० पिंगल वर्णन। दे० (ज-३०७)

फाजिलशाह—शाह करीम के पुत्र, करम करीम के पौत्र, छतरपुर (बुंदेलखंड) निवासी, इनके मदारपन्थ और प्रणामपन्थ दो भाई थे, छतरपुर नरेश महाराज प्रतापसिंह के आश्रित, स० १९०५ के लगभग वर्तमान थे।
प्रेमरत्न दे० (ख-५६)

फीरोजशाह—मुगल बादशाह बहादुर शाह द्वितीय के पुत्र, स० १९०० के लगभग वर्तमान, बाग्रनामा (दौलतनामा) के रचयिता के आश्रयदाता थे। दे० (च-६६)

फुटकर कविता—दयाकृष्ण कृत, वि० स्फुट कविताओं का संग्रह। दे० (छ-२६ ए)

फुटकर कवित्त—संग्रहकर्त्ता अज्ञात है, निम्न लिखित कवियों की कविताओं का संग्रह है (१) मकरंद (२) रघुनाथ (३) पर्वत (४) किशोरी (५) महाराज (६) गंग और (७) देव। दे० (ग-४६)

फुटकर बानी—हित हरिवंश कृत, वि० सिद्धांत और रस के पद। दे० (ज-१२०)

फूलचरित्र—मनोहरदास कृत, इस ग्रंथ में ३१ दोहे हैं, प्रत्येक दोहे में एक एक फूल का वर्णन है। दे० (ज-१९२)

फूलविलास—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० कृष्ण-लीला वर्णन। दे० (ख-१२१ चार)

बका—बुँदेलखंड निवासी, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
कृष्ण विवाह दे० (छ-१०)

बंगसखाँ—मालवा के सूबेदार, स० १७४० के लगभग वर्तमान, विचित्र कवि के आश्रयदाता। दे० (छ-२४२)

बंसी—स० १७८० के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ, लालमणि के पुत्र, वैष्णव धर्मावलम्बी, ओड़छा नरेश महाराज उद्योतसिंह के आश्रित।
रसिक बतीसी दे० (छ-११)

बंसीधर—कवीं कवि के पिता। दे० (क-१५)

वंसीधर—सं० १७७३ के लगभग वर्तमान, सुबंसलाल के पुत्र, जाति के कायस्थ, वंसीपुर निवासी; राजा मान्धाता के आश्रित थे।

मित्र मनोहर (हितोपदेश) दे० (च–६४) (छ–१२)

वंसीधर—सं० १७६५ के लगभग वर्तमान, बुंदेलखंड के महाराज छत्रसाल के आश्रित, बादशाह शाह आलम के समकालीन।

दस्तूर-मालिका दे० (ज–१८)

वंसीवट विलास—माधुरीदास कृत, लि० का० सं० १६८७, वि० कृष्णलीला। दे० (ग–१०४ तीन)

वंसी वर्णन—दीरघ कवि कृत, लि० का० सं० १९३८, वि० कृष्णवंशी वर्णन। दे० (ज–७६)

वखत कुँवरि (स्त्री)—उप० प्रियासखी, दतिया की रानी, सं० १८४७ के लगभग वर्तमान; ये श्रीकृष्ण की भक्त थीं।

बानी दे० (छ–८)

वख्तसिंह—जोधपुर नरेश महाराज अजीतसिंह के पुत्र और अभयसिंह के भाई, सं० १७७६ के लगभग वर्तमान, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के इशारे से अभयसिंह ने अपने भाई बखतसिंह की सहायता से महाराज अजीतसिंह को मार डाला; ज्ञानमल सिंगी इनके दीवान थे। दे० (ग–४०) (ग–८६) (ग–८९)

वख्तावर—सं० १८६० के लगभग वर्तमान; हाथरस (अलीगढ) निवासी; पंडित दयाराम के आश्रित थे।

सुनिसार दे० (ख–५९)

वख्तेश—सं० १८२२ के लगभग वर्तमान, राजा रतनेश के भाई शत्रुजीत के आश्रित।

रसराज टीका संयुक्त दे० (छ–७)

वघेल-वंश वर्णन—अजबेस कृत; नि० का० सं० १८९२; वि० रीवाँ के राजा विश्वनाथसिंह के कुल बघेल वंश की उत्पत्ति आदि का वर्णन; यह वंश सिद्धराव के पुत्र व्याघ्रराव से आरंभ होता है, अन्हलवाड़े के चालुक्य राजा कुमारपाल के समय में सं० १२८५ में चालुक्यवंश से अलग होकर यह शुरू हुआ। दे० (ख–१५)

वटुकवहादुर सिंह—कमौली (बनारस) के जमींदार; सतीप्रसाद के आश्रयदाता थे। दे० (छ–२३०)

वड़ी वेड़ी को समयो—चन्द बरदाई कृत। दे० (छ–१४६ ई)

वणिकप्रिया—शुकदेव मिश्र कृत, नि० का० सं० १७१७, लि० का० सं० १९५५, वि० वाणिज्य भेद वर्णन। दे० (च–८१)

वदन कवि—दामोदर के पुत्र, दयाराम के पौत्र और मनीराम के प्रपौत्र थे, स० १८०८ के लगभग वर्तमान; गिरवाँ (गिरग्राम) ज़िला बाँदा निवासी, जाति के अग्निहोत्री ब्राह्मण, कोटा (गढ) के राजा पृथ्वीसिंह के आश्रित।

रसदीपक दे० (च–५७)

वदनसिंह—महाराज भरतपुर; सुजानसिंह और बहादुरसिंह के पिता; सं० १८७९ के पूर्व वर्तमान। दे० (क–८१) (क–८२) (ङ–४७)

वधूविनोद—कालिदास त्रिवेदी कृत; लि० का० सं० १८६७, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (छ–१७८)

बना—रघुवरसरन कृत, वि० श्रीरामचन्द्रजी के वर-स्वरूप का वर्णन। दे० (छ-२०६ बी)

बनारसीदास—सं० १६५२ के लगभग वर्तमान, जैन मतावलम्बी, बादशाह शाहजहाँ के समकालीन, आगरा निवासी थे।

समयसार नाटक दे० (क-१३२)
कल्याणमंदिरभाषा दे० (क-१०४)
ज्ञानपच्चीसी दे० (क-१०५)
मोक्षमार्गपैड़ी दे० (क-१०६)

बयालिस मानी—ध्रुवदास कृत, लि० का० सं० १८२७, वि० स्फुट। दे० (छ-१५६ डी)

बरजोरसिंह—सं० १६५१ के लगभग वर्तमान, ये कोई राजा थे, हरिशंकर द्विज के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२५८)

बरवै—गोरेलाल पुरोहित कृत, वि० स्फुट। दे० (छ-४१ ए)

बरवै नखशिख—सेवकराम कृत, लि० का० सं० १९५३, वि० अंग-वर्णन। दे० (ज-२८६)

बरवै नायिका भेद—रहीम कवि कृत, वि० नायिका भेद वर्णन। दे०। (ञ-१)

बरवै रामायण—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८३३, वि० संक्षिप्त रामायण। दे० (घ-८०) (छ-२४१ ए)

बरिबंडसिंह—उप० बलवंतसिंह, बनारस नरेश, सं० १८०२ के लगभग वर्तमान, कवि रघुनाथ, भीष्म कवि और गोकुलनाथ के आश्रयदाता थे। दे० (घ-१२) (घ-१४) (घ-१५) (घ-३५) (घ-५१)

बलख की पैज—कबीरदास कृत, वि० कबीर और शाह बलख के प्रश्नोत्तर। दे० (ज-१४३ आई)

बलदेव (कवि)—सं० १८४१ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

कादंबरी भाषा दे० (घ-५८)

बलदेव कथा—रीवाँ नरेश जयसिंह कृत, लि० का० सं० १८६०, वि० श्रीकृष्ण के भाई बलदेव जी की कथा का वर्णन। दे० (क-१५२)

बलदेव रासमाला—शृंगार कवि कृत, वि० बलदेव जी की रासलीला का वर्णन। दे० (छ-११२)

बलवंतसिंह—भरतपुर नरेश, राज्य का० सं० १८६२-१९१०, कवि रसानंद भट्ट के आश्रयदाता थे। दे० (ज-२६०)

बलबीर—सं० १७५६ के लगभग वर्तमान, भागीरथ के पुत्र, कन्नौज निवासी, जाति के दूबे ब्राह्मण, नवाब हिम्मतखाँ के आश्रित थे, इनका वंश-वृक्ष इस प्रकार है—

गदाधर
  मनराम
    बली मनोरथ
      शंकर
        भागीरथ
          बलबीर

पिंगल मकरंद दे० (ख-८२)
उपमालंकार नखशिख वर्णन दे० (ग-२७)
दंपति विलास दे० (ग-२८)

बलभद्र (मिश्र)—ये कवि प्रसिद्ध केशवदास के भाई थे, सं० १६४१ के लगभग वर्तमान।

नखशिख दे० (ग-४४) (ज-१५) (क-१११)

बलभद्र—सं० १७१४ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

दूषण विचार दे० (ज–१६)

बलभद्र कृत सिखनख—(नखशिख) बलभद्र कृत, लि० का० सं० १६४१, वि० नखशिख वर्णन। दे० (ग–४५) (ज–१५) (क–१११)

बलभद्र कृत नखशिख (टीका)—प्रतापसाहि कृत; लि० का० सं० १६२५, वि० बलभद्र कृत नखशिख पर टीका। दे० (छ–६१ के)

बलभद्र पचीसी—दामोदर देव कृत, नि० का० सं० १६२३, लि० का० सं० वही, वि० बलराम जी की स्तुति। दे० (छ–२४ ई)

बलभद्र व्याकरण—गोपाल कवि कृत, वि० व्याकरण। दे० (छ–४०)

बलभद्र शतक—दामोदर देव कृत, वि० स्तुति। दे० (छ–२४ बी)

बलभद्रसिंह—नागौद (मध्य भारत) नरेश; सं० १८७८ के लगभग वर्तमान।

बारहमासी दे० (क–५०)

बलिचरित्र—केशव कवि कृत; वि० राजा बलि और वामन अवतार की कथा का वर्णन। दे० (ज–१४६ ए)

बलिराम—कवि नंदराम के पिता; अंबावती नगरी निवासी; जाति के खंडेलवाल, हैरावत गोत्र के थे; सं० १७४४ के पूर्व वर्तमान। दे० (क–१२६)

बलिराम—सं० १७३३ के लगभग वर्तमान इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

रस विवेक दे० (ङ–२५)

बलिराम—सं० १६७६ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में कुछ और भी ज्ञात नहीं।

फुटकर बलिराम का दे० (ज–१७) (घ–१२८)

बलिवामन की कथा—लालदास कृत वि० राजा बलि और वामन अवतार की कथा का वर्णन। दे० (छ–१६१)

बहादुरराज—उप० बहादुरसिंह, कृष्णगढ़ (राजपूताना) नरेश, कुँवर विरदसिंह के पिता, सं० १८३५ के लगभग वर्तमान। दे० (ङ–५८) (ख–१०२)

बहादुरशाह—बादशाह औरंगजेब के पुत्र; राज्य का० सं० १७६४–१७६६; आलम कवि के आश्रयदाता थे। दे० (घ–३३)

बहादुरसिंह—रूपनगर (कृष्णगढ़) नरेश सं० १८२३ के लगभग वर्तमान, महाराज राजसिंह के पुत्र और सुंदरि कुँवरि के भाई थे: इन्हींके द्वारा दुःख दिए जाने पर महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) अपने लडके को राज्य देकर वृन्दावन चले आए थे जिसको बहादुरसिंह ने गद्दी से उतार दिया। दे० (ख–१०२) (ङ–५८)

बहादुरसिंह (राजा)—बदनसिंह महाराज के पुत्र, भरतपुर नरेश, सोमनाथ कवि के आश्रयदाता, सं० १८०६ के लगभग वर्तमान। दे० (ङ–४७) (ज–२६८)

बाग विलास—शिव कवि कृत, वि० वाटिका लगाने की विधि का वर्णन। दे० (छ–२३६)

बागीराम—गाडूराम के भाई, जलंधरनाथ के शिष्य; सं० १८८२ के लगभग वर्तमान, मारवाड़ निवासी; जोधपुर नरेश महाराज मानसिंह के आश्रित, दोनों भाई साथ साथ कविता करते थे।

जसभूषण दे० (ग–३२)

जसरूपक दे० (ग–३३)

बाजनामा—(फा० ग्रन्थ) अन्य नाम शिकारनामा, मुगल सम्राट् फीरोजशाह की आज्ञा से यह ग्रंथ लिखा गया, वि० शिकारी पक्षियों की पहचान, उनके रोग और चिकित्सा का वर्णन। द० (घ-९६) (ङ-२६)

बाजिन्द—दादूदास जी के शिष्य, सं० १६५७ के लगभग वर्तमान।

गजमोचन दे० (ग-७६)

बांजूराय—बुंदेलखंड निवासी, सं० १८ ? के लगभग वर्तमान।

भागवत दशमस्कंध की संक्षिप्त कथा द० (ङ-६)

बाबा साहब मजुमदार—ये ठाकुर नेपाल निवासी २० वीं शताब्दी में हुए।

स्वर्णादि द० (ञ-१२ ए)

चन्द्र संजीवनी वैद्यक द० (ञ-१२ बी)

ज्वर चिकित्सा प्रकरण द० (ञ-१२ सी)

बीरोग चिकित्सा द० (ञ-१२ डी)

बारहखड़ी—किशोरीसरन कृत, लि० का० सं० १९१२, वि० उपदेश। (ट-१०)

बारहखड़ी—विष्णुराम कृत, लि० का० सं० १८११, वि० श्रीकृष्ण का चरित्र-वर्णन। द० (ञ-३०७)

बारहमासा—मुहम्मदशाह कृत, वि० बारह महीनों में विरह का वर्णन। (ए-२९४)

बारहमासी—राजा दयोसिंह कृत, लि० का० सं० १८३१, वि० बारह महीनों में वियोगिनी का विरह वर्णन। द० (ए-२८ एफ)

बारहमासी—धनसिंह कृत, लि० का० सं० १८३८, वि० बारह महीनों में वियोगिनी का विरह वर्णन। द० (ए-९० ए)

बारहमासी—भरहरिदास बख्शी कृत, लि० का० सं० १९४२, वि० व्रतों और उत्सवों का वर्णन। द० (ए-७७)

बारहमासी—प्रजन कुँवरि कृत, वि० कृष्ण का गोपियों को ऊधो द्वारा संदेश भेजना। दे० (ए-८३)

बारहमासी—पृथ्वीसिंह राजा कृत, वि० बारह मासों में प्रेमी का वियोग वर्णन। दे० (ए-९५ सी)

बारहमासी—लालदास कृत, लि० का० सं० १९०२, वि० गोपियों का विरह दुःख-वर्णन। दे० (ए-१९० ए)

बारहमासी—सुन्दर कृत, वि० विरहिणी का वियोग दुःख वर्णन। दे० (ए-२४१ बी)

बारहमासी—बलभद्रसिंह कृत, नि० का० सं० १८७८, लि० का० सं० १९११, वि० बारह महीनों में विरहिणी का वियोग दुःख वर्णन। द० (क-५०)

बारहमासी—बैजीरदास कृत, वि० ज्ञान वर्णन। द० (ञ-१४३ ज)

बालकदास—कदम के शिष्य, जाति के मुसल मान जान पड़ते हैं।

सुदामा चरित्र द० (ए-११३)

बालकृष्ण—जुगुलकिशोरी भट्ट के पिता, सं० १८०५ के पूर्व वर्तमान, कैथल निवासी थे। द० (ञ-१४२)

बालकृष्ण (नायक)—बुंदेलखंड निवासी, जाति के ब्राह्मण, सं० १७२७ के लगभग वर्तमान, चरणदास के शिष्य थे।

ध्यानमंजरी द० (ए-९ ए)

ज्ञान चौंती द० (ए-

प्रमपरीक्षा दे० (छ-६ सी)

परतीत परीक्षा दे० (छ-६ डी)

बालकृष्ण—जाति के कायस्थ; तेजसिंह के पिता, सं० १८२७ के पूर्व वर्तमान। दे० (च-३४)

बालकृष्णदास—गोस्वामी गिरधरदास के शिष्य; वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी; सं० १८८५ के लगभग वर्तमान।

सूरदास के दृष्टिकूट (सटीक) दे० (क-६)

बालमुकुंद-लीला—भीष्म कवि कृत; वि० भागवत के दशम स्कंध पूर्वार्ध का भाषानुवाद। दे० (घ-१२)

बाल-विनोद—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, नि० का० सं० १८०६, वि० कृष्ण की बाल्यावस्था का वर्णन। दे० (ख-१२८)

बाल-विवेक—जनार्दन भट्ट कृत; वि० ज्योतिष। दे० (छ-२६७ ए)

बासुदेव—जाति के महाराष्ट्र ब्राह्मण, प्रियादास के पिता; सं० १८१० के पूर्व वर्तमान। दे० (ख-१६)

बाहुक—गोस्वामी तुलसीदास कृत; लि० का० सं० १८५७; वि० हनुमान की स्तुति। दे० (ज-३२३ के)

बाहु-विलास—राजसिंह कृत, लि० का० सं० १७६२; वि० कृष्ण और जरासंध का युद्ध वर्णन। दे० (ग-७४)

बाहु-सर्वांग—तुलसीदास कृत; लि० का० सं० १८८२; वि० हनुमान जी का स्तोत्र। दे० (घ-१३)

बिट्ठलदास—उप० विट्ठलेश्वर, गोस्वामी विट्ठलनाथ और बिट्ठल विपुलजी, वल्लभाचार्य के पुत्र और उत्तराधिकारी; स्वामी हरिदास के शिष्य; बिहारिनदास व नंददास के गुरु; गिरिधर गोस्वामी के पिता, सं० १६०७ के लगभग वर्तमान थे, हिंदी में गद्य लिखनेवालों में इनका नम्बर दूसरा है। (छ-२००) (च-६१)

शृंगार रस मंडन दे० (ज-३२)

बिट्ठल विपुल जी की बानी दे० (च-६०)

बिट्ठल विपुलजी की बानी—बिट्ठल विपुल जी कृत; वि० राधा और श्री कृष्णजी के शृंगार के पद। दे० (च-६०)

बिसातिनलीला—प्रेमदास कृत, वि० श्रीकृष्ण का बिसातिन के वेश में राधा के पास जाने का वर्णन। दे० (ज-२२६ बी)

बिहारिनिदास—बिट्ठल विपुल जी के शिष्य और सरसदास, नागरीदास (महाराज सावंतसिंह नागरीदास से भिन्न) के गुरु; १७ वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुए। (छ-२२६)

श्री बिहारिनदास की बानी दे० (च-६१)

(च-३१)

समय प्रबंध दे० (ज-३१)

बिहारिनदास की बानी—बिहारिनदास कृत; वि० श्री राधा और कृष्ण के शृंगार के पद। दे० (च-६१)

बिहारी—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

नखशिख रामचंद्रजू को दे० (ज-३०)

बिहारीदास—आगरा निवासी; सं० १७५८ के लगभग वर्तमान, जैनधर्मानुयायी।

संबोधि पचासिका भाषा दे० (क-११६)

बिहारीदास—माधोराम के वंशज, जाति के कायस्थ; कृष्णगढ़ राज्य के सभासद हैं। दे० (ग-४३)

बिहारीलाल—सं० १८१५ के लगभग वर्तमान, बुंदेलखंड निवासी।

हरिदौल चरित दे० (च-९२)

बिहारीलाल—हिंदी के प्रसिद्ध कवि, जाति के माथुर चौबे, ग्वालियर राज्य के निवासी, सं० १७२० के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश जयसिंह मिर्ज़ा के आश्रित, कृष्ण कवि (कृष्ण-दास) के गुरु थे। दे० (क-५२)

बिहारी सतसई दे० (क-११५) (ख-२७) (ख-७५) (ख-५७) (छ-६१) (छ-६४) (ध-७) (ग-८)

बिहारी वल्लभ—सं० १६३२ के लगभग वर्तमान, व्रज निवासी, भगवत रसिक के अनुयायी।

भगवत रसिक की मर्यादा दे० (छ-११९)

बिहारी सतसई—बिहारीलाल कृत, लि० का० सं० १७१६, दूसरी प्रति का सं० १७७५ और तीसरी का लि० का० सं० १८०३ है, वि० शृंगार रस पर मौक्तिक दोहे। दे० (क-११५) (ख-२७) (ग-८)

बिहारी सतसई (टीका)—कृष्णदास कृत, लि० का०सं०१७७७,लि०का० सं० १८३७,वि०बिहारी सतसई पर टीका। दे० (ख-५२) (छ-१२६)

बिहारी सतसई (टीका)—मानसिंह कृत, लि० का० सं० १८२३, वि० बिहारी सतसई पर टीका। दे० (ख-७५)

बिहारी सतसई (टीका)—राधाकृष्ण चौबे कृत, लि० का० सं० १८५०, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८५१, वि० बिहारी सतसई पर टीका। दे० (छ-६१)

बीजक—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान। दे० (छ-१४१ एक)

बीजक दरिया साहब—दरिया साहब कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (छ-५५ बी)

बीर—सं० १८१८ के लगभग वर्तमान, जाति के वाजपेयी कान्यकुब्ज ब्राह्मण, मड़ला (जबल पुर) निवासी।

प्रेमदीपिका दे० (छ-१४०)

बीरकिशोर (राजा)—सं० १८४७ के लगभग वर्तमान, बादशाह शाह आलम के समकालीन और बीर कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२६)

बीरसिंह देव—रीवाँ नरेश, धर्मेश-धर्मी खत्री, कबीरदास के समकालीन। दे० (छ-१७७ आर)

बीरसिंह देव—ओड़छा (बुंदेलखंड) नरेश, राज्य का० सं० १६६२-१६८४, केशवदास के आश्रयदाता। दे० (छ-५८ ए)

बीरसिंह देव-चरित्र—केशवदास कृत, लि० का० सं० १६६४, वि० बीरसिंह देव का चरित्र वर्णन। दे० (छ-५८ ए)

बीस गरोहों का माय—प्राणनाथ कृत, वि० मुसलमानी धार्मिक पुस्तकों से शिक्षाप्रद कहानियाँ। दे० (छ-९० सी)

बीसलदेव (राजा)—अजमेर नरेश, पृथ्वीराज चौहान के पूर्वज, राजा भोज के दामाद। दे० (क-६०)

बीसलदेव रासा—नरपति नाल्ह कृत, लि० का० सं० १६५५, लि० का० सं० १६६६, वि० राजा बीसलदेव का चरित्र वर्णन। दे० (क-६०)

बुंदेल वंशावली—शादम कृत, लि० का० सं० १८८८, वि० बुंदेलखंड के राजाओं की वंशावली। दे० (छ-१०७ बी)

बुद्धराव—राजा अनिरुद्धसिंह के पुत्र; कृष्ण कवि कलानिधि के आश्रयदाता। दे० (क-८३)

बुद्धिसिंह—सं० १८६७ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ, बुंदेलखंड निवासी थे।

सभा प्रकाश दे० (छ-१७)

बुध चातुरी विचार—रतन कवि कृत. लि० का० सं० १८५५, वि० बुद्धि की चतुराई के भेद। दे० (ङ-६८)

बुधजन—सं० १८८५ के लगभग वर्तमान जैन मतावलंबी।

योगींदसार भाषा दे० (क-११८)

बुरहान—कुतबन मलिक मुहम्मद जायसी के गुरु; चिश्ती वंश के थे, सहसराम (बिहार) निवासी, सं० १५६६ के पूर्व वर्तमान, हुसेनशाह के समकालीन। दे० (क-४) (क-५४)

बृहस्पतिकांड—तुलसीदास कृत, वि० बृहस्पति ग्रह का १२ राशियों पर फलाफल विचार। दे० (घ-३०) (ग्रंथकर्त्ता तुलसीदास गोस्वामी नहीं प्रतीत होते।)

बेनी—असनी (फतेहपुर) निवासी, सं० १८१७ के लगभग वर्तमान, निहचलसिंह के आश्रित।

शृङ्गार दे० (घ-६२)

कवित्त बेनी कृत दे० (घ-८६)

रसमयग्रंथ दे० (घ-१२२) (ङ-२२)

बेनी कवि—भिंड (ग्वालियर) निवासी, खगेस के पुत्र।

शालिहोत्र दे० (छ-१३५)

बेनी कवि—रायबरेली जिले के निवासी, सं० १८४६ के लगभग वर्तमान, अवध के मंत्री टिकैतराय के आश्रित।

टिकैतराय प्रकाश दे० (ज-१४)

बेनी प्रवीन वाजपेयी—लखनऊ निवासी; जाति के कान्यकुब्ज वाजपेयी ब्राह्मण, सं० १८७८ के लगभग वर्तमान, अवध के नवाब गाजीउद्दीन हैदर के समकालीन, लखनऊ के दीवान नवलकृष्ण के आश्रित।

नवरस तरंग दे० (ज-१६)

बेनीराम—दयाराम के शिष्य, जैन मतावलंबी, सं० १७७६ के लगभग वर्तमान, खरतर गच्छ निवासी; राठौर माधोसिंह पीपाड (जोधपुर) के जागीरदार के आश्रित।

जिनराम दे० (ख-१०६)

बेसहनीसिंह—जयगोपालसिंह के पिता; चैमलपुर, परगना सिकंदरा के ठाकुर थे, सं० १८६५ के पूर्व वर्तमान। दे० (ङ-७०)

बैकुंठमणि शुक्ल—१७ वीं शताब्दी में वर्तमान; ओड़छा नरेश राजा जसवंतसिंह के आश्रित; और टीकमगढ़ के राजा की रानी मोहन कुँवरि के भी आश्रित थे।

वैसाख माहात्म्य दे० (छ-५ ए)

अगहन माहात्म्य दे० (छ-५ बी)

बैताल पचीसी—(र० अज्ञात) वि० विक्रम से बैताल का पचीस कहानियों का वर्णन। दे० (क-८६)

बैताल पचीसी—भवानीशंकर कृत, नि० का० सं० १८७१, लि० का० सं० १८६५, वि० सत्रह कहानियाँ बैताल पचीसी की और चार कहानियाँ सिंहासन बतीसी की हैं। दे० (ख-१३)

बैताल-पचीसी—देवीदत्त कृत, नि० का० सं० १८१२; लि० का० सं० १६४६, वि० बैताल पंच विंशति का भाषानुवाद। दे० (च-२७)

बैताल पचीसी—रामनाथ त्रिपाठी कृत, नि० का० सं० १८०६, लि० का० सं० १९१६, संस्कृत बैताल पचीसी का हिंदी अनुवाद। दे० (छ-२३४ बी)

बैताल पचीसी—महाराजसहाय कृत, लि० का० सं० १८९९, वि० विक्रमादित्य से बैताल की पचीस कहानियों का वर्णन। दे० (ज-२६)

बैरीसाल—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। सं० १८२५ के लगभग वर्तमान।

भाषाभरण दे० (छ-१२९) (ज-११)

बैसाख माहात्म्य—बैकुंठमणि शुक्ल कृत, लि० का० सं० १९६६, वि० बैसाख मास का माहात्म्य वर्णन। दे० (छ-५ ए)

बोध विलास—सदाराम कृत, लि० का० सं० १८७३, वि० जीव और ब्रह्म का वर्णन। दे० (ज-२७० बी)

बोधीदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

बोधीदास कृत सूचना दे० (ज-३३)

बोधीदास कृत सूचना—बोधीदास कृत, लि० का० सं० १९३६, वि० उपदेश। दे० (ज-३३)

ब्याहिल बानी—ध्रुवदास कृत, लि० का० सं० १८२३, वि० स्फुट कविता। दे० (छ-१५६ डी)

ब्रजराज—मालवीय शुक्ल ब्राह्मण, मथुरानाथ के पिता, सं० १८१२ के लगभग वर्तमान थे, बनारस निवासी। दे० (ज-१६४)

ब्रह्मज्ञान—व्यासदास कृत, लि० का० सं० १८३१, वि० विष्णु अवतार का वर्णन। दे० (छ-२४२)

ब्रह्मज्ञान—अनन्य (अक्षर अनन्य) कृत, वि० ज्ञान का वर्णन। दे० (ज-८ डी)

ब्रह्मज्ञानेंदु—ये बंगाल को किसी गुमाश्ता का शिष्य बतलाते हैं, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

ब्रह्म विलास दे० (ज-२७)

ब्रह्मदत्त (उपाध्याय)—सं० १८९१ के लगभग वर्तमान, जाति के उपाध्याय ब्राह्मण, काशी नरेश महाराज उदितनारायण और उनके भाई बाबू दीपनारायण के आश्रित थे।

दीप प्रकाश दे० (ए-४६) (छ-११५)

विद्वद्विलास दे० (छ-१४)

ब्रह्मवीर—सनाढ्य ब्राह्मण, हरिदास के प्रपितामह, हरिदासपुर निवासी थे। दे० (क-२३)

ब्रह्म निरूपण—कबीरदास कृत, लि० का० सं० १९१८, वि० ब्रह्म का वर्णन। दे० (छ-१७७ एम)

ब्रह्मरायमल—मूलसिंह मुनि के पुत्र, अकबर बादशाह के समकालीन, सं० १६१६ के लगभग वर्तमान, रणथंभोर निवासी।

हनुमंत मोक्षगामी कथा दे० (क-१२३)

श्रीपाल रासो दे० (क-१२४)

ब्रह्मबानी—प्राणनाथ कृत, वि० ईश्वर प्रेम का वर्णन। दे० (छ-६० डी)

ब्रह्म-विलास—ब्रह्मज्ञानेंदु कृत, वि० वेदान्त। दे० (ज-२७)

ब्रह्म विवेक—दरिया साहब कृत, लि० का० सं० १९४८, वि० ज्ञान। दे० (ज-५५ बी)

ब्रह्मांड वर्णन—श्यामराम कृत, लि० का० सं० १७७१, वि० समस्त ब्रह्मांड का वर्णन। दे० (ग-८०)

भँवरगीत—रसिक राय कृत, वि० ऊधो और गोपियों का संवाद। दे० (ग-३८) (छ-२१६ बी)

भँवरगीत—मुकुन्ददास (जनमुकुंद) द्वारा संगृहीत; वि० कृष्ण लीला वर्णन। दे० (ग-१०४दो) (छ-२७३) (ज-१८४)

भक्त नामावली—ध्रुवदास कृत, वि० ११६ भक्तों के नाम तथा उनका वर्णन। दे० (क-१५) (ज-७३ जी)

भक्त वछल—मलूकदास कृत; लि० का० सं० १८५५, वि० भक्तों का माहात्म्य वर्णन। दे० (ज-१८५ ए)

भक्त भावन ग्रंथ—ग्वाल कवि कृत; नि० का० सं० १६१६, लि० का० सं० १६५८, वि० यमुना महिमा और स्फुट कविता। दे० (च-१४)

भक्त मंजरी—दीनानाथ कृत; वि० भागवत, रामायण और परमेश्वर के अवतारों का वर्णन। दे० (ज-७५)

भक्तमाल—नारायणदास (नाभादास) कृत, लि० १७७०, वि० भक्तों का वर्णन। दे० (ज-२११)

भक्तमाल प्रसंग—वैष्णव दास कृत, लि० का० सं० १८२६; वि० भक्तमाल पर टीका। दे० (ख-५४)

भक्तमाल माहात्म्य—वैष्णवदास कृत, लि० का० सं० १८८६, वि० भक्तमाल का माहात्म्य वर्णन। दे० (छ-२४७)

भक्तमाल रस-बोधिनी टीका—वैष्णवदास और अग्रनारायणदास कृत, नि० का० सं० १८४४, वि० प्रियादास के भक्तमाल की टीका पर अग्रनारायण और वैष्णवदास ने व्याख्या वा टिप्पणी की है। दे० (ङ-८८)

भक्तमाल रस-बोधिनी टीका सहित—प्रियादास कृत; नि० का० सं० १७६६, वि० नाभादास कृत भक्तमाल पर टीका। दे० (ख-५५) (ग-१२६) (ङ-१३६-१३७)

भक्त रस माल—मजजीवनदास कृत; नि० का० सं० १६१४, लि० का० सं० १६१४; विषय नाभा जी कृत भक्तमाल पर टीका। दे० (ज-३४ ए)

भक्त वत्सल—मलूकदास कृत; लि० का० सं० १८७६, वि० श्रीकृष्ण जी की भक्त-वत्सलता का वर्णन तथा उदाहरण। दे० (ङ-८०) (ज-१८५ ए)

भक्त विरुदावली—अमरदास कृत; वि० ईश्वर-भक्ति का वर्णन। दे० (छ-१२३)

भक्त विरुदावली—मलूकदास कृत, नि० भक्तों की प्रशंसा। दे० (छ-१६४ ए)

भक्त विरुदावली—लघुराम कृत, वि० भक्तों की प्रशंसा। दे० (छ-२८७ बी)

भक्तामर भाषा—(र० अज्ञात) लि० का० सं० १७८८, वि० ईश्वर वंदना। दे० (क-१०८)

भक्ति का अंग—कबीरदास कृत; वि० भक्ति और उसका प्रभाव वर्णन। दे० (ज-१४३ के)

भक्ति जयमाल—शिवरामकृत; नि० का० सं० १७८७, लि० का० सं० १८०३; वि० रामचन्द्र का वर्णन। दे० (ज-२६६)

भक्ति पदारथ—चरणदास कृत, वि० भक्ति और प्रेम का वर्णन। दे० (छ-१४७ डी)

भक्ति-प्रकाश—राजा लछमणसिंह कृत; नि० का० सं० १६०२, लि० का० सं० १६०२। दे० (छ-६५ सी)

भक्ति-प्रताप—चतुर्भुजदास कृत; लि० का० सं० १७६४; वि० भक्ति का प्रभाव वर्णन। देखो (छ–२४८ बी)

भक्ति भय हर स्तोत्र—प्रभिमू कृत, लि० का० सं० १८५६; वि० वेदान्त तथा गुरुभक्ति-वर्णन। दे० (क–६५)

भक्ति भावती—प्रथम गणेशगिर कृत, लि० का० सं० १६११; वि० ईश्वर भक्ति और ज्ञान वर्णन। दे० (ज–१३६)

भक्ति-मग दीपिका—महाराज सावंतसिंह उप० नागरीदास कृत; लि० का० सं० १८०२; वि० नवधा भक्ति के लक्षण आदि का वर्णन। दे० (ज–१२४)

भक्ति महात्म्य—गिरधारी कृत, लि० का० सं० १७०५, वि० भक्ति की महिमा का वर्णन। दे० (ज–६४)

भक्ति विरदावली—मलूकदास कृत, वि० भक्तों की प्रशंसा का वर्णन। दे० (छ–१६४ ए)

भक्ति शक्ति का झगड़ा—(कवि अज्ञात) नि० का० सं० १०५२ हिजरी, लि० का० सं० १७०४, वि० शक्ति और वैष्णव भक्तों का झगड़ा। दे० (ग–११०)

भक्तिसार—महाराज सावंतसिंह (उप० नागरीदास) कृत, नि० का० सं० १७९९, वि० आत्मिक ज्ञान का वर्णन। दे० (छ–१९८ बी)

भक्ति शतक—भूपनारायण सिंह कृत, लि० का० सं० १८४३, वि० काली जी की वन्दना। दे० (ज–२६ ए)

भक्ति सिद्धांतमणि—रसिकदास कृत, वि० भक्ति के भिन्न २ सिद्धांतों का वर्णन। दे० (छ–२१८ ए)

१४

भक्ति सुमिरिनी—चैनराय कृत, लि० का० सं० १८३५, वि० भक्तों का वर्णन। दे० (छ–१४३)

भक्ति हेतु—दरिया साहब कृत, लि० का० सं० १८६६, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज–५१ सी)

भगत—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
भगत चालीसा दे० (ज–२०)

भगत चालीसा—भगत कृत, लि० का० सं० १८५७, वि० भक्तों की नामावली। दे० (ज–२०)

भगवंतराय की विरुदावली—गोपाल कवि कृत, लि० का० सं० १६२४, वि० राजा भगवंत राय खीची और सआदतखाँ का युद्ध-वर्णन। दे० (ज–९८)

भगवंतराय खीची—सं० १७९० के लगभग वर्तमान, असोथर (फतेहपुर) के जागीरदार, सआदतखाँ से इनका युद्ध हुआ था, सुखदेव मिश्र और गोपाल कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ–२५०) (ज–९८)

भगवत गीता—अन्य नाम परमानंद प्रबोध, आनंद राम कृत, नि० का० सं० १७६१, लि० का० सं० १८८६, वि० भगवत गीता का अनुवाद। दे० (ज–८४) (छ–१२७)

भगवत गीता—ब्रज भुवाल कृत, लि० का० सं० १७६२, वि० कृष्ण और अर्जुन का संवाद, संस्कृत गीता का अनुवाद। दे० (ज–१३२)

भगवत गीता—हरिदास कृत, लि० का० सं० १८४६, वि० संस्कृत गीता का अनुवाद। दे० (छ–२५९)

भगवत गीता—हरिवल्लभ कृत, लि० का० सं० १८५८, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६४६,

वि० संस्कृत गीता का अनुवाद । दे० (छ–२६०) (ग–६०) (ज–११७)

भगवत गीता—अनद कृत, नि० का० स० १८३६, लि० का० सं० १८६१, वि० भगवत गीता का अनुवाद । दे० (ज–४ ए)

भगवत गीता भाषा—(र० अज्ञात) लि० का० सं० १७६८; वि० भगवद् गीता का अनुवाद । दे० (ख–६१)

भगवतगीता की टीका—अन्य नाम भाषामृत; भगवानदास कृत, नि० का० सं० १७५६, लि० का० सं० १८६६; वि० रामानुजाचार्य कृत, टीका का भाषानुवाद । दे० (क–६६)

भगवत गीता भाषा—गोस्वामी तुलसीदास कृत; वि० भगवद् गीता का अनुवाद । दे० (छ–२३८ ए)

भगवत गीता भाषा—रामानंद कृत, वि० भगवद् गीता का अनुवाद । दे० (ज–२५१ ए)

भगवत चरित्र—भागवतदास कृत, वि० राम और कृष्ण तथा हरिजनों का चरित्र वर्णन। दे० (ज–२२)

भगवतदास—सं० १८६८ के लगभग वर्तमान, जन्मभूमि इलाहाबाद; मगरोरा (राय बरेली) निवासी; जाति के ब्राह्मण।

राम रसायन दे० (ज–२१)

भगवत मुदित—ये राधावल्लभी संप्रदाय के स्वामी हित हरिवंश के अनुयायी थे।

हित चरित्र दे० (ज–२३ ए)

सेवक चरित्र दे० (ज–२३ बी)

रसिक अनन्य माला दे० (ज–२३ सी)

भगवतरसिक की प्रशंसा—बिहारीवल्लभ कृत; लि० का० स० १८६७, वि० भगवतरसिक की प्रशंसा । दे० (छ–१३६)

भगवतरसिक जी—माधवदास के पुत्र; स्वामी हरिदास के शिष्य, सं० १६१७ के लगभग वर्तमान, इन्होंने अपने ग्रंथ में १२६ भक्तों के नाम दिए हैं जो उनके पूर्व के या समकालीन होंगे, जिनमें एक अकबर भी है।

अनन्य निश्चयात्मिक ग्रंथ दे० (क–२६)

नित्य विहारी जुगल ध्यान दे० (क–३०)

अनन्य रसिकाभरण दे० (क–३१)

निश्चयात्मिक ग्रंथ उत्तरार्ध दे० (क–३२)

निर्विरोध मनरंजन दे० (क–३३)

भगवत विहार लीला—प्रेमदास कृत; वि० राधाकृष्ण का चरित्र वर्णन । दे० (ज–२२६ सी)

भगवती गीत—विद्याकमल कृत; वि० जैन धर्मानुसार सरस्वती की वंदना । दे० (क–६७)

भगवानदास—भयानकाचार्य के शिष्य, इनके पूर्व की दो गद्दियों पर दामोदरदास और स्वामी कूबाजी हुए, सं० १७५६ के लगभग वर्तमान।

भगवत गीता (भाषामृत) दे० (क–६६)

भगवानदास (निरंजनी)—सं० १७२२ के लगभगत वर्तमान, अर्जुनदास के शिष्य, छेत्रवास निवासी, निरंजनी संप्रदाय के अनुयायी थे।

अमृत धारा दे० (छ–१३६)

भगौतीदास—जैन मतावलंबी, सं० १७३२ के लगभग वर्तमान थे।

चेतनकर्म चरित्र दे० (क–१३३)

भजन—देवीसहाय कृत: लि० का० सं० १६६०, वि० ईश्वर के प्रति विनय । दे० (ज–६६)

भजन कुंडलिया—ध्रुवदास कृत, वि० श्रीकृष्ण की रास का वर्णन। दे० (ज–७२ यू) (क–१३ चौदह)

भजन विलास—लक्ष्मीनाथ कृत, लि० का० स० १८८३, वि० आलमरनाथ के भजन। दे० (ग–२३)

भजन संग्रह—रामानंद कृत, लि० का० स० १६३३, वि० परमेश्वर से विनय और प्रार्थना। दे० (ज–२५१ बी)

भजन सत (लीला)—ध्रुवदास कृत०, लि० का० सं० १८७७, दूसरी प्रति का लि० का० स० १८५६, वि० राधा कृष्ण के भजन का माहात्म्य। दे० (क–१७) (छ–१५६ एफ़) (ज–७१ आर) (ग–१२७)

भजनावली—त्रिलोकदास कृत, वि० ईश्वर की विनय और स्तुती। दे० (ज–३२०)

भड्डलि—ये ज्योतिष और कृषिशास्त्र के पंडित थे, इनके विषय में और कुछ भी बात नहीं।

भड्डलि पुराण (भाषा) दे० (क–६८)

भड्डलि पुराण—भड्डलि कवि कृत, लि०का०सं० १६६६, वि० ज्योतिष के चुटकुले और शकुन वर्णन। दे० (क–६८)

भद्रस्वामी—स० १४१८ के लगभग वर्तमान, आत्मानुशासन मूल संस्कृत ग्रंथ के रचयिता थे। दे० (क–१३४)

भमर बत्तीसी—केशवदास कृत, लि० का० सं० १८५४, वि० अन्योक्ति अलंकार में ज्ञानोपदेश। दे० (ग–३४)

भयानकाचार्य—भगवानदास के गुरु, सं० १७५६ के पूर्व वर्तमान थे, दामोदरदास के शिष्य, रामानुज संप्रदाय के वैष्णव थे। दे० (क–६६)

भरत—उप० भारत शाह, दीवान सावतसिंह के पौत्र, बिजना (बुंदेलखंड) के जागीरदार, स० १७६० के लगभग वर्तमान थे।

खुमान विलासावली दे० (ज–२५) (छ–१४ बी)

ऊषा अनिरुद्ध की कथा दे० (छ–१४ ए)।

भरत की बारहमासी—लालदास कृत, वि० १२ महीनों में भरत और राम की जीवनी का वर्णन। दे० (छ–१६० बी)

भरतरी बैराग—हरिदास कृत, लि० का० स० १८६४, लि० का० स० १८६४, वि० उज्जैन-नरेश भर्तृहरि के वैराग्य धारण करने की कथा का वर्णन। दे० (ख–१३५)

भरतरी सार (भर्तृहरिसार)—भर्जुन कृत, लि० का० स० १८८०, लि० का० स० १६५८, वि० भर्तृहरि राजा के नीति-शतक का अनुवाद। दे० (छ–१३१)

भरथ (राजा) चरित्र—गोपाल कवि कृत, वि० राजा जड़भरथ का चरित्र-वर्णन। दे० (क–२८)

भवानीदास—जाति के पुष्करण ब्राह्मण, जय कृष्ण के पिता, स० १७७० के पूर्व वर्तमान। दे० (क–८०) (ख–१३८)

भवानीदास—रामसहाय के पिता, जाति के कायस्थ, काशी-निवासी थे। दे० (क–२२)

भवानीशंकर—लक्ष्मण पाठक के पुत्र, भदैनी (बनारस) निवासी, सं० १८७१ के लगभग वर्तमान थे।

बैताल पचीसी दे० (ख–१३)

भवानी-सहस्रनाम—महाराज अजीतसिंह कृत, नि० का० सं० १७६८, वि० देवी के सहस्र नामों का वर्णन। दे० (ग–८७)

भवानीसहाय—जन्मभूमि गोरखपुर, परन्तु बनारस में रहने लगे थे; सं० १८९६ के लगभग वर्तमान।
बैताल पचीसी दे० (ज–२६)

भवानी स्तोत्र—अक्षर अनन्य (अनन्य) कृत; वि० दुर्गा-स्तुति। दे० (छ–२ आई)

भाऊ कवि—मलूक के पुत्र, गर्ग गोत्री, जैन मतावलंबी; इनकी माता का नामा गौरी था।
आदित्य कथा बड़ी दे० (क–११४)

भागवत—नंददास कृत, वि० भागवत के दशमस्कंध का अनुवाद। दे० (छ–२००)

भागवत एकादशस्कंध—चतुरदास कृत, नि० का० स १६९२; लि०का सं० १९२४, वि० भागवत के ११ वें स्कंध का अनुवाद। दे० (छ–१४९) (क–७१)

भागवत-चरित्र—भागवतदास कृत, दे० "भगवत चरित्र"। (ज–२२)

भागवत दशमस्कंध की संक्षिप्त कथा—बाजूराय कृत, लि० का० सं १८४३, वि० भागवत की सक्षिप्त कथा का वर्णन। दे० (छ–६)

भागवत दशमस्कंध भाषा—कृपाराम कृत नि० का० सं० १८१५, लि० का० स० १८७६, दूसरी प्रति का० लि० का सं० १९०६ और १९०९ के बीच में है, वि० श्रीकृष्ण चरित्र। दे० (ज–१५५) (च–६)

भागवत दशमस्कंध भाषा—नवलदास कृत, लि० का० सं० १९२५; वि० भागवत के दशमस्कंध का भाषानुवाद। दे० (ज–२१३)

भागवत दशमस्कंध भाषा—मोहनदास मिश्र कृत, वि० भागवत के दशमस्कंध की कथा। दे० (ज–१९९ बी)

भागवत दशमस्कंध भाषा—भूपति कवि कृत; नि० का० स० १७४४; लि० का० सं० १८५७; वि० भागवत दशमस्कंध का अनुवाद। दे० (ग–११५)

भागवतदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, ये कोई वैष्णव भक्त जान पड़ते हैं।
भगवत चरित्र दे० (ज–२२)

भागवत पचीसी—नाथ कवि कृत; लि० का० स० १९०६, वि० भागवत-माहात्म्य वर्णन। दे० (ज–२०९)

भागवत पुराण भाषा जन्मकाण्ड—नवलदास कृत, नि० का० स० १८२३, लि०का० सं०१९३५, वि० कृष्ण-चरित्र वर्णन। दे० (ज–२१६)

भागवत भाषा—लछिराम कृत; वि० भागवत का भाषानुवाद। दे० (ज–१६३)

भागवत भाषा—रसजानिदास कृत; नि० का० सं० १८०७, वि० भागवत के बारहों स्कंधों का भाषानुवाद। दे० (ख–९४)

भागवत भाषा द्वादशस्कंध—कृष्णदास कृत; नि० का० स० १८५२, वि० भागवत का भाषानुवाद। दे० (ज–१५८ ए)

भागवत भाषानुवाद—कृपाराम कृत; नि० का० सं० १८१५ लि० का० सं० १८७६, वि० श्रीकृष्ण चरित्र। दे० (च–६) (ज–१५५)

भागवत माहात्म्य—राजा रघुराजसिंह कृत; नि० का० स० १९११; वि० पद्मपुराण से उद्धृत भागवत माहात्म्य का पद्यानुवाद। दे० (ख–१८)

भागवत माहात्म्य—कृष्णदास कृत; लि० का० सं० १८५५; वि० पद्मपुराण के भागवत माहात्म्य का छंदोबद्ध अनुवाद। दे० (च-६) (ज-१५८ बी)

भागवत माहात्म्य—मेहरपामदास कृत; नि० का० सं० १८४६; लि० का० सं० १९२५; वि० भागवत का संक्षिप्त विवरण। दे० (ज-२९८)

भागवत सार पचीसी—चन्द्रलाल कृत, लि० का० सं० १८५४; वि० भागवत की कथा का संक्षिप्त वर्णन। दे० (ज-४३ सी)

भागवतसार भाषा—गोसाईं चन्द्रघन कृत, लि० का० सं० १८६१, वि० भागवत पुराण का २५ छंदों में संक्षिप्त वर्णन। दे० (क-६६)

भागीरथी लीला—नरपति कृत, वि० भागीरथ राजा का गंगा को भारत में लाने का वर्णन। दे० (छ-३३६)

भानुप्रताप—विजावर नरेश, महाराज छत्रसाल के वंशज, सं० १९०६ के लगभग वर्तमान, प० लक्ष्मीप्रसाद के आश्रयदाता थे। दे० (च-८४)

भारत कवितावली—सबलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १९१३, लि० का० सं० १९१३, वि० महाभारत की कथा का वर्णन। दे० (छ-३९ के)

भारत-दर्पण—मनसाराम पांडे कृत, लि० का० सं० १८९४, वि० महाभारत की संक्षिप्त कथा का वर्णन। दे० (च-९१)

भारत वार्तिक—सबलसिंह (प्रधान) कृत, लि० का० सं० १९१५, वि० महाभारत का वर्णन। दे० (छ-३९ एम)

भारत विलास—द्विजराज कवि कृत, लि० का० सं० १७९६, वि० महाभारत की कथा का वर्णन। दे० (घ-३८)

भारतशाह—दीवान सावंतसिंह के पौत्र, बिजना (बुंदेलखंड) के जागीरदार, १७९७ के लगभग वर्तमान थे।

ऊषा अनिरुद्ध की कथा दे० (छ-१४ ए)

हनुमान विरदावली दे० (छ-१४ बी) (ज-२५)

भारत संगीत—मधुजन कृत, लि० का० सं० १८८१, वि० गान विद्या का वर्णन। दे० (छ-६७ बी)

भारत सार—लाल कवि कृत, लि० का० सं० १९१२, वि० विराट, वन और उद्योग पर्व की कथा का वर्णन। दे० (छ-१८८)

भारत सावित्री—सबलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १९१२, लि० का० सं० नहीं, वि० कौरव पांडवों की उत्पत्ति का वर्णन। दे० (छ-३९ जे)

भारती—उप० भारतीचंद, ओरछा नरेश, सं० १८३२ के लगभग वर्तमान।

रसश्रृंगार दे० (छ-१३)

भारत सार भाषा—खेमराम कृत, लि० का० सं० १८८५, वि० महाभारत की संक्षिप्त कथा का वर्णन। दे० (घ-८२)

भाव चंद्रिका—मोहनराम मिश्र कृत, नि० का० सं० १८५१, लि० का० सं० १९२६, वि० गीत गोविंद का भाषानुवाद। दे० (च-७२)

भावन—उप० भैय्या त्रिलोकीनाथ सिंह देव, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, अयोध्या-नरेश महाराज मानसिंह के भतीजे थे।

भक्ति विनयावलि दे० (ज-२८)

भावना पचीसी—चंदहित कृत, वि० राधाकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (ज–३६ सी)

भावना पचीसी—चंदलाल कृत, वि० राधा कृष्ण के चरित्र का वर्णन। दे० (ज–४३ जे)

भावना-प्रकाश—सुदरि कुँवरि कृत, नि० का० स० १८४६, वि० व्रज की नित्य-विहार लीला का वर्णन। दे० (ख–१०४)

भावनामृत कादम्बिनी—युगलमजरी कृत, लि० का० सं० १८६३, वि० भक्तों का वर्णन तथा राम सीता का विहार-वर्णन। दे० (छ–३४६)

भावना सत—कृपानिवास कृत, वि० राम भजन की दिन-चर्या। दे० (छ–२७६ डी)

भावना सुबोधनी—चन्द्रलाल कृत, लि० का० सं० १८६६, वि० राधा कृष्ण के विहार का वर्णन। दे० (ज–४३ ई)

भावप्रकाश—गिरधर भट्ट कृत; नि० का० सं० १६१२, लि० का० सं० १६४०, वि० संस्कृत वैद्यक भावप्रकाश का भाषानुवाद। दे० (छ–३८ सी)

भावप्रकाश—संतसिंह कृत; नि० का० सं० १८८७, लि० का० सं० १८८८, वि० उत्तर कांड पर टीका। दे० (ज–२८२ जी)

भावप्रकाश पंचाशिका—वृन्द कवि कृत, नि० का० सं० १७४३, लि० का० सं० १६५३, वि० शृंगार रस का वर्णन। दे० (ज–३३० ए)

भावप्रकाशिनी टीका—संतसिंह कृत, नि० का० सं० १८८१, लि० का० सं० १८६०, वि० संपूर्ण रामायण पर टीका; इसी नाम से उत्तर कांड की भी टीका है। दे० (ङ–७८) (ज–२८२ ए)

भाव-विलास—कवि देव (देवदत्त) कृत; लि० का० सं० १८५७, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६०५, वि० अलंकार और नायिका भेद का वर्णन। दे० (घ–४१) (ज–६४ एफ)

भावसिंह—बूँदी के महाराज हाडा सुरजन राव के पुत्र, स० १७०० के लगभग वर्तमान; मतिराम कवि के आश्रयदाता। दे० (घ–६७)

भावार्थ-चंद्रिका—मनियारसिंह कृत, नि० का० सं० १८४२, लि० का० स० १८५६, वि० शिव-स्तोत्र महिम्न का भाषानुवाद। दे० (घ–४७)

भाषा ज्योतिष—शंकर कवि कृत, लि० का० सं० १६४४, वि० ज्योतिष। दे० (छ–३२८ ए)

भाषा ज्योतिषसार—कृपाराम कृत; नि० का सं० १७६२, लि० का० स० १६०६, वि० लघुजातक संस्कृत का भाषानुवाद। दे० (छ–१८२)

भाषा पिंगल—चिंतामणि त्रिपाठी कृत, लि० का० सं० १६३० के लगभग, वि० पिंगल। दे० (ज–५०)

भाषा भरण—वैरीसाल कृत; नि० का० सं० १८२५, लि० का० सं० १८२८, वि० अलंकार वर्णन। दे० (छ–१३२) (ज–१३)

भाषा भागवत द्वादशस्कंध—देवीदास कृत; लि० का० सं० १८४६; वि० भागवत के १२वें स्कंध का भाषानुवाद। दे० (ङ–८३)

भाषा भागवत समूल एकादशस्कंध—हरिदास ब्राह्मण कृत, नि० का० सं० १८१३, लि० का० सं० १८२०, वि० भागवत के एकादशस्कंध का भाषानुवाद। दे० (ङ–५५)

भाषा भूषण—राजा जसवंतसिंह कृत; नि० का० स० १७१७, लि० का० सं० १८४२; वि० अलं-

कार व नायिका भेद वर्णन। दे० (ग-४७) (छ-१७६) (छ-२५१) (प-१४४)

भाषा भूषण की टीका—नारायणदास कृत; लि० का० सं० १९४३; वि० भाषा-भूषण पर टीका। दे० (छ-३८ बी)

भाषा भूषण सटीक—हरिदास कृत; नि० का० सं० १८२४; *लि० का० सं० १८६७; वि० भाषा* भूषण पर टीका। दे० (छ-४७)

भाषामृत (भागवत गीता की टीका)—भगवान दास कृत; नि० का० सं० १७५६; लि० का० सं० १८६६; वि० रामानुजाचार्य के गीता भाष्य का भाषानुवाद। (क-६६)

भाषा रामायण—(चंद) कपूरचंद कृत; नि० का० सं० १७००; वि० संक्षेप में रामायण की कथा। द० (प-६६)

भाषा लीलावती—मोलानाथ कृत; वि० संस्कृत लीलावती का भाषानुवाद। दे० (छ-१६)

भाषा वर्षोत्सव निर्णय—प्रियादास कृत; लि० का० सं० १९२३; वि० राधावल्लभ संप्रदाय के वार्षिक उत्सवों का निर्णय। द० (अ-२३१ ई)

भाषा सप्तशती—भवानसिंह (प्रधान) कृत; नि० का० सं० १९१७; लि० का० सं० १९१७; वि० दुर्गा सप्तशती का अनुवाद। दे० (छ-७६ एल)

भाषासुबोधिनी—चन्द्रलाल कृत; लि० का० सं० १८६६; वि० राधा कृष्ण का विहार तथा राधावल्लभी संप्रदाय का उपदेश। द० (अ-४३ ६)

भाषा हितोपदेश—कोविद कवि कृत; लि० का० सं० १८७७; वि० संस्कृत हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (छ-६२ बी)

भाष्य प्रकाश—कृपाराम कृत; नि० का० सं० १८०८; वि० रामानुजाचार्य के गीता भाष्य के अनुसार भाषानुवाद। दे० (क-४६)

भिखारीदास—उप० दास; हिंदी के बहुत बड़े कवि; जाति के कायस्थ; बुंदेलखंड निवासी; सं० १७६६ के लगभग वर्तमान; पहले ये बुंदेलखंड के कुँवर हिंदूपति के और पश्चात् काशी-नरेश महाराज उदितनारायणसिंह के आश्रित थे।

छंदार्णव द० (प-३१)

रस प्रकाश दे० (प-३२)

शृंगार निर्णय दे० (प-४६)

काव्य निर्णय दे० (प-६१)

भिखारीदास—प्रतापगढ़ (अवध) निवासी; जाति के कायस्थ; सं० १७६१ के लगभग वर्तमान।

शतरंज शतिका दे० (अ-२७ ए)

विष्णु पुराण भाषा दे० (अ-२७ बी)

रस सारांश दे० (क-२१)

भिषज प्रिया—सुदर्शन कृत; नि० का० सं० १७२६; लि० का० सं० १९११; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८७१; वि० वैद्यक चिकित्सादि वर्णन। दे० (ख-८७) (छ-११२)

भीमजू—सं० १८७३ के लगभग वर्तमान; जाति के कायस्थ; मकरन्द (कानपुर) निवासी; इनके किसी पूर्वज को दिल्ली के बादशाह ने 'कटारमल' की उपाधि दी थी।

गणितसार दे० (छ-१३७)

भीमसिंह—जोधपुर नरेश; राज्य का० सं० १८४६-१८६०; इनके राजत्व काल में कभी बाहर के आक्रमण नहीं हुए और न कभी अकाल

पड़ा, ये महाराज मानसिंह के चचेरे भाई थे जो इनके पश्चात् गद्दी पर बैठे, भंडारी उत्तमचंद के आश्रयदाता थे, महाराज विजयसिंह के पौत्र, गद्दी पर बैठने के उपरान्त इन्होंने अन्य राजकुमारों के साथ शेरसिंह को भी मरवा डाला। दे० (ग-१८) (ग-१६)

भीमसिंह—उदयपुर के राणा, स० १८७४ के लगभग वर्तमान, राय चिरजीलाल और उनके पुत्र विनोदीलाल के आश्रयदाता। दे० (ग-१०२)

भीमसिंह—जयपुर के जागीरदार, स० १८५३ के लगभग वर्तमान; कवि राधाकृष्ण के आश्रयदाता। दे० (ज-२३३)

भीष्म (कवि)—काशी नरेश महाराज बलवंतसिंह (बरिवंडसिंह) के समकालीन और आश्रित थे।

बालमुकुंद लीला दे० (घ-१२)

भीष्म-पर्व—सबलसिंह चौहान कृत, नि० का० सं० १७१०; लि० का० सं० १८३७, वि० महाभारत भीष्म पर्व का भाषानुवाद। दे० (छ-२२५ ए)

भुवन (भावन)—उप० भैया त्रिलोकीनाथ; अयोध्या के महाराज मानसिंह के भतीजे, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान थे।

शक्ति चिंतामणि दे० (ज-२८)

भुवन दीपक—(र० अज्ञात); लि० का० सं० १६७१; वि० ज्योतिष। दे० (क-१००)

भूगोल सार—ओंकार भट्ट कृत; वि० ज्योतिष। दे० (ज-२१६)

भूधरमल—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं; ये जैन मतावलंबी थे।

भूपाल पचीसी दे० (क-१०२)

भूपति—गोविंदपुर (पंजाब) निवासी, सं० १८२१ के लगभग वर्तमान; पटियाला नरेश महाराज कर्मसिंह के आश्रित थे।

सुनीति प्रकाश दे० (ङ-२)

भूपति—सं० १७४४ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ; इटावा निवासी; कंगल भट के वंशज, दामोदर गुसाँई के पुत्र, गोस्वामी मेघश्याम के शिष्य थे, लेखराज के पुत्र; विट्ठलदास के पौत्र थे।)

भागवत दशमस्कंध दे० (ग-११५).

रामचरित्र रामायण दे० (छ-१३८)

नारायणसिंह—सं० १८५० के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

भक्तिशाल दे० (ज-२६ एक)

वर्णमाला दे० (ज-२६ दो)

वेद रामायण दे० (ज-२६ तीन)

भूप भूषण—जैकेहरि कृत नि० का० स० १८६०, वि० राजनीति वर्णन। दे० (घ-१७७)

भूपसिंह—सं० १८६९ के लगभग वर्तमान, ओड़छा नरेश राजा विक्रमाजीत (लघुजन) के आश्रित; इन्होंने लघु सतसइया की टीका की। दे० (छ-६७ ए)

भूपाल चौबीसी—भूधरमल कृत, वि० भूपाल कृत संस्कृत ग्रंथ का भाषानुवाद। दे०(क-१०२)

भूलसिंह (मुनि)—ब्रह्मराय मल्ल के पिता; सं० १६३० के लगभग वर्तमान; रणथंभोर निवासी; जैन मतावलंबी। दे० (क-१२४)

भूषण (कवि)—जाति के कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण, तिकवाँपुर (का० पुर) निवासी, प्रसिद्ध मतिराम के भाई; शिवाजी के दरबारी कवि,

ये औरंगजेब, छत्रसाल (पन्ना-नरेश) और शिवा जी के दरबार में भी रहते थे, स० १७३० के लगभग वर्तमान।

शिवराज भूषण दे० (घ-५८)

भूषण हजारा दे० (ज-५०) (क-४०)

(छ-१५१)

भूषणदास—मदन कवि कृत, नि० का० स० १८०१, लि० का० स० १८८४, वि० अलंकार ग्रंथ। दे० (च-६६) (छ-५६ सी)

भेदप्रकाश—चन्द्र कवि कृत, नि० का० सं० १६०४, लि० का० स० १६१२, वि० संस्कृत मुद्राराक्षस का हिंदी अनुवाद। दे० (छ-१४४)

भेदभास्कर—जनकमंदनी दास कृत, लि० का० स० १६१६, वि० वेदांत (आत्मा और ब्रह्म का वर्णन)। दे० (छ-२११)

भैरवप्रसाद—हरिदास के पिता, जाति के कायस्थ, पन्ना निवासी थे। दे० (छ-४६)

भैरववल्लभ—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

युद्ध विलास दे० (ज-२४)

भोज—धार-नरेश, स० १०८० के लगभग वर्तमान; राजा बीसलदेव के श्वसुर। दे० (क-६०)

भोज (भोजराज)—सं० १८६७ के लगभग वर्तमान; राजा विजयबहादुर और राजा रतनसिंह (चरखारीवाले) के आश्रित।

भोज भूषण दे० (छ-१५०) (घ-६५)

व्यंग्य विनोद दे० (छ-१५ बी)

भोजनविलास—प्रयागदास कृत, लि० का० स० १८८५, लि० का० सं० १६१२, वि० भोजन बनाने की रीति का वर्णन। दे० (छ-८६ बी)

भोजनाष्टक—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० श्रीकृष्णलीला वर्णन। दे० (ज-१२१ डी)

भोजभूषण—भोज (भोजराज) कवि कृत, लि० का० स० १६१८, दूसरी प्रति का लि० का० स० १६२५, वि० अलंकार। दे० (छ-१५ ए) (घ-६५)

भोजराज—बुन्देलखंड निवासी; चरखारी-नरेश महाराज रतनसिंह विजयबहादुर और विक्रमाजीत के आश्रित; सं० १८५७ के लगभग वर्तमान।

भोज भूषण दे० (छ-१५ ए) (घ-६५)

व्यंग्य विनोद दे० (छ-१५ बी)

रसिक विलास दे० (घ-५६)

भोसल (भोसल) मकरंदशाह—नागपुर नरेश, भोंसला मरहठा; स० १७०० के लगभग वर्तमान, चिंतामणि त्रिपाठी के आश्रयदाता। दे० (क-४०) (क-१२७)

भोरलीला—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० राधाकृष्ण का प्रातःकालिक विहार वर्णन। दे० (ज-११४)

भोलानाथ—प्रजापति दीक्षित के पुत्र, बुंदेलखंड निवासी, बेलाहारी (राज्य छतरपुर) के जागीरदार, जाति के ब्राह्मण; इनके पाँच भाई थे।

काव्य कौमुदी दे० (छ-१६)

भ्रम-निवारण—निस्यानंद कृत, वि० योग की क्रियाओं का वर्णन। दे० (घ-४१)

भ्रम-भंजन—भगवोष कृत, नि० का० सं० १८८१, वि० साहित्य का खंडन मंडन। दे० (ज-१८६)

भ्रमर गीता—कालिदास कृत, वि० गोपियों से ऊधो का संदेश वर्णन। दे० (ज-१४४)

मंगदसिंह—जयतपुर (बुंदेलखंड) के राजा, सं० १७१६ के लगभग वर्तमान, मडन के आश्रयदाता थे। दे० (छ–७२)

मंगल मिश्र—जाति के ब्राह्मण, सं० १८७९ के लगभग वर्तमान; महाराज कुमार शिवदान-सिंह के आश्रित।

समरान्त सार दे० (ज–१८८)

मंगल रामायण—अन्य नाम पार्वतीमंगल; गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १९०६, वि० उमा-महेश विवाह वर्णन। दे० (ज–३२३ एफ़)

मंगल लतिका—रामसखे कृत, लि० का० सं० १९२१; वि० राम जानकी का ध्यान वर्णन। दे० (ज–२५७ ए)

मंगल शब्द—कबीर कृत; वि० ईश्वर प्रार्थना। दे० (ज–१४३ वाई)

मंगल सभा—कबीरदास कृत, वि० वंदना। दे० (ज–१४३ वाई)

मंडन—सं० १७१६ के लगभग वर्तमान· जैतपुर (बुंदेलखंड) निवासी, राजा मगदसिंह के आश्रित थे।

जनक पचीसी दे० (छ–७२)

मंसाराम पाँड़े—सं० १८६४ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

भारत प्रबंध दे० (च–६६)

मकरंद—सं० १८१४ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

जगन्नाथ माहात्म्य दे० (ज–१८२)

मकरंद—ये कोई राजा थे, सं० १७२६ के लगभग वर्तमान, जन अनाथ भाट के आश्रयदाता थे। दे० (ज–१३१)

मकरंद पाँड़े—ग्वालियर निवासी, प्रसिद्ध गायनाचार्य तानसेन के पिता, स० १७१७ के पूर्व वर्तमान। दे० (ख–१२)

मकरंद शाह (भोंसला)—नागपुर नरेश, सं० १७०७ के लगभग वर्तमान, चिंतामणि त्रिपाठी के आश्रयदाता थे। दे० (घ–३६) (क–४०) (क–१२७)

मकरध्वज की कथा—मेघराज प्रधान कृत; लि० का० सं० १७८१, वि० हनुमान के पुत्र मकरध्वज की कथा का वर्णन। दे० (छ–७४ बी)

मकुंददास—उप० जन मकुंद; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

भँवर गीता दे० (ज–१८४) (ग–१०४ दो)

मखौना खंड चौंतीसा—कबीर कृत, वि० आत्मज्ञान वर्णन। दे० (ज–१४३ एन)

मच्छ—मारवाड़ निवासी, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रघुनाथ रूपक दे० (छ–२८९)

मजलिस मंडन (छूटक दोहा)—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत; वि० शृंगार रस के दोहे। दे० (ख–११५)

मणिनाथ—गोकुल और गोपीनाथ के समकालीन थे, बनारस निवासी, राजा उदितनारायण सिंह के आश्रित थे। दे० (ङ–६५)

मणिमंडन मिश्र—गौड़ छत्री, राजा केशरी सिंह के आश्रित; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

पुरंदर माया दे० (छ–२६१)

मतचंद (मतचंद्रिका)—फतेहसिंह कृत; नि० का० सं० १८१३, लि० का० सं० १९४३; वि०

फारसी ग्रंथ के आधार पर ज्योतिष वर्णन। दे० (ज-८०) (छ-३१ ए)

मतिराम—इनके तीन भाइ चिंतामणि, भूषण और नीलकंठ (जटाशंकर) और थे; जाति के कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण; तिकवाँपुर (कानपुर) निवासी, स० १७०७ के लगभग वर्तमान; बादशाह औरंगजेब और बूँदी नरेश भाऊसिंह के दरबारी कवि थे।

रसराज दे० (क-४०) (छ-१६६ ए) (ख-१७)

ललित ललाम दे० (घ-६७)

साहित्य सार दे० (छ-१६६ बी)

लक्षण शृंगार दे० (छ-१६६ सी)

मतिराम सतसई दे० (ज-१९६)

मतिराम की सतसई—मतिराम कृत; वि० शृंगार रस की कविता। दे० (ज-१९६)

मथुरानाथ (शुक्ल)—सं० १८३५ के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण मालवीय; बनारस निवासी; राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद सी० एस० आई० के प्रपितामह राजा डाल चंद के आश्रित थे; जन्म का० स० १८१२ और मृत्यु का० स० १८७०; ब्रजराज के पुत्र थे।

विरह बतीसी दे० (ज-१९५ ए)

चौसार चक्र दे० (ज-१९५ बी)

सूत्रार्थ पातंजलि भाषा दे० (ज-१९५ सी)

पातंजलि भाषा दे० (ज-१९५ डी)

पातंजलि टीका दे० (ज-१९५ ई)

त्रिवेद पचासा दे० (ज-१९५ एफ)

चूड़ामणि शकुन दे० (ज-१९५ जी)

मदनपाल—इन के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

निघंटु भाषा दे० (ज-१७६)

मदनसिंह—पजनसिंह के पिता; जाति के कायस्थ थे। दे० (छ—८४)

मधुअरिदास—इष्टकापुरी (इटावा) निवासी; जाति के माथुर चौबे ब्राह्मण; स० १८१२ के लगभग वर्तमान।

रामाश्वमेध दे० (ख—८७)

मधुकर—उप० लक्ष्मणशरण, अयोध्या निवासी और महन्त थे, २० वीं शताब्दी में वर्तमान।

रामलीला विहार नाटक दे० (ज—१६५)

मधुकरशाह—ओड़छा नरेश, देवीसिंह के पूर्वज राजा इन्द्रजीतसिंह के पिता, सं० १६४८ के लगभग वर्तमान, केशवदास के आश्रयदाता; मोहनदास के पूर्वज इन के पुरोहित थे। दे० (क-५२) (घ-८६) (च-७२) (क-९५) (छ—२८) (छ—५८) (ज—१९९)

मधुकरसाह—फफूँद (इटावा) के जागीरदार; कृष्णसिंह के पिता; सं० १६७७ के पूर्व वर्तमान। दे० (ङ—३७)

मधुप्रिया—पजनेश कृत; टीकाकार अज्ञात; लि० का० सं० १९०५; वि० श्रीराधा जी का नख शिख वर्णन। दे० (घ—६१)

मधुमालती री कथा—चतुर्भुजदास कृत; लि० का० स० १८३७; वि० मधु और मालती की प्रेम रस की कथा का वर्णन। दे० (ग—४४)

मधुसूदनदास—स० १८३२ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रामाश्वमेध दे० (ज-१८१)

मनचित—बाँदा निवासी; जाति के ब्राह्मण; सं० १७८५ के लगभग वर्तमान।

दानलीला दे० (छ—७१)

मनजू—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

हनुमनाटक दे० (छ—२६२)

मन बतीसी और गुरु महिमा—जगन्नाथदास कृत; नि० का० सं० १७६८; लि० का० सं० १८३५; वि० गुरु प्रशंसा और मनुष्य स्वभाव वर्णन। दे० (छ–२६६)

मनबोध—सं० १८४१ के लगभग वर्तमान; जाति के मालवीय ब्राह्मण, इलहापुर (मिर्जापुर) निवासी; रामदयाल के पुत्र थे।

कम मंजन दे० (ज–१८६)

मनराखनदास—जाति के कायस्थ; हरनारायण दास के पुत्र; बाँदा निवासी; सं० १८६१ के लगभग वर्तमान।

दंशोनिधि विनक दे० (ज—१८७)

मनविनोदलीला—ध्रुवदास कृत; वि० राधा का कृष्ण से मान करने का वर्णन। दे० (ज–७३ एफ)

मनविरक्त करन गुटकासार—चरणदास कृत; वि० संसार से मन को विरक्त करने की विधि; भागवत के एकादश स्कंध के आधार पर दत्तात्रेय द्वारा वर्णित। दे० (छ—१४७ बी)

मनशिक्षा (लीला)—ध्रुवदास कृत, वि० ईश्वर में मन को लगाने की शिक्षा का वर्णन। दे० (क–१८) (ज—७३ ई)

मनशृंगार—ध्रुवदास कृत; वि० राधाकृष्ण का प्रेम-विहार वर्णन। दे० (क—१६)

मनियारसिंह—श्यामसिंह के पुत्र; काशी निवासी; कृष्ण कवि के शिष्य; पंडित आरामचंद्र के सेवक; सं० १८४३ के लगभग वर्तमान।

भाषामहिम्न दे० (ग—४३)

मनीराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

आनंद मंगल दे० (छ—२६०)

मनोत्सव—अन्य नाम पैथमनोत्सव या नैनसुख ग्रंथ; नयनसुख कृत; नि० का० सं० १६४६; वि० वैद्यक। दे० (क—३४)

मनोहर—सं० १७५७ के लगभग वर्तमान; इन के विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

राधारमण रससागर टीका दे० (ज–१६१)

मनोहर खांडेलवाल—सं० १७७५ के लगभग वर्तमान, जैनमतावलंबी, साँगानेर निवासी थे।

धर्मपरीक्षा दे० (क—१२२)

मनोहरदास—सं० १८५७ के लगभग वर्तमान; ये सेवक जाति के चारण थे और जोधपुर नरेश महाराज मानसिंह के आश्रित थे; इनको गुरु आयुस लाडलूनाथ ने एक लाख रुपया और एक हाथी इनाम में दिया था तथा एक गांव महाराज की ओर से भी मिला था।

जन आभूषण चंद्रिका दे० (ग—१३)

पूनचरित्र दे० (ज—१६२)

मनोहरदास—लालदास के पिता; मालवी (मालवा) निवासी थे। दे० (ज—१७०)

मनोहरदास (निरंजनी)—सं० १७१७ के लगभग वर्तमान, ये कोई निरंजनी संप्रदाय के साधु थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

षट प्रश्नी दे० (ख—५८) (छ—२६३ डी) (घ—१५२)

शत प्रश्नोत्तरी दे० (घ—८३) (छ—२६३ सी)

ज्ञानमंजरी दे० (छ—२६३ ए)
वेदांत परिभाषा दे० (छ—२६३ बी)
ज्ञान (वचन) चूर्णिका दे० (छ—२६१ ई)
(घ—८४)

मयलाल—ये कवि कुलपति मिश्र के प्रपितामह तारापति के पुत्र थे, आगरा निवासी, माथुर ब्राह्मण थे।

वंश वृक्ष—

परशुराम
└—तारापति
  └—मयलाल
    └—हरीकृष्ण
      └—परशुराम
        └—कुलपति

मरदान रसार्णव—अन्य नाम रस रसार्णव, सुख देव कृत, नि० का० सं० १७५७, लि० का० सं० १८५६, वि० नायिका भेद। दे० (घ—१२४) (ज—११)

मरदानसिंह—डौंड़ी (अवध) के ताल्लुकेदार, सं० १७५७ के लगभग वर्तमान, कवि सुखदेव मिश्र के आश्रयदाता थे, इन्हीं के नाम पर कवि ने मरदान रसार्णव बनाया। दे० (ज—११) (घ—१२४)

मलिकमुहम्मद जायसी—जायस निवासी, अशरफ जहाँगीर तथा शेख बरहान के शिष्य, दिल्ली के बादशाह शेरशाह सूर के आश्रित, सं० १५९७ के लगभग वर्तमान, जाति के मुसलमान थे।

अखरावट दे० (ग—१०८)
पद्मावति दे० (क—५४) (ख—२४) (ज—२५) (ख—५१)

मलूकचंद—ब्रजन कवि के पिता, दलीपनगर (इटावा) निवासी, सं० १७८७ के पूर्व वर्तमान। दे० (ख—६९) (छ—५६)

मलूकदास—सेवादास के गुरु। दे० (ज—२८८)

मलूकदास—कड़ा मानिकपुर निवासी, ये एक प्रसिद्ध साधु थे, इनके वंशज अभी तक सिराथू कड़ा के निकट वर्तमान हैं, प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन, जाति के खत्री थे।

भक्त वत्सल दे० (ज—८०) (ज—१८५ ए)
भक्त विरदावली दे० (छ—१६४ ए)
गुरु प्रताप दे० (छ—१६४ बी)
पुरुष विलास दे० (छ—१६४ सी)
अलख बानी दे० (छ—१६४ डी)
रतन खान दे० (ज—१८५ बी)

मलूकदास—भाऊ कवि के पिता, जैनमतावलम्बी। दे० (क—११४)

मल्हारराव—सं० १८१५ के लगभग वर्तमान, यशोदानंदन शुक्ल मालवीय के परिचित व्यक्ति थे, संभव है कि आश्रयदाता भी हों। दे० (ज—१३४)

महापति मिश्र—कम्पिला (फर्रुखाबाद) निवासी, मजनाथ के पिता, सं० १७१२ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ—१५२)

महाभारत—सबलसेन कृत, लि० का० सं० १८७०, वि० महाभारत के आदि, उद्योग, भीष्म, द्रोण और गदा पर्व का भाषा पद्यानुवाद। दे० (ज—१६७)

महेंद्रसिंह—पटियाला नरेश, राज्य का० सं० १९१९-१९३३, मृगेंद्र कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ—५०)

महाभारत की कथा—विष्णुदास कृत, नि० का० सं० १४९२, लि० का० सं० १८२४, वि० महाभारत की कथा का अनुवाद। दे० (छ—२४८)

महाभारत दर्पण—गोकुलनाथ, गोपीनाथ और मणिदेव (तीनों ने मिलकर बनाया) कृत, वि० महाभारत और हरिवंश पुराण का भाषानुवाद। दे० (ङ—६५)

महाभारत भाषा—सबलसिंह चौहान कृत; लि० का० सं० १८५२; वि० महाभारत का भाषानुवाद। दे० (ङ—६६)

महाभारत भाषा—नौ कवियों (रामनाथ, अमृतराय, चंद्र, कुवेर, निहाल, हंसराज मंगलराम, उमादास और देवीदित्तराय) कृत; वि० महाभारत के १५ पर्वों का भाषानुवाद। दे० (ङ—६७)

महालक्ष्मी की कथा—कृष्णदास कृत; नि० का० सं० १७५३. वि० कार्तिक की कृष्ण अष्टमी की पूजा-कथा। दे० (छ—६४ बी)

महालक्ष्मीजू के पद—गंगादास कृत, वि० महालक्ष्मीजी की स्तुति। दे० (छ—२५२ सी)

महीपनारायणसिंह—काशी नरेश, सं० १८३२ के लगभग वर्तमान, लाल कवि के आश्रयदाता थे। दे० (घ—११४)

महेश—इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

हम्मीररासो दे० (ख—८२)

माखनचोर लहरी—वृंदावनदास कृत वि० श्री कृष्ण की माखनचोरी लीला का वर्णन। दे० (छ—२५० डी)

माखन लखेरा—सं० १८०७ के लगभग वर्तमान; पन्ना (बुंदेलखंड) निवासी।

दानचौंतीसी दे० (छ—६८)

माखनलाल—कुलपहाड़ (हम्मीरपुर) निवासी; जाति के चौबे ब्राह्मण थे।

श्री गणेश जू की कथा दे० (छ—६९ ए)

सत्यनारायण की कथा दे० (छ—६९ बी)

माखोनाखंड चौंतीसा—कबीरदास कृत; वि० ज्ञान, भक्ति और नीति का वर्णन। दे० (ज—१४३ एन)

माझभक्तमाल—अन्य नाम रुक्माल; ब्रजजीवनदास कृत; वि० भक्तों का माहात्म्य वर्णन। दे० (ज—३४ आई)

माणिकलाल—प्रयागीलाल (तीर्थराज) के पिता; इंद्रजीतलाल के पुत्र; सं० १८३० के पूर्व वर्तमान। दे० (च—५१)

माधव—सं० १६५९ के लगभग वर्तमान, बादशाह अकबर के समकालीन थे।

विनोद सागर दे० (च—६८)

माधवदास—भगवतिरसिक के पिता; सं० १६१७ के पूर्व वर्तमान। दे० (क—३२)

माधवदास—शायद ये जोधपुर नरेश विजयसिंह के आश्रित थे; जाति के कायस्थ; नागौद (मध्य भारत) निवासी; १८ वीं शताब्दी में हुए।

नारायण लीला दे० (ज—१७७ ए)

मुहूर्तचिन्तामणि दे० (ज—१७७ बी)

करुणाबत्तीसी दे० (ख—७८)

माधवदास (चारण)—दधिवरिया जाति के चारण, सं० १६७५ के लगभग वर्तमान; मारवाड़ निवासी।

गुणराय रासो तथा रामरासो दे० (ख—८०)

माधवदास—कवि केशवराज के पिता, सं० १७५३

के पूर्व वर्तमान, बुंदेलखंड निवासी। दे० (च—१०)

माधव निदान—चन्द्रसेन कृत, लि० का० स० १७२६, वि० वैद्यक माधवनिदान का भाषा नुवाद। दे० (ज-४४)

माधवनिदान भाषा—द्वारिकाप्रसाद कृत, लि० का० स० १६२१, वि० चिकित्सा ग्रंथ संस्कृत माधवनिदान का भाषानुवाद। दे० (छ-११६)

माधवप्रसाद—जौनपुर निवासी, मिरजापुर और बनारस में कुछ काल तक रहे, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

काशी यात्रा दे० (ज-१७८)

माधवराय—मेड़ता (मारवाड़) निवासी, कायस्थ माथुर, जोधपुर नरेश अभयसिंह के आश्रित, महाराज ने इनको किसी अपराध पर कैद कर दिया, तब इन्होंने भगवती की स्तुति की और कहा जाता है कि इनकी बेड़ी उसीके प्रभाव से कट गई, स० १७३५ के लगभग वर्तमान।

शक्ति भक्ति प्रकाश दे० (ग-४३)

शंकर पचीसी दे० (ज-७२)

माधवराम कुंडली दे० (ज-१७६)

माधवराम कुंडली—माधवराम कृत, वि० अनेक देवी देवताओं की स्तुति। दे० (ज-१७६)

माधवविनोद नाटक—सोमनाथ कृत, नि० का० स० १८०६, लि० का० सं० १६००, वि० माधव और मालती की प्रेम कहानी। दे० (छ-४३)

माधवविलास शतक—रघुराम नागर कृत। दे० (ज-२६८)

माधवानल कामकंदला—आलम कृत, नि० का० सं० १६४०, लि० का० स० १८५६, वि० माधवानल और कामकंदला की प्रेम-कथा। दे० (ट-६)

माधवानल की कथा—हरिनारायण कृत, नि० का० स० १८१२, वि० माधवानल और कामकंदला की प्रेम कथा। दे० (च-६१)

माधुरीदास—ब्रज निवासी, स० १६८७ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रामारमण विहार माधुरी दे० (ग-१०४एक)

दान माधुरी दे० (छ-१६३)(ग-१०४ सात)

वंशीवट विलास माधुरी दे० (ग-१०४ तीन)

मानलीला दे० (ज-१८०) (ग-१०४ आठ)

उत्कंठा माधुरी दे० (ग-१०४ चार)

वृंदावन केलि माधुरी दे० (ग-१०४ पाँच)

वृंदावन विहार माधुरी दे० (ग-१०४ छः)

छप्पय दे० (ग-१०४ नौ)

माधुरी प्रकाश—कृपानिवास कृत, वि० सीताराम की शोभा का वर्णन। दे० (छ-२३६ सी)

माधोसिंह— स० १८३५ के लगभग वर्तमान, नरवर (ग्वालियर) के राजा, अर्जुन कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ-१३१)

मान—उप० हनुमान, स० १८५२-के लगभग वर्तमान, चरखारी नरेश राजा विक्रमशाहि के आश्रित, खरगवा (राज्य छतरपुर) निवासी, ये पदीश्रम ब्रजलाल के पिता थे।

हनुमान पंचक दे० (छ-७० ए)

हनुमत पचीसी दे० (छ-७० बी)

हनुमान पचीसी दे० (छ-७० सी),

नखशिख शतक दे० (छ-७० डी)

हनुमत शिख नख दे० (छ–७० ई)
नीति निधान दे० (छ–७० एफ)
समर सार दे० (छ–७० जी)
नृसिंह चरित्र दे० (छ–७०एच) (ङ–४५)
नृसिंह पचीसी दे० (छ–७० आई)
अष्टयाम दे० (छ–७० जे)
अमर प्रकाश दे० (च–८६)(घ–७४)(ङ–१६)

मानदास–उप० रामकृष्ण चौबे; स० १८०७ के लगभग वर्तमान, पन्ना नरेश अमानसिंह और हृदयशाहि के समय में कालिंजर के किलेदार थे; जाति के चौबे ब्राह्मण, पीछे साधु हो गए और पुरुषोतमदास के शिष्य हुए।

कृष्ण विलास दे० (छ–१०० ए) (छ–१९५)
विनय पचीसी दे० (छ–१०० बी)
स्फुट पद दे० (छ–१०० सी)
स्फुट कवित्त दे० (छ–१०० डी)
रुक्मिणी मगल दे० (छ–१०० ई)
रास पचाध्यायी दे० (छ–१०० एफ)
नायिका भेद के दोहा दे० (छ–१०० जी)
रुकमिणी मंगल दूसरा दे० (छ–१०० एच)
भ्रमनाम की कथा दे० (छ–१०० आई)
अवतार चेतावनी दे० (छ–१०० जे)
अष्टक दे० (छ–१०० के)
ग्वाल पहेली लीला दे० (छ–१०० एल)
रामकूट विस्तार दे० (छ–१९५ बी)

मानदास भट्ट–प्रयागदास के पिता; बलरी (छतरपुर) निवासी; सं० १८६९ के पूर्व वर्तमान। दे० (ज–२२८)

मानपचीसी—गोपाल कवि कृत, वि० राधा का मान वर्णन। दे० (ज–९७ ए)

मानबत्तीसी–तिलोक कवि कृत; नि० का० सं० १७२९; वि० श्री राधा जी के मान का वर्णन। दे० (ग–६७)

मानमंजरी नाम माला–नंददास कृत; लि० का० सं० १८६३, वि० कोष। दे० (ज–२०८ सी)

मानमाधुरी–माधुरीदास कृत; वि० श्री राधा जी के मान का वर्णन। दे० (ग–१०४ आठ)

मानरस लीला–ध्रुवदास कृत; वि० राधा जी के मान का वर्णन। दे० (क–१३ दस)

मानलीला–ध्यानदास कृत, लि० का० सं०१९१३; वि० राधा का कृष्ण से रूठना। दे० (छ–१६० बी)

मानलीला–नंद व्यास कृत; वि० कृष्ण से राधा का मान करना। दे० (छ–३००ए)

मानलीला–माधुरीदास कृत; वि० श्रीकृष्ण से राधा का मान करना। दे० (ज–१८०)

मानविनोद–ध्रुवदास कृत; वि० श्रीकृष्ण से राधा का मान करना। दे० (छ–१५९ सी)

मानस पर प्रश्नावली–घनश्याम कृत वि०तुलसी कृत रामायण पर प्रश्नावली तथा शंकावली। दे० (ज–९०)

मानस मयंक–शिवलाल पाठक कृत; नि० का० सं० १८७५; लि० का० सं० १९२३, वि० रामचरित्र वर्णन। दे० (ङ–१०३)

मानस मार्तंड माला–युगुल माधुरी कृत; लि० का० सं० १९४६; वि० राम-नाम, राम-रूप, राम-लीला, उपासना, ज्ञान आदि का वर्णन। दे० (ज–३३५)

मानस हंस रामायण–सुखदेवलाल कृत; नि० का० सं० १७४९; लि० का० सं० १९४२; वि०

तुलसी कृत रामायण बालकांड पर टीका। दे० (ञ-२०८)

मानसिंह—जोधपुर नरेश, राज्य का० सं० १८६०—१९००, राजा भीमसिंह के मरने पर उनके चचेरे भाई मानसिंह गद्दी पर बैठे, इनको जालंधरनाथ के वरदान से जोधपुर का राज्य मिला, ये वाणीराम, गाढ़ूराम, मनोहरदास, उत्तमचंद और शम्भूदत्त जोशी के आश्रयदाता थे, कर्णसिंह के पिता थे, तखतसिंह के पश्चात गद्दी पर बैठे। दे० (ग-१८) (ग-३१) (ग-३३) (ञ-१६)

नाथचरित दे० (ग-३१) (ञ-१६२)
श्रीनाथ जी रा दूहा दे० (ग-३०)
राग सागर दे० (ग-७७)
नाथ प्रशंसा दे० (ग-७८)
कृष्ण विलास दे० (ग-२००)
महाराज मानसिंह जी की ख्यात दे० (ग-२०७)
नाथ जी की वाणी दे० (ग-२२३)
नाथ जी रा दूहा दे० (ग-२२४)
नाथ अर्चन दे० (ग-२२५)
नाथ कीर्तन दे० (ग-२२६)
नाथ महिमा दे० (ग-२२७)
नाथ पुराण दे० (ग-२२८)
नाथ संहिता दे० (ग-२३०)
राम विलास दे० (ग-२५६)
जलंधरनाथ जी का चरित्र ग्रंथ दे० (ग-२४)

मानसिंह—सं० १६६२ के लगभग वर्तमान, जाति के चौहान ठाकुर, पेसिंहरिगाँव (खेरी) निवासी, अंत में ये सपरिवार चंद्रगढ़ (बंगाल) में आ बसे थे।

अश्वमेध पर्व दे० (ञ-१८६)

मानसिंह—गुलाबसिंह के गुरु, नानकपंथी थे, सं० १८३५ के लगभग वर्तमान। दे० (ञ-१९०) (घ-७८)

मानसिंह—अन्य नाम प्रतापनारायण सेन (भाष), अयोध्या (फैजाबाद) नरेश, १९ वीं शताब्दी में वर्तमान, कवि रामनारायण के आश्रयदाता, भैया त्रिलोकीनाथ सिंह (भुवन) के पितृव्य। दे० (ञ-२५२) (छ-२८)

मानसिंह—विजयगच्छ निवासी, जैन मतावलंबी थे, इन्होंने ग्रंथ उदयपुर में लिखा था।

बिहारी सतसई सटीक दे० (ख-७४)

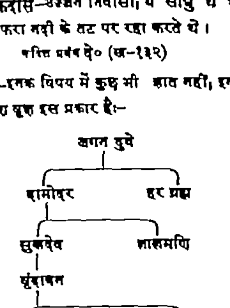
मानसिंह (अवस्थी)—भादरी ग्राम या गिरवान (बाँदा) निवासी, जाति के ब्राह्मण थे।

शालिहोत्र दे० (छ-७२)

मानिकदास—उज्जैन निवासी, ये साधु थे और सफरा नदी के तट पर रहा करते थे।

कवित्त प्रबंध दे० (ख-१३२)

मान्य—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, इनका वंश वृक्ष इस प्रकार है:—



रसनंद दे० (ञ-१८३)

मारकंडेय पुराण—दामोदरदास कृत; लि० का० सं० १८४७, वि० मारकंडे पुराण का भाषानुवाद। दे० (ग-६३)

मारकंडे मिश्र—सं० १८६६ के पूर्व वर्तमान, जाति के कान्यकुब्ज मिश्र ब्राह्मण थे।

चंडी चरित्र दे० (ज-१६४)

माला—उमादास कृत; नि० का० सं० १८६४; वि० पटियाला नरेश महाराज कर्मसिंह के मान्यवर साधु मनोहरदास की प्रशंसा। दे० (ङ-६४)

मित्र मनोहर (हितोपदेश)—वंशीधर कृत; नि० का० सं० १७७४, लि० का० सं० १६०५, वि० हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (छ-१२) (च-६४)

मिथिलाखंड—नवलसिंह (प्रधान) कृत; लि० का० सं० १६२७, वि० सीयस्वयंवर के समय मिथिला पुरी का वर्णन। दे० (छ-७६ बी)

मिहीलाल—वैष्णवदास के शिष्य, १७वीं शताब्दी के जान पड़ते हैं, इनका गुरु-वृत्त इस प्रकार है—

राघवानंद
|
रामानंद
|
देवाचार्य { भक्तमाल में ये रामानंद से चार पीढ़ी पूर्व थे।
|
अग्रदास (स्यात् अग्रदास सं० १६६२,
|
जानकीदास
|
वैष्णवदास
|
मिहीलाल

गुरुप्रकारी भजन दे० (क-५८)

मीनराज प्रधान—बुंदेलखंड निवासी; जाति के कायस्थ, कदाचित् मेघनाथ प्रधान के कोई संबंधी थे।

हरतालिका की कथा दे० (छ-७५)

मीराबाई—मेड़ता (जोधपुर) निवासी, राव दूदा राठौर की पौत्री; इनके महल व मंदिर अभी तक वर्तमान हैं; ये बड़ी कृष्ण भक्त थीं। दे० (ग-६७)

मुअज्जम शाह—उप० बहादुर शाह; मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के पुत्र, राज्य का० सं० १७६४-१७६६, आलम कवि दूसरे के आश्रयदाता थे। दे० (घ-३३) (ङ-६)

मुकुंददास—सं० १६७२ के लगभग वर्तमान; शाहजाद सलीम (जहाँगीर) के आश्रित।

कोक भाषा दे० (ज-१८३ ए)

कोक भाषा दे० (ज-१८३ बी)

मुकुंदराय की वार्ता—गिरिधर कृत, नि० का० सं० १८८७, वि० श्रीनाथ (मेवाड) से श्री मुकुंदराय की प्रतिमा के काशी गोपाल मंदिर में पधराने का वर्णन। दे० (ज-६३)

मुकुंदलाल—बनारस के रघुनाथ बंदीजन के समकालीन; सं० १८०२ के लगभग वर्तमान; काशीनरेश के आश्रित थे।

श्रीलाल मुकुंद विलास; दे० (घ-६४)

फरज़ंद खेवा दे० (ट-२६)

मुकुंदाचार्य—रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह के आचार्य थे। दे० (ख-७)

मुन—असोथर (फ़तेहपुर) निवासी; जन्म का० सं० १८६६ था।

सीताराम विवाह दे० (ज-२०१)

मु—सं० १९२७ के लगभग वर्तमान, इनके ——य में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

धाममकाश दे० (छ-२९८)

...रावत्य—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। राधव मोरोरी संवाद दे० (क-८४)

मुरलीधर—माधोदास के पुत्र, कल्याणदास के भाई, सं० १७५३ के लगभग वर्तमान, बुंदेलखंड निवासी। दे० (घ-१०)

मुरलीधर—पन्ना निवासी स्वामी प्राणनाथ के प्रणामी पंथ के अनुयायी थे।

श्री साहब की की कविता दे० (छ-७६)

मुहम्मद अजीम—शाह आलम के पुत्र, औरंगजेब के पौत्र, सं० १७७६ के लगभग वर्तमान, कवि बलवीर के आश्रयदाता थे। दे० (ग-२८)

मुहम्मद अनवर—शाह आलम के सरदारों में थे, इनके कहने से बलवीर ने दंपति विलास ग्रंथ रचा था। दे० (ग-२८)

मुहम्मद गजली किताब ऊपर भाषा पारस भाग—रूपाराम कृत, लि० का० सं० १८७४, वि० मुसलमानी वेदांत और धर्म नीति की पुस्तक कीमियाए सआदत का भाषानुवाद। दे० (ग-११)

मुहम्मद गौस (गोस)—तानसेन के संगीत शास्त्र के गुरु। दे० (ख-१२)

मुहम्मद बोध—कबीरदास कृत, वि० कबीर और मुहम्मद के प्रश्नोत्तर। दे० (ञ-१४३ जेड्)

मुहम्मद शाह—मुगल वंश का बादशाह, राज्य का० सं० १७७६-१८०५, सुरति मिश्र, कवि आज़म ज़ुगल किशोरी भट्ट (इनको राजा की उपाधि दी) और घनानंद के आश्रयदाता थे, कमरुद्दीन खाँ इनके दीवान थे जो गंजन कवि के आश्रयदाता थे। दे० (क-३६) (घ-६५) (ञ-११) (ञ-१४२) (छ-१२५) (छ-२४१)

मुहम्मद शाह—ये एक मुसलमान कवि थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

कामबाला दे० (छ-२६४)

मुहर्रम—फतेहसिंह कृत, नि० का० सं० १८१३, लि० का० सं० १८४०, वि० ज्योतिष के फारसी ग्रंथ का अनुवाद। दे० (घ-५५)

मुहूर्त चिंतामणि—शंभूनाथ त्रिपाठी कृत, नि० का० सं० १८०३, लि० का० सं० १८८१, वि० संस्कृत ग्रंथ मुहूर्त चिंतामणि का पद्यानुवाद। दे० (छ-२६४ ए)

मुहूर्त चिंतामणि—माधवदास कृत, वि० मुहूर्त चिंतामणि का भाषानुवाद। दे० (ञ-१७७ बी

मुहूर्त मुक्तावली—गोस्वामी गिरिधर कृत, वि ज्योतिष के अनुसार शुभाशुभ मुहूर्त का वर्णन दे० (छ-१६८)

मूरि प्रभाकर—मोने शाह कृत, नि० का० सं १८९१, लि० का० सं० १९२८, वि० वैद्यक व जड़ी बूटियों और पौधों का वर्णन। दे० (छ ८० बी)

मूल ढोला—नवलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का सं० १९२५, वि० ढोला मारू की कथा। दे (छ-७६ क्यू)

मूल भारत—नवलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का सं० १९१४, वि० भारत का सारांश वर्णन दे० (छ-७६ आई)

मृगावती (काव्य)—कुतबन कृत, नि० का० सं १५६६ (सन् ९०९ हि०), वि० चन्द्रनगर के

राजा गणपति देव के राजकुमार और कंचन नगर के राजा रूपमुरार की कन्या मृगवती की प्रेम कथा का वर्णन। दे० (क-४)

मृगावती की कथा—मेघराज प्रधान कृत; नि० का० सं० १७२३, लि० का० सं० १८०६; वि० कुँअर इंद्रजीत और मृगावती की प्रेम-कथा का वर्णन। दे० (छ-७४)

मृगेंद्र—सं० १९१२ के लगभग वर्तमान, अमृतसर (पंजाब) निवासी; सिक्ख सम्प्रदाय के अनुयायी; पटियाला नरेश महाराज महेंद्रसिंह के आश्रित।

कवि कुसुम वाटिका दे० (ङ-५०)

प्रेमपयोनिधि (ङ-४६)

मेघराज—फगवाड़ा निवासी; इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

मेघविनोद दे० (ज-१९७)

मेघराज प्रधान—सं० १७१७ के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ; ओड़छा नरेश राजा सुजानसिंह के आश्रित थे।

मृगावती की कथा दे० (छ-७४ ए)

मकरध्वज की कथा दे० (छ-७४ बी)

सिंहासन बतीसी दे० (छ-७४ सी)

राधाकृष्ण जू को झगरो दे० (छ-७४ डी)

मेघ विनोद—मेघराज कृत; वि० वैद्यक। दे० (ज-१९७)

मेदिनीगिरि—रसाल गिरि गुसाईं के गुरु; सं० १८७४ के पूर्व वर्तमान, मैनपुरी निवासी थे। दे० (ज-२५६)

मेदिनीमल्लजू देव—दीवान हृदयसिंह के पुत्र और पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल के पौत्र थे; सं० १७८७ के लगभग वर्तमान।

श्रीकृष्ण प्रकाश दे० (च-६६)

मेहरवानदास—कोथवा (बाराबंकी) निवासी; सं० १८४६ के लगभग वर्तमान; ये एक मंदिर के पुजारी थे।

भागवत माहात्म्य दे० (ज-१९८)

मैना-सत—र० अज्ञात, वि मैना नाम की एक स्त्री के सच्चरित्र का वर्णन। (ग-३७)

मोक्षदायक पंथ—मानसिंह कृत; नि० का० सं० १८३५; वि० मोक्षमार्ग वर्णन। दे० (ज-१९०)

मोक्ष पंथ प्रकाश—गुलाबसिंह कृत; नि० का० सं० १८३५, लि० का० सं० १८३७, वि० वेदांत। दे० (घ-७८) (ज-१९०) (कर्त्ता के नाम में भूल है।)

मोक्षमार्ग पैड़ी—बनारसीदास कृत; वि० जैनमतानुसार मोक्षमार्ग का वर्णन। दे० (क-१०६)

मोतीलाल—जन्म का० स० १५९७; इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

गणेशपुराण दे० (ख-७६) (ज-२००)

मोहन—उप० सहज सनेही, सं० १६६७ के लगभग वर्तमान, मथुरा निवासी; बादशाह जहाँगीर के आश्रित व समकालीन, शिरोमणि मिश्र के पिता। दे० (छ-२३५)

अष्टावक्र दे० (घ-४)

मोहनदास—जाति के कायस्थ; सं० १६८७ के लगभग वर्तमान, नैमिषारण्य के निकट कुरसठ (हरदोई) निवासी।

पवन विचार दे० (क-५)

पवन विजय स्वरोदय दे० (छ-१६७)

मोहनदास—पुहकर (पोहकर) कवि के पिता, सं० १६७२ के पूर्व वर्तमान, जाति के कायस्थ, प्रतापपुर (मैनपुरी) निवासी थे, इनकी वंशावली इस प्रकार है:—

बेन
— प्रतापमल
— मोहनदास
    — पुहकर
    — सुन्दर
    — रामचन्द्र
    — मुरलीधर
        — शंकर
        — मकरन्दराय
        — सकतसिंह
— हरिचन्द्र

दे० (च-४८) (छ-२०८)

मोहनदास (मिश्र)—जाति के मिश्र ब्राह्मण, सम्भवतः उप० शिवराम, कपूर मिश्र के पुत्र, सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, बरवारी नरेश महाराज मधुकर शाह के वंशजों के कुल-पुरोहित, बरुपुरी के समीप प्रतापपुर निवासी थे।

रामाश्वमेध दे० (छ-२५५) (ज-१८६ सी)

भाव चंद्रिका दे० (च-७२)

कृष्ण चंद्रिका दे० (ज-१९६ ए)

भागवत दशमस्कंध भाषा दे० (ज-१९९ बी)

मोहनदास (भंडारी)—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

पद दे० (छ-२६६)

मोहनदास (स्वामी)—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

सनेहलीला दे० (छ-२६७)

मोहनलाल—जाति के मिश्र ब्राह्मण, चूड़ामणि मिश्र के पुत्र, चरखारी (बुंदेलखण्ड) निवासी, सं० १९१९ के लगभग वर्तमान, लक्ष्मीचन्द के पिता थे।

श्रृंगारसागर दे० (च-७०)

मोहनलाल (भट्ट)—सागर (बाँदा) निवासी, पद्माकर भट्ट के पिता, सं० १८७२ के पूर्व वर्तमान, ये स्वयं अच्छे कवि थे। दे० (ख-१) (ग-१)

मोहमर्दन राजा की कथा—जन मनाथ कृत, नि० का० सं० १७१६, दे० (ग-२१४)

मोहमर्दन राजा की कथा—वरहम कवि कृत, नि० का० सं० १७८१, लि० का० सं० १८६१, वि० राजा मोह मर्दन की कथा। दे० (छ-५८बी)

मौनी बाबा—मनायनाथ (जन मनाथ) के गुरु, सं० १७७७ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ-२६५)

यंत्रराज विवरण—र० भगवत, वि० ज्योतिष। दे० (ख-५१)

यज्ञलीला—नन्ददास कृत, लि० का० सं० १७६४, वि० मथुरा के चौबों का यज्ञ करना तथा उनकी स्त्रियों का श्रीकृष्ण को भोजन कराने के लिए जाने का वर्णन। दे० (छ-३०० बी)

यदुनाथ—बनारस निवासी, मथुरानाथ मालवीय के पुत्र, जाति के मालवीय शुक्ल ब्राह्मण, सं० १८५७ के लगभग वर्तमान थे।

पंचांग दर्पण दे० (ज-३३२ ए) (प-११८)

चमत्कारी दे० (ज-३३३ बी)

सामुद्रिक दे० (छ-२४४)

यदुनाथ—गोकुल (ब्रज) निवासी, सं० १९३७ के पूर्व वर्तमान, गोप कवि के पिता, जाति के भट्ट थे। दे० (छ-३६)

यमद्वितिया की कथा—रामाराम कृत, नि० का० सं० १८०१, लि० का० सं० १९४०, वि० यम

द्वितिया के व्रत की कथा का वर्णन। दे० (छ-६६)

यशवंतविलास-यशवंतसिंह कृत नि० का स० १८२१, लि० का० सं० १६२५, वि० पिंगल और अलंकार वर्णन। दे० (छ-११६)

यशवंतसिंह—सं० १८२१ के लगभग वर्तमान; पन्ना नरेश महाराज हिंदूपति के चचेरे भाई और दीवान अमरसिंह के पुत्र थे, महाराज हिंदूपति के कहने पर इन्होंने अपना ग्रंथ लिखा।

यशवंतविलास दे० (छ-११६)

यशवंतसिंह—बुँदेलखण्ड निवासी; जाति के क्षत्री; चित्रांगद के पुत्र थे।

धनुर्वेद दे० (छ-१२०)

यशवंतसिंह—जोधपुर नरेश; राज्य का० सं० १६६२-१७३५। दे० "जसवंतसिंह"। (छ-२५१) (ख-७१) (ग-१४) (ख-७२) (ग-१५) (ख-७३) (ग-१७) (ग-४७) (छ-१७६) (ग-१६) (ग-२२) (ग-४६) (ग-२०) (ख-८६) (च-३६)

यशोदानंदन (शुक्ल)—जाति के मालवीय शुक्ल ब्राह्मण, सं० १८१५ के लगभग वर्तमान, बनारस निवासी, सेठ महताबराय के कहने से इन्होंने अपना ग्रंथ रचा था।

रागमाला दे० (ज-३३४)

याकूबखाँ—सं० १७७६ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

रस भूषण दे० (छ-२४५) (च-७१)

यादवराज—जैसलमेर (राजपूताना) के राजा, सं० १६०७ के लगभग वर्तमान, हरराज कवि के आश्रयदाता थे। दे० (क-६६)

यादौ—उप० श्रीयादौ: मोहनदास कायस्थ के पिता; कुरसथ (नीमसार) निवासी; सं० १६८७ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (क-५)

युक्ति तरंगिणी—कुलपति मिश्र कृत, नि० का० सं० १७४३, वि० नवरस वर्णन। दे० (छ-१८५ ए)

युगलमंजरी—अयोध्या निवासी; रामानुज संप्रदाय के सखी समाज के वैष्णव थे।

भावनामृत कादंबिनी दे० (छ-३४६)

युगलमाधुरी—ये अयोध्या के महंत थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

मानस मार्तंड माला दे० (ज-३३५)

युगलरस माधुरी—अलि रसिकगोविंद कृत; वि० राधाकृष्ण तथा वृंदावन की शोभा का वर्णन। दे० (छ-१२२ सी) (ज-२६३ ए)

युगलशतक—राजकिशोर लाल कृत; वि० उनहत्तर कवियों की कविताओं का संग्रह। दे० (ज-२४२)

युगलस्वरूप विरह-पत्रिका—हंसराज बख्शी कृत, नि० का० सं० १७८६; लि० का० सं० १८६२ वि० राधा के कृष्ण को प्रेमपत्र लिखने का वर्णन। दे० (छ-४५ बी)

युद्धयोत्सव—जगन्नाथ कृत; नि० का० सं० १८८७; लि० का० सं० १८६८, वि० युद्धरीति वर्णन। दे० (ज-१२३)

युद्धविलास—भैरवबल्लभ कृत; नि० का० सं० १६०२; वि० महाभारत के कर्ण पर्व का भाषानुवाद। दे० (ज-२४)

योगदर्पण सार—अकबर कृत, नि० का० सं० १८८६; लि० का० सं० १६०२, वि० वैद्यक, हिंदू प्रथा के अनुसार चिकित्सा आदि का वर्णन। दे० (छ-१)

योगवाशिष्ठ—र० अज्ञात, लि० का० सं० १७१४, वि० योगवाशिष्ठ का भाषानुवाद। दे० (घ-८)

योगवाशिष्ठसार—कवींद्राचार्य्य कृत, लि० का० सं० १८३६, वि० संस्कृत योगवाशिष्ठ का संक्षेप में आशय। दे० (छ-२७६)

योगवाशिष्ठ भाषा—र० अज्ञात, लि० का० सं० १८११-१८३४ के मध्य में, वि० संस्कृत योग वाशिष्ठ का भाषानुवाद। दे० (ज-६४)

योगशास्त्र—मधुर अनन्य (अनन्य) कृत, वि० माया और ब्रह्म का वर्णन। दे० (छ-२ के)

योगसुधानिधि—लक्ष्मीराम कृत, लि० का० सं० १९२९, वि० संस्कृत योगवाशिष्ठ का भाषानुवाद। दे० (छ-२८१ ए)

योगींद्रसार भाषा—बुधजन कृत, लि० का० सं० १८९५, वि० आत्मज्ञान द्वारा निर्वाण प्राप्त करने के साधन। दे० (क-११८)

रंगझर—सुंदर कुँवरि कृत, लि० का० सं० १८४५, वि० राधाकृष्ण का नित्य विहार वर्णन। दे० (ज-९९)

रंगमाला—सुप सखी कृत, वि० राधा जी का चरित्र वर्णन। दे० (ज-२०९ ए)

रंगविनोद (लीला)—ध्रुवदास कृत, वि० राधा कृष्ण का विहार वर्णन। दे० (क-१३ सात) (ज-७३ डब्ल्यू)

रंगविहार (लीला)—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण का चरित्र वर्णन। दे० (क-१३ चार) (ज-७३ एक्स)

रंगहुलास—ध्रुवदास कृत, वि० राधा का कृष्ण का नित्य-विहार लीला में स्त्री-वेश में बनाना। दे० (क-१३ नौ) (ज-७३ के)

रघुनाथ—जाति के बंदीजन सं० १८०२ के लगभग वर्तमान, बनारस निवासी, काशी नरेश महाराज बलवंतसिंह (बरिवंडसिंह) के आश्रित, कवि गोकुलनाथ के पिता थे। दे० (घ-१५) (क-२)

जगतमोहन दे० (घ-११२) (ज-२३५ बी)

रसिकमोहन काव्य दे० (घ-५६)

काव्यकलाधर दे० (घ-१४) (ज-२३५ ए)

रघुनाथ—सं० १६६७ के लगभग वर्तमान, बादशाह जहाँगीर के समकालीन, प्रसिद्ध कवि गंग के शिष्य, जाति के ब्राह्मण थे।

रघुनाथविलास दे० (छ-२१०)

रघुनाथदास—अमरदास के शिष्य, स्वामी हरिदास के अनुयायी, संभवतः १८ वीं शताब्दी में वर्तमान थे।

हरिदास की परिचयी दे० (ज-२३६)

रघुनाथराव—नागपुर नरेश, राज्य का० सं० १८३९-१८५१, हरिदेव कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ-१७१)

रघुनाथरूपक—मंछ कवि कृत, वि० दोहों और सोरठों में रामायण की कथा मारवाड़ी भाषा में वर्णित। दे० (छ-२८९)

रघुनाथविलास—रघुनाथ ब्राह्मण कृत, लि० का० सं० १८९९, वि० संस्कृत रसमंजरी का भाषानुवाद। दे० (छ-२१०)

रघुराजसिंह—रीवाँ नरेश, राज्य का० सं० १९११-१९३७, महाराज विश्वनाथसिंह के पुत्र, जन्म का० सं० १८८०, रामानुजदास के शिष्य, इन्होंने स्वामी मुकुंदाचार्य से मंत्र दीक्षा ली, इनके दरबार के मुख्य सभासद गोकुलप्रसाद, सुदर्शनदास, विश्वनाथ शास्त्री,

रामचंद्र शास्त्री, रसिक नारायण, रसिक विहारी, गोविंदकिशोर और कवि ग्वाल-गोविंद थे।

सुंदर शतक, दे० (ज-२३७) (क-४५)

आनदाम्बुनिधि दे० (ग्र-१७)

भागवत माहात्म्य दे० (घ-१८)

रुक्मिणी परिणाय दे० (छ-२१०)

विनयपत्रिका दे० (क-४६)

जदुराजविलास दे० (क-३६)

जगदीश शतक दे० (ङ-८२)

रामरसिकावली दे० (ङ-८६)

रामस्वयंवर दे० (ख-७)

रघुराम—सं० १७३७ के लगभग वर्तमान; जाति के कायस्थ; ओड़छा (बुंदेलखंड) निवासी; राजा जसवंतसिंह के आश्रित।

कृष्णामोदिका दे० (छ-६८)

रघुराम नागर—सं० १७५७ के लगभग वर्तमान, अहमदाबाद निवासी; जाति के ब्राह्मण थे।

सभासार नाटक दे० (ज-२३८)

माधवविलास शतक दे० (ज-२३८)

रघुवर (कर) करुणाभरण—जनकराजकिशोरी शरण (किशोरीशरण) कृत, लि० का० सं० १६३०; वि० अलंकार। दे० (ज-१३४ एन) (छ-१८१ प)

रघुवरशरण—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

जानकीजू को मंगलाचरण दे० (छ-२०६ प)

वना दे० (छ-२०६ बी)

रणजीतसिंह—जंबूनरेश, सं० १८१८ के पूर्व वर्तमान, महाराजकुमार व्रजराज के पिता थे। दे० (ख-६३)

रणजीतसिंह—सं० १६०० के लगभग वर्तमान; जाति के ढढेर क्षत्री; अनिरुद्धसिंह के पुत्र, पंचमपुर निवासी थे।

कलाभास्कर दे० (छ-१०२)

रणधीरसिंह (राजा)—सं० १८६४ के लगभग वर्तमान, भरतपुर नरेश थे।

पिंगल नामार्णव दे० (छ-३१६ ए)

काव्यरत्नाकर दे० (छ-३१६ बी)

रतिमंजरी (लीला)—ध्रुवदास कृत; वि० राधा कृष्ण का विहार वर्णन। दे० (क-१३ डी) (ज-७३ एल)

रत्न कवि—सं० १८२७ के लगभग वर्तमान; ओड़छा (बुंदेलखंड) निवासी, राजा छत्रसाल के वंशज फतेहसिंह, पन्नानरेश सभासिंह और दीवान हिंदूसिंह के आश्रित थे।

अलंकारदर्पण दे० (छ-१०३)

फतह प्रकाश दे० (ज-२६६)

रत्न कवि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

बुधचातुरी विचार दे० (ङ-६८)

मूक विवेक दे० (ङ-१००)

दोहा दे० (ङ-१०१)

विष्णुपद दे० (ङ-१०२)

रत्नकुँवरि—राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद की दादी; काशी निवासिनी; सं० १६४४ के लगभग वर्तमान; ये संस्कृत और फारसी की अच्छी विदुषी थीं।

प्रेमरत्न दे० (ज-२६७) (ग्रंथ कर्त्ता के नाम में भूल है।)

रत्नखान—मलूकदास कृत; वि० आत्मा और ब्रह्म का वर्णन। दे० (ज-१८५ बी)

रत्नचंद्रिका—प्रतापसाहि कृत; नि० का० सं० १८९६, लि० का० सं० १८६६, वि० बिहारी सतसई पर टीका। दे० (छ-९१ एफ)

रत्नदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
स्वरोदय की टीका दे० (छ-३२०) $\left(\frac{\text{ज़ प० (२)}}{\text{५६}}\right)$

रत्नद्विम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
गणेश स्तोत्र दे० (छ-३२१)

रत्नपरीक्षा—अन्य नाम रत्नसागर; गुरुदास कृत; वि० रत्नों के गुण और उनकी पहचान आदि का वर्णन। दे० (छ-३२६) (ख-२५)

रत्नपाल भैया—सं० १७४२ के लगभग वर्तमान, करौली (राजपूताना) नरेश; कवि देवीदास के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२२०) (छ-२७) (ग-१) (कर्त्ता के नाम में भूल है।)

रत्न-बावनी—केशवदास कृत; वि० राजा मधुकर साहि के पुत्र कुँवर रत्नसिंह का अकबर की सेना के साथ युद्ध करने का वर्णन। दे० (छ-५८ बी)

रत्नभट्ट—सं० १७५५ के लगभग वर्तमान; जाति के तैलंग ब्राह्मण, रूपभट्ट के पुत्र, नरवर (ग्वालियर राज्य) निवासी, मोहनलाल के शिष्य थे।
शमुद्रिक दे० (छ-२१९)

रत्नमहेश—सं० १७१५ के लगभग वर्तमान, इन्होंने जसवन्तसिंह और औरंगज़ेब के युद्ध में अपने प्राण देकर महाराज जसवन्तसिंह की रक्षा की थी; ये रतलाम के राजा थे। दे० (ग-२६)

रत्नमहेश दासोत वचनिका—रिचड़िया जगाजी कृत; नि० का० सं० १७१५, लि० का० सं० १८२२; वि० रतलाम नरेश महाराज रत्न महेश का महाराज जसवन्तसिंह की ओर से औरंगज़ेब से युद्ध करने और मारे जाने का वर्णन। दे० (ग-२६)

रत्नसागर—अन्य नाम रत्नपरीक्षा; गुरुप्रसाद कृत; नि० का० सं० १७५५, लि० का० सं० १६३०; वि० रत्नों की जाति, गुण, पहचान आदि का वर्णन। दे० (ख-२५) (छ-३२६)

रत्नसिंह—सीतामऊ नरेश राजा राजसिंह के पुत्र, सं० १६०० के लगभग वर्तमान थे।
नटनागर विनोद दे० (ग-१०१)

रत्नसिंह—चरखारी (बुँदेलखण्ड) नरेश; राज्य का० सं० १८८६-१६१७, कवि प्रतापसाहि, मोजराज, गोपाल और घनश्यामदास के आश्रयदाता थे। दे० (छ-१५) (ख-६५) (छ-३६) (छ-९१) (छ-४०)
विनयपत्रिका की टीका दे० (छ-१०४)

रत्नसिंह—बिजावर (बुँदेलखण्ड) नरेश, राज्य का० सं० १८९७-१८८६, प्रयागदास कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२९८)

रत्नसेन—चित्तौर के राणा, पद्मावती रानी के पति, अलाउद्दीन खिलजी से इनका युद्ध हुआ था जिसमें राणा ने घायल होकर प्राण त्याग किया; सं० १३३० के लगभग वर्तमान। दे० (क-५४) (ख-४८)

रत्नसेन—कवि बखतेश के आश्रयदाता शम्भुजीत के भाई, कहीं के राजा थे। दे० (छ-७)

रत्नहजारा—रसनिधि कृत; लि० का० सं० १८६४, वि० प्रेमरस के एक सहस्र दोहे। दे० (ख-६४)

रत्नहमीर की बात—उत्तमदेव कृत। दे० (ग-१८ सीम)

रत्नाकर—वारण कवि कृत, नि० का० सं० १७७२; लि० का० सं० १८६०; वि० आरंभ में कुछ पिंगल, शेष में कोश। दे० (ङ-७६)

रत्नेश—प्रताप कवि के पिता; सं० १८८६ के पूर्व वर्तमान; चरखारी (बुंदेलखंड) निवासी थे। दे० (च-४६)

रमई—जाति के पाठक चौबे, वाण कवि के पिता; सं० १६७४ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ-१३४)

रमल ताजक—ओरीलाल शर्मा कृत; लि० का० सं० १६५७, वि० रमल सीखने की विधि। दे० (ज-२१८)

रमैनी—कबीरदास कृत; नि० का० सं० १४५७, वि० तर्क के साथ कबीर पंथी सिद्धांत के पद। दे० (छ-१७७ ई) (ग-१८५)

रमैया—ये बनारस निवासी साधु थे, २० वीं शताब्दी के प्रारंभ में वर्तमान।

रमैया की कविता दे० (ङ-१०८)
रमैया के कवित्त दे० (ङ-१०६)
रमैया बाबा की कविता दे० (ङ-११०)

रमैया की कविता—रमैया बाबा कृत, वि० उपदेश के भजन। दे० (ङ-१०८)

रमैया के कवित्त—रमैया बाबा कृत; लि० का० सं० १६१३, वि० ज्ञानोपदेश के कवित्त। दे० (ङ-१०६)

रमैया बाबा की कविता—रमैया बाबा कृत; लि० का० सं० १६१३; वि० रामनाम माहात्म्य वर्णन। दे० (ङ-११०)

रसकंद—मान्य कृत, वि० नायिका-भेद वर्णन। दे० (ज-१६३)

रसकदंब चूड़ामणि—रसिकदास कृत, नि० का० सं० १७५१, लि० का० सं० १६४६, वि० देवताओं के स्वरूप तथा उनके स्थानों आदि का वर्णन। दे० (ज—२६७)

रसकल्लोल—कर्ण कवि कृत; लि० का० सं० १८६७ दूसरी प्रति का० लि० का० सं० १८५८; और तीसरी का लि० का० सं० १८६२; वि० काव्यग्रंथ, रस, ध्वनि व्यंग्यादि-निरुपण। दे० (ङ—१५)

रसकल्लोल—तुलसीदास कृत, नि० का सं० १७११, लि० का० सं० १६५२; वि० नवरस वर्णन। दे० (छ—३३६ ए)

रसकौमुदी—हरिप्रसाद कृत, नि० का० स० १८६७, वि० नायिका भेद, रस, काव्य। दे० (च-६५)

रसकौमुदी—हरिदास कृत. नि० का० सं० १८६८, वि० स्त्री भेद वर्णन। दे० (छ—४६ ए)

रसगाहक चंद्रिका—सूरत मिश्र कृत; नि० का० सं० १७६१, लि० का० सं० १८६६; वि० रसिकप्रिया पर टीका। दे० (छ—२४३ ए) (ज-३१४ ए)

रसचंद्रोदय— उदैनाथ (कवींद्र) कृत, नि० का० सं० १८०४, लि० का० सं० १६३०; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (च—२) (छ-२४६)

रसजानिदास—प्रियादास के शिष्य; स० १८०७ के लगभग वर्तमान थे।

भागवत भाषा दे० (ख-६४)

रसदीप (काव्य)—कवींद्र (उदयनाथ) कृत, नि० का० सं० १७६६, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ङ—२८) (घ—४२) (कर्त्ता के नाम में भूल है।)

रसदीपक—वदन कवि कृत; नि० का० सं० १८०८,

लि० का० स० १८८८, वि० नायिका भेद रस और काव्य। दे० (ग—५३)

रसनिधि—ये प्रसिद्ध कवि थे, स० १७१७ के लगभग वर्तमान। दे० (छ—६५)

रतनहजारा दे० (ग—६४)

रसनिधि की अरिल्ल और मांझ दे० (ग—७१)

रसनिधि के दोहरा दे० (ग—७४)

रसनिधि के दोहों का संग्रह दे० (ग—७५)

रसनिधि की अरिल्ल और माँझ—रसनिधि उप० पृथ्वीसिंह कृत, लि० का० स० १८७४, वि० कृष्ण जी के रूप और माधुर्य का वर्णन। दे० (ग—७१)

रसनिधि की कविता—महाराज पृथ्वीसिंह (रस निधि) कृत, वि० कृष्ण लीला संबंधी रस निधि की कविता का संग्रह। दे० (छ—६५ एच्)

रसनिधि की कविता—महाराज पृथ्वीसिंह कृत, वि० रसनिधि की कविताओं का संग्रह। दे० (छ—६५ आई)

रसनिधि के दोहा—रसनिधि कृत दोहों का महाराज पृथ्वीसिंह कृत संग्रह, वि० भिन्न भिन्न विषयों के दोहों का संग्रह। दे० (छ—६५ जे)

रसनिधि के दोहा (दोहरा)—रसनिधि (उप० पृथ्वीसिंह) कृत, लि० का० स० १८७८, वि० श्रीकृष्ण राधिका का प्रेम वर्णन। दे० (ग—७४)

रसनिधि के दोहों का संग्रह—रसनिधि उप० राजा पृथ्वीसिंह कृत, (संग्रहकर्त्ता जगन्नाथ प्रसाद) वि० श्रीकृष्ण के प्रेम, विनय, स्तुति आदि की कविताओं का संग्रह। दे० (ग—७५)

रसनिधि सागर—राजा पृथ्वीसिंह उप० रसनिधि कृत, लि० का० स० १८१५, वि० श्रीकृष्ण की प्रेमलीला का वर्णन। दे० (छ—६५ जी)

रसनिधि सागर—राजा पृथ्वीसिंह कृत, लि० का० स० १८११, वि० श्रीकृष्ण का प्रेम-वर्णन। दे० (छ—६५ एफ)

रसनिधि सागर—राजा पृथ्वीसिंह कृत, वि० कृष्ण का विरह वर्णन। दे० (छ—६५ पी)

रसनिवास—रामसिंह कृत, नि० का० सं० १८३६, लि० का० स० १९२०, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (छ—२१७ ए)

रसपाप नायक—राजसिंह कृत, वि० शृंगार सहित इतिहास वर्णन। दे० (ग—७२)

रसपीयूष निधि—सोमनाथ कृत, नि० का० स० १७९४, लि० का० स० १८८७, वि० पिंगल और नायिका भेद। दे० (छ—२९८ ए)

रसपुंज—कुवरि कुँवरि कृत, नि० का० स० १८३४, वि० श्रीराधा और कृष्ण के प्रेम और विलास का वर्णन। दे० (ग—१०१)

रसपुंज—जाति के सेवक ब्राह्मण, स० १७९० के लगभग वर्तमान, जोधपुर नरेश महाराज अभयसिंह के आश्रित थे।

कवित्त की मालाओं दा दे० (ग—८१)

रसप्रबोध—गुलाम नबी कृत, नि० का० स० १७९८, लि० का० स० १९०७, वि० अलंकार वर्णन। दे० (छ—१९६) (ग—२१)

रसभद्री—गणेश कृत, नि० का० सं० १८१८, लि० का० स० १९४१, वि० रस, काव्य और नायिका-भेद वर्णन। दे० (छ—८२)

रसभूषण—शिवप्रसाद राय कृत, नि० का० स० १८६६, लि० का० सं० १८९३, वि० शृंगार, अलंकार और पिंगल वर्णन। दे० (छ—१०६)

रसभूषण—याकूबखाँ कृत, लि० का० सं०

१६१७, वि० अलंकार और नायिका भेद। दे० (च–७१) (छ–३४५)

रसभूषण—तुलसीदास कृत; लि० का० सं० १६५२, वि० नवरस वर्णन। दे० (छ–३३६ बी)

रसभूषण ग्रंथ—रामनाथ वाजपेई कृत; वि० नायिका भेद। दे० (घ–६३) (ङ–१२८)

रसमंजरी—नंददास कृत; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ज–२०८ ई)

रसमंजरी—सनेहीराम कृत; लि० का० सं० १६११; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ज–२७५)

रसमंजरी—चिंतामणी कृत, लि० का० सं० १८८५; वि० नायिका-भेद वर्णन। दे० (छ–१५०)

रसमंजरी—दंपताचार्य कृत; लि० का० सं० १६३१; वि० राम जानकी का विहार वर्णन। दे० (ज–५४)

रसमंजरी—रामानंद कृत; लि० का० सं० १८०७, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ज–२५ बी)

रसमय (ग्रंथ)—बेनी कवि कृत; नि० का० सं० १८१७, लि० का० सं० १८२६; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८१८; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ङ–५२) (घ–१२२)

रसमसाल—गिरिधर कृत; लि० का० सं० १६३४, वि० रस, काव्य, और नायिका भेद वर्णन। दे० (ज–६२)

रसमालिका (ग्रंथ)—रामचरण दास कृत; नि० का० सं० १८४४, लि० का० सं० १८५४, वि० ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, सत्संगादि का वर्णन। दे० (घ–४४)

रस मुक्तावली—ध्रुवदास कृत, वि० राधा कृष्ण की आठ पहर की दिन चर्य्या का वर्णन। दे० (क–२०) (छ–२५६)

रसमूल—लाल कवि कृत; नि० का० सं० १८३३; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (घ–११३)

रसमोदक—अस्कंध गिरि कृत, नि० का० सं० १६०५, लि० का० सं० १६०५; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (च–३२)

रसरंग—ग्वाल कवि कृत; नि० का० सं० १६०४; लि० का० सं० १६५४; वि० भाव तथा रस-काव्य। दे० (च–११)

रसरत्न—सूरत मिश्र कृत; नि० का० सं० १७८८; लि० का० सं० १८६६; वि० शृंगार रस वर्णन। दे० (ग–६६) (ग–८६)

रसरत्न (काव्य)—पुहकर कवि कृत; नि० का० सं० १६७३, लि० का० सं० १८६५, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८६२; वि० रंभावती और सूरसेन की कथा। दे० (च–४८) (छ–२०८)

रसरत्न मंजरी—प्रिया सखी कृत; वि० राम जानकी का विहार वर्णन। दे० (ज–२३२)

रसरत्न माला—सूरत मिश्र कृत; नि० का० सं० १८११; वि० नायिका भेद और काव्य भाव वर्णन। दे० (छ–२४३ बी)

रस-रत्नाकर—अन्य नाम रस-रत्नागार; पहार सैय्यद कृत, वि० वैद्यक की धातुओं के प्रयोग का वर्णन। दे० (छ-२०५ बी) (ज–२७३)

रस रत्नावली (लीला)—ध्रुवदास कृत, वि० राधा और कृष्ण के प्रथम समागम का वर्णन। दे० (क–१०) (ज–७२ क्यू)

रस-रसार्णव—अन्य नाम मर्दान रसार्णव; सुखदेव मिश्र कृत; नि० का० सं० १७५७; लि०

का० सं० १८७१, वि० नायिका-भेद वर्णन। दे० (छ-३१) (घ-१२४)

रसरहस्य—कुलपति मिश्र कृत, नि० का० सं० १७२७, वि० काव्य अलंकारादि। दे० (घ-५१)

रसराज—मतिराम कृत, नि० का० सं० १७०७, लि० का० सं० १८३६, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८४८, तीसरी प्रति का लि० का० सं० १८६०, चौथी का सं० १९९१, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (क-४०) (ख-६७) (छ-२१९ ए) (ज-१६२)

रसराज टीका—बल्देव कृत, नि० का० सं० १८२२, लि० का० सं० १८८३, वि० मतिराम के रसराज पर टीका। दे० (छ-७)

रसराज तिलक—प्रताप साहि कृत, नि० का० सं० १८९६, लि० का० सं० १८९६, वि० मतिराम के रसराज पर टीका। दे० (छ-९१ जी)

रसरूप—सं० १८११ के लगभग वर्तमान, जन्म का० सं० १७८८।

तुलसी भूषण दे० (ज-११)

शिख नख दे० (ख-७६)

[illegible] दे० (ज-२११)

रसललित—केशवराय कृत, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ज-१४९)

रसलीन—उप० गुलाम नबी, सं० १७९८ के लगभग वर्तमान, सैय्यद बाकर के पुत्र, बिलग्राम (हरदोई) निवासी थे।

अंग दर्पण या शिख नख रस लीन दे० (च-१५)

रस-प्रबोध दे० (ज-१६) (छ-१६६)

रसविनोद—रामसिंह कृत, नि० का० सं० १८६०, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (छ-२१० बी)

रस विवाह भोजन—परमानंद हित कृत, लि० का० सं० १८२८, वि० विवाहोत्सव में भोजन समय के गीतों का संग्रह। दे० (छ-२०४ ई)

रसविलास—देवदत्त (देव) कृत, वि० नायिका भेद। दे० (ग-७)

रसविवेक—बलिराम कवि कृत, नि० का० सं० १७३३, वि० रस, काव्य तथा कविता करने की विधि का वर्णन। दे० (ख-२५) (क-१५६)

रसविहार (लीला)—ध्रुवदास कृत, लि० का० सं० १८५८, वि० श्रीकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (क-१३ पाँच) (छ-१५६ ए) (ज-७३ बाई)

रससरोज—दामोदर देव कृत, नि० का० सं० १८८८, लि० का० सं० १९२३, वि० अलंकार। दे० (छ-२४ ए)

रससार—कविदास कृत, नि० का० सं० १७९१, वि० काव्य, नायिका-भेद, रस आदि का वर्णन। दे० (घ-७५)

रससार (ग्रंथ)—पहार सिंह कृत, लि० का० सं० १८८५, वि० वैद्यक। दे० (छ-३०५ सी)

रससारंग—भिखारीदास (दास) कृत, नि० का० सं० १७९१, लि० का० सं० १८९३, वि० काव्य रस-वर्णन। दे० (ज-२१)

रससिंगार—भारती (राजा भारतीचंद) कृत, नि० का० सं० १८४१, वि० प्रेम का वर्णन। दे० (छ-११)

रसहीरावली लीला—ध्रुवदास कृत, वि० राधा कृष्ण की केलि का वर्णन। दे० (ज-७३ पी)

रसानंद भट्ट—गोकुल निवासी; सं० १८६६ के लगभग वर्तमान, भरतपुर नरेश बलवन्तसिंह के आश्रित, जाति के ब्राह्मण भट्ट थे।

संग्राम रत्नाकर दे० (ज-२६०)

रसानंद लीला—ध्रुवदास कृत, नि० का० सं० १६५०, वि० राधा और कृष्ण का विहार वर्णन। दे० (ज-७३ ए)

रसानुराग—प्रयागीलाल उप० तीर्थराज कृत; नि० का० सं० १९३०; लि० का० सं० १९३५; वि० नायिका भेद और भावादि का वर्णन। दे० (च-५१) (छ-परि० १-७८)

रसालगिरि गोसाईं—गोस्वामी मेदिनी गिरि के शिष्य; मैनपुरी निवासी; सं० १८७४ के लगभग वर्तमान; सं० १८८३ में मृत्यु हुई, अन्तिम काल में संन्यासी होकर मथुरा में रहने लगे, सेठ सेखराज के कहने से इन्होंने दो ग्रंथ बनाए थे।

वैद्य प्रकाश दे० (ज-२५६ ए)

स्वरोदय दे० (ज-२५६ बी)

रसिक अनन्य माल—भगवन मुदित कृत; लि० का० सं० १८७४, वि० राधावल्लभी संप्रदायी, श्रीहित हरिवंशजी तथा उनके शिष्यों का वर्णन। दे (ज-२३ सी)

रसिकअनन्यसार—गोस्वामी जतनलाल कृत, लि० का० सं० १८६१; वि० स्वामी हित हरिवंश और उनके अनुयायियों का वर्णन। दे० (ज-१३७)

रसिक अलि—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

होरी दे० (छ-३१७)

रसिक आनन्द—ग्वाल कवि कृत, लि० का० सं० १९५०, वि० अलंकार वर्णन। दे० (क-८४)

रसिकगोविंद—इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

जुगलरस माधुरी दे० (ज-२६३ ए)

कलियुग रासो दे० (ज-२६३ बी)

रसिकदास—सं० १७५१ के लगभग वर्तमान; राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव; स्वामी नरहरिदास के शिष्य और वृंदावन निवासी थे।

प्रसादलता दे० (छ-२१८ ए)

बाणी वा रससार दे० (छ-२१८ बी)

भक्तिसिद्धान्तमणि दे० (छ-२१८ सी)

पूजा विलास दे० (छ-२१८ डी) (ग-६६)

एकादशी माहात्म्य दे० (छ-२१८ ई)

कुजकौतुक दे० (ग-६८)

रसकदंब चूड़ामणि दे० (ज-२६३)

रसिकपचीसी—रसिकराय कृत; वि० २५ कवित्तों में कृष्णजी का गोपियों को ऊधो द्वारा सँदेसा भेजने का वर्णन। दे० (छ-३१६ सी)

रसिक-प्रिया—केशवदास कृत, नि० का० सं० १६४८; वि० शृङ्गार, रस, काव्य वर्णन। दे० (क-५२) (घ-८६) (ग-२५६) (ग-२६०) (ङ-१२८)

रसिक-प्रिया टीका—सूरत मिश्र कृत, नि० का० स० १८००, लि० का० स० १८८७, वि० केशवदास कृत रसिक प्रिया पर टीका। दे० (छ-२४३ डी)

रसिक-प्रिया टीका सहित—कासिम कृत; नि० का० सं० १६४८ अशुद्ध है, क्योंकि केशवदास ने इसे सं० १६४८ से १६५८ तक लिखा था, वि० केशवदास कृत रसिक प्रिया पर टीका। दे० (ज-१४७)

रसिक प्रीतम— वृंदावन निवासी, राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव थे।
वृन्दावनशत दे० (ज–२६४)

रसिकमोहन काव्य—रघुनाथ कवि कृत, लि० का० स० १८६१, वि० अलंकार वर्णन। दे० (घ–५६)

रसिक रंजनी—नवलसिंह (प्रधान) कृत, लि० का० सं० १८७७, लि० का० स० १८८३, वि० युगल वन वर्णन। दे० (छ–७६ सी)

रसिकरसाल—कुमारमणि कृत, लि० का० स० १८६१, वि० अलंकार वर्णन। दे० (च–५) (छ–१८६)

रसिकराय—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, व्रज के निवासी जान पड़ते हैं।
सनेह लीला दे० (छ–२१६ ए)
भँवर गीत दे० (छ–२१६बी) (ग–२८)
रसिक पचीसी दे० (छ–२१६ सी)

रसिक-विनोद ग्रंथ—चंद्रशेखर कृत, लि० का० स० १६०३, वि० भरत मतानुसार नवरस वर्णन। दे० (घ–१०२)

रसिक-विलास—पारस कवि कृत, लि० का० स० १७२५, लि० का० स० १७८५, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (घ–६१) (लि० का० सं० १७१० अशुद्ध है।)

रसिक-विलास— भोजराज कृत, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (घ–५६)

रसिक-विलास—समनेश (समनसिंह) कृत, लि० का० सं० १८४६, लि० का० सं० १८६६, वि० नायिकाभेद वर्णन। दे० (छ–२२७)

रसिकविहारिनदास—ये कोई साधु थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
न्यारो दे० (छ–२१८)।

रसिक सुंदर—उप० सुंदरलाल, सुखलाल के पुत्र, जाति के कायस्थ, सं० १६०६ के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश महाराज रामसिंह के आश्रित थे।
सुंदर चंद्रिका रसिक दे० (छ–१२५)
सिया भक्ति रस बोधिनी रामा मंगल दे० (छ–१२८)

रसिक सुबोधिनी टीका—जानकीरसिकशरण कृत, लि० का० स० १६१६, लि० का० सं० १६२१, वि० नाभाजी कृत भक्तमाल पर टीका। दे० (छ–८७)

रसिक सुपति—ईश्वरदास के पुत्र, स० १७८५ के लगभग वर्तमान, व्रज निवासी, राधावल्लभी संप्रदाय के अनुयायी थे।
अलंकार चंद्रोदय दे० (ज–२६५)

रहस मंजरी (लीला)—ध्रुवदास कृत, लि० का० स० १६६८, वि० राधाकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (छ–१२) (ज–७२ डी)

रहसलता—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण विहार वर्णन। दे० (छ–१३ ग्यारह) (ज–७१ ई)

रहस लावनी—नवलसिंह (प्रधान) कृत, लि० का० स० १६२५, लि० का० स० १६२६, वि० कृष्ण की रास का वर्णन। दे० (छ–७६ आर।)

रहस लीला—राजा देवीसिंह कृत, वि० श्रीकृष्ण की रास-लीलाओं का वर्णन। दे० (छ–२८ सी)

रहस्योपासनाग्रंथ—श्यामहरी कृत, वि० राम और सीता के प्रेम का वर्णन। दे० (छ–५८१)

राग निरूपन—पूरन मिश्र कृत, वि० संगीत। दे० (ठ–४२)

रागमाला—यशोवानंदन शुक्ल कृत, लि० का० सं०

१८२५; वि० राग, रागिनी, स्वर, ताल आदि का वर्णन। दे० (ज-३३४)

राग माला—तानसेन कृत; वि० राग रागिनियों के स्वरूप का वर्णन। दे० (ग-४१)

राग माला—दुर्जनदास कृत; वि० रामकृष्ण का गुणानुवाद वर्णन। दे० (छ-१६३)

राग माला—व्यास कवि कृत; लि० का० सं० १८५५; वि० दोहों में राग-रागिनियों का वर्णन। दे० (छ-११८ ए)

राग माला—देव कवि कृत; लि० का० सं० १८६६; वि० गान विद्या का वर्णन। दे० (छ-१५५)

राग माला—रामसखे कृत; लि० का० सं० १६२१, वि० रामचरित्र वर्णन। दे० (छ-२१६ सी)

राग रत्नाकर—राधाकृष्ण कृत; नि० का० सं० १८५३; लि० का० सं० १८८६, वि० संगीत शास्त्र का वर्णन। दे० (ज-२३३)

रागरत्नावली—कुँवर गोपालसिंह कृत; नि० का० सं० १७५८, वि० संगीत शास्त्र का वर्णन। दे० (छ-४२)

रागविवेक—पुरुषोत्तम कृत; नि० का० सं० १७१५; लि० का० सं० १७४४; वि० संगीत शास्त्र का वर्णन। दे० (च-४८)

रागसागर—राजा मानसिंह कृत; वि० राग-रागिनियों का वर्णन। दे० (ग-७७)

राघवजन—ये अयोध्या के महंत थे, बाबा रघुनाथदास रामसनेही के अनुयायी; १६ वीं शताब्दी में हुए।

रामायण राघव कृत दे० (ज—२३४)

राघवदास—सं० १६०५ के पूर्व वर्तमान; अयोध्या के महंत और जनकराजकिशोरी शरण के गुरु; मृत्यु काल सं० १६०५। दे० (ज-१३४)

राघवदास—सं० १७०७ के लगभग वर्तमान; ओड़छा निवासी; कायस्थ; राजा पहाड़सिंह के आश्रित।

ज्ञान-प्रकाश दे० (छ-६७)

राघवानंद—वृंदावन निवासी, मिट्ठीलाल से छः पीढ़ी पूर्व के आचार्य थे। दे० (क-५८)

राजकिशोर लाल—अयोध्याप्रसाद के पुत्र; घनश्यामपुर (जौनपुर) निवासी; ६६ कवियों की कविता के संग्रहकर्त्ता, ये कृष्ण भक्त थे।

युगल शतक दे० (ज-२४२)

राजकीर्तन—याजिंदा कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ग-७६)

राजकुमार प्रबोध—शंभूदत्त कृत, नि० का० सं० १८७३; लि० का० सं० १८७३; नि० नारद और पांडवों का नीति पर संवाद। दे० (ग-३६)

राजनीति—पद्माकर भट्ट कृत; वि० राजनीति दे० (च-४३)

राजनीति—लल्लूलाल कृत; नि० का० सं० १८६६ नि० राजनीति का वर्णन। दे० (ज-१७४ बी

राजनीति के कवित्त—अन्य नाम राजनीति प्रस्ताविक कवित्त; देवीदास कृत; लि० का० सं० १८८०; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८५८ वि० नीति के कवित्त। दे० (छ-२७) (ग-१ (ग-८२)

राजनीति के भाव—देवमणि कृत; लि० का० सं० १८२४; वि० चाणक्य नीति के सात अध्यायों का भाषानुवाद। दे० (छ-१५७)

राजनीति चंद्रिका—विष्णुदत्त कृत; नि० का०

सं० १८८५; वि० राजनीति। दे० (ङ-७०)

राजनीतिविलास—अमृतराम कृत; लि० का० स० १८१४; वि० राजा, रानी, राजकुमार, मन्त्री आदि का वर्णन। दे० (छ-१११)

राजनीति हितोपदेश—मधदास कृत; लि० का० स० १८४२; वि० राजनीति। दे० (च-३१)

राजभूषण—कोविद (चंद्रमणि मिश्र) कृत; लि० का० स० १७७६; वि० राजनीति वर्णन। दे० (छ-१२८ए)

राजयोग—मधुर अनन्य (अनन्य) कृत; लि० का० स० १८५४; दूसरी प्रति का लि० का० स० १९३५; वि० राजधर्म वर्णन। दे० (छ-२ बी) (च-२)

राजविनोद—राजा छत्रसाल कृत; वि० कृष्ण-विहार वर्णन। दे० (छ-२२ए) (ग्रन्थकर्ता के नाम में भूल है।) दे० (छ-४२ सी)

राजविनोद—गोरेलाल पुरोहित (लाल) कृत; वि० ब्रज की कृष्णलीला का वर्णन। दे०(छ-४२ सी) (छ-२२ ए) (ग्रन्थकर्ता के नाम में भूल है।)

राजविनोद—प्राणनाथ कृत; वि० स्फुट कविता। दे० (छ-९० ई)

राजविलास—लक्ष्मीनाथ कृत; लि० का० स० १८८३; वि० जोधपुर-नरेश महाराज रामसिंह के राज्य का विस्तारपूर्वक वर्णन। दे० (ग-२१)

रामसिंह (राजा)—रूपनगर (कृष्णगढ़) नरेश; राज्य का० स० १७९६-१८०५; महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) और सुंदरिकुँवरि के पिता थे; वृंद कवि से इन्होंने कविता करना सीखा था। दे० (ग-६५)

रस पादनायक दे० (ग-७३)

बाहुविचास दे० (ग-७४)

राजसिंह—बीकानेर नरेश; कुँवर रतनसिंह के पिता, स० १९०० के लगभग वर्तमान थे। दे० (ग-२०१)

राजसिंह (राणा)—मेवाड़ के राणा, सुलतान सिंह के पूर्वज थे। दे० (ग-२)

राजाराम—बुंदेलखंड निवासी; जाति के कायस्थ श्रीवास्तव खरे; स० १८०६ के लगभग वर्तमान; संभवतः प्राणनाथ के पिता। दे० (घ-५३)

यम द्वितीया की कथा दे० (छ-९९)

राजाराम—प्राणनाथ के पिता; महोबा (बुंदेलखंड) निवासी थे। (ये और यमद्वितीया की कथा के रचयिता एक ही जान पड़ते हैं।) दे० (घ-५३) (छ-९९)

राजाराम—जाति के ब्राह्मण; सं० १८३० के पूर्व वर्तमान; बीकानेर के दीवान के पुत्र थे; प० शिवप्रसाद के पिता। दे० (ग-२६५)

राजाराम—७ वीं शताब्दी के पूर्व वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

पद पंचाशिका दे० (छ-३११)

राजाराम—रीवाँ राज्य निवासी; स० १८५३ के लगभग वर्तमान; दुर्गाप्रसाद कवि के आश्रय दाता, जाति के ब्राह्मण थे। दे० (क-४१)

राणा रासा—दयालदास कृत; लि० का० स० १६७१-१६७५; लि० का० स० १८४४; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १९७५; वि० राणा प्रतापसिंह और अकबर बादशाह के युद्ध, जगतसिंह और अमरसिंह के चरित्र, केशवदास चौहान और अनुमह के युद्ध तथा कर्ण-चरित्र का वर्णन। दे० (क-१४)

राधाकृष्ण—स० १८५३ के लगभग वर्तमान, जयपुर निवासी गौड़ ब्राह्मण; जयपुर के राव

राजा भीमसिंह के आश्रित; गानविद्या में भी निपुण थे।

राग रत्नाकर दे० (ज-२३३)

राधाकृष्ण कटाक्ष---सुखलाल कृत; लि० का० सं० १९२३; वि० राधा की स्तुति। दे० (छ-११२ सी)

राधाकृष्ण को झगरो---मेघराज प्रधान कृत; लि० का० सं० १९११; वि० राधा और कृष्ण का झगड़ा जिसमें कृष्ण द्वारा राधा के हार और राधा के कृष्ण की बाँसुरी चुराने का वर्णन है। दे० (छ-७४ डी)

राधाकृष्ण चौबे---सं० १८५० के लगभग वर्तमान; जाति के चौबे ब्राह्मण थे।

बिहारी सतसई की टीका दे० (छ-९६)

राधाकृष्ण विनोद---रामचंद्र गोस्वामी कृत; वि० राधा और कृष्ण का विनोद। दे० (छ-३१३)

राधाकृष्ण विलास---गोकुलनाथ कृत; नि० का० सं० १८५८, लि० का० सं० १८६०, वि० राधा कृष्ण-चरित्र सहित नायिका भेदादि वर्णन। दे० (घ-१५)

राधाजूको नखशिख---गोकुलनाथ वंदीजन कृत, वि० राधा के नख से शिख तक का शृंगार वर्णन। दे० (ज-९६)

राधा नखशिख---द्विज कवि कृत; लि० का० सं० १८५५; वि० राधा जी का नखशिख शृंगार वर्णन। दे० (घ-२७)

राधा नखशिख---गिरिधर भट्ट कृत; नि० का० सं० १८८६, वि० राधा जी का नखशिख शृंगार वर्णन। दे० (छ-३८ ए)

राधा माधव मिलन बुध विनोद---कालिदास कृत, वि० नायिका भेद और राधा माधव के मिलने का प्रसग, ललिता दूती द्वारा वर्णित है। दे० (ख-६८)

राधा रमण रस सागर लीला---मनोहर कृत; नि० का० सं० १७५७, लि० का० सं० १९३६; वि० कृष्ण विहार वर्णन। दे० (ज-१९१)

राधा रमण विहार माधुरी---माधुरीदास कृत; वि० कृष्णलीला वर्णन। दे० (ग-१०४ एक)

राधाविनोद---हरिदत्तसिंह कृत; लि० का० सं० १९००; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १९४६; वि० राधाजी के अंग प्रत्यंग का वर्णन। दे० (ज-१११) (छ-१७२)

राधा शतक---हठी कवि कृत; नि० का० सं० १८४७, लि० का० सं० १९१९; वि० श्री राधा जी की महिमा का वर्णन। दे० (च-८९)

राधाष्टक---परमानंद हित कृत; वि० राधा जी की प्रशंसा का वर्णन। दे० (छ-२०४ डी)

राधानिधि की टीका भावविलास---वृंदावनदास कृत; नि० का० सं० १८२०; वि० श्रीराधाकृष्ण का निकुंज विहार वर्णन। दे० (ज-३३१ सी)

रानारासा---दयालदास कृत; नि० का० सं० १६७५, लि० का० सं० १९४४, वि० उदयपुर के राजाओं का आदि से राणा कर्णसिंह तक का इतिहास वर्णन। दे० (ज-६१) (ख-३०) (क-६४)

राम (कवि)--इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

हनुमान नाटक दे० (ज-२४३)

राम अनुग्रह---गंगाप्रसाद उदैनिया कृत, नि०

का० सं० १८७४, लि० का० सं० १८६१, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६१८, वि० योगवशिष्ठ का भाषानुवाद। दे० (छ–२४)

राम अलंकार—अन्य नाम रामचन्द्राभरण, गोप कवि कृत, लि० का० सं० १६५३, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८८६, वि० अलंकार। दे० (छ–२६ ए)

रामकलेवा—रामनाथ प्रधान कृत, नि० का० सं० १६०२, लि० का० सं० १६०८, वि० जनकपुरी में रामचन्द्र जी के कलेवा करने का वर्णन। दे० (छ–२१४)

रामकूट विस्तार—मानदास कृत, नि० का० सं० १८६३, लि० का० सं० १६४१, वि० स्फुट कविता। दे० (छ–१६५ बी)

रामकृष्ण—जन्म का० सं० १८८५, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

नायिकाभेद दे० (ध–७७)

रामकृष्ण (चौबे)—उप० मानदास, सं० १८०७ के लगभग वर्तमान, पन्ना-नरेश महाराज हृदयसाहि के समय से राजा अमानसिंह के समय तक कोट कालिंजर के किलेदार थे।

कृष्णविलास दे० (छ–१०० ए)

विनय पचीसी दे० (छ–१०० बी)

स्फुट पद दे० (छ–१०० सी)

स्फुट कवित्त दे० (छ–१०० डी)

रुक्मिणी मंगल दे० (छ–१०० ई)

रास पंचाध्यायी दे० (छ–१०० एफ)

नासिका भेद के दोहे दे० (छ–१०० जी)

दूसरो रुक्मिणी मंगल दे० (छ–१०० एच)

जगन्नाथ की कथा दे० (छ–१०० आई)

बजार बेमारूणी दे० (छ–१०० जे)

फाग दे० (छ–१०० के)

राग चौंतीसी बीजा दे० (छ–१०० एल)

नवीन परीक्षा दे० (अ–२४८)

रामकृष्ण जस—ईश्वर शेरसिंह कृत, नि० का० सं० १८४६, लि० का० सं० १८५०, वि० रामकृष्ण यश वर्णन। दे० (ग–१६)

राम गुणोदय—घनीराम कृत, नि० का० सं० १८६७, वि० रामाश्वमेध का वर्णन। दे० (घ–११६)

रामगुलाम—जाति के द्विवेदी ब्राह्मण, मिर्जापुर निवासी, तुलसी कृत रामायण के विशेष मर्मज्ञ तथा ज्ञाता, सं० १६०१ के लगभग वर्तमान थे।

संकट मोचन दे० (अ–२४७ ए)

प्रबंध रामायण दे० (अ–२४७ बी)

किष्किंधा कांड दे० (अ–२४७ सी)

विनय नव पंचक दे० (छ–२१३)

रामचंद्र—सं० १७२० के लगभग वर्तमान, केशवदास के पुत्र, जाति के मिश्र ब्राह्मण, पद्मराग के शिष्य, बादशाह औरंगजेब के समकालीन, सखी (सेहरा) जिला चम्बू (पंजाब) निवासी थे।

रामविनोद दे० (ख–६२) (छ–२१२) (अ–२४४)

रामचंद्र (गोसाईं)—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, ये कोई साधु थे।

राधाकृष्ण विनोद दे० (छ–२१३)

रामचंद्र की सवारी—ब्रजजीवन दास कृत, वि० रामचन्द्र जी की सवारी निकलने का वर्णन। दे० (अ–२४ क)

रामचंद्र ज्ञान विज्ञान प्रदीपिका—रामलाल शर्मा

कृत; लि० का० सं० १६५०; वि० गुरु महिमा तथा ज्ञान विज्ञान वर्णन। दे० (ज-२४६)

रामचंद्रिका—केशवदास कृत, नि० का० सं० १६५८; लि० का० सं० १८८२, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८८८; वि० रामचंद्र का वर्णन। दे० (क-५२ चार) (घ-२१) (ग-२५२)

रामचरण—शाहपुरा (राजपूताना) निवासी; नवलराम के गुरु और रामसनेही पंथ के संस्थापक। दे० (ख-६४)

रामचरण दास—सं० १८४४ के लगभग वर्तमान, ये अयोध्या के महंत थे।

रस मालिका दे० (घ-४४)
कौशलेंद्ररहस्य (राम रहस्य) दे० (घ-६८)
रामानंद लहरी दे० (ङ-६३)
दृष्टांत बोधिका दे० (छ-२११) (ज-२४५ के)
पिंगल दे० (ज-२४५ ए)
शत पंचासिका दे० (ज-२४५ बी)
राम मालिका दे० (ज-२४५ सी)
रामचरित्र मानस की टीका दे० (ज-२४५डी)
सियाराम रस मंजरी दे० (ज-२४५ ई)
सेवाविधि दे० (ज-२४५ एफ़)
छप्पै रामायण दे० (ज-२४५ जी)
जैमाल संग्रह दे० (ज-२४५ एच)
चरणचिन्ह दे० (ज-२४५ आई)
कवितावली दे० (ज-२४५ जे)
तीर्थयात्रा दे० (ज-२४५ एल)
राम पदावली दे० (ज-२४५ एम)
विरहशतक दे० (ज-२४५ एन)

रामचरित मानस टीका—रामचरण दास कृत; नि० का० सं० १८६५, वि० तुलसी कृत रामायण पर टीका। दे० (ज-२४५ सी)

रामचरित मानस मुक्तावली—शिवलाल पाठक के शिष्य कृत; नि० का० सं० १८६०; लि० का० सं० १६१५; वि० तुलसीकृत रामचरित मानस पर टीका। दे० (घ-१०)

रामचरित मानस सातो कांड—गोस्वामी तुलसीदास कृत; नि० का० सं० १६३१; लि० का० सं० १७०४; वि० रामचरित्र वर्णन। दे० (क-१)

रामचरित्र कथा काक भुसंडी गरुड़ संवाद—बारहट नरहरदास कृत; वि० रामअवतार की कथा, गरुड़ और काक भुशुंडी संवाद। दे० (ग-४६)

रामचरित्र के पद—नाभादास (नारायणदास) कृत; लि० का० सं० १८८६, वि० रामचरित्र के पदों का संग्रह। दे० (ज-२०२)

रामचरित्र मानस टीका—रामचरणदास कृत; नि० का० सं० १८६५; वि० तुलसी कृत रामायण पर टीका। दे० (ज-२४५ डी)

रामचरित्र रागसैरा—गुरुदीन कृत; वि० रामचंद्र और रावण के युद्ध का वर्णन। दे० (च-२४)

रामचरित्र रामायण—भूपति कृत; वि० रामचरित्र वर्णन। दे० (छ-१३८)

रामजी की वंशावली—हरिलाल मिश्र कृत; नि० का० सं० १८५०; लि० का० सं० १८७२; वि० सूर्य्यवंश के राजाओं की वंशावली, उनकी रानियों के नाम सहित वर्णित। दे० (ज-११३)

रामजीवन—कवि छत्रधारी के पिता, सं० १६१४ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ङ-६८)

रामदत्त—विष्णुदत्त के पिता; सं० १८६५ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ङ-७०)

रामदयाल—मनबोध कवि के पिता, जाति के मालवीय बाजपेई ब्राह्मण, पूरनपुर (मिर्ज़ापुर) निवासी, स० १८४१ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (अ-१८९)

रामदास—मासती (मालवा) निवासी, मनोहरदास के पुत्र थे।

कथा अनिरुद्ध की कथा दे० (छ-२१२ ए)

महारासलीला दे० (छ-२१२ बी)

रामदेव—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

कवीरपा पिंड दे० (अ-२४६)

रामधन—कवि हरिचरणदास के पिता, वासुदेव के पुत्र, चैनपुर (सारन) निवासी, स० १७६६ के लगभग वर्तमान। दे० (ज-५८)

रामध्यान मंजरी—स्वामी अग्रदास कृत, लि० का० स० १९५१, वि० रामचन्द्रजी की स्तुति। दे० (क-७७)

रामनाथ—उप० प्रधान, सं० १९१२ के लगभग वर्तमान, रीवाँ राज्य के मंत्री घराने के वंशज, रीवाँ नरेश के आश्रित थे।

राम होरी रहस्य दे० (क-८)

म० प० (२)
———
५३

राम कलेवा दे० (छ-२१४)

म० प० (२)
———
५३

चित्रकूट शतक दे० (अ-२५३)

रामनाथ—जाति के वाजपेयी ब्राह्मण, पटियाला नरेश महाराज नरेन्द्रसिंह के आश्रित, स० १८९२ के लगभग वर्तमान थे।

रस भूषण दे० (घ-९१) (ज-२३८)

महाभारत भाषा दे० (ट-६७)

रामनारायण—उप० रसराशि, जयपुर नरेश महाराज प्रतापसिंह के दीवान श्रीचरण सिंघी के आश्रित, जयपुर निवासी, सं० १८२७ के लगभग वर्तमान थे।

कवित्त रत्नमालिका दे० (छ-९३)

रामनारायण—ये अयोध्या नरेश महाराज मान सिंह के मुंशी थे, १९वीं शताब्दी में वर्तमान।

ऋतु वर्णन दे० (अ-२५२)

रामपदावली—रामचरणदास कृत, लि० का० स० १९१९, वि० रामचन्द्रजी का वाल-विहार वर्णन। दे० (अ-२५४ एम)

रामप्रकाश—मुनिलाल कृत, नि० का० स० १६४२, लि० का० स० १८६७, वि० अलंकार। दे० (छ-२९८)

रामप्रसाद—स० १८०५ के लगभग वर्तमान, बिल ग्राम (हरदोई) निवासी, जाति के भाट थे।

जैमिनी पुराण दे० (अ-२५४ ए)

पुष्प पर दे० (अ-२५४ बी)

राम प्रियाशरण—ये जनकपुर के महंत थे, सं० १९४२ के लगभग वर्तमान।

सीतायन दे० (अ-२५५)

रामभक्ति प्रकाशिका—जानकीप्रसाद कृत, नि० का० सं० १८७२, लि० का० सं० १८७४, वि० केशवदास कृत रामचंद्रिका पर टीका। दे० (घ-२०)

राममाला—चरणदास कृत, लि० का० स० १९०६, वि० रामनाम महिमा वर्णन। दे० (छ-१४७ ए)

राम मालिका—रामचरणदास कृत, नि० का० सं० १८८४, वि० राम और सीता का वर्णन। दे० (अ-२५५ सी)

राममुक्तावली—तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८५६; वि० राम नामोपदेश तथा माहात्म्य वर्णन। दे० (घ-६७)

राम रक्षा—कबीरदास कृत; लि० का० सं० १६०६; वि० रामनाम महिमा वर्णन। दे० (छ-१७७ एस)

राम रक्षा—रामानंद कृत, वि० राम का स्तोत्र। दे० (ज-२५० ए) (क-७६)

राम रत्नावली—हरसहाय कृत, नि० का० सं० १८७५; लि० का० सं० १८८६; वि० तुलसीकृत रामायण की चौपाइयों का संग्रह। दे० (ज-१०५ ए)

राम रत्नावली—अनाथदास (जगन्नाथ) कृत; नि० का० सं० १८०३, लि० का० सं० १६१०; वि० श्रीराम की स्तुति और प्रार्थना। दे० (छ-१२६ ए)

रामरत्न रत्नाकर—सरदार कवि कृत; लि० का० सं० १६०३; वि० रामचरित वर्णन, रामायण के आधार पर; इसमें अरण्य और किष्किंधाकांड नहीं है। दे० (ङ-७०)

रामरस वज्रयंत्र—सरदार कवि कृत; वि० विशेष कवित्तों का संग्रह। दे० (ङ-८६)

राम रसामृत सिंधु—महंत कृपानिवास कृत; लि० का० सं १६५८, वि० रामानुज सम्प्रदाय के सिद्धान्त और सीताराम का विहार वर्णन। दे० (ज-१५४ एफ़)

राम रसायन (आरण्य कांड)—पद्माकर भट्ट कृत, लि० का० सं० १८७४; वि० वाल्मीकीय रामायण के आधार पर पद्यात्मक अनुवाद। दे० (ख-३)

राम रसायन सुंदर कांड व किष्किंधा कांड—पद्माकर भट्ट कृत; लि० का० सं० १८६७; वि० वाल्मीकीय रामायण के आधार पर किष्किंधा और सुंदर कांडों का भाषा पद्यमय अनुवाद। दे० (ख-४)

राम रसायन (अयोध्या कांड)—पद्माकर भट्ट कृत; वि० वाल्मीकीय रामायण का भाषानुवाद। दे० (ख-२)

राम रसायन पिंगल—भगवतदास कृत; नि० का० सं० १८६८; लि० का० सं० १६५६, वि० पिंगल। दे० (ज-२१)

राम रसायन (बाल कांड)—पद्माकर भट्ट कृत; वि० वाल्मीकीय रामायण के आधार पर बाल काण्ड का पद्यात्मक अनुवाद। दे० (ख-१)

राम रसायन उत्तर और लंका कांड—पद्माकर भट्ट कृत; वि० वाल्मीकीय रामायण के आधार पर पद्यात्मक अनुवाद। दे० (ख-५)

राम रसाल—बाबा कीनाराम गोसाईं कृत; लि० का० सं० १६३८; वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज-१५०)

रामरसिक—एक साधु थे; झूँसी (प्रयाग) निवासी; गंगागिरि के शिष्य थे।

विवेक विलास दे० (छ-२१५)

रामरसिकावली—महाराज रघुराजसिंह कृत, नि० का० सं० १६००; ग्रंथ समाप्ति काल सं० १६२१; वि० भगवद्भक्तों के चरित्रों का वर्णन। दे० (ङ-८६)

राम रहस्य—जन हमीर कृत; वि० राम के अयोध्या में आनन्द विहार करने का वर्णन। दे० (छ-२७१)

रामरहस्य—सुन्दरि कुँवरि कृत, नि० का० स० १८५१, वि० रामलीला वर्णन। दे० (च-६८)

रामरहस्य—अन्य नाम कौशलेन्द्ररहस्य, राम चरण दास कृत, लि० का० सं० १८८६, वि० ज्ञान, भक्ति और प्रेम आदि का वर्णन। दे०(घ ६८)

रामरहस्य—हरसहाय कृत, नि० का० स० १८८६, लि० का० स० १८६०, वि० रामचन्द्र जी का चरित्र वर्णन। दे० (ज-१०५ बी)

रामरहस्य कलेवा—पर्वतदास कृत, लि० का० स० १६२२, वि० राम लक्ष्मण को राजा जनक द्वारा कलेवा के लिये बुलाने का वर्णन। दे० (छ-८७बी)

रामराव राजा—स० १८८० के लगभग वर्तमान, जाति के सूर्यवंशी क्षत्री थे।

काव्यप्रभाकर दे० (छ-३१५)

राम राय—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

हैजा मर्म दे० (छ-३१४)

राम रासो—अन्य नाम गुण राम रासो, माधव दास चारण कृत, नि० का० स० १६७५, लि० का० स० १८०१, वि० रामचन्द्र जी के गुण और चरित्र का वर्णन। दे० (च-८०)

राम विवाह खंड—भगवतसिंह (प्रधान) कृत, वि० राम विवाह वर्णन। दे० (छ-७६ डब्लू)

राम लगन—काष्टजिह्वा स्वामी कृत, नि० का० स० १६००, लि० का० स० १६०८, वि० रामगुण वर्णन। दे० (छ-१७६)

राम (लला) नहछू—गोस्वामी तुलसीदास कृत, वि० राम के नहछू समय के मंगल गान। दे०(घ-१२६)

रामलाल (शर्म्मा)—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

रामचंद्र ज्ञान विज्ञान मरीचिका दे० (ज-२४६)

रामलीला विहार नाटक—लक्ष्मण शरण कृत, वि० नाटक रूप में रामायण के बाल कांड की कथा। दे० (ज-१६५)

राम विनोद—रामचंद्र मिश्र कृत, नि० का० स० १७२०, लि० का० स० १६२८, वि० वैद्यक। दे० (ख-६२) (छ-३१२) (ज-२५४)

राम शलाका—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० स० १८२२, वि० ज्योतिष शकुनावली वर्णन। दे० (घ-६८)

राम सखे—इनकी जन्मभूमि जयपुर थी, साधु हो कर अयोध्या में रहने लगे थे और कुछ दिन चित्रकूट में भी रहे थे, स० १८०४ के लगभग वर्तमान थे।

नृत्य राघव मिलन दे० (च-७८)

राम सखे के पद दे० (च-७६)

रामसखे की दोहावली दे० (च-८०)

रासलीला दे० (च-८१)

रामसखे की बानी दे० (च-८२)

गीत दे० (छ-२१६ ए)

रासपद्धति और रासलीला दे० (छ-२१६ बी)

रासमाला दे० (छ-२१६ सी)

मंगल शतिका दे० (ज-२५७ ए)

पदावली दे० (ज-२५७ बी)

रामसखे की दोहावली—रामसखे कृत, वि० स्फुट कविता। दे (च-८०)

रामसखे की बानी—रामसखे कृत, लि० का० सं० १६२२, वि० रामचन्द्र जी के पद। दे० (च-८२)

रागसखे के पद—रामसखे कृत; वि० रामचंद्र के पद। दे० (च-७६)

रामसप्तशतिका—रामसहाय कृत, वि० राधा कृष्ण के रूप, प्रेम और यश का वर्णन। दे० (छ-२२)

रामसहाय—भवानीदास के पुत्र; काशी निवासी, काशी-नरेश महाराज उदितनारायणसिंह के आश्रित; सं० १८७३ के लगभग वर्तमान; जाति के अस्थाना कायस्थ थे।

रामसप्तशतिका दे० (ङ-२२)

बानी भूषण दे० (ङ-२३)

वृत्त तरंगिनी दे० (ङ-२४)

रामसहायदास—उप० भगत; चौबेपुर (बनारस) निवासी; जाति के कायस्थ; अंत में साधु हो गए थे; काशी-नरेश महाराज उदितनारायणसिंह के समकालीन थे।

ककहरा रामसहायदास का दे० (ज-२५६)

रामसागर—अनंदराम कृत; नि० का० सं० १८७६; लि० का० सं० १८७६; वि० अनेक भक्तों की बानी का संग्रह। दे० (ख-५६)

रामसार—कबीरदास कृत; वि० रामनाम की महिमा का वर्णन। दे० (ख-१०८)

रामसिंह—रीवाँ नरेश; सं० १६२० के लगभग वर्तमान, बादशाह अकबर के समकालीन; प्रसिद्ध गायनाचार्य तानसेन के आश्रयदाता थे, इन्होंने सं० १६२० में तानसेन को बादशाह अकबर के दरबार में उपस्थित किया था। दे० (ख-१२)

रामसिंह—जाति के कायस्थ जान पड़ते हैं; बुंदेलखंड निवासी जान पड़ते हैं; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

दस्तूर मालिका दे० (छ-१०१)

रामसिंह—सं० १८२६ के लगभग वर्तमान; नरवर (ग्वालियर राज्य) के अंतिम शासक और राजा छत्रसिंह के पुत्र थे।

रसनिवास दे० (छ-२१७ ए)

रसविनोद दे० (छ-२१७ बी)

रामसिंह—जयपुर नरेश, राज्य का० सं० १७२३-१७३२; सुंदरलाल कवि के समकालीन; कवि कुलपति मिश्र, लाल कवि (लक्ष्मीधर) चंद्र कवि और गंगाराम के आश्रयदाता थे। दे० (क-७२) (छ-१८८) (ज-८७) (क-१२५) (छ-१४४) (छ-१८५)

रामसेवक—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, ये आधुनिक कवि जान पड़ते हैं।

अक्षरावली दे० (ज-२५८)

ध्यान चिंतामणि दे० (ज-२५८)

रामस्वयंवर—राजा रघुराजसिंह कृत; वि० रामजन्म से सीय स्वयंवर तक की कथा का वर्णन। दे० (ख-७)

रामहोरी रहस्य—रामनाथ प्रधान कृत; नि० का० सं० १९१२, लि० का० सं० १६४६; वि० श्री रामचंद्रजी के फाल्गुण में सखाओं तथा सखियों के साथ होली खेलने का वर्णन। दे० (ख-८)

रामाज्ञा (सगुनौती)—गोस्वामी तुलसीदास कृत; वि० शकुन विचार। दे० (घ-८७) (छ-२४४ डी)

रामानंद—ये प्रसिद्ध सुधारक स्वामी रामानंद जी से भिन्न हैं, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं; स्यात् सं० १५०० के लगभग वर्तमान।

रामरक्षा दे० (क-७६)

रामानंद (स्वामी)—पंद्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में वर्तमान, प्रसिद्ध सुधारक, नामदेव छीपी व कबीर के गुरु थे। दे० (ग-१५) (ज-२०५)

रामानंद—१८वीं शताब्दी में वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रसमंजरी दे० (ज-२५० बी)

रामरक्षा (स्तोत्र) दे० (ज-२५० ए)

रामानंद—ये पहले सूबेदार थे, पीछे पेंशन लेकर सन्यासी हुए और अयोध्या में रहने लगे थे, सं० १६३३ के लगभग वर्तमान, मृत्यु का० सं० १६६४।

भगवत गीता भाषा दे० (ज-२५१ ए)

भजन संग्रह दे० (ज-२५१ बी)

रामानंद लहरी—रामचरणदास कृत, नि० का० सं० १८६५-१८७८, लि० का० सं० १८८५, वि० तुलसीकृत रामायण पर टीका। दे० (ट-६३)

रामानुजदास—१६ वीं शताब्दी में वर्तमान, रीवाँनरेश महाराज रघुराजसिंह के गुरु थे। दे० (ख-७)

रामायण—महाराज विश्वनाथसिंह कृत, नि० का० सं० १८४०, लि० का० सं० १८८६, वि० रामचन्द्र जी का चरित्र-वर्णन। दे० (घ-११५) (ज-३२६ एफ)

रामायण—गोमतीदास कृत, नि० का० सं० १६१५, लि० का० सं० १६२२, वि० रामचन्द्रजी का चरित्र-वर्णन। दे० (घ-६)

रामायण—हरिदास कृत, लि० का० सं० १६२७, वि० तुलसी कृत रामायण की संक्षिप्त कथा। दे० (ज-११०)

रामायण—सीताराम कृत, नि० का० सं० १८३५ वि० वरजारी के नाम कवि कृत रामायण पर पद्यात्मक व्याख्या। दे० (छ-२११)

रामायण (श्यामदास कृत)—अन्य नाम रामार्णव, श्यामदास कृत, नि० का० सं० १८१८ लि० का० सं० १८३६, वि० श्री रामचन्द्रजी का चरित्र वर्णन। दे० (ख-२१) (घ-१४५)

रामायण कोश—नवलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १६०३, वि० अकारादि क्रम से रामायण के पद। दे० (छ-७६ ए)

रामायण तुलसीकृत—हरसनलाल कृत, वि० गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण से शिक्षा और उपदेशात्मक पदों का संग्रह। दे० (ज-५६)

रामायण तुलसीदास कृत—गोस्वामी तुलसीदास कृत, नि० का० सं० १६३१, लि० का० सं० १६३१, केवल अयोध्या कांड राजापुर (बाँदा) वाला। दे० (ख-२८)

रामायण तुलसीदास कृत (बाल कांड)—गोस्वामी तुलसीदास कृत, नि० का० सं० १६३१, लि० का० सं० १६६१, जीर्णोद्धार का० सं० १८८६, वि० रामचन्द्रजी का बालचरित्र वर्णन। दे० (घ-२२)

रामायण परिचर्या—काष्ठजिह्वा स्वामी कृत, वि० तुलसी कृत रामायण की कठिन चौपाइयों पर टीका। दे० (छ-६६)

रामायण भाषा—चंद्रदास कृत, लि० का० सं० १८२३, वि० श्री रामजानकी की कथा का वर्णन। दे० (ज-३८ बी)

रामायण महानाटक—प्राणचंद चौहान कृत, नि० का० सं० १६६७, लि० का० सं० १७५४, वि० रामचंद्र की कथा का वर्णन। दे० (ग-६५)

रामायण राघव कृत—राघवजन कृत, वि० रामायण की संक्षिप्त कथा। दे० (ज-२३४)

रामायण शूचनिका—अलि रसिक गोविंद कृत, वि० रामायण की कथा का वर्णन। दे० (छ-१२२ जी)

रामायण सुमिरनी—नवलसिंह (प्रधान) कृत; वि० रामायण का सारांश वर्णन। दे० (छ-७६ वाई)

रामालंकृत मंजरी—केशवदास कृत, वि० श्री रामचंद्र जी का चरित्र वर्णन। दे० (क-५२ पाँच)

रामावतार—जसवंतसिंह कृत, वि० संक्षेप में राम-चरित्र वर्णन। दे० (छ-२७४)

रामाश्वमेध—मधुअरि दास कृत, नि० का० सं० १८३२; लि० का० सं० १६३८, वि० श्री रामचंद्रजी के अश्वमेध का वर्णन। दे० (ख-८७)

रामाश्वमेध—हरिसहाय गिरि कृत, नि० का० सं० १८५६, लि० का० सं० १८६६, वि० श्री रामचंद्र जी के अश्वमेध यज्ञ का वर्णम, पद्मपुराण पाताल खंड से अनुवादित। दे० (घ-१६)

रामाश्वमेध—गुरुदीन कृत वि० लवकुश के संग्राम का वर्णन। दे० (ज-१०१)

रामाश्वमेध—मधुसूदनदास कृत, नि० का० सं० १८३२; लि० का० सं० १८८३, वि० श्री रामचंद्र के अश्वमेध का वर्णन। दे० (ज-१८१)

रामाश्वमेध—मोहनदास मिश्र कृत; नि० का० सं० १८३६; लि० का० सं० १६१८, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६०२ और तीसरी का सं० १६२४; वि० श्री राम के अश्वमेध यज्ञ करने का वर्णन। दे० (ज-१६६ सी) (छ-२६५)

रामेश्वरसिंह—भोजपुर के राजकुमार; सं० १६०२ के लगभग वर्तमान, कालीचरण के आश्रयदाता। दे० (ङ-८१)

रायचंद्र—मुर्शिदाबाद के राजा डालचंद के आश्रित, १६ वीं शताब्दी में वर्तमान।
विचित्र मालिका दे० (ज-२३६)

रावण मंदोदरी संवाद—मुनि लावण्य कृत; वि० सीताहरण पर रावण मन्दोदरी का संवाद। दे० (क-८५)

रावराय—कल्याणमल के पुत्र, सं० १५६८ के लगभग वर्तमान। दे० (क-८७)

रासदीपिका—जनकराजकिशोरीशरण कृत; लि० का० सं० १६३०, वि० राम-जानकी का विहार वर्णन। दे० (ज-१३४ जे)

रासपंचाध्यायी—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० श्रीकृष्ण के नृत्य विलास का वर्णन। दे० (छ-१०० एफ)

रासपंचाध्यायी—कृष्णदेव कृत, लि० का० सं० १८८७, वि० राधाकृष्ण की रास का वर्णन। दे० (ज-१५६)

रासपंचाध्यायी—अन्य नाम पंचाध्यायी, नंददास कृत; लि० का० सं० १८७२; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८६३, वि० कृष्ण की रासलीला का वर्णन। दे० (छ-२००ए) (ख-६६)

रासपद्धति—कृपानिवास कृत, लि० का० सं० १६००, वि० राम-सीता का विहार वर्णन। दे० (ज-१५४ ए)

रासपद्धति और दानलीला—रामसखे कृत; वि० रामचंद्रजी की रासलीला का वर्णन। दे० (छ-२१६ बी)

रासमुक्तावली लीला—ध्रुवदास कृत, वि० कृष्ण विहार वर्णन। दे० (ज-७३ ओ)

रासरसलता—महाराज सावंतसिंह (नागरी दास) कृत, वि० कृष्ण की रासलीला का वर्णन। दे० (ग-१२६)

रिसाला वीरंदाजी—अमीर कृत, वि० बाण विद्या का वर्णन। दे० (द-४)

रुक्मांगद की एकादशी कथा—सुंदरदास कृत, नि० का० सं० १७०७, लि० का० सं० १७८४, वि० राजा रुक्मांगद की एकादशी के व्रत की कथा का वर्णन। दे० (छ-३३४)

रुक्मिणीजी को ब्याहलो—पदुम भगत कृत, वि० श्रीकृष्ण-रुक्मिणी के विवाह का वर्णन। दे० (क-२४)

रुक्मिणी परिणाय—राजा रघुराजसिंह कृत, नि० का० सं० १९०७, लि० का० सं० १९१७, वि० रुक्मिणी के विवाह का विस्तृत वर्णन। दे० (ख-२१०)

रुक्मिणी मंगल—नरहरि भट्ट कृत, वि० रुक्मिणी कृष्ण के विवाह का वर्णन। दे० (घ-११)

रुक्मिणी मंगल—जयसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १९२५, लि० का० सं० १९३२, वि० कृष्ण-रुक्मिणी विवाह वर्णन। दे० (छ-७९ पी)

रुक्मिणी मंगल—हीरालाल कृत, नि० का० सं० १८३६, लि० का० सं० १९३६, वि० रुक्मिणी हरण तथा विवाह वर्णन। दे० (घ-९४)

रुक्मिणी मंगल (दूसरो)—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का वर्णन। दे० (छ-१०० एच)

रुक्मिणी मंगल—ठाकुरदास कृत, लि० का० सं० १८१७, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १९१०, वि० कृष्ण-रुक्मिणी विवाह वर्णन। दे० (छ-११७)

रुक्मिणी मंगल—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० कृष्ण रुक्मिणी विवाह वर्णन। दे० (छ-१०० ई)

रुद्रप्रतापसिंह—सं० १८७७ के लगभग वर्तमान, ये गंगा किनारे। विंध्याचल के निकटवर्ती मांडव्य ग्राम के निवासी थे।

कैलाश पथ दे० (ख-२५)

रूपक रामायण—जयसिंह (प्रधान) कृत, लि० का० सं० १९२६, वि० रामचंद्र का वर्णन। दे० (छ-७९ टी)

रूपदास—सं० १८१२ के लगभग वर्तमान, अमर दास के शिष्य थे, इन्होंने अपने गुरु के गुरु सेवादास के नाम पर ग्रंथ लिखा।

सेवादास की परिचई दे० (ज-२६८)

रूपदीप—अन्य नाम नामरूपदीप, जयकृष्ण कृत, नि० का० सं० १७७६, लि० का० सं० १९१९, वि० पिंगल वर्णन। दे० (ज-१३८) (क-८०)

रूपमंजरी—नंददास कृत, वि० राजा धर्मधीर की कन्या की कल्पित कहानी। दे० (छ-२०१)

रूपमंजरी—राधावल्लभी सम्प्रदाय के सखी-समाज के वैष्णव और चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी थे।

ब्रजधाम दे० (ज-२६६)

रूप मिश्र—शंकर मिश्र के पिता, जाति के ब्राह्मण, सं० १७१६ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ज-२७७)

रूपरसिक—वृंदावन निवासी, हरिव्यास के शिष्य, वैष्णव साधु थे।

वृंदावन माधुरी दे० (छ-२२२)

रूपविलास—रूपसाहि कृत, नि० का० सं० १८१३, लि० का० सं० १८५७, अन्य प्रतियों का १९२५, १९२६ और १९४१, वि० काव्य, साहित्य, पिंगल आदि का वर्णन। दे० (घ-८३) (छ-१०५)

रूप सखी—ये रामानुज संप्रदाय के सखी समाज के वैष्णव थे।

होरी दे० (छु-३२२)

रूप सनातन—वृंदावन निवासी; गौड संप्रदाय के वैष्णव थे; इनके विषय में यह प्रसिद्ध है कि ये रूप और सनातन दो भाई थे; पहले राधाकुंड और दूसरे वृंदावन में रहते थे।

श्रृंगार सुख दे० (छु-२२३)

रूपसाहि—सं० १८१३ के लगभग वर्तमान; जाति के कायस्थ, कमलनयन के पुत्र, पन्ना (बुन्देलखंड) निवासी, महाराज हिंदूपति के आश्रित थे।

रूप विलास दे० (च-८३) (छु-१०५)

रेखता—कबीरदास कृत; लि० का० सं० १९११; वि० आत्मज्ञान और गुरु-माहात्म्य वर्णन। दे० (ज-१४३ पी)

रेखता दरिया साहब—दरिया साहब कृत; लि० का० सं० १९०७, वि० ज्ञान। दे० (ज-५५ जे)

रैदास—प्रसिद्ध भक्त सं० १५०५ के लगभग वर्तमान, स्वामी रामानन्द के शिष्य, वैष्णव संप्रदाय में इनका ऊंचा स्थान था; ये जाति के चमार थे।

रैदास जी की साखी व पद दे० (ग-५५)

रैदास की बानी दे० (ज-२४०)

रैदास के पद दे० (ग-६७)

रैदास की कथा—अन्य नाम रैदास की परिचयी; अनन्तदास कृत, नि० का० स० १६४५; वि० रैदास भक्त की कथा। दे० (छु-१२८ वी) (ख-१३३ तीन) (ज-५ प)

रैदास की परिचयी—अन्य नाम रैदास की कथा, अनन्तदास कृत; नि० का० सं० १६४५; वि० रैदास भक्त की कथा। दे० (ज-५ प) (ख-१३३ तीन)

रैदास की बानी—रैदास कृत, नि० का० सं० १५०७; वि० ईश्वर-महिमा वर्णन। दे० (ज-२४०)

रैदास के पद—रैदास कृत; लि० का० सं० १७०६; वि० ज्ञान और भक्ति। दे० (ग-६७)

रैदासजी की साखी तथा पद—रैदास कृत; वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ग-५५)

रैनरूपारस—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० कृष्ण का विलास-वर्णन। दे० (ग-१२६)

लछमण—ये कबीर-पंथी जान पड़ते हैं; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

निर्माण रमैनी दे० (छु-२८३)

लछमण चंद्रिका—लछमणराव कृत; नि० का० सं० १८७३; लि० का० सं० १९४५, वि० केशव कृत कविप्रिया पर टीका। दे० (छु-१८७)

लछमणदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

एक से दो दोहों का रूपद दे० (छु-२८४)

लछमण पाठक—भवानीशंकर के पिता; भदैनी (बनारस) निवासी, स० १८७१ के पूर्व वर्तमान, जाति के ब्राह्मण थे। दे० (ख-१३)

लछमणप्रसाद—गुन्नूलाल उपाध्याय के पुत्र; बाँदा निवासी; सं० १९०० के लगभग वर्तमान थे।

नाम चक्र दे० (ज-१६२)

लछमणराव—ग्वालियर नरेश दौलतराव सेंधिया के सरदारों में थे और इन्हें शमशेर जंग बहादुर की उपाधि मिली थी; सं० १८७२ के लगभग वर्तमान थे।

लक्ष्मण चंद्रिका दे० (छ–१८७)

लक्ष्मण शतक—मान (खुमान कवि) कृत, नि० का० सं० १८१५, लि० का० सं० १९४७, दूसरी का १९५२ और तीसरी का सं० १९५६, वि० लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध का वर्णन। दे० (छ–७० डी)

लक्ष्मणशरण—उप० मधुकर, ये अयोध्या के रामानुज संप्रदाय के वैष्णव साधु थे।

रामलीला विहार नाटक दे० (ज–१९५)

लक्षण शृंगार—मतिराम त्रिपाठी कृत, लि० का० सं० १८७६, वि० हाव भाव वर्णन। दे० (छ–१९९ सी)

लक्ष्मणसिंह—दीवान रामसिंह के पुत्र, ओड़छा निवासी, टहरौली के जागीरदार, सं० १७९४ के लगभग वर्तमान, शाहजू पंडित के आश्रय दाता थे। दे० (छ–१०७)

लक्ष्मणसिंह प्रकाश—शाह जू पंडित कृत, नि० का० सं० १७९४, लि० का० सं० १७९४, वि० ज्योतिष। दे० (छ–१०७ ए)

लक्ष्मणसिंह प्रधान—सं० १८६० के लगभग वर्तमान, जाति के कायस्थ, टीकमगढ़ निवासी, अर्जुनसिंह के आश्रित थे।

सभा विनोद दे० (छ–९६)

रघुवीर प्रमोद दे० (छ परि०१–९२)

प्रतिपात्र परिणाम दे० „ „

लक्ष्मणसिंह राजा—बिजावर (बुंदेलखंड) नरेश, राज्य का० सं० १८९०–१९०४, इन्होंने हिंदी और संस्कृत दोनों भाषाओं में रचना की थी।

नृप नीति शतक दे० (छ–९५ ए)

सभय नीति शतक दे० (छ–९५ बी)

भक्ति प्रकाश दे० (छ–९५ सी)

धर्म प्रकाश दे० (छ–९५ डी)

लक्ष्मणसेन पद्मावती कथा—दामो कृत, नि० का० सं० १५१६, लि० का० सं० १९९६, वि० पद्मावती की कथा का वर्णन। दे० (क–८८)

लक्ष्मीचंद—मोहनलाल के पुत्र, चरखारी (बुंदेलखंड) निवासी, सं० १६१६ के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण थे, मोहनलाल ने अपने इन्हीं पुत्र (लक्ष्मीचंद) के लिये शृंगार सागर ग्रंथ की रचना की थी। दे० (च–७०)

लक्ष्मीचंद—ये कोई राजकुमार थे, काशीराम कवि के आश्रयदाता, औरंगजेब के समकालीन थे। दे० (च–७)

लक्ष्मीनाथ—सं० १८८३ के लगभग वर्तमान, जोधपुर निवासी, जोधपुर नरेश महाराज मानसिंह के आश्रित, दीनानाथ के पुत्र, बालकृष्ण के पौत्र और जोड़ा जयकृष्ण के प्रपौत्र, ये जाति के पुष्करणा ब्राह्मण थे।

राज विलास दे० (ग–२१)

भजन विलास दे० (ग–२१)

लक्ष्मीनारायण—काशीराज कवि के पिता। दे० (ज–१४४)

लक्ष्मीनारायण—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

प्रेम तरंगिनी दे० (ज–१६६)

लक्ष्मीनारायण विनोद—काशी नरेश-चेतसिंह कृत, नि० का० सं० १८४०, वि० प्रश्न-ज्ञान का वर्णन। दे० (ज–४७)

लक्ष्मीप्रसाद मुसाहब—जाति के ब्राह्मण, सं० १६०६ के लगभग वर्तमान। महाराज छत्रसाल के वंशज बिजावरनरेश राजा भानुप्रताप के आश्रित और सरदारों में थे।
शृंगार कुंडली दे० (च-८४)

लक्ष्मीश्वर चंद्रिका—संत कवि कृत; नि० का० सं० १६४२, वि० अलंकार और नीति का वर्णन। (यह पुस्तक महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह दरभंगा-नरेश को समर्पित की गई थी।) दे० (क-५१)

लक्ष्मीश्वरसिंह—दरभंगा-नरेश, सं० १६४२ के लगभग वर्तमान, संत कवि के आश्रयदाता; इनके दीवान पंडित शिवप्रसाद के कहने से संत कवि ने लक्ष्मीश्वर-चंद्रिका ग्रंथ बनाया। दे० (क-५१)

लखनदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
गुरु चरितामृत दे० (ज-१६८)

लखनसेन—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
महाभारत भाषा दे० (ज-१६७)

लगन पचीसी—कृपानिवास कृत, लि० का० सं० १६२३, वि० ईश्वर-प्रेम वर्णन। दे० (ज-१५४ डी)

लग्नाष्टक—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, वि० कृष्णलीला वर्णन। दे० (ख-१२१ सात)

लघुजन—उप० विक्रमाजीत; ओड़छा (बुंदेलखंड) नरेश; राज्य का० सं० १८३३-१८७४, किशोरदास और स्वरूपसिंह के आश्रयदाता। दे० (छ-६१)
लघुसतसइया दे० (छ-६७ ए)
भारत संगीत दे० (छ-६७ बी)
पदराग मालावती दे० (छ-६७ सी)
विष्णुपद दे० (छ-६७ डी)
विष्णुपद दूसरा दे० (छ-६७ ई)

लघुमति—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
बरनायरे दे० (छ-२८६)

लघुराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।
कवित्त दे० (छ-२८७ ए)
मल्ल विहारजी दे० (छ-२८७ बी)

लघुसतसइया—लघुजन कृत; नि० का० सं० १८२६; लि० का० सं० १८६६; वि० ६३ भावों का वर्णन, चौबे किशोरदास और स्वरूपसिंह ने इसकी टीका की है। दे० (छ-६७ ए)

लच्छीराम—कवि दयाराम के पिता; सं० १७७६ के पूर्व वर्तमान; दिल्ली निवासी थे। दे० (ख-५०)

लच्छीराम—सं० १८५० के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।
भागवत भाषा दे० (ज-१६३)

लच्छीराम—उप० कृष्णजीवन लच्छिराम; कृष्णजीवन के पुत्र; अयोध्या के प्रसिद्ध लच्छीराम से भिन्न हैं।
योग सुधानिधि दे० (छ-२८५ ए)
करुणाभरण नाटक दे० (छ-२८५ बी) (ग-६२) (क-७४)

ललकदास—बेनी कवि के समकालीन, सं० १८८७ के लगभग वर्तमान; लखनऊ निवासी; भड़ौआ-कार थे।
सत्योपाख्यान दे० (ज-१७१)

ललित—उप० अर्जुन। दे० "अर्जुन" (ज-६)

ललित ललाम—मतिराम कृत; वि० पिंगल आदि का वर्णन। दे० (घ-६७)

ललिता शृंगार दीपिका—जनकराजकिशोरी-शरण कृत, लि० का० सं० १८३०; वि० रामचंद्र

तथा जानकी जी के ध्यान करने की विधि का वर्णन। दे० (ज-१३४ भी)

लल्लू भाई—भृगुपुर निवासी, जाति के वैश्य; स० १८३३ के लगभग वर्तमान थे।

उदाहरण मंजरी दे० (ज-१७२)

लल्लूलाल—उप० लाल कवि, काजिमअली के समकालीन, आगरा निवासी, जाति के गुजराती ब्राह्मण, कलकत्ते के फोर्ट विलियम में हिंदी के अध्यापक थे; स० १८६६ के लगभग वर्तमान, ये हिंदी के प्रथम गद्य लेखक समझे जाते हैं। दे० (छ-१८०)

लाल चंद्रिका दे० (ज-१७२)

प्रेमसागर दे० (छ-१६२ ए)

हिंदी अंग्रेजी और फारसी कोश दे०(ज-१७४)

(छ-१६२ बी)

राजनीति दे० (ज-१७४ बी)

ललनासिंह (स्वामी)—मझौठ के स्वामी, स० १८६१ के लगभग वर्तमान, ग्वाल कवि के आश्रयदाता। दे० (ज-प० ३-१६)

लाडलीदास—राधावल्लभी सम्प्रदाय के अनुयायी, वृंदावन निवासी, स० १८४२ के लगभग वर्तमान।

धर्म सुबोधनी दे० (ज-१६४)

लाडूनाथ महाराज—इनका पूरानाम गुरु आयुस लाडूनाथ महाराज था, जोधपुर-नरेश महाराज मानसिंह के वंशज, स०१८६० के लगभग वर्तमान, कवि मनोहरदास के आश्रयदाता, इन्होंने एक दिन में २५ हाथी और २५ लाख रुपए २५ कवियों को दिए थे। दे० (ग-११)

लाल कवि—गणेश कवि के पितामह और गुलाब कवि के पिता, स० १८३३ के लगभग वर्तमान, काशी-नरेश महाराज चेतसिंह के आश्रित थे।

रामूचा दे० (घ-११३)

कवित्त (काशीनरेशों की प्रशंसा में) दे० (घ-११४) (घ-२४)

लाल कवि—उप० लक्ष्मीधर, स० १७२७ के लगभग वर्तमान, जयपुर-नरेश महाराज रामसिंह के आश्रित थे।

भारतसार दे० (छ-१८८)

लाल कवि—उप० गोरेलाल, स० १७३२ के लगभग वर्तमान, पन्ना-नरेश महाराज छत्रसाल के आश्रित, मऊ निवासी थे।

बरवै दे० (छ-४३ ए)

छत्र प्रकाश दे० (छ-४३ बी)

राजविनोद दे० (छ-४३ सी)

लाल कलानिधि—जन्म का० स० १८०७, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

लाल कलानिधि कृत नखशिख दे० (क-११२)

लाल कलानिधि कृत नखशिख—लाल कलानिधि कृत, वि० शृंगार रस का वर्णन। दे० दे० (क-११२)

लालचंद—मीमागसूरि के शिष्य, स० १७३१ के लगभग वर्तमान, बीकानेर-नरेश अनूपसिंह के कोठारी मैणसी के पुत्र जगतसी के आश्रित, जिनचंद्र सूरि के अनुयायी थे।

लीलावती भाषा बंध दे० (ग-३६)

लाल चंद्रिका—कवि लाल (लल्लूलाल) कृत, नि० का० सं० १८३५, वि० बिहारी-सतसई पर टीका। दे० (ज-१७२)

लालचदास—उप० लालन दास, जाति के ब्राह्मण,

डलमऊ (रायबरेली) निवासी, सं० १५६५ के लगभग वर्तमान थे।

हरिचरित्र दे० (छ-१८६)

लालजी—सं० १८४३ के पूर्व वर्तमान, पंचोली जेठमल के पिता, नागौर (मेवाड) निवासी; जाति के माथुर कायस्थ थे। दे० (ग-१००)

लालदास—अयोध्या निवासी, पहले बरेली में रहते थे, सं० १७३२ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

अवध विलास दे० (ख-३२) (ज-१६६) (छ-१६० सी)

बारहमासी दे० (छ-१६० ए)

भरत की बारहमासी दे० (छ-१६० बी)

लालदास—आगरा निवासी, बादशाह अकबर के समकालीन, स० १६४३ के लगभग वर्तमान, जाति के वैश्य, स्वामी ऊधौदास के पुत्र थे।

इतिहास भाषा (इतिहास सार समुच्चय) दे० (ग-२६) (घ-१०)

बलि वामन की कथा दे० (छ-१६१)

लालदास—मनोहरदास के पुत्र, मालती (मालवा) निवासी थे।

ऊषा कथा दे० (ज-१७० ए)

वामन चरित्र दे० (ज-१७० बी)

लालमणि—वंसी कवि के पिता, जाति के कायस्थ; सं० १७८० के पूर्व वर्तमान, ओडछा (बुंदेलखंड) निवासी, राजा उद्योतसिंह के समकालीन थे। दे० (छ-११)

लालमुकुंद विलास—मुकुंदलाल कृत, वि० काव्य ग्रन्थ, नायिका-भेद वर्णन। दे० (घ-६५)

लालित्य लता—दत्त (देवदत्त) कृत, नि० का० सं० १७६१; लि० का० सं० १८०१; दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८६२; वि० अलंकार वर्णन। दे० (घ-५५) (ज-५६)

लीलावती—धनराम कृत, नि० का० सं० १७५६; वि० संस्कृत लीलावती का हिंदी अनुवाद। दे० (छ-२५)

लीलावती—शंकर मिश्र कृत, नि० का० सं० १७१८; लि० का० स० १८२६, वि० लीलावती का भाषानुवाद। दे० (ज-२७७) (ट-१४०)

लीलावती भाषाबंध—लालचंद कृत; नि०का० सं० १७३६, लि० का० सं० १७६३, वि० लीलावती का भाषानुवाद। दे० (ग-७६)

लुकमान—जाति के मुसलमान; इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

वैद्यक दे० (ज-१७५)

लैला मजनूँ—रामराय कृत; वि० लैला मजनूँ के प्रेम की कहानी। दे० (छ-२१४)

लोकनाथ—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

हरिवंश चौरासी पर टीका दे० (छ-२८८)

लोकोक्ति—राय शिवदास कृत; लि० का० सं० १६०५, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ज-२४१)

वंशावली (नंदजी की)—सदानन्ददास कृत; वि० नन्द जी की वंशावली का वर्णन। दे० (ज-२७१)

वंशावली—शिवनाथ कृत; नि० का० सं० १८८१; लि० का० सं० १८८२; वि० रीवाँ के राजाओं का इतिहास। दे० (ख-१०६)

वंशावली (वृषभान राय की)—किशोरीदास कृत, वि० वृषभान राय की वंशावली। दे० (ज-१५२)

वंशी वर्णन—अन्य नाम वीरवपचीसी, वीरम कवि कृत, लि० का० सं० १६३८, वि० वंशी का वर्णन। दे० (ज-७३)

वज्रनाम की कथा—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० संस्कृत हरिवंश के आधार पर राजा वज्रनाभ की कथा का वर्णन। दे० (छ-१०० आई)

वज्रशूचि ग्रंथ—शंकर कृत, लि० का० सं० १६२०, वि० ब्राह्मणों के धर्म और लक्षण का वर्णन। दे० (ज-२७८)

वनजन प्रशंसा प्रबंध—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, नि० का० सं० १८१६, वि० वृंदावन की भूमि, गुल्म, लता, पक्षी, पशु और जीव जंतु आदि की प्रशंसा तथा राधाकृष्ण की वंदना। दे० (ज-११७)

वनविनोद लीला—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, नि० का० सं० १८०६, वि० कृष्ण का व्रज के वनों के खेत से वन में बुलाकर खाने की लीला का वर्णन। दे० (ज-१२२)

वनविहार (लीला)—ध्रुवदास कृत, वि० राधा कृष्ण की विहारलीला, भजन तथा माहात्म्य वर्णन। दे० (क-१३ तीन) (ज-७१ जेड)

वर्णमाला—भूपनारायणसिंह कृत, नि० का० सं० १८४५, वि० विन्ध्यवासिनी देवी की वंदना। दे० (ज-२६ बी)

वर्षोत्सव—कृपानिवास कृत, लि० का० सं० १६२६, वि० रामानुज संप्रदाय के वर्ष भर के उत्सवों पर गाने योग्य पद और भजन। दे० (ज-१५४ ई)

वल्लभ भट्ट—कुमारमणि के पिता, दतिया (बुंदेलखंड) निवासी, सं १८०२ के लगभग वर्तमान थे। दे० (च-५)

वल्लभदास—राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव, व्रज निवासी, सेवक स्वामी के अनुयायी थे। सेवक बानी को सिद्धान्त दे० (ज-३२५)

वल्लभ रसिक—हरिदास के शिष्य, जन्म का० सं० १६८?, वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे। वल्लभ रसिक की की माँझ दे० (क-६७) (छ-परि-१-१०) वल्लभ रसिक जी की साँझी दे० (ज-३२६)

वल्लभरसिक की माँझ—वल्लभरसिक कृत, वि० श्रीकृष्ण राधिका का वर्णन। दे० (क-६७)

वल्लभरसिक की साँझी—वल्लभरसिक कृत, वि० राधावल्लभी संप्रदाय के गाने योग्य पद। दे० (ज-३२६)

वल्लभाचार्य—विट्ठलनाथ के पिता, वल्लभ संप्रदाय के संस्थापक, जन्म का० सं० १५३५, मृत्यु का० सं० १५८७, हरिदास के गुरु थे। दे० (क-३८) (ग-५८) (ज-११५)

वसत—राजा विश्वनाथसिंह कृत, वि० ब्रह्म और जीव का वर्णन। दे० (ज-३२६ बी)

वसंत—निरंजनदास के पिता, आनन्दपुर निवासी, सं० १७८५ के पूर्व वर्तमान। दे० (छ-२०२)

वसतराम—सूदन कवि के पिता, जाति के माथुर चौबे, मथुरा निवासी, सं० १८७६ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (क-८१)

वसंतविहार नीति—चतुरदास कृत, नि० का० सं० १६१०, लि० का० सं० १६११, वि० गुलिस्ताँ का भाषानुवाद, यह अनुवाद मौलवी अब्दुल हादी की सहायता से किया गया था। दे० (क-१)

वसिष्ठ श्री रामजू को सवाद—सेवकराम कृत,

लि० का० सं० १८११; वि० ब्रह्म का वर्णन। दे० (ज-२६०)

वसुदेवमोचनी लीला—घनश्याम दास कृत, लि० का० सं० १६५२, वि० श्रीकृष्ण जन्म और वसुदेव का बंदी-मुक्त होना। (छु-३६ बी)

वाक सहस्री—यदुनाथ कृत, वि० कहावतों का संग्रह। दे० (ज-३३२ बी)

वाजिद—कासिम का पिता, सं० १६४८ के लगभग वर्तमान। दे० (ज-१४७)

वाण (कवि)—सं० १६७४ के लगभग वर्तमान; दिल्ली के समीप के निवासी; अब्दुलरहीम खानखाना (रहीम) के आश्रित, जाति के माथुर चौबे, इनको राव की उपाधि मिली थी और बादशाह अकबर की ओर से नदी गाँव इन्हें जागीर में मिला था।

कलि चरित्र दे० (छु-१३४)

वानी—सरसदास कृत, वि० राधाकृष्ण के गुण और सौंदर्य का वर्णन। दे० (छु-२२६)

वानी—सेवकहित कृत, लि० का० सं० १८६८, वि० हितहरिवंश की प्रशंसा। दे० (छु-२३२)

वानी—हित गुलाबलाल कृत, लि० का० सं० १८६७, वि० भिन्न भिन्न अनुभावों का वर्णन। दे० (छु-१७२)

वानी—बख़त कुँवरि (उप० प्रियासखी) (स्त्री) कृत, लि० का० सं० १८४८, वि० राधाकृष्ण का प्रेम-वर्णन। दे० (छु-८)

वानी (रससार)—रसिकदास कृत, वि० कृष्ण-सौंदर्य और उनके प्रति भक्ति का वर्णन। दे० (छु-२१८ बी)

वानीभूषण—रामसहाय कृत; वि० काव्य की रीति का लक्षण आदि। दे० (ङ-२३)

वामनकथा—राजा जयसिंह जू देव कृत; वि० भगवान के वामन अवतार की कथा। दे० (क-१४२)

वामाविनोद—गोकुल कवि कृत, नि० का० सं० १६२६, लि० का० सं० १६३०, वि० धार्मिक और आचारिक रीति का वर्णन। दे० (ज-६५ बी)

वारण कवि—उप० बरारी मुग़ल, सं० १७१२ के लगभग वर्तमान, सैयद अशरफ़ जहाँगीर के शिष्य, सुलतान शुजा के आश्रित, जाति के कुशल थे।

रत्नाकर दे० (ङ-७६)

रसिक विलास दे० (च-६३)

वाल्मीकीय रामायण—छत्रधारी कृत; लि० का० सं० १६१४, वि० वाल्मीकीय रामायण के तीन कांडों का अनुवाद। दे० (ङ-६८)

वाल्मीकीय रामायण—संतोषसिंह कृत; नि० का० सं० १८६०; वि० वाल्मीकीय रामायण का भाषानुवाद। दे० (घ-१२१)

वाल्मीकीय रामायण श्लोकार्थ प्रकाश—गणेश कवि कृत; वि० वाल्मीकीय रामायण के बाल कांड तथा सुंदर कांड के पाँच सर्गों का भाषानुवाद। दे० (घ-२४)

वामन चरित्र—लालदास कृत, वि० बलि-वामन की कथा का वर्णन। दे० (ज-१७० बी)

वामन वृहद्द पुराण की भाषा—ध्रुवदास कृत; वि० व्रजगोपियों का माहात्म्य वर्णन। दे० (क-१४)

वासुदेव—रामधन के पिता और हरिचरणदास के पितामह, सं० १७६६ के पूर्व वर्तमान। दे० (ङ-५८)

विक्रम विलास—शिवराम भट्ट कृत, लि० का० सं० १८८४, वि० सूर्यवंशावली तथा उपदेशक, मंत्री और शासक के लक्षण का वर्णन। दे० (छ–११०)

विक्रम विलास—गंगाधर कृत, नि० का० सं० १७३६, लि० का० सं० १७६५, वि० बैताल पचीसी की कथाओं का पद्यानुवाद। दे० (ज–८६)

विक्रम सतसई—महाराज विक्रमाजीत (चरखारी नरेश) कृत, लि० का० सं० १८७५, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (च–५६) (छ–११६)

विक्रम साहि—उप० विक्रमाजीत या विक्रमादित्य, चरखारी (बुन्देलखंड) नरेश, राज्य का० सं० १८३९–१८८६, विजयबहादुर इनकी उपाधि थी, खुमान, भोजराज, प्रताप और प्रयागदास कवि के आश्रयदाता, ये स्वयं भी अच्छे कवि थे।

हरिभक्त विलास पूर्वार्द्ध दे० (च–७२)

हरिभक्त विलास उत्तरार्द्ध दे० (च–७३)

विक्रम सतसई दे० (च–५६) (छ–११६) (ज–२२७) (ज–२२८) (च–७४) (च–५२) (च–५६) (छ–८६) (छ–१५)

विक्रमाजीत—ओड़छा नरेश, राज्य का० सं० १८३३–१८७४, शिवराम भट्ट और सर्वसुख कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ–१०९) (छ–११०)

विचारमाला—अनाथदास (अनमनाथ) कृत, लि० का० सं० १८०२, लि० का० सं० १८६३ और १८१७, वि० गुरु शिष्य का व्यावहारिक और आध्यात्मिक विषय पर संवाद। दे० (छ–१२६ बी) (छ–२६५) (ज–७) (नि० का० सं० १७८३ भी दिया है। दोनों में से एक अशुद्ध है।)

विचार माला—सुन्दरदास कृत, लि० का० सं० १६३५, वि० गुरु-माहात्म्य और ईश्वर-भक्ति वर्णन। दे० (ज–३११ सी)

विचित्र कवि—सं० १७४० के लगभग वर्तमान, फफूँद (इटावा) निवासी, मालवा के शासक बंगसखाँ के आश्रित थे।

रस विलास। दे० (छ–२४२)

विचित्र मालिका—रामचंद्र कृत, लि० का० सं० १८३४, वि० ब्रज विलास का सार वर्णन। दे० (ज–२३६)

विजयदेव सूरि—सं० १६६६ के पूर्व वर्तमान, जैनमतावलंबी, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

शीलरास दे० (क–६१)

विजय बहादुर—चरखारी नरेश, उप० विक्रम साहि या विक्रमाजीत। दे० "विक्रमसाहि"।

विजय मुक्तावली—छत्रसिंह कृत, नि० का० सं० १७५७, लि० का० सं० १८६०, दूसरी प्रति का १८७६, वि० महाभारत का पद्यात्मक वर्णन। दे० (छ–२३) (ज–५८)

विजय सखी—बख्शी हंसराज के गुरु, सखी संप्रदाय के अनुयायी थे। दे० (क–१३५)

विजयसिंह—जोधपुर नरेश, राज्य का० सं० १८०६–१८४९, महाराजकुमार शेरसिंह के पिता, माधवदास कवि के आश्रयदाता थे। दे० (ज–७८) (ग–१६)

विज्ञान गीता—केशवदास कृत; नि० का० सं० १६६७; लि० का० सं० १८४७, वि० सांसारिक वस्तुओं और सुखों की असारता का योगवशिष्ठ के आधार पर वर्णन। दे० (क-५२) (क-५५) (ङ-१२७)

विज्ञान भास्कर—नवलसिंह (प्रधान) कृत; नि० का० सं० १८७८, लि० का० सं० १८८४, वि० आत्मज्ञान वर्णन। दे० (छ-७६ डी)

विदुर प्रजागर—कृष्ण कवि कृत; नि० का० सं० १७६२; लि० का० सं० १६०५; और दूसरी प्रति का १६३२, वि० महाभारत की विदुर-नीति का भाषानुवाद। दे० (ज-७) (छ-६३ बी)

विद्या कमल—जैन मातानुयायी; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं है।

भगवत गीत दे० (क-६७)

विद्वद्विलास—ब्रह्मदत्त कृत; नि० का० सं० १८६१, लि० का० सं० १८६१; वि० खल, सज्जन, सूम और धनी आदि का वर्णन। दे० (ङ-३४)

विद्वानमोदतरंगिनी—सुवंश शुक्ल कृत। दे० (ज-३०६)

विनय नव पचक—रामगुलाम कृत, लि० का० सं० १६५७, वि० रामचंद्र, लक्ष्मण और सीता आदि की स्तुति के पद। दे० (छ-२१३)

विनय पचीसी—रामकृष्ण चौबे कृत; वि० कृष्ण की स्तुति। दे० (छ-१०० बी)

विनयपत्रिका—महाराज रघुराजसिंह कृत; नि० का० सं० १६०७, वि० श्री रामचन्द्र के प्रशंसात्मक पद। दे० (क-४६)

विनयपत्रिका—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८८४; दूसरी प्रति का १८७६; वि० श्री राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, महादेव और गंगा आदि की स्तुति और प्रार्थना के पद। दे० (छ-२४५ जी) (ज-३२३ एल)

विनयपत्रिका की टीका—महाराज रत्नसिंह कृत, नि० का० सं० १६०८; वि० गोस्वामी तुलसीदास की विनयपत्रिका पर टीका। दे० (छ-१०४)

विनयमाल—दयादास कृत; लि० का० सं० १६५६; वि० दोहों में ईश्वर स्तुति और प्रार्थना। दे० (छ-२५)

विनय समुद्र—बीकानेर निवासी; सं० १६११ के लगभग वर्तमान; इनकी गुरु-परंपरा इस प्रकार है:—

केशी गुरु
|
रेणप्य सूरि
|
कक सूरि
|
देवगुप्त गुरु
|
सिद्ध सूरि
|
संग्रह विजय
|
हर्ष समुद्र
|
विनय समुद्र

दे० (ख—७४)

विनयसार—सुंदरदास कृत, नि० का० सं० १८५७, वि० स्तुति और प्रार्थना। दे० (ग्र-८८)

विनोद काव्य सरोज—श्रीपति कवि कृत, वि०

हिन्दी काव्य रचना के नियमादि । दे० (क-४८) (अ-१०४ सी)

विनोदचंद्रिका—अन्य नाम रतिविनोद रस चन्द्रिका, कवींद्र उदयनाथ कृत, नि० का० स १७७५, लि० का० स० १८६०, वि० नायिका भेद वर्णन । दे० (घ-११८)

विनोदसागर—माधवदास कृत, नि० का० स० १६५६, लि० का० स० १७३८, वि० श्रीकृष्ण की जन्म-लीला का वर्णन । दे० (घ-६८)

विनोदीलाल (राय)—राय चिरंजीलाल के पुत्र, जन्म स० १८५१, मृत्यु सं० १९१५, राय सोहनलाल के पिता थे ।

कृष्ण विनोद दे० (ग-१०२)

विवाह प्रकरण—सबापनदास कृत, नि० का० स० १८०४, वि० राधा-कृष्ण के विवाह का वर्णन। दे० (छ-२५० बी)

विमल वैराग्य संपादिनी—सतसिंह कृत, नि० का० सं० १८८८, लि० का० स० १९३१, वि० गोस्वामी तुलसीदास की रामायण के अयोध्या काण्ड की टीका । दे० (अ-२८२ बी)

विमल वैराग्य संपादिनी—संतसिंह कृत, नि० का० स० १८८८, लि० का० स १९३१, वि० तुलसीदास की रामायण के अरण्य काण्ड की टीका । दे० (अ-२८२ सी)

विमल वैराग्य संपादिनी—संतसिंह कृत, नि० का० स० १८८८ लि० का० स० १९३१, वि० तुलसी कृत रामायण क सुंदरकांड की टीका। दे० (अ-२८२ ई)

विमल वैराग्य संपादिनी—संतसिंह कृत, नि० का० सं० १८८८ लि० का० सं० १९३०, वि० तुलसी कृत रामायण के लंका कांड की टीका। दे० (अ-२८२ एफ)

विरंचि कुँवरि (स्त्री)—ठाकुर अमरसिंह के पुत्र साहेबदीन की पत्नी, गलवारा (जौनपुर) निवासिनी, सं० १९०५ के लगभग वर्तमान थी।

सतीविलास दे० (अ-३९)

विरदसिंह—कृष्णगढ़ नरेश राजा बहादुरराज के पुत्र, हरिचरण दास कवि के आश्रयदाता, सं० १८१५ के लगभग वर्तमान थे। दे० (ङ-५८)

विरह-बत्तीसी—*मथुरानाथ शुक्ल कृत,* नि० का० सं० १८३५, वि० शृंगार रस की कविता । दे० (अ-१९५ ए)

विरह-मंजरी—नन्ददास कृत, वि० गोपियों का *विरह वर्णन* । दे० (अ-२०८ एफ) (ग-७०)

विरह-शतक—रामचरण दास कृत, वि० परमेश्वर की वंदना । दे० (अ-२५५ एम) (ग-७०)

विरुद-शृंगार—कर्णीदान जी कृत, वि० जोधपुर नरेश महाराज अभयसिंह के गुजरात विजय करने का संक्षिप्त इतिहास । दे० (ख-१०५)

विरुदावली—पद्माकर भट्ट कृत, वि० जयपुर-नरेश महाराज जगतसिंह सवाई के यश और वीरता का वर्णन । दे० (छ-८२ डी)

विलास सरि—नवलसिंह कृत, वि० राम विवाह वर्णन । दे० (छ-७९ जेड)

विलास तरंग—श्रीगोविंद कृत, नि० का० सं० १८८०, लि० का० स० १९४६, वि० कोक शास्त्र । दे० (अ-१०० ए)

विल्किसन—ओंकार भट्ट के आश्रयदाता, भूपाल क पलौंट । दे० (अ-२१९)

विवेक-चेतावनी—सुंदरदास कृत, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज-३११ डी)

विवेक-दीपिका—अनन्य (अक्षर अनन्य) कृत, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज-८ बी)

विवेक-पंचामृत—मथुरानाथ शुक्ल कृत, नि० का० सं० १८५२; वि० पाँच सूत्रों का भाषानुवाद। दे० (ज-१९५ एफ़)

विवेक-विलास—चंद्रशेखर कृत, नि० का० सं० १८९७, वि० पटियाला नरेश आलदासिंह की वंशावली। दे० (घ-१०२)

विवेक-विलास—रामरसिक कृत, लि० का० सं० १९२७; वि० आचारिक और आध्यात्मिक वर्णन। दे० (छ-२१५)

विश्वनाथ नवरत्न—दीनदयाल गिरि कृत, वि० शिवजी की स्तुति और प्रार्थना। दे० (ङ-४४)

विश्वनाथसिंह (राजा)—रीवाँ नरेश; प्रियादास के शिष्य; राज्य का० सं० १८७०-१९११; रघुराजसिंह के पिता; इन्होंने बहुत से ग्रंथों की रचना की, बख्शी समनसिंह अजवेश के आश्रयदाता थे। दे० (क-४२) (ख-१५) (ख-१९)

अष्टयाम का आन्हिक दे० (क-४३)
गीत रघुनंदन प्रमानिका टीका सहित दे० (क-४४) (घ-१७२)
धनुर्विद्या दे० (क-४७) (ख-२०)
परमतत्व प्रकाश दे० (क-४८)
आनंद रामायण दे० (ख-६)
परमधर्म निर्णय प्रथम खंड दे० (ख-१६)
परमधर्म निर्णय द्वितीय खंड दे० (ख-१७)
परम धर्म निर्णय चतुर्थ खंड दे० (ख-१८)
अनुभवपद प्रदर्शिनी टीका दे० (घ-२२)
उत्तम काव्य प्रकाश दे० (घ-५३) (ट-१४५)
शांति शतक दे० (घ-५४) (ज-३२९ आई)
रामायण दे० (घ-११५) (ज-३२९ एफ)
भजन दे० (घ-१७३)
आनंद रघुनंदन नाटक दे० (ङ-३८) (छ-२४९ बी)
वेदांत पचक सटीक दे० (ङ-८४)
गीतावली पूर्वार्द्ध दे० (ङ-११४)
उत्तम नीति चंद्रिका या ध्रुवाष्टक नीति दे० (छ-२४९ ए)
पाखंड खंडिनी दे० (छ-२४९ सी)
ध्रुवाष्टक दे० (छ-२४९ डी)
आदि मंगल दे० (ज-३२९ ए)
वसंत दे० (ज-३२९ बी)
चौंतीसी दे० (ज-३२९ सी)
चौरासी रमैनी दे० (ज-३२९ डी)
ककहरा दे० (ज-३२९ ई)
शब्द दे० (ज-३२९ जी)
साखी दे० (ज-३२९ एच)
विश्व भोजन प्रकाश दे० (ज-३२९ जे)

विश्वभोजन प्रकाश—राजा विश्वनाथसिंह कृत; वि० भोजन बनाने की विधि। दे०(ज-३२९ जे)

विश्वसेन—बढ़िया (नवापुर) ज़िला सारन (बिहार) के ज़मीनदार और कवि हरिचरण दास के आश्रयदाता; सं० १८३५ के लगभग वर्तमान थे। दे० (ङ-५८)

विष नाशन—संतोष वैद्य कृत; विष-निवारक ओषधियों का वर्णन। दे० (छ-३२४)

विषापहार भाषा—किसी जैन आचार्य कृत, लि० का० सं० १७१५, वि० जैन ग्रंथ विषापहार स्तोत्र का भाषानुवाद। दे० (क-१०३)

विष्णु गिरि—गोसाईं गोविंद गिरि के शिष्य, सं० १८०१ के लगभग वर्तमान, ये वैद्यक शास्त्र के ज्ञाता थे।

सुगम निदान दे० (ग-१०६)

विष्णुदत्त—रामदत्त के पुत्र, सं० १८६५ के लगभग वर्तमान, चैमलपुर (सिकंदरा) के ठाकुर श्रीगोपालसिंह के आश्रित, मागध कुल के नरहरि कवि के वंशज थे।

राजनीति चंद्रिका दे० (ज-७०)

विष्णुदत्त—जाति के महापात्र ब्राह्मण, विन्ध्याचल (मिर्जापुर) निवासी थे।

दुर्गा शतक दे० (ज-३२८)

विष्णुदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं, सं १८५१ के लगभग वर्तमान थे।

बारह खड़ी दे० (ज-३२७)

विष्णुदास—जाति के कायस्थ, पन्ना (बुंदेलखंड) निवासी, १८ वीं शताब्दी के आरंभ में वर्तमान थे।

एकादशी माहात्म्य दे० (छ-११७)

विष्णुदास—सं० १४९२ के लगभग वर्तमान, गोपाचल गढ़ (ग्वालियर) नरेश राजा डोंगर सिंह के आश्रित थे।

महाभारत कथा दे० (छ-२४८ ए)

स्नेहलीला दे० (छ-२४८ बी)

विष्णुपद—राजा पृथ्वीसिंह (रसनिधि) कृत, लि० का० सं० १८४७, वि० राधा-कृष्ण की महिमा के पद और गीत। दे० (छ-९५ के)

विष्णुपद—रतन कवि कृत, लि० का० सं० १८७५, वि० भगवत प्रेम वर्णन। दे० (छ-१०२)

विष्णुपद—मधुसूदन कृत, लि० का० सं० १८७२, वि० कृष्णलीला के पद। दे० (छ-९७ डी)

विष्णुपद—मधुराम कृत, लि० का० सं० १८७२, वि० राधाकृष्ण की लीला के पद। दे०(छ-९७ ई)

विष्णुपद—गंगा (स्त्री) कृत, वि० ईश्वर प्रार्थना के भजनों का संग्रह। दे० (छ-३३)

विष्णुपद—सर्वजीत कृत, वि० भक्तियुक्त उपदेश। दे० (छ-५४)

विष्णुपद और कीर्तन—राजा पृथ्वीसिंह (रसनिधि) कृत, वि० ईश्वर-भक्ति और प्रार्थना के भजन। दे० (छ-९५ ए)

विष्णुपुराण भाषा—भिखारीदास (दास) कृत, वि० विष्णुपुराण का भाषानुवाद। दे० (ज-२७ बी)

विष्णुसिंह—ममथर (बुंदेलखंड) नरेश, सं० १८७४ के लगभग वर्तमान, गंगाप्रसाद उद्दनिया के आश्रयदाता थे। दे० (छ-३४)

विहार-चंद्रिका—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, लि० का० सं० १७८८, वि० राधा कृष्ण का विहार-वर्णन। दे० (ग-११३)

वीरसिंह देव (चरित्र)—दे० "वीरसिंहदेव"। दे० (छ-५८ ए)

वृंद कवि—सं० १७४३ के लगभग वर्तमान, मेड़ता (जोधपुर) निवासी, कृष्णगढ़ नरेश महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) के पिता महाराज राजसिंह के गुरु, सं० १७६१ में बादशाह

औरंगजेब की फौज के साथ ये ढाके तक गए थे, सेवक जाति के ब्राह्मण थे; इनके वंशज कवि जयलाल कृष्णगढ़ में वर्तमान हैं। दे० (ग-७२)

भावप्रकाश पचाशिका दे० (ज-३३० ए)

वृंद सतसई दे० (ज-३३० बी) (ग-६) (क-१२१)

शृंगार शिक्षा दे० (ग-४२)

वृंदसतसई—वृंद कवि कृत, नि० का० सं० १७६१; लि० का० सं० १८७४. वि० नीति के दोहे। दे० (क-१२१) (ग-६) (ज-३३० बी)

वृंदावन—धर्मचंद्र के पुत्र; जाति के गोयल गोत्रीय अग्रवाल वैश्य; काशी निवासी, सं० १८९१ के लगभग वर्तमान थे।

जैन छंदावली दे० (क-११७)

वृंदावन केलि माधुरी—माधुरीदास कृतः नि० का० सं० १६८७, लि० का० सं० १६८७, वि० कृष्णलीला वर्णन। दे० (ग-१०४ पाँच)

वृंदावन गोपी माहात्म्य—सुंदरि कुँवरि (श्री) कृत; नि० का० सं० १८२३; लि० का० सं० १८२३, वि० गोपियों की महिमा का वर्णन। दे० (ख-१०३)

वृंदावनचंद शिखनख ध्यान मंजूषा—दामोदर देव कृत; लि० का० सं० १९२२, वि० कृष्ण का नख शिख शृंगार वर्णन। दे० (छ-२४ डी)

वृंदावनदास—हितहरिवंश के अनुयायी; वल्लभ संप्रदाय के वैष्णव, सं० १८०२ के लगभग वर्तमान; वृंदावन निवासी; चाचा वृंदावन के नाम से प्रसिद्ध थे।

हरिनाम बेलि दे० (छ-२५० ए)

विवाह प्रकरण दे० (छ-२५० बी)

जमुना प्रताप बेलि दे० (छ-२५० सी)

मागनघोर लहरी दे० (छ-२५० डी)

हरिनाम महिमावली दे० (ज-३३१ ए)

हितहरिवंश चंद्र जू की सहस्र नामावली दे० (ज-३३१ बी)

राधा सुधानिधि की टीका भाव विलास दे० (ज-३३१ सी)

सेवक वानी फल स्तुति। दे० (ज-३३१ डी)

वृंदावन धामानुरागावली—गोपाल कवि कृत; लि० का० सं० १९००; वि० वृंदावन के तीर्थ-स्थानों तथा मंदिरों का वर्णन। दे० (ज-९७बी)

वृंदावन प्रकरण—कालीचरण कृत; नि० का० सं० १९०२; लि० का० सं० १९०५, वि० भोजपुर के राजकुमार रामेश्वरसिंह जी व्रजयात्रा का वर्णन। दे० (ङ-८१)

वृंदावन प्रकाशमाला—चंद्रलाल कृत; नि० का० सं० १८२४ वि० वृंदावन का वर्णन। दे० (ज-४३ ए)

वृंदावन महिमा—चंद्रलाल कृत, लि० का० सं० १९४६, वि० वृंदावन महिमा, ज्ञानोपदेश और शृंगार वर्णन। दे० (ज-४३ डी)

वृंदावन माधुरी—रूप रसिक कृत. वि० वृंदावन की महिमा तथा शोभा का वर्णन। दे० (छ-२२२)

वृंदावन विहार माधुरी—माधुरीदास कृत, नि० का० सं० १६८७, वि० कृष्ण लीला वर्णन। दे० (ग-१०४ छ)

वृंदावन सत—ध्रुवदास कृत, नि० का० सं० १६८६, वि० वृंदावन की महिमा का वर्णन। दे० (क-८) (ज-७३ सी) (ग-३०२)

वृंदावन सत—रसिक प्रीतम कृत, वि० वृन्दावन की महिमा का वर्णन। दे० (ज–२६५)

वृत्तचंद्रिका—कृष्ण कवि (कलानिधि) कृत, लि० का० सं० १८१०, वि० पिंगल। दे० (क–८३)

वृत्त-तरंगिणी—रामसहाय कायस्थ कृत, लि० का० सं० १८७१, वि० पिंगल। दे० (ज–२५)

वृत्त-विचार—सुखदेव मिश्र कृत, लि० का० सं० १७२८, लि० का० सं० १८८८; दूसरी प्रति का सं० १८५०, वि० पिंगल। दे० (छ–२५० ए)

वृत्त विचार—दशरथ कृत, लि० का० सं० १८५६, वि० छंद शास्त्र का वर्णन। दे० (ज–५७)

वृहज्जातक और राजमूक मरन—र० अज्ञात, लि० का० सं० १७५४, वि० फलित ज्योतिष का वर्णन। दे० (घ–२)

वृहद् वामन पुराण की भाषा—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण का विहार वर्णन। दे० (ज–७१ एच)

वृहस्पति कांड—तुलसीदास कृत, वि० वृहस्पति ग्रह का १२ राशियों पर फलाफल विचार। दे० (घ–२०)

वेंकटेश स्वामी—कोई सन्यासी भक्त प्रतीत होते हैं, इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

आत्मप्रबोध दे० (छ–२४२)

वेद रामायण—भूपनारायणसिंह कृत, लि० का० सं० १८५६, वि० बाहरवर्षेश की कहानी का हिन्दी अनुवाद। दे० (ज–२८ सी)

वेदांत पंचक सटीक भाषा—महाराज विश्वनाथ सिंह कृत, वि० वेदांत। दे० (छ–८४)

वेदांत-परिभाषा—मनोहरदास निरञ्जनी कृत, लि० का० सं० १७१७, लि० का० सं० १८४०, वि० वेदांत। दे० (छ–२६२ बी)

वेदांत-सार श्रुति दीपिका—जनकराजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १६२०, वि० श्रीराम चन्द्रजी का विहार वर्णन। दे० (ज–१३४एच)

वैकुण्ठमणि शुक्ल—जाति के ब्राह्मण, सं० १७१७ के लगभग वर्तमान, ओड़छा नरेश राजा जस वतसिंह और विजन टीकमगढ़ के जागीर दार साधवसिंह के आश्रित।

वैशाख माहात्म्य दे० (छ–५ ए)

अगहन माहात्म्य दे० (छ–५ बी)

वैद्यक – लुकमान कृत, वि० वैद्यक निदान औ ओषधियों आदि का वर्णन। दे० (ज–१७५)

वैद्यक ग्रंथ भाषा—अश्वत्थाम कृत, लि० का सं० १८७१, वि० ओषधियों का वर्णन दे० (ज–६)

वैद्यक-लीला—भूधरदास कृत, वि० वैद्यक। दे (ज–७३ आई)

वैद्यक-सार—पुरुषोत्तम द्विज कृत, लि० का सं० १६०८, वि० वैद्यक। दे० (ज–२१०)

वैद्य प्रकाश—रसाल गिरि गोसाईं कृत, वि ओषधियों का वर्णन। दे० (छ–२५६ ए)

वैद्य प्रिया—खेतसिंह कृत, लि० का० सं० १८८ वि० वैद्यक। दे० (छ–६० सी)

वैद्य मनोत्सव—अन्य नाम नयनसुख ग्रंथ, नयन सुख कृत, लि० का० स १६४९, लि० का० सं १८०१, वि० वैद्यक। दे० (क–३४) (ज–२११) (घ–१५५)

वैद्य मनोहर—भोले शाह कृत, लि० का० सं १८५१, लि० का० सं० १६१२, वि० वैद्यक दे० (छ–८० ए)

वैद्य मनोहर—पहार सैयद कृत, वि० वैद्यक। दे० (छ-३०५)

वैद्य रत्न—जनार्दन भट्ट कृत; लि० का० सं० १६००, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १६१४; वि० वैद्यक। दे० (ग-१०५) (छ-२६७ बी)

वैद्य-विनोद—हरिवंश राय कृत; वि० वैद्यक। दे० (छ-२६१ ए)

वैनी प्रवीन—कान्यकुब्ज ब्राह्मण वाजपेयी, लखनऊ निवासी; सं० १८७८ के लगभग वर्तमान, नवलकृष्ण के आश्रित थे।

नवरस तरंग दे० (ज-१६)

वैराग्य तरंग—अक्षर अनन्य (अनन्य) कृत, वि० वैराग्य। दे० (छ-२ जे)

वैराग्य दिनेश—दीनदयाल गिरि कृत, नि० का० सं० १६०६, वि० ज्ञान, वैराग्य तथा रस और ऋतुओं का वर्णन। दे० (ज-७४ बी)

वैराग्य निर्णय—परशुराम कृत; वि० संसार की अनित्यता और पुनर्जन्म के दुःखों से बचने के उपायों का वर्णन। दे० (क-७५)

वैराग्य मंजरी—महाराज प्रतापसिंह कृत; नि० का० सं० १८५२, वि० भर्तृहरि के वैराग्य शतक का भाषानुवाद। दे० (छ-२०५ सी)

वैराग्य संदीपनी—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८८६, वि० वैराग्य के लक्षणों का वर्णन। दे० (क-७) (ख-८१) (छ-२४५ ई)

वैरीसाल—दे० "वैरीसाल" (छ-१३२) (ज-१३)

वैशाख माहात्म्य—वैकुंठमणि कृत; लि० का० सं० १७६६। दे० (छ-५ ए) दे० "वैसाखमाहात्म्य।"

वैष्णवदास—मिहीलाल के गुरु, जानकीदास के शिष्य; रामानुज संप्रदाय के वैष्णव थे। दे० (क-५८)

वैष्णवदास—प्रियादास के पुत्र, सं० १८१४ के लगभग वर्तमान, वृंदावन निवासी थे।

गीतगोविंद भाषा दे० (ज-३२४)

भक्तमाल प्रसंग दे० (ख-५४)

भक्तमाल माहात्म्य दे० (छ-२४७)

भक्त रसबोधिनी टीका दे० (ज-८८)

व्यंगविलास—सरदार कवि कृत; नि० का० सं० १६१६· लि० का० सं० १६५३; वि० नायिका-भेद वर्णन। दे० (ज-२८३ बी)

व्यंग्यार्थ कौमुदी—प्रताप (साहि) कृत; नि० का० सं० १८८२, वि० नायक और नायिका-भेद वर्णन। दे० (ग-५२) (छ-६१ जे)

व्यास जी—सं० १६१२ के लगभग वर्तमान; पहले ओड़छा के निवासी थे, पीछे वृंदावन में साधु होकर रहने लगे थे, ये राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव थे, इन्होंने हरिव्यासी पंथ की स्थापना की थी, देव कवि के गुरु थे। दे० (ज-३५)

व्यास जी की बानी दे० (ज-३३२ ए) (छ-११८ सी)

रागमाला दे० (छ-११८ ए)

व्यासजी के पद (पदावली) दे० (छ-११८ बी) (ज-३३२ बी)

व्यास चरित—राजा जयसिंह जू देव कृत; वि० महर्षि वेद व्यास का जीवन-चरित्र। दे० (क-१५२)

व्यासजी की बानी—व्यास जी कृत, वि० व्यास जी की शिक्षा और श्रीकृष्ण विहार वर्णन। दे० (छ-११८ सी) (ज-३३२ ए)

ब्यास जी के पद (पदावली)—व्यास जी कृत, लि० का० सं० १६१६, वि० राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन। दे० (छ-११८ बी) (ज-३३२ बी)

ब्यासदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

 ब्रजयात्रा दे० (छ-२५३)

ब्याहलो—सूरदास कृत, वि० राधा-कृष्ण के विवाह का वर्णन। दे० (छ-२४४ ए)

ब्याहलो—रसिकविहारिन दास कृत, वि० राधा कृष्ण के विवाह का वर्णन। दे० (छ-२१८)

ब्याहलो—ध्रुवदास कृत, वि० राधा और कृष्ण के विवाह का वर्णन। दे० (ज-७३ एक)

ब्रज गोपिका विनय—छोटनलाल चौबे कृत, वि० गोपियों की कृष्ण से विनय का वर्णन। दे० (ज-२६७)

ब्रजचंद—परमानंद के पिता, ब्रजपगढ़ निवासी थे। दे० (छ-८८)

ब्रजजीवनदास—राजा सरीदय भानुराज कल्पद्रुम में कृष्णानंद देव व्यास ने इनका वर्णन किया है, सं० १८६६ के लगभग वर्तमान, यह वृंदा वन में भी रहे थे।

 भक्त रस माला दे० (ज-३४ ए)
 चरित्र मल्लमाल दे० (ज-३४ बी)
 चौरासी सार दे० (ज-३४ सी)
 चौरासी जी का माहात्म्य दे० (ज-३४ डी)
 रूप चौतनी दे० (ज-३४ ई)
 हित जी महाराज की बधाई दे० (ज-३४ एफ)
 हरि मदनो विलास दे० (ज-३४ जी)
 रसिक विलास दे० (ज-३४ एच)
 रसमाल (बाल बरसाल) दे० (ज-३४ आई)
 हित जी की बधाई दे० (ज-३४ जे)
 रामचंद्र जी की सवारी दे० (ज-३४ के)
 मानलीला सार दे० (ज-३४ एल)

ब्रज दीपिका—नवलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १८८३, लि० का० सं० १८८३, वि० ब्रज का वर्णन। दे० (छ-७६ ई)

ब्रजनाथ—सं० १७२२ के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण, महापति मिश्र के वंशज, कपिला निवासी थे।

 पिंगल दे० (छ-१४२)

ब्रज राज—जम्बूनरेश महाराज रणवीरसिंह के पुत्र, सं० १८१८ के लगभग वर्तमान, कवि देवदत्त (दत्त) के आश्रयदाता थे। दे० (छ-६३)

ब्रजलाल—माम कवि के पुत्र, जाति के भाट थे, सं० १८७६ के लगभग वर्तमान, बनारस नरेश राजा उदितनारायणसिंह के आश्रित।

 हनुमान बाल चरित दे० (घ-६१)
 उदित कीर्ति प्रकाश दे० (घ-६३)
 चंद्र रत्नाकर दे० (ज-१६)

ब्रजलीला—हरिकेश द्विज कृत, लि० का० सं० १८७१, वि० राजा छत्रसाल और हृदयशाह की प्रशंसा और राधा-कृष्ण-चरित्र वर्णन। दे० (छ-४६ बी)

ब्रजलीला—ध्रुवदास कृत, वि० राधा-कृष्ण के चरित्र का वर्णन। दे० (ज-७३ बी)

ब्रज वल्लभदास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

 प्रह्लाद चरित्र दे० (ज-३५ ए)
 सुदामा चरित्र दे० (ज-३५ बी)
 अजामिल चरित्र दे० (ज-३५ सी)

सिंह बैस के आश्रित, ये जाति के ब्राह्मण थे।
मुहूर्त चिंतामणि दे० (छ–२३४ ए)
बैताल पचीसी दे० (छ २३४ बी)
जातक चंद्रिका दे० (छ–२३४ सी)
प्रेम सुमन माला दे० (ज–२८४)

शंभूसिंह—चाँदसिंह के पिता, जाति के गोगावत क्षत्री, धुनी (राज्य जयपुर) के जागीरदार और जयपुरनरेश महाराज जगतसिंह के सेनापति थे, इन्होंने टोंक के नवाब अमीरखाँ से कई बार युद्ध किया था। दे० (ज–८३)

शकुंतला नाटक—निवाज कवि कृत, नि० का० स० १७३७, लि० का० सं० १८५१ और १८१६; वि० राजा दुष्यंत और शकुंतला का वर्णन। दे० (घ–७५) (क–१२४)

शकुन परीक्षा—छत्रसाल मिश्र कृत, वि० पशु पक्षियों की बोली द्वारा शकुन विचारने की रीति का वर्णन। दे० (छ–२१ बी)

शक्ति चिंतामणि—मावन (भैया त्रिलोकीनाथ सिंह) कवि कृत, नि० का० सं० १८५१, लि० का० स० १६४४, वि० पुरुषों के लक्षण, नायिका भेद और शृङ्गार वर्णन। दे० (ज–२८)

शक्ति भक्ति प्रकाश—माधोराम कृत, वि० भगवत-स्तुति। दे० (ग-४३)

शतप्रश्नोत्तरी—मनोहरदास कृत, लि० का० सं० १८५०, वि० वेदांत और ब्रह्मज्ञान। दे० (घ–८३) (छ–२६१ सी)

शतरंज शतक—भिखारीदास (दास) कृत, वि० शतरंज के खेल का वर्णन। दे० (ज–२७८)

शत्रुजीत—बिजावर (बुंदेलखंड) के राजा रतनसेन के भाई, कवि बख्तेश के आश्रयदाता, स० १८२२ के लगभग वर्तमान। दे० (छ–७)

शब्द—धरणीदास कृत, वि० भक्ति के पद। दे० (छ–१४७ सी)

शब्द—राजा विश्वनाथसिंह कृत, लि० का० स० १८९६, वि० कबीरदास कृत शब्द पर टीका (ज्ञान वर्णन)। दे० (ज–३२६ औ)

शब्द अखरावली बानी—अन्य नाम अखरावली या शब्द मंगल बालम, रामसेवक कृत, लि० का० स० १६४५, वि० ब्रह्म ज्ञान वर्णन। दे० (ज–२५८)

शब्द अलहदुक—कबीरदास कृत, वि उपदेश। दे० (ज–१४३ ई०)

शब्द दरिया साहब कृत—दरिया साहब कृत, वि० ज्ञान-वचन। दे० (ज–५५ के)

शब्द प्रकाश—धरणीधर कृत, लि० का० स० १६१६, वि० राम-महिमा, ज्ञान और भक्ति का वर्णन। दे० (ज–७१)

शब्द मंगल बालम—अन्य नाम अखरावली या शब्द अखरावली बानी, रामसेवक कृत, लि० का० स० १६४५, वि० ब्रह्म-ज्ञान। दे० (ज–२५८)

शब्द रत्नावली—प्रयागदास कृत, नि० का० स० १८३६, लि० का० सं० १८७८, वि० कोश। दे० (छ–८६ ए)

शब्द रसायन—देवदत्त (देव) कृत, लि० का० स० १६५५, वि० अलंकार। दे० (ज–६४ ई)

शब्द राग काफी और राग फगुआ—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज–१४३ औ)

शब्द राग गौरी और भैरव—कबीरदास कृत, वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज–१४३ एफ)

शब्द वंशावली—कबीरदास कृत; लि० का० सं० १७६४, वि० आत्मिक सत्यता का वर्णन। दे० (छ–१७७ जी)

शब्द सार बानी—गंगादास कृत, वि० आत्मिक ज्ञान का वर्णन। दे० (छ २५० बी)

शब्दावली—कबीरदास कृत लि० का० सं० १८६१; वि० आत्मिक शिक्षा का वर्णन। दे० (छ–१७७ पी)

शब्दावली—कबीरदास कृत, वि कबीर पंथ के सिद्धान्तों का वर्णन। दे० (छ–१७७ क्यू)

शब्दावली—दूलनदास कृत· लि०का० सं०१६३३, वि० राम नाम के माहात्म्य तथा ज्ञान और भक्ति का वर्णन। (ज–७८)

शब्दावली—संतदास कृत; लि० का० सं० १६४३, वि० ज्ञान और ईश्वर-वंदना। दे० (ज–२८१ ए)

शब्दावली—नीवरदास कृत; लि० का० सं० १८८७, लि० का० सं० १६३२; वि० ज्ञान और भक्ति का वर्णन। दे० (ज–२१८)

शांति शतक—महाराज विश्वनाथसिंह कृत; लि० का० सं० १६२५; वि० वैराग्य, ज्ञान और भक्ति का वर्णन। दे० (घ–५४)

शालिग्राम—जयपुर निवासी; अलि रसिकगोविंद और बालमुकुंद के पिता; सं० १८५७ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (छ–१२२)

शालिहोत्र—मानसिंह अवस्थी कृत, लि० का० सं० १८६६, वि० अश्व-चिकित्सा का वर्णन। दे० (छ–७२)

शालिहोत्र—पृथ्वीराज प्रधान कृत, लि० का० सं० १६०६; वि० अश्व चिकित्सा का वर्णन। दे० (छ–६४)

शालिहोत्र—शिवदास कृत, वि० हाथियों की चिकित्सा का वर्णन। दे० (छ–१०८)

शालिहोत्र—देनी कवि कृत; लि० का० सं० १६२३; वि० अश्वों के गुण दोष और चिकित्सा का वर्णन। दे० (छ–१३४)

शालिहोत्र—उत्तमदास मिश्र कृत; लि० का० सं० १६३६; वि० अश्वरोग, गुण, दोषादि का वर्णन। दे० (छ–२२० बी)

शालिहोत्र—नेमनचन्द्र कृत; लि० का० सं० १८१०; लि० का० सं० १६१५; वि० अश्वों की जाति, लक्षण और चिकित्सा का वर्णन। दे० (ज–४६)

शालिहोत्र—दयानिधि कृत; लि० का० सं० १८५०, वि० घोड़ों के लक्षण और चिकित्सा का वर्णन। दे० (ज–६२)

शालिहोत्र—गंजनसिंह कायस्थ कृत; नि० का० सं० १८२०; वि० अश्व-चिकित्सा और शुभाशुभ लक्षण वर्णन। दे० (ज–८६)

शालिहोत्र—रुद्रराम कृत; नि० का० सं० १८४८, लि० का० सं० १६३१; वि० अश्व-चिकित्सा तथा लक्षण वर्णन। दे० (ज–१२१ बी)

शालिहोत्र—र० अज्ञात; लि० का० सं० १८६३, वि० संस्कृत के नकुल कृत शालिहोत्र का भाषानुवाद; घोड़ों के लक्षण और चिकित्सा का वर्णन। दे० (ज–२०४) (क–६६)

शालिहोत्र—राजा विक्रमसेन कृत, नि० का० सं० १६६४; लि० का० सं० १६२२; वि० अश्व चिकित्सा तथा उनके शुभाशुभ लक्षण का वर्णन। दे० (ज–३२२)

शाह आलम—दिल्ली का बादशाह, सं० १८५०

के लगभग वर्तमान, हरिलाल मिश्र का आश्रय दाता। दे० (ग–११३)

शाह आलम—उप० औरंगजेब, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद आज़म के पिता, राज्य का० सं० १७१५–१७६४। दे० (ग–२८)

शाहजहाँ—जहाँगीर बादशाह का पुत्र, दिल्ली का बादशाह, राज्य का० सं० १६८५–१७१५, इन्होंने अपने शाहज़ादे रहने के समय चित्तौर पर चढ़ाई की और सं० १६७१ में मेवाड़ के राणा अमरसिंह को हराया, तथा वहाँ के महाराज कुमार कर्णसिंह को जहाँगीर के दरबार में ले आया, सुन्दर कवि का आश्रयदाता था। दे० (ग–३) (क–६४) (ख–१०६) (छ–२४१)

शाह जू पंडित—ओड़छा (बुंदेलखंड) निवासी, जाति के ब्राह्मण, दीवान रामसिंह के पुत्र कुँवर लक्ष्मणसिंह के संरक्षक, सं० १७६४ के लगभग वर्तमान थे, ये कवि भी थे। (कुँवर लक्ष्मण सिंह वहरौली के जागीरदार थे।)

लक्ष्मणसिंह प्रकाश दे० (छ–१०७ ए)

पुरिख पंचाली दे० (छ–१०७ बी)

शाहनामा (मिश्र कृत)—र० अज्ञात, पर मिश्र थे। वि० राजा युधिष्ठिर के समय से बादशाह शाह आलम तक के सम्राटों की वंशावली का वर्णन। दे० (छ–११२)

नोट—ये मिश्र आलमगीर सानी के समय में हुए जान पड़ते हैं। इन्होंने अपने ग्रंथ में आलमगीर सानी के उसके वज़ीर द्वारा मारे जाने का वर्णन किया है। यह कवि सं० १८११ में वर्तमान थे।

शिक्षाप्रद दोहों का संग्रह—उमम कवि कृत, नि० का० सं० १८३४, वि० नीति के दोहे। दे० (छ–२९८)

शिखनख—रसरूप कृत, वि० राधाजी के अंग की शोभा का वर्णन। दे० (ख–७६)

शिखनख—सुखदेव मिश्र कृत, वि० नायिका के अंग प्रत्यंग का वर्णन। दे० (ज–३०७ सी)

शिखनख दर्पण—गोपाल कवि कृत, नि० का० सं० १८९१, लि० का० सं० १९५६, वि० बलभद्र कृत नखशिख पर टीका। दे० (छ–७०)

शिखनख रसलीन—अन्य नाम अंग दर्पण, गुलाम नबी (रसलीन) कृत, नि० का० सं० १७९४, वि० राधाजी के सौंदर्य का वर्णन। दे० (ख–१५)

शिरामणि मिश्र—जाति के माथुर ब्राह्मण, पुंडिरी (ग्राम) निवासी, सं० १६८७ के लगभग वर्तमान, बादशाह शाहजहाँ के समकालीन, इनके पितामह परमानन्द (उपनाम पानी) बादशाह अकबर के और पिता मोहन बादशाह जहाँगीर के आश्रित थे।

उर्वशी दे० (छ–२३५)

शिव कवि—सं० १८५७ के लगभग वर्तमान, ग्वालियर नरेश महाराजा दौलतराव सेंधिया के आश्रित थे।

वाग्विलास दे० (छ–२३१)

शिवगीता भाषार्थ—अवधूत कृत, नि० का० सं० १८९५, लि० का० सं० १८५८, वि० शिव जी की महिमा का वर्णन। दे० (ग–६१)

शिवदयाल—जाति के खत्री, प्रयाग निवासी, नारायणदास के पुत्र, सं० १८६१ के लगभग वर्तमान थे।

सिद्धि सागर तंत्र दे० (ज-२९३ ए)

शिव प्रकाश दे० (ज-२९३ बी)

शिवदानसिंह—सं० १८७६ के लगभग वर्तमान; मंगल मिश्र के आश्रयदाता, ये कोई राजकुमार थे। दे० (ज-१८८)

शिवदास—सं० १७५७ के लगभग वर्तमान; अकबरपुर (कानपुर) निवासी; दतिया नरेश राजा दलपतिराव के आश्रित थे।

शालिहोत्र दे० (छ-१०८)

शिवदास (राय)—जयपुर निवासी; जाति के भाट थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

लोकोक्ति दे० (ज-२४१)

शिवनाथ—नरहरि महापात्र के वंशज, सं० १८८२ के लगभग वर्तमान, रीवाँनरेश महाराज जयसिंह के आश्रित थे।

वंशावली दे० (ग्र-१०६)

शिवनाथ—कुशलसिंह के समकालीन; उन्हीं के साथ मिलकर नखशिख ग्रंथ रचा।

नखशीख दे० (ज-१६१)

शिवनाथ—देवकीनंदन शुक्ल के पिता, सं० १८४० के पूर्व वर्तमान, जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण; मकरन्दनगर जिला फर्रुखाबाद निवासी थे। दे० (ज-६५)

शिवनारायण—जाति के राजपूत, गाजीपुर जिले के निवासी; कविता का० सं० १७६२-१८११; इन्होंने अपने नाम का सम्प्रदाय चलाया था।

सत सुंदर दे० (ज-२९४ ए)

सत विलास दे० (ज-२९४ बी)

सत विचार दे० (ज-२९४ सी)

सत परवाना दे० (ज-२९४ डी)

सत उपदेश दे० (ज-२९४ ई)

शिव प्रकाश—शिवदयाल कृत; नि० का० सं० १९१०; लि० का० सं० १९४०, वि० वैद्यक। दे० (ज-२९३ बी)

शिवप्रसाद (राय)—दतिया निवासी; जाति के कायस्थ; दतिया नरेश राजा परीक्षित की ओर से बाँदा में वकील और सं० १८९६ के लगभग वर्तमान थे।

रस भूषण दे० (छ-१०६)

शिवप्रसाद (राजा)—सं० १८८० से सं० १९५२ तक वर्तमान; बीबी रत्नकुँवरि के पौत्र थे। दे० (ज-२६७)

शिवप्रसाद—जाति के ब्राह्मण; रामाराम के पुत्र, इनके पितामह बीकानेर में दीवान थे; सं० १८३० के लगभग वर्तमान।

अद्भुत रामायण दे० (ज-२९५)

शिवप्रसाद—जाति के ब्राह्मण, दरभंगा राज्य में दीवान थे, सं० १९४२ के लगभग वर्तमान थे। दे० (फ-५१)

शिव माहात्म्य भाषा—जयकृष्ण कृत; नि० का० सं० १८२५; लि० का० सं० १८५८, वि० शिव जी की महिमा का वर्णन। दे० (ग-८६)

शिवराज भूषण—भूषण कवि कृत; नि० का० सं० १७३०, वि० अलंकारों और वीर रस का वर्णन। दे० (घ-५८)

शिवराम—सं० १७८७ के लगभग वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

भक्ति जयमाल दे० (ज-२९६)

शिवराम भट्ट—सं० १८४७ के लगभग वर्तमान;

ओड़छा नरेश राजा विक्रमाजीत के आश्रित थे।

बिहर विलास दे० (छ-११०)

शिवराम मिश्र (कपूर)—मोहनदास मिश्र के पिता, जाति के ब्राह्मण, सं० १८३६ के पूर्व वर्तमान, राजा मधुकर शाह ओड़छावाले के वंशजों के कुल पुरोहित, चन्दपुरी के समीपस्थ पत्तनपुर का निवासी थे। दे० (क-१५६)

शिवलाल पाठक—सं० १८५१ के लगभग वर्तमान, रामचरित मानस मुक्तावली के रचयिता के गुरु थे। दे० (घ-१०)

अभिप्राय दीपक दे० (ङ-११२)

मानस मयंक दे० (ट-११३)

शिवाजी—महाराष्ट्र साम्राज्य के संस्थापक, जन्म का० सं० १६८४, मृत्यु का० सं० १७३७, भूषण कवि के आश्रयदाता थे, बादशाह औरंगजेब को इन्होंने कई बार परास्त किया था। दे० (क-४०) (ग-१५)

शिवानंद—सं० १८४९ के लगभग वर्तमान, ये भृगु आश्रम से पाँच कोस की दूरी पर हल्दी ग्राम के निवासी थे।

अगुन सगुन निरूपन कथा दे० (घ-७७)

शुकदेव—सं० १७१७ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

बधिर विलास दे० (ख-८५)

शुक रंभा संवाद—नवलसिंह (प्रधान) कृत, नि० का० सं० १८८८, लि० का० सं० १६२०, वि० रंभा और शुकदेव के संवाद का वर्णन। दे० (छ-७६ एफ़)

शुक्राचार्य—ब्रह्म धर्मेंदु के गुरु थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं। दे० (ज-३७)

शुजा (सुलतान)—दिल्ली के बादशाह शाहजहाँ के पुत्र, चारण कवि के आश्रयदाता, सं० १७१२ के लगभग वर्तमान। दे० (ट-७६)

शुभकरन—सं० १७८२ के लगभग वर्तमान, कर्नाटक के नवाब अनवरखाँ के आश्रित थे, इन्होंने बिहारी सतसई पर टीका लिखी थी।

अमर चंद्रिका दे० (ज-३१) (छ-१३०)

(कर्ता के नाम में भूल है।)

शृंगार—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। शायद यह सखी सम्प्रदाय के वैष्णव थे।

बधेल वंशमाला दे० (छ-२२२)

शृंगार—वेनी कवि कृत, नि० का० सं० १८१७, लि० का० सं० १८७०, वि० शृंगार रस के कवित्तों में नायिका-भेद वर्णन। दे० (घ-६२)

शृंगार कुंडली—लक्ष्मीप्रसाद कृत, नि० का० सं० १६०६, लि० का० सं० १६१३, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (ख-८४)

शृंगार चरित्र—देवकीनंदन शुक्ल कृत, नि० का० सं० १८४०, लि० का० सं० १६५१, वि० नायिका भेद और अलंकार। दे० (ज-६५ ए)

शृंगार दर्पण—आजमखाँ कृत, नि० का० सं० १७८६, वि० नायिका भेद और नवरस। दे० (ज-११)

शृंगार निर्णय—भिखारी (दास) कृत, वि० नायिका भेद और हाव भाव का वर्णन। दे० (घ-४६)

शृंगार पचीसी—गोपालदत्त कृत, वि० शृंगार सम्बन्धी २५ सवैयों का संग्रह और अंत में गंगा की स्तुति। दे० (छ-२५४)

शृंगार मंजरी—प्रतापसाहि कृत, नि० का० सं०

१८८६; लि० का० सं० १८६०, वि० नायक तथा नायिका भेद वर्णन। दे० (छ–६१ सी)

शृंगार मंजरी—राजा प्रतापसिंह कृत; नि० का० सं० १८५२, वि० भर्तृहरि कृत शृंगार शतक का हिंदी अनुवाद। दे० (छ–२०५ ए)

शृंगाररस मंडन—विट्ठलेश्वर (विट्ठलनाथ गोस्वामी) कृत; वि० राधाकृष्ण के विहार का वर्णन। दे० (ज–३२)

शृंगार शिक्षा—वृंद कवि कृत; नि० का० सं० १७४८; वि० नायिका भेद और सोलह शृंगारों का वर्णन। दे० (ग–४२)

शृंगार शिरोमणि—प्रतापसाहि कृत, नि० का० सं० १८६४; लि० का० सं० १८६४; वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (छ–६१ डी)

शृंगार शिरोमणि—राजा जसवंतसिंह कृत, लि० का० सं० १६४३; वि० शृङ्गार रस का वर्णन। दे० (ज–१३६)

शृंगार संग्रह—सरदार कृत; नि० का० सं० १६०५, लि० का० सं० १६३२; वि० भिन्न भिन्न कवियों की शृंगारिक कविताओं का संग्रह। दे० (ज–२८३ ए)

शृङ्गार सत (लीला)—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण के शृंगार और सौंदर्य का वर्णन। दे० (छ–१५६ ई) (क–६) (ज–७३ एस)

शृङ्गार सागर—मोहनलाल कृत, नि० का० सं० १६१६; लि० का० सं० १६४०, वि० नायिका भेद तथा अलंकार वर्णन। दे० (च–७०)

शृङ्गार सुख—रूप सनातन कृत; वि० वृहत् गौतमी तंत्र के आधार पर रासलीला का वर्णन। दे० (छ–२२२)

शेख नबी—स्थान मऊ, थाना दोसपुर, जिला जौनपुर निवासी, स० १६७६ के लगभग वर्तमान; बादशाह जहाँगीर (सलीम) के समकालीन।

ज्ञानदीप दे० (ग–११२)

शेख बुरहान—चिश्ती वंश के फकीर; मलिक मुहम्मद जायसी और कुतबन शेख के गुरु; हुसेन शाह सूर के समकालीन; सं० १६०० के लगभग वर्तमान थे। दे० (क–४) (क–५४)

शेख मुहम्मद—प्रसिद्ध तानसेन के शिक्षक; सं० १६२० के लगभग वर्तमान; जाति के शेख मुसलमान; बादशाह अकबर के समकालीन थे। दे० (ख–१२)

शेख सुलेमान—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

सालिहनामा दे० (ज–२८६)

शेख हुसेन—उसमान कवि के पिता, सं० १६७० के पूर्व वर्तमान; गाजीपुर निवासी; बादशाह जहाँगीर के समकालीन थे। दे० (ङ–३२)

शेरखाँ—उप० शेर शाह सूर, हुसेन शाह के पुत्र; दिल्ली के बादशाह; सं० १६०२ के लगभग वर्तमान, दौलतखाँ के पिता; मलिक मुहम्मद जायसी और तानसेन के आश्रयदाता थे। दे० (ख–१२) (क–४) (क–५४)

शेरसिंह—जोधपुर नरेश महाराज विजयसिंह के पुत्र, सं० १८४६ के लगभग वर्तमान; सं० १८५० में राजा विजयसिंह का देहांत होने पर उनके पोते महाराज भीमसिंह ने इनका वध किया था।

रामकृष्ण जस दे० (ग–१६)

श्यामराम—दे० "स्यामराम"। दे० (ग–८०)

श्याम सगाई—नन्ददास कृत, वि० दोहा छंद में कृष्ण-राधिका की सगाई का वर्णन। दे० (छ-२०० ई)

श्याम-सरन (मधुभोगी)—रामचरण दास के शिष्य और नित्यानंद के गुरु थे। दे० (च-४१)

श्यामसिंह (स्यामसिंह)—अभिमानसिंह के पिता, काशी निवासी, सं० १८४३ के पूर्व वर्तमान। दे० (घ-४३)

श्रवणाख्यान—दलपतिराम कृत, लि० का० सं० १९२५, वि० माता पिता की भक्ति का वर्णन। दे० (ज-५२)

श्रीगोविंद—सं० १८८० के लगभग वर्तमान, सरयू तटस्थ गोपालपुर के राजा कृष्णकिशोर के आश्रित थे।

विलास तरंग दे० (ज-१०० ए)

रसशिव दे० (ज-१०० बी)

श्रीनाथजी रा दूहा—राजा मानसिंह कृत, वि० जलन्धरनाथ की स्तुति। दे० (ग-६०)

श्रीनिवास—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

जानकी लक्षणाष्ट दे० (छ-११०)

श्रीपति (मिश्र)—जाति के ब्राह्मण, कालपी (जालौन) निवासी, सं० १७७७ के लगभग वर्तमान थे।

काव्य सरोज दे० (ज-१०४ ए)

अनूपरास दे० (ज-१०४ बी)

विनोद काव्य सरोज दे० (ज-१०४ सी) (ङ-५८)

श्रीपतिभट्ट—सं० १७११ के लगभग वर्तमान, जाति के गुजराती औदीच्य ब्राह्मण, इलाहाबाद के नवाब सैयद हिम्मतखाँ के आश्रित, बादशाह औरंगजेब के समकालीन थे।

हिम्मत प्रकाश दे० (छ-२३८)

श्रीपाल रासो—प्रतापमल कृत, लि० का० सं० १९३०, वि० उज्जैन के राजा पुहपाल के जामाता श्रीपाल का वर्णन। दे० (क-१९४)

श्रीभट्ट—वृन्दावन निवासी, सं० १६०१ के लगभग वर्तमान, वैष्णव, निम्बार्क० के शिष्य और परशुराम के गुरु थे।

युगल सत दे० (च-१९) (छ-२१७) (क-५५)

श्रीमाधो—उप० माधो, मोहनदास के पिता, जाति के कायस्थ, कुरस्थ (नीमसार) निवासी, सं० १९०७ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (क-५)

श्रीराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

पद मंजरी दे० (छ-२११)

श्रीलालमुकुंद विलास—दे० 'लालमुकुंद विलास'। (च-६५)

श्रीवास्तवन के पटा को अष्टक—प्रताप कवि कृत, लि० का० सं० १८१७, वि० श्रीवास्तव कायस्थों का वर्णन। दे० (छ-८२ बी)

षटऋतु कवित्त—सेनापति कवि कृत, वि० छः ऋतुओं का वर्णन। दे० (ज-५१)

षटऋतु वर्णन—रामनारायण कृत, वि० छः ऋतुओं का वर्णन। दे० (ज-२५२)

षटऋतु वर्णन—सरदार कृत, वि० छः ऋतुओं का वर्णन। दे० (ज-२८३ सी)

षट पंचाशिका—राजाराम कृत, लि० का० सं० १७६१, वि० ज्योतिष। दे० (छ-२११)

षट प्रदर्शिनी निर्णय—मनोहरदास निरंजनी

कृत; लि० का० सं० १८२३, वि० वेदांत। दे० (ख–५८)

पटप्रश्न—र० अज्ञात, वि० वेदांत। दे० (ग–१२)

षटप्रश्नी—मनोहरदास कृत, लि० का० सं० १८४०, वि० वेदांत। दे० (छ–२९३ डी)(घ–१५२)

संकटमोचन—नवनिधि कृत; लि० का० सं० १९९२, वि० परमेश्वर की स्तुति। दे० (ज–२१२)

संकटमोचन—रामगुलाम द्विवेदी कृत, नि० का० सं० १९३६, वि० हनुमान जी की वंदना। दे० (ज–२४७ ए)

संकेत युगल—सुंदर कुँवरि कृत, नि० का० स० १८३०, वि० राधा कृष्ण के रास विलास का वर्णन। दे० (ख–९९)

संगीत भाषा—हरिवल्लभ कृत; वि० संगीत शास्त्र का वर्णन। दे० (ख–६१)

संगीतसार—तानसेन (त्रिलोचन मिश्र) कृत, लि० का० सं० १८८८, वि० संगीत शास्त्र-संबंधी रागों के नाम, प्रयोग, ताल-भेद और प्रस्तारादि का वर्णन। दे० (ख–१२)

संग्रह—सम्मन कृत, वि० नीति के दोहे। दे० (छ–२२८)

संग्रह—माधुरीदास कृत, नि० का० स० १६८७; वि० कृष्णलीला-संबंधी कविताओं का संग्रह। दे० (ग–१०४ नी)

संग्राम रत्नाकर—रसानंद भट्ट कृत, नि० का० सं० १८९९, लि० का० स० १९१४, वि० महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का वर्णन। दे० (ज–२६०)

संग्रामसार—कुलपति मिश्र कृत, नि० का० स० १७३३, लि० का० सं० १८५९, वि० महाभारत के द्रोण पर्व का अनुवाद। दे० (ज–१६०)

संग्रामसिंह—ये सिरमौर वंश के राजा थे, सं० १८६६ के लगभग वर्तमान; काव्य, पिंगल, भूगोल, खगोल आदि के अच्छे ज्ञाता थे।

काव्यार्णव दे० (ज–२७६)

संजीवन सार—नौने शाह कृत, नि० का० सं० १८६६, लि० का० सं० १९२८, वि० वैद्यक। दे० (छ–८० सी)

संत उपदेश—शिवनारायण कृत, वि० उपदेश। दे० (ज–२९४ ई)

संत कविराज—दरभंगा-नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के प्रधान कवि, सं० १९४२ के लगभग वर्तमान, रीवाँ-राज्य निवासी, कवि ने अपना ग्रंथ दरभंगा के दीवान शिवप्रसाद को समर्पित किया है।

लक्ष्मीश्वर चंद्रिका दे० (क–५१)

संतदास—सं० १६९२ के पूर्व वर्तमान, चतुरदास के गुरु, अपने गुरु की आज्ञा से भागवत का अनुवाद किया था। दे० (क–७१) (ख–११०)

संतदास (शिवदास)—उप० हजारीदास, ये व्रज के संतदास से भिन्न हैं, कबीरपंथी साधु थे।

शब्दावली दे० (ज–२८१ ए)

स्वाँसविलास (ज–२८१ बी)

संत परवाना—शिवनारायण कृत, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज-२९४ डी)

सत्विचार—शिवनारायण कृत, वि० आतम-ज्ञान-वर्णन। दे० (ज–२९४ सी)

संतबिलास—शिवनारायण कृत, वि० आत्म-ज्ञान वर्णन। दे० (ज–२६४ बी)

संत शतक—राजा विश्वनाथसिंह कृत, लि० का० स० १६०३, वि० ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का वर्णन। दे० (ज–३२६ आई)

संतसई—जयसिंह राय रायाम कृत, नि का० सं० १८१२, लि० का० स० १६२९, वि० सत महात्माओं के माहात्म्य का वर्णन। दे० (ज–१३६)

संतसिंह—सूरतसिंह ज्ञानी के पुत्र, सं० १८८१ के लगभग वर्तमान, पजाब निवासी, सिक्ख मतावलबी थे।

मानप्रकाशिनी टीका दे० (ज–२८२ ए)
(छ—७८)
विमल वैराग्य संधारिनी (१) दे० (ज–२८२ बी)
विमलवैराग्य दे० (ज–२८२ सी)
वैराग्य संधारिनी दे० (ज–२८२ डी)
विमल वैराग्य संधारिनी (२) दे० (ज–२८२ ई)
विमल वैराग्य संधारिनी (३) दे० (ज–२८२ एफ)
मान प्रकाश दे० (ज–२८२ जी)

संत सुन्दर—शिवनारायण कृत, नि० का० स० १८११, वि० सतों के माहात्म्य का वर्णन। दे० (ज–२६४ ए)

संत सुमिरणी—गंगादास कृत, वि० भक्तों का वर्णन। दे० (छ–१५२ ए)

संतोष वैद्य—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

विज्ञायन दे० (छ–२२४)

संतोषसिंह—सिक्ख मतावलंबी, पटियाला निवासी, स० १८६० के लगभग वर्तमान थे।

वाल्मीकि रामायण भाषा दे० (ध–१२१)

संदर्भबोध—अन्य नाम हिंदूधर्म-सूचक मुख्य चप टिका, साहबदीन साधु कृत, नि० का० सं० १६०७, वि० पुराणादि द्वारा अवतारों का महत्व। दे० (क–३०)

संदेह सागर—चरणदास कृत, लि० का० सं० १६५०, वि० वर्णात ज्ञान विषयक शकाओं का समाधान। दे० (च–१६)

सप्रदाय निर्णय और प्रार्थना शतक—रूपा निवास कृत, वि० वैष्णवों के सखी-समाज और राम नाम की महिमा का वर्णन। दे० (छ–२७६ ए)

संबोधि पचाशिका भाषा—बिहारीदास कृत, नि० का० स० १७५८, वि० जैन ग्रंथ सबोधि पचाशिका का भाषानुवाद। दे० (क–१/१)

संभर युद्ध—श्रीकृष्ण भट्ट कृत, वि० जयपुर-नरेश सवाई जयसिंह तथा दिल्ली के बादशाह के सेनापति सैयद हुसेन अली और सैयद अब्दुल्ला से साँभर में हुए युद्ध का वर्णन। दे० (ज–३०१)

संमन—स० १८३४ के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण, मलावा (हरदोई) के निवासी थे।

संमन दे० (छ–२२८)

सआदत अली खाँ—अवध के नवाब, राज्य का० स० १८५५-१८७१, इनका भगवत धीची से युद्ध हुआ था। दे० (ज–६८)

सगाइय लीला—नव कवि (केहरीसिंह) कृत, लि० का० स० १६२०, वि० राधाकृष्ण की सगाई का वर्णन। दे० (च–३७) (छ–२६६)

सगुनावली—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० स० १८८१, वि० शकुन तथा अपशकुन जानने की रीति का वर्णन। दे० (ज–३२१ एच)

सजन पहोरा—यशी कवि कृत, नि० का० सं०

१७८०, वि० नंद तथा वृषभानु द्वारा वर-वधू के लिये वस्तुएँ भेजने का वर्णन। दे० (छ-११)

सज्जन विलास—दत्त (देवदत्त) कृत, नि० का० सं० १८०४; लि० का० सं० १८४६, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (घ-३६)

सतकबीर वंदी छोर—कबीरदास कृत, वि० आत्म-सिद्धांत वर्णन। दे० (छ-१७७ एफ)

सतगीता—सतीराम कृत, वि० दुर्वासा के सम्मुख पांडवों द्वारा अद्भुत महिमा का वर्णन। दे० (छ-३२५)

सतनाम—कबीरदास कृत; वि० ज्ञान और वैराग्य। दे० (ज-१४३ क्यू)

सत पंचाशिका—रामचरणदास कृत; नि० का० सं० १८४२; लि० का सं० १८७० वि० तत्त्वों का वर्णन। दे० (ज-२४५ बी)

सतसंग को अंग—कबीरदास कृत; वि० सतसंग की महिमा का वर्णन। दे० (ज-१४३ सी)

सतसंग विलास—र० अज्ञात; लि० का० सं० १९१६, वि० मूर्तिपूजा के मंडन में संस्कृत श्लोकों और भाषा पदों का संग्रह। दे० (ङ-५३)

सतसंग सार—ब्रजजीवनदास कृत; वि० सतसंग का माहात्म्य। दे० (ज-३४ एल)

सतसई—अन्य नाम विहारी सतसई, विहारीलाल कृत; जयपुर नरेश सवाई जयसिंह के समय में बनाई गई, आजम शाह के समय में इसका क्रम लगाया गया, वि० शृंगार के मौक्तिक दोहे। दे० (ख-२७)

नि० सं० १७०७, लि० का० सं० १८३६, दे० (व-१३३)

सतसैया—दरिया साहब कृत; लि० का० सं० १८८२; वि० ज्ञान वर्णन। दे० (ज-५५ एल)

सतसैया वर्णार्थ— ठाकुर कवि कृत, नि० का० सं० १८६१, लि० का० स० १९१०, वि० बिहारी सतसई पर टीका। दे० (ङ-१८)

सतीप्रसाद—कमौली (बनारस) के जमींदार बटुक बहादुरसिंह के आश्रित थे; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

जयचंद वंशावली दे० (छ-२३०)

सती-विलास—विरंजि कुँवरि (स्त्री) कृत; नि० का० सं० १९०५, वि० पातिव्रत धर्म और पति-भक्ति वर्णन। दे० (ङ-३६)

सतीराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

सतगीता दे० (छ-३२५)

सत्यनारायण कथा—माखनलाल कृत; लि० का० सं० १९२०, वि० संस्कृत सत्यनारायण कथा का भाषानुवाद। दे० (छ-६8 बी)

सत्योपाख्यान—ललकदास कृत, लि० का० सं० १९३१, वि० रामचरित्र का आदि से विवाह पर्यंत वर्णन। दे० (ज-१७१)

सत्रह (सतर) भेदपूजा—गुणसागर जैन कृत, वि० जिन देव की पूजा के सत्रह भेदों का वर्णन। दे० (क-६४)

सदल मिश्र—सं० १८६० के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण, कलकत्ते के फोर्ट विलियम कालेज में अध्यापक; डाक्टर गिलक्रिस्ट के समकालीन और उनकी सरक्षता में काम करते थे।

नासिकेत उपाख्यान दे० (ख-३४)

सदाचार प्रकाश—जयतराम कृत, नि० का०

सं० १७६५, लि० का० सं० १८३३, वि० भक्ति और वैराग्य का वर्णन। दे० (अ-१४०)

सदानंद दास—जन्म का० सं० १६८०, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

बंशावली नंदजी की दे० (अ-२७१)

सदाराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

बसंत प्रकाश दे० (अ-२७२ ए)

बोध विलास दे० (अ-२७२ बी)

अनुभव आनंद सिंधु दे० (अ-२७२ सी)

नाटक दीपक दे० (अ-२७२ डी)

सनेहलीला—रसिक राय कृत, लि० का० सं० १८४०, वि० ऊधो और गोपियों का संवाद। दे० (छ-३१९ए)

सनेहलीला—जगमोहन कृत, लि० का० सं० १८७७, वि० कृष्ण का ऊधो द्वारा यशोदा के प्रति सँदेसा भेजने का वर्णन। दे० (छ-५४)

सनेहलीला—माधवदास स्वामी कृत, लि० का० सं० १८२४, वि० कृष्ण का गोपियों को सँदेसा भेजने का वर्णन। दे० (घ-२६७)

सनेह संग्राम—प्रतापसिंह (व्रजनिधि) कृत, नि० का० सं० १८५२, वि० राधा-कृष्ण के झगड़ों का वर्णन। दे० (क-७८)

सनेहसागर—बख्शी हंसराज कृत, लि० का० सं० १८४८, वि० कृष्णलीला का वर्णन। दे० (ख-११५) (छ-५५ सी)

सनेहीराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं; सूदन कवि ने अपने ग्रन्थ में इनका वर्णन किया है, अतः सं० १८१० के पूर्व वर्तमान थे।

रसमंजरी दे० (अ-२७५)

सबलसिंह (चौहान)—सं० १७२७ के लगभग वर्तमान, इटावा के निकट के किसी गाँव के ज़मींदार थे, जाति के क्षत्रिय चौहान थे।

भीष्म पर्व (महाभारत) दे० (छ-२२४ ए)

कर्ण पर्व दे० (छ-२२४ बी)

महाभारत दे० (क-९६)

सबसुख—सं० १८३२ के लगभग वर्तमान, झाँसी निवासी, जाति के कायस्थ, ओड़छा (बुंदेलखंड) के राजा विक्रमाजीत सिंह के आश्रित थे।

चित्र गुप्त प्रकाश दे० (छ-१०६)

सबैया—सुंदरदास कृत, लि० का० सं० १८२७, वि० ज्ञान और वैराग्य का वर्णन। दे० (ग-२५) (छ-२४७)

सभाचंद—बादशाह औरंगज़ेब के समकालीन, ज़िला आज़मगढ़ निवासी, सं० १७०० के लगभग वर्तमान, जगतसिंह और आज़मखाँ के आश्रित थे।

कविचरित दे० (अ-२७०)

सभा-प्रकाश—बुद्धिसिंह कृत, नि० का० सं० १८६७, लि० का० सं० १८५५, वि० राजनीति और शासन-पद्धति का वर्णन। दे० (छ-१७)

सभा-प्रकाश—हरिचरणदास कृत, नि० का० सं० १८४१, लि० का० सं० १८६३, वि० अलंकार। दे० (छ-२४५ बी)

सभा प्रकाश—शिव कवि कृत, नि० का० सं० १८३६, लि० का० सं० १८६६, वि० राजनीति। दे० (छ-१९५)

सभा प्रकाश—त्रिलोकसिंह कृत, लि० का० सं० १९०५, वि० राजनीति। दे० (अ-३२१)

सभा भूषण—गंगाराम कृत, नि० का० सं० १७४४, लि० का० सं० १७६६, वि० राग-रागिनियों का वर्णन। दे० (अ-८७)

सभा मंडन—अमीरदास कृत, नि० का० सं० १८८४, लि० का० सं० १९११, वि० अलंकार। दे० (छ-१०४ ए)

सभा-मंडल शृंगार लीला—ध्रुवदास कृत, वि० राधा कृष्णके विहार का वर्णन। दे० (ज-७३ एन)

सभा मंडली—ध्रुवदास कृत; नि० का० सं० १६८१, वि० राधाकृष्ण के निकुंज सभा मंडल का वर्णन। दे० (क-२१)

सभा रत्नावली—प्रयागदास कृत, नि० का० सं० १८७१, वि० अमरकोष का भाषानुवाद। दे० (ज-२२८)

सभा विनोद—लछमणसिंह प्रधान कृत, नि० का० सं० १८६०; लि० का० सं० १८८७, वि० बही-खाते और दरबारी नियमों का वर्णन। दे० (छ-६५)

सभासार नाटक—रघुराम नागर कृत, नि० का० सं० १७५७, लि० का० सं० १८२७, वि० नीति का वर्णन। दे० (ज-२३८)

सभासिंह—पन्ना-नरेश, राज्य का० सं० १७६६-१८०६, हसराज बख्शी, करणभट्ट, रतन कवि और फतेहसिंह के आश्रयदाता, हिंदूपति के पिता थे। दे० (च-५४) (च-८३) (छ-३१) (छ-४५) (छ-५७) (ज-८०) (ज-२६६)

समन—मलावा (हरदोई) निवासी, जाति के ब्राह्मण, सं० १८३४ के लगभग वर्तमान।

दोहों का संग्रह दे० (छ-२२८)

समनसिंह बख्शी (समनेश)—जाति के कायस्थ, सं० १८७६ के लगभग वर्तमान, रीवाँ-नरेश महाराज विश्वनाथसिंह के आश्रित, इनके पूर्वज गुजरात निवासी थे, पीछे दिल्ली में रहने लगे थे।

पिंगल काव्य विभूषण दे० (क-४२)

रसिक विलास दे० (छ-२२७)

समय-नीति शतक—राजा लछमणसिंह कृत, नि० का० सं० १६०१; लि० का० सं० १६०?, वि० समयानुसार नीति पर चलने का वर्णन। दे० (छ-६५ बी)

समय-पचीसी—चंदहित (चंदलाल) कृत; वि० ज्ञानोपदेश। दे० (ज-३६ सी) (ज-४३ जी)

समय-प्रबंध—र० अज्ञात; लि० का० सं० १८७७, वि० अनेक प्रसिद्ध कवियों की कविताओं का संग्रह। दे० (क-६०)

समय प्रबंध—अलि रसिक गोविंद कृत, वि० राधा-कृष्ण का वर्णन। दे० (छ-१२२ एफ)

समय-प्रबंध—कृपानिवास कृत, सीताराम के आठ पहर के विहार का वर्णन। दे० (ज-१५४बी)

समय-प्रबंध—विहारिनदास कृत; लि० का० सं० १६१८, वि० श्रीराधा-कृष्ण के विहार का वर्णन। दे० (ज-३१)

समय-प्रबंध—चंद्रलाल (चंदहित) कृत; वि० राधा-कृष्ण के विहार का वर्णन। दे० (ज-४३एच)

समय-प्रबंध—दामोदरदास कृत, लि० का० सं० १८५१, वि० राधा-कृष्ण के भजन। दे० (ज-५३)

समय-बोध—कृपाराम कृत, नि० का० सं० १७७२, वि० ज्योतिष। दे० (ज-१५६)

समयसार (नाटक)—बनारसीदास कृत, नि० का० सं० १६५३ लि० का० सं० १८६३, वि०

जैन धर्म सम्बन्धी ज्ञान तत्वों का वर्णन। दे० (क-१३८)

समरसार—अनन्तपाल कृत, नि० का० सं० १८३३, वि० रण में जाने समय मुहूर्त विचारने का वर्णन। दे० (ङ-३)

समरसार—सरस्वती (कवीन्द्र) कृत, लि० का० सं० १८३३, वि० रण में जाने के समय मुहूर्त विचारने का वर्णन। दे० (ङ-२६)

समरसार—राम (कुमार) कृत, लि० का० सं० १६५०, वि० युद्ध में जाने के मुहूर्तों का वर्णन। दे० (छ-३० बी)

समरसार—मीर्षराज कृत, नि० का० सं० १८०७, लि० का० सं० १९१५, वि० युद्ध में जाने के मुहूर्त आदि का वर्णन। दे० (छ-११५)

समरसार—भगत मिश्र कृत, नि० का० सं० १८७६, लि० का० सं० १९००, वि० शल्यपर्व का अनुवाद। दे० (ज-१८८)

सरदार—हरिजन के पुत्र, सं० १९०३ के लगभग वर्तमान, ललितपुर (झाँसी) निवासी, काशी नरेश महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह के आश्रित थे।

साहित्य सुधाकर दे० (च-९२)
रामलीला प्रकाश दे० (च-१६४)
कविप्रिया टीका दे० (छ-५६)
शुभ शिखामणि दे० (छ-५७)
राम रत्नाकर दे० (छ-७६)
रामरत्न ... दे० (छ-८१)
शृंगार संग्रह दे० (ज-२८३ ए)
अंग विभाग दे० (ज-२८३ बी)
षट् ऋतु वर्णन दे० (ज-२८३ सी)

सरदारसिंह—कृष्णगढ़-नरेश, महाराज सावन्तसिंह (नागरीदास) के पुत्र, सं० १८१५ के लगभग वर्तमान थे। दे० (च-११२)

सरदारसिंह—धनहेड़ा (राज्य मेवाड़) के जागीरदार महाराज सुल्तानसिंह के पुत्र, सं० १८०५ के लगभग वर्तमान, मेवाड़-नरेश महाराज राजसिंह के प्रधान थे; इनकी वंशावली इस प्रकार है —

राजसिंह—भीमसिंह-सूरजमल-सुलतानसिंह-सरदारसिंह।

सुरतरंग दे० (ग-२)

सरफराज—स्वामी शंकराचार्य के सम्प्रदाय में से गिरि समाज के अनुयायी, उमरावगिरि के पुत्र, सं० १८४३ के लगभग वर्तमान, कवि देवकीनन्दन के आश्रयदाता थे; इनकी गुरु-परंपरा इस प्रकार है:—

स्वामी शंकराचार्य के चार शिष्य (१) नाटकाचार्य (२) पदमाचार्य (३) उपमाचार्य और (४) वालगार्तिकाचार्य; इनसे दश स्वामी सन्यासी हुए (१) गिरि (२) सागर (३) पर्वत (४) भारती (५) सरस्वती (६) तीर्थ (७) आश्रम (८) पुरि (९) वन (१०) अरण्य, गिरि गद्दी पर—ओंकार गिरि प्रथम पुरुषोत्तम-गिरि-चंदनगिरि-नारायणगिरि-श्यामगिरि-राजेन्द्रगिरि-उमरावगिरि-कुँवर सरफराज।
दे० (ग-५७)

सरफराज चन्द्रिका—देवकीनन्दन कृत, नि० का० सं० १८४३, वि० अलंकार वर्णन। दे० (छ-५७)

सरसदास—स्वामी हरिदास के अनुयायी और बिहारिनदास के शिष्य, वृन्दावन निवासी थे।

वाणी दे० (छ-२२९)

सरस मंजावली—सहचरीशरण कृत; लि० का० सं० १९०४, दूसरी प्रति का सं० १९५६; वि० कृष्णभक्ति तथा प्रार्थना। दे० (छ–२२५)

सरसरस—सूरति मिश्र कृत, नि० का० सं० १७९४, लि० का० सं० १९५४; वि० नायिका भेद। दे० (ज–३४१ बी)

सरस्वती—उप० कवींद्र, बनारस निवासी; सं० १६८७ के लगभग वर्तमान थे।

समरसार दे० (ङ–३९)

सर्वजीत—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

विष्णुपद दे० (ङ–५४)

सर्वसार उपदेश—जन अनाथ भाट कृत; नि० का० सं० १७२६, लि० का० सं० १८९८, वि० वेदांत। दे० (ज–१३१)

सर्वसुखदास—वृंदावन निवासी; राधा वल्लभी वैष्णव थे।

सेवक बानी की टीका दे० (ज–२८५)

सर्वसुख सरन—ये साधु थे और अयोध्या के महंत जान पड़ते हैं।

तत्वबोध दे० (ज–२८४)

सलीम—उप० जहाँगीर; मुगल वंश के सम्राट्, बादशाह अकबर के पुत्र; राज्य का० सं० १६६२–१६८४, प्राणचंद चौहान के समकालीन थे। दे० (घ–९५)

ससिनाथ—सं० १८०७ के लगभग वर्तमान; भरतपुर-नरेश राजा सुजानसिंह के आश्रित, सूदन कवि के समकालीन थे।

सुजान विलास दे० (क–८२)

सहचरीशरण—वृंदावन निवासी; स्वामी हरिदास के शिष्य थे।

सरस मंजावली दे० (छ–२२५)

सहज प्रकाश (बहुअंग)—सहजोबाई (स्त्री) कृत; नि० का० सं० १८००; लि० का० सं० १८७६; वि० गुरु की महिमा और प्रभाव का वर्णन। दे० (छ–२२६) (क–१२९) (ग्र–१६२)

सहजराम—ये किसी रियासत में नाज़िर थे; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

सहजराम चंद्रिका दे० (ङ–६१)

सहजराम चंद्रिका—सहजराम नाजिर कृत, वि० केशव कृत कविप्रिया पर टीका। दे० (ङ–६१)

सहज सनेही—उप० मोहन; सं० १९६७ के लगभग वर्तमान; मथुरा निवासी थे।

अष्टावक्र दे० (घ–४)

सहजो बाई (स्त्री)—हरिप्रसाद की पुत्री, जाति की धूसर वैश्य; स्वामी चरणदास की शिष्या; सं० १८०० के लगभग वर्तमान; परीक्षितपुर (दिल्ली) निवासिनी थीं।

सहज प्रकाश (बहु अंग) दे० (क–१२९) (छ–२२६)

सहजोबाई कृत शब्द दे० (क–१३१)

सजोबाई कृत शब्द—सहजोबाई कृत, वि० योग शास्त्र। दे० (क–१३१)

सहदेव—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

गज प्रकाश दे० (छ–३२३)

साँझी—घनश्यामदास कृत; वि० क्वार मास में कृष्णोत्सव पर की साँझी का वर्णन। दे० (छ–२६ सी)

साखी—राजा विश्वनाथसिंह कृत; लि० का० सं० १९०४, वि० कबीर की साखियों पर तिलक। दे० (ज–३२९ पेच)

सागरदान चारण—सं० १८९७ के लगभग वर्तमान, जाति के सादूँ चारण, झालाप (झाम पुर राज्य) के ठाकुर बख्तावरसिंह के आश्रित थे।

गुण विलास दे० (ख-८१)

साध को अंग—कबीरदास कृत, वि० साधु और साधुता का वर्णन। दे० (ज-१४३ पंच)

साधु वंदना—बनारसीदास कृत, वि० जैनमतानुसार साधुओं के २८ गुणों का वर्णन। दे० (छ-१०७)

सामाजी—चित्तौड़ निवासी, सं० १६७५ के लगभग वर्तमान, इन्होंने व्यास कृत राजा रासा लिखा था। दे० (ङ-९४)

सामुद्रिक—दयाराम कृत, वि० हस्त-रेखाओं को देखकर भविष्य कहने की रीति का वर्णन। दे० (छ-१५४)

सामुद्रिक—रत्न भट्ट कृत, नि० का० सं० १७८५, लि० का० सं० १८८०, दूसरी प्रति का सं० १८८६, वि० ज्योतिष, यथा हस्त-रेखाओं द्वारा भविष्य वर्णन करना। दे० (छ-२१६)

सामुद्रिक—यदुनाथ शास्त्री कृत, लि० का० सं० १९१७, वि० हस्त-रेखाओं द्वारा भविष्य वर्णन करने की रीति। दे० (द-३४४)

सारंगधर संहिता—भैरवसिंह कृत, नि० का० सं० १८०८, लि० का० सं० १९२२, वि० वैद्यक, संस्कृत शार्ङ्गधर संहिता का भाषानुवाद। दे० (ङ-३८) (ज-२७१)

सार चंद्रिका—भिखारी शर्मा कृत, नि० का० सं० १८१७, लि० का० सं० १९५६, वि० सत्संग के माहात्म्य का वर्णन। दे० (ज-१५१)

सारसंग्रह—सुंदरि कुँवरि (स्त्री) कृत, नि० का० सं० १८५५, वि० भक्ति का वर्णन। दे० (ख-१०२)

सारसंग्रह—रामप्रसाद कृत, वि० स्फुट दोहों का संग्रह। दे० (छ-१५२)

सारसंग्रह—शंकर पांडे कृत, नि० का० सं० १८९५, लि० का० सं० १८९२, वि० नीति के दोहे। दे० (ज-२७६)

सारसंग्रह—गंगाराम कृत, नि० का० सं० १७१४, लि० का० सं० १८०१, वि० वैद्यक। दे० (ज-२१४)

सावंतसिंह (राजा)—उप० नागरीदास, कृष्णगढ़ नरेश, जन्म का० सं० १७५५, मृत्यु का० सं० १८२२, महाराज राजसिंह के पुत्र, सुंदरि कुँवरि और बहादुरसिंह के भाई, सरदारसिंह के पिता, ये एक अच्छे कवि थे, सं० १८१५ में अपने भाई बहादुरसिंह द्वारा कष्ट दिए जाने पर अपने पुत्र सरदारसिंह को राज्य दे कर वृंदावन चले आए थे, नवलदास के गुरु थे। दे० (ज-२१३)

पदपद दे० (छ-१९८ ए)

भक्तिसार दे० (छ-१९८ बी)

पद प्रसंगमाला दे० (छ-१९८ सी)

उत्सवमाला दे० (ख-११२)

बिहार चंद्रिका दे० (ख-११३)

भोरलीला दे० (ख-११४)

मजलिस मंडन (फुटकर दोहा) दे० (ख-११५)

निकुंज विलास दे० (ख-११६)

बनजन प्रशंसा सवैया दे० (ख-११७)

ब्रज संबंध नाम माला दे० (ख-११८)

छूटक दोहा दे० (ख–११६)

जुगल भक्ति विनोद दे० (ख–१२०)

प्रात रसमजरी दे० (ख–१२१ एक)

भोजनानद अष्टक दे० (ख–१२१ दो)

जुगल रस माधुरी दे० (ख–१२१ तीन)

फूलविलास दे० (ख–१२१ चार)

गोधन आगम दे० (ख–१२१ पाँच)

दोहनानंदाष्टक दे० (ख–१२१ छः)

लग्नाष्टक दे० (ख–१२१ सात)

फागविलास दे० (ख–१२१ आठ)

ग्रीष्म विहार दे० (ख–१२१ नौ)

पावस पचीसी दे० (ख–१२१ दस)

अरिल्लाष्टक दे० (ख–१२१ ग्यारह)

बनविनोदलीला दे० (ख–१२२)

तीर्थानद ग्रथ दे० (ख–१२३)

भक्ति मग दीपिका दे० (ख–१२४)

ब्रजसार ग्रथ दे० (ख–१२५)

रैनरूपा रस दे० (ख–१२६)

स्वजनानद ग्रथ दे० (ख–१२७)

बालविनोद दे० (ख–१२८)

रासरसलता दे० (ख–१२६)

नागरीदास जी की स्फुट कविता दे० (ख–१३०)

इश्क चिमन दे० (ख–१३१)

सावंतसिंह—भारत शाह के पितामह; विजन (राज्य टीकमगढ़) के जागीरदार, रानी मोहर कुँवरी के पति, सं० १७२७ के लगभग वर्तमान, वैकुंठमणि शुक्ल के आश्रयदाता थे। दे० (छ–५ बी) (छ–१४)

सावर तंत्र—नैना योगिनी (स्त्री) कृत; लि० का० सं० १८६३; वि० मत्र यंत्रादि । दे० (ज–२०६)

साहमल—सुंदरदास के पिता, जाति के ब्राह्मण; सं० १७०७ के पूर्व वर्तमान थे । दे० (छ–३३४)

साहित्य-चंद्रिका—करण भट्ट कृत, वि० बिहारी सतसई की टीका। दे० (छ–५७)

साहित्य-सार—मतिराम कृत, लि० का० सं० १८८५; वि० नायिका भेद। दे० (छ–१६६ बी)

साहित्य शिरोमणि—निहाल कवि कृत, नि० का० सं० १८६३, वि० पद्य रचना वर्णन। दे० (घ–१०५)

साहित्य-सुधाकर—सरदार कवि कृत, नि० का० सं० १६०२ वि० पद्य-रचना, पिंगल का वर्णन। दे० (घ–६२)

साहित्य-सुधानिधि—जगतसिंह कृत; नि० का० सं० १८५८, लि० का० सं० १६४३; वि० पिंगल। दे० (ज–१२७ ए)

साहिब जी की कविता—मुरलीधर कृत, वि० स्वामी प्राणनाथ की प्रशंसा। दे० (छ–७६)

साहेबदीन—ठाकुर अमरसिंह के पुत्र; जाति के क्षत्री, सं० १६०५ के लगभग वर्तमान, विरजी कुँवरि के पिता थे। दे० (ङ–३६)

सदेह बोध दे० (ङ–३०)

सिंगार—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

बलदेव रासमाला दे० (छ–३३२)

सिंगार सत—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण के शृंगार का वर्णन। दे० (क–६)

सिंहासन वत्तीसी—विनयसमुद्र कृत, नि० का० स० १६११, लि० का० सं० १८२४, वि० सिंहासन वत्तीसी का भाषानुवाद । दे० (ख–७४)

मोद—ग्रन्थ की भाषा गुजराती मिश्रित मारवाड़ी है।

सिंहासन बत्तीसी—मेघराज प्रधान कृत, वि० सिंहासन बत्तीसी का भाषानुवाद। द्र० (छ–७४ सी)

सिंहासन बत्तीसी—काशिमअली प्रधान कृत, नि० का० सं० १८०१, लि० का० सं० १६१०, वि० ग्वालियर के सुंदर कवि की सिंहासन बत्तीसी का खड़ी बोली में अनुवाद। दे० (छ–१८०)

सिंहासन बत्तीसी—परमसुख कृत, लि० का० सं० १६०५, वि० फारसी सिंहासन बत्तीसी का हिंदी अनुवाद। द्र० (क–१२७)

सिंहासन बत्तीसी—गंगाराम कृत, वि० सिंहासन बत्तीसी की कथाओं का अनुवाद। द्र० (ध–६)

सिंहासन बत्तीसी—कृष्णदास कृत, लि० का० सं० १६२०, वि० राजा विक्रमादित्य के विषय में ३२ कहानियों का हिंदी अनुवाद। दे० (छ–१८४)

सितकंठ—सं० १७२७ के लगभग वर्तमान, बरेली निवासी, जाति के ब्राह्मण थे।

तत्व गुणमणी दे० (ज–२६१)

सिद्धसागर तंत्र—शिवदयाल वर्मी कृत, लि० का० सं० १८६६, वि० तंत्र, मंत्र और औषधियों का वर्णन। दे० (ज–२६३ ए)

सिद्धसिद्धांत पद्धति—र० अज्ञात, वि० गोरख नाथ कृत सिद्ध सिद्धान्त पद्धति का हिन्दी अनुवाद। पुस्तक का निर्माण जोधपुर-नरेश महाराज मानसिंह के समय में हुआ था। दे० (ग–७५)

सिद्धांत चौंतीसी—जनकराजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १६३०, वि० धार्मिक सिद्धांत का वर्णन। दे० (ज–१२४ एम)

सिद्धांत बोध—महाराज जसवंतसिंह कृत, वि० ब्रह्मज्ञान का वर्णन दे०। (ग–१६)

सिद्धांत विचार—ध्रुवदास कृत, वि० श्रीकृष्ण की रास क्रीड़ा का वर्णन। दे० (ज–७२ आई)

सिद्धांत सार—जोधपुर नरेश महाराज जसवंत सिंह कृत, वि० मोक्ष और आत्मज्ञान का वर्णन। दे० (ग–५६)

सियराम-रसमंजरी—रामचरण दास कृत, नि० का० सं० १८८१, लि० का० सं० १८६०, वि० सीताजी के माहात्म्य का वर्णन। दे० (ज–२४५ डी)

सीतलप्रसाद (सीतल)—सं० १७८० के लगभग वर्तमान, ये हरिदास टट्टीवाले सम्प्रदाय के महंत थे, जिला हरदोई निवासी थे, इन्होंने खड़ी बोली में कविता की है।

गुलजार चमन दे० (ज–२६२)

सीतायन—रामप्रियाशरण कृत, लि० का० सं० १६४२, वि० श्रीजानकीजी की कथा का वर्णन। दे० (ज–२५५)

सीताराम—सं० १८८७ के लगभग वर्तमान, दतिया-नरेश राजा परीछित के आश्रित थे।

रामायण (मान कवि कृत रामायण की टीका) दे०। (छ–१११)

सीताराम गुणार्णव रामायण सप्त कांड—गोकुल नाथ बंदीजन कृत, लि० का० सं० १६०६, वि० अध्यात्म रामायण का भाषानुवाद। दे० (ध–२३) (ट–१२४)

सीतारामदास—भगवतदास के पिता, सं० १८६८

के पूर्व वर्तमान, प्रयाग निवासी थे। दे० (ज-२१)

सीताराम रस तरंगिनी—जनकराजकिशोरी शरण कृत, लि० का० सं० १९३०; वि० रामजानकी की दैनिक लीला का वर्णन। दे० (ज-१३४ डी)

सीताराम रस दीपिका—किशोरीशरण (रसिक या रसिकविहारी) कृत, वि० रामलीला का वर्णन। दे० (छ-१८१ बी)

सीताराम रहस्य—कृपानिवास कृत; लि० का० सं० १८९०, वि० रामसीता के नृत्य का वर्णन। दे० (छ-२७९ एफ)

सीतारम विवाह—मुनि कवि कृत; वि० रामजानकी के विवाह का वर्णन। दे० (ज-२०१)

सीताराम सिद्धांतमुक्तावली—जनकराजकिशोरी शरण कृत; नि० का० सं० १८७५; लि० का० सं० १९२४; वि० भक्ति, शांति और शृङ्गार रस का वर्णन। दे० (ज-१३४ ए)

सीताराम सिद्धांत मुक्तावली—किशोरीशरण (रसिक या रसिकविहारी) कृत; लि० का० सं० १९४३; वि० रामभक्ति का वर्णन। दे० (छ-१८१ डी)

सीता स्वयंवर—नवलसिंह (प्रधान) कृत, वि० सीताजी के स्वयंवर का वर्णन। दे० (छ-७९बी)

सीयवर केलि पदावली—ज्ञानअली कृत; लि० का० सं० १९५६, वि० सीताराम के चरित्र का वर्णन। दे० (ज-१०३)

सीलदास—विजयदेव सूरि कृत, नि० का० सं० १६६९, लि० का० सं० १६६९, वि० नेमनाथ के पुत्र सीलकुमार के चरित्र का वर्णन। दे०

सुंदर कली—कोई मुसलमान स्त्री थी; इसके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

सुंदर कली की कहानी (बारहमासा) दे० (ज-३१२)

सुंदर कली की कहानी—अन्य नाम बारहमासा; सुंदरकली कृत; वि० प्रेम तथा विरह का वर्णन। दे० (ज-३१२)

सुंदर कुँवरि (स्त्री)—कृष्णगढ़ के राजा राजसिंह की पुत्री; महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) और बहादुरसिंह की बहिन; सं० १८३५ के लगभग वर्तमान; ये श्रीकृष्ण की बड़ी भक्त थीं।

प्रेम संपुट दे० (ग्र-९५)
रंगझर दे० (ग्र-९६)
नेहनिधि दे० (ग्र-९७)
रामरहस्य दे० (ग्र-९८)
संकेत युगल दे० (ग्र-९९)
गोपीमाहात्म्य दे० (ग्र-१००)
रसपुंज दे० (ग्र-१०१)
सार संग्रह दे० (ग्र-१०२)
वृंदावन गोपी माहात्म्य दे० (ग्र-१०३)
भावना प्रकाश दे० (ग्र-१०४)

सुंदर चंद्रिका रसिक—सुंदरलाल कृत; नि० का० सं० १९०९, वि० नायक-नायिका का उदाहरण सहित स्वरूप-वर्णन। दे० (क-१२५)

सुंदरदास—दूलहाराम के पुत्र; जाति के कायस्थ; काशी निवासी; सं० १८६७ के लगभग वर्तमान थे।

सुंदर श्याम विलास दे० (घ-५७)
नियम सार दे० (घ-८८)

सुंदरदास—शाहमल के पुत्र, जाति के ब्राह्मण, सं० १७०७ के लगभग वर्तमान थे।

रुक्मांगद की एकादशी कथा दे० (छ-२३४)

सुन्दरदास—दादूजी के शिष्य, जन्म का० सं० १६५३, मृत्यु का० सं० १७४६, शाह परमानन्द के पुत्र, द्यौसा (जयपुर राज्य) निवासी, जाति के खंडेलवाल वैश्य थे।

हरिबोल चिंतामणि दे० (क-२७)
सवैया दे० (ग-२५) (छ-२४२ ए)
ज्ञानसमुद्र दे० (ग-२६०) (ज-३११ ए)
सुन्दरविलास दे० (छ-२४२ सी) (ग-२५ एक)
सुन्दरदासजी की बानी दे० (ज-३११ बी)
विचारमाला दे० (ज-३११ सी)
विवेक चेतावनी दे० (ज-३११ डी)
सुन्दराष्टक दे० (क-२७)
सुंदरकाव्य दे० (ग-२५ तीन)
सुन्दराष्टक दे० (ग-२५ चार)
सर्वांग योग दे० (ग-२५ पाँच)
सुखसमाधि दे० (ग-२५ छः)
स्वप्नबोध दे० (ग-२५ सात)
वेदविचार दे० (ग-२५ आठ)
उक्तअनूप दे० (ग-२५ नौ)
सुंदर बानी दे० (ग-२५ दस)
अद्भुतोपदेश दे० (ग-२५ ग्यारह)
पंचेंद्रियचरित्र दे० (ग-२५ बारह)
विवेक चिंतामणि दे० (ग-२५ तेरह)
त्रिविध अंतःकरण भेद दे० (ग-२५ चौदह)
पद दे० (ग-२५ पन्द्रह)
ज्ञानसमुद्र दे० (ग-२४) (ग-२५ दो) (ग-१६५) (छ-२४२ बी)

सुन्दरदास—उप० सुन्दर, ग्वालियर निवासी, जाति के ब्राह्मण, सं० १६८८ के लगभग वर्तमान, बादशाह शाहजहाँ और औरंगजेब के आश्रित, शाहजहाँ के दरबार से इन्हें कविराय और महा कविराय की उपाधि मिली थी।

सुन्दर शृंगार दे० (क-१०६) (ग-३) (छ-२४१ ए) (ज-१४१)
बारहमासी दे० (छ-२४१ बी)

सुन्दरदास की बानी—सुन्दरदास कृत, लि० का० सं० १९१५, वि० गुरु माहात्म्य, ईश्वरभक्ति और आश्रम धर्म का वर्णन। दे० (ज-३१?)

सुन्दरलाल—उप० रसिक सुन्दर, सुखलाल के पुत्र, जाति के कायस्थ, सं० १९०९ के लगभग वर्तमान, जयपुर नरेश महाराज रामसिंह के आश्रित थे।

सुंदर कवित्त रसिक दे० (क-१९५)
नियमति रसबोधनी रामायण दे० (क-१९८

सुन्दरविलास—सुन्दरदास कृत, लि० का० सं० १९२७, वि० आत्मज्ञान का वर्णन। दे० (छ-२४२ सी)

सुन्दर शतक—रीवाँ-नरेश महाराज रघुराज सिंह कृत, लि० का० सं० १९०४, वि० हनुमानजी की स्तुति और कथा। दे० (क-४५ (ज-२३७)

सुन्दर शृंगार—सुन्दरदास कृत, लि० का० सं० १९८८, लि० का० सं० १८३५ और १८७४, वि० नायिका भेद। दे० (ग-३) (क-१०६) (छ-२४१ ए) (ज-१४१)

सुंदरश्याम विलास—सुन्दरदास कायस्थ कृत

नि० का० सं० १८६७, वि० कृष्णलीला और कुछ भक्तों का वर्णन। दे० (घ-५७)

सुंदर सत श्रृंगार—सुंदरसिंह कृत, नि० का० सं० १८६६, वि० कृष्ण की भक्ति और भावना का वर्णन। दे० (घ-१११) (घ-१६५)

सुंदर सांख्य—सुंदरदास कृत वि० दर्शन। दे० (क-२७)

सुंदरसिंह—भरथपुर-राजवंश के महाराज-कुमार, स० १८६६ के लगभग वर्तमान थे।

पचाध्यायी दे० (ङ-७३)

गौरी बाई की महिमा दे० (ट-७४)

हुस्नचमन दे० (ङ-७५)

सुंदर सतश्रृंगार दे० (घ-१११) (घ-१६५)

सुखदेव—शंकरदयाल के पिता; दरियाबाद (बाराबंकी) निवासी स० १८६२ के लगभग वर्तमान थे। दे० (ज-२८०)

सुखदेवजी—स्वामी चरणदास के गुरु; स० १७६० के लगभग वर्तमान थे। दे० (क-१२६)

सुखदेव मिश्र—पहले कम्पिला (फरुखाबाद) के निवासी, फिर दौलतपुर (रायबरेली) में जा रहे थे, सं० १७२८ के लगभग वर्तमान, असोथर (फतेहपुर) के राजा भगवतराय खीची, अमेठी (सुलतानपुर) के राजा हिम्मतसिंह, औरंगजेब के वजीर फाजिल अली डौंडिया, खेरा के राव मर्दानसिंह बैस, राजसिंह गौर, मुरारिमऊ के राजा देवीसिंह और अलायारखाँ के आश्रित थे; इनको कविराज की उपाधि भी मिली थी; शंभूनाथ त्रिपाठी के गुरु थे। दे० (ज-२७४)

वृत्त विचार दे० (छ-२४० ए)

छंद विचार दे० (छ-२४० बी) (ज-३०७ बी)

अध्यात्म प्रकाश दे० (छ-२४० सी) (च-६७)

फाजिलअली प्रकाश दे० (ज-३०७ ए)

पिंगल दे० (ज-३०७ सी)

रसार्णव (रस रसार्णव) दे० (घ-१२४) (ट-३३)

पिंगल दे० (घ-१२३)

नोट—संभव है, कम्पिला और दौलपुर के सुखदेव भिन्न भिन्न हों।

सुखदेव लाल—जाति के कायस्थ, मैनपुरी निवासी सं० १७७६ के लगभग वर्तमान थे।

मानमहल रामायण दे० (ज-३०८)

सुखनिधान—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

दोहा व पद दे० (छ-३३३)

सुखमंजरी—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण के विहार का वर्णन। दे० (क-१३ एफ) (ज-७३ के)

सुखमनी—नानक गुरु कृत, लि० का० सं० १८५६, वि० रामनाम की महिमा का वर्णन। दे० (ज-२०७)

सुखलाल—सुंदरलाल के पिता, जाति के कायस्थ; सं० १६७६ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (क-१२५)

सुखलाल—जाति के भाट; ओड़छा (बुंदेलखंड) निवासी, कुनरी के पुत्र, सं १६०२ के लगभग वर्तमान थे।

दस्तूर अमल दे० (छ-११३ ए)

नसीहत नामा दे० (छ-११३ बी)

राधाकृष्ण कटाक्ष दे० (छ-११३ सी)

सुखलाल द्विज—सं० १७६७ के लगभग वर्तमान; अटेर भदावर (राज्य ग्वालियर) निवासी;

गढ़ा के राजा गुमानसिंह के आश्रित, सुगम कृष्ण भट्ट के कालीन थे।

वैद्यकसार द० (अ-३१०)

सुख विलासिका—सरदार कृत, लि० का० सं० १९०३, वि० रसिक प्रिया पर टीका। दे० (क-५७)

सुख संवाद—समदास कृत, लि० का० सं० १८७९, दूसरी का लि० का० सं० १७०६, वि० रमा और शुकदेव मुनि का संवाद। द० (छ-१२४) (ग-९४)

सुखसखी—ये सखी समाज के वैष्णव थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रंगमाला दे० (अ-३०९ ए)

फागो माणिक द० (अ-३०९ बी)

सुख सागर तरंग—देव कवि (देवदत्त) कृत, लि० का० सं० १९५२, वि० शृंगार रस और नायिका भेद का वर्णन। द० (अ-९४ डी)

सुगम निदान—विष्णु गिरि कृत, लि० का० सं० १८०१, वि० वैद्यक का निदान। द० (ग-१०६)

सुजान विनोद—देवदत्त (देव कवि) कृत, का० सं० १९३३, लि० का० सं० १८५३, वि० शृंगार रस और काव्य का वर्णन। द० (घ-१०८)

सुजान चरित्र—सूदन कवि कृत, लि० का० सं० १८३९, वि० भरतपुर-नरेश सूरजमल का मुगल अहमदशाह दुर्रानी आदि से युद्ध करने का वर्णन। द० (क-८१)

सुजान विलास—शशिनाथ मिश्र कृत, नि० का० सं० १८०७, लि० का० सं० १८३०, वि० सिंहासन बत्तीसी का पद्यमय अनुवाद। दे० (क-८२)

सुजानसिंह—उप० सूरजमल, सं० १८१० के लगभग वर्तमान, राज्य का० सं० १८१०-१८२०, भरतपुर-नरेश महाराज बदनसिंह के पुत्र, सं० १८२० में मुगलों के युद्ध में मारे गए, इनके पश्चात् इनके पुत्र जवाहरसिंह गद्दी पर बैठे, सूदन कवि और शशिनाथ मिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (क-८१) (क-८२)

सुजानसिंह—ओड़छा (बुंदेलखंड) नरेश, राजा पहाड़सिंह के पुत्र, सं० १७२६ के लगभग वर्तमान, मेघराज प्रधान और सुदर्शन वैद्य के आश्रयदाता थे, राज्य का० सं० १७१०-१७२६। दे० (छ-११२) (ज-८७) (घ-७४)

सुदर्शन—गिरिधर के पुत्र, हमीरपुर निवासी, जाति के कायस्थ श्रीवास्तव, सं० १७२६ के लगभग वर्तमान, ओड़छा (बुंदेलखंड) नरेश महाराज सुजानसिंह के आश्रित थे।

विषविद्या दे० (छ-११२) (ज-८७)

सुदामा चरित्र—कवि गंग कृत, वि० सुदामा चरित्र का वर्णन। द० (क-२६)

सुदामा-चरित्र—प्राणनाथ कृत, लि० का० सं० १८३७, दूसरी प्रति का लि० का० सं० १८६१, वि० सुदामा-चरित्र वर्णन। द० (घ-५३)

सुदामा-चरित्र—बालकराम फकीर कृत, लि० का० सं० १८९०, वि० सुदामा-चरित्र का वर्णन। द० (छ-१३३)

सुदामा चरित्र—र० अज्ञात, लि० का० सं० १७०६, वि० सुदामा-चरित्र का वर्णन। द० (ग-६३)

सुदामा-चरित्र—अमरसिंह कृत, वि० सुदामा चरित्र का वर्णन। द० (ज-३)

सुदामा-चरित्र—नरोत्तम कृत; लि० का० सं० १८८७, दूसरी प्रति का सं० १६२८, वि० सुदामा-चरित्र का वर्णन। दे० (क-२२) (छ-२०१)

सुदामा-चरित्र—गोपाल कृत; नि० का० सं० १८५३, लि० का० सं० १६३१; वि० सुदामा-चरित्र का वर्णन। दे० (छ-२५३)

सुदामा-चरित्र—व्रजवल्लभदास कृत; वि० सुदामा-चरित्र का वर्णन। दे० (ज-३५ बी)

सुदामा-चरित्र—हलधर कृत, लि० का० सं० १६११; वि० सुदामा की कथा का वर्णन। दे० (ज-१०४)

सुदामा-समाज—अन्य नाम "सुदामा-चरित्र", खंडन कवि कृत; लि० का० सं० १७६६; दूसरी प्रति का सं० १८६०, वि० सुदामा की कथा का वर्णन। दे० (छ-५६ ए)

सुदिष्ट तरंगिणी—र० अज्ञात; नि० का० सं० १८३८, वि० जैनधर्म के सिद्धांतों का वर्णन। दे० (क-११६)

सुधानिधि—तोषमणि कृत; नि० का० सं० १६६१; लि० का० सं० १६४८, वि० नव रस और नायिका भेद का वर्णन। दे० (ज-३१६)

सुनिसार—बख्तावर कृत; नि० का० सं० १८६०, लि० का० सं० १८७४, वि० द्वैत मत का विरोधी और अद्वैत मत का प्रतिपादक वेदांत ग्रंथ। दे० (ख-५६)

सुनीतिपंथ प्रकाश—निहाल द्विज कृत, नि० का० सं० १८८६; वि० राजनीति का वर्णन। दे० (घ-१०६)

सुनीति-प्रकाश—भूपति कृत, नि० का० सं० १८३१; वि० इखलाकुल मुहनी का भाषानुवाद; राजनीति की कहानियाँ। दे० (ङ-२)

सुनीति-रत्नाकर—निहाल कवि कृत; नि० का० सं० १६०२, लि० का० सं० १६०२; वि० नीति। दे० (घ-१०७)

सुमनधन—गंगादास कृत; नि० का० सं० १८७६; वि० गुलिस्ताँ का हिंदी अनुवाद। दे० (ज-८५)

सुरजनराव—बूँदी नरेश; महाराज भाऊसिंह के पूर्वज, सं० १६११ के लगभग वर्तमान थे। दे० (घ-६७)

सुर तरंग—राजा सरदारसिंह कृत; नि० का० सं० १८०५; वि० गान विद्या का वर्णन। दे० (ग-२)

सुलतानसिंह—बनहेडा (मेवाड़) के राजा; सरदारसिंह के पिता; महाराणा राजसिंह के वंशज, इनकी वंशावली इस प्रकार है—राजसिंह—भीमसिंह—सूरजमल और सुलतानसिंह। दे० (ग-२)

सुवंश शुक्ल—बिसवाँ (सीतापुर) निवासी; सं० १८६४ के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण, राजा उमरावसिंह और सूबासिंह के आश्रित थे।

उमराव कोश दे० (च-८८)

पिंगल दे० (ज-३०६)

विद्वान मोद तरंगिनी दे० (ज-३०६)

देवी दे० (ग-१०७)

सुवर्णवेलि की कविता—सुवर्णवेलि (महारानी सोन कुँवरि) कृत, लि० का० सं० १८३४, वि० कृष्णोत्सव के गीत। दे० (छ-२३६)

सुवर्ण-माला—गिरिधर भट्ट कृत, नि० का० सं० १६०८; वि० वर्णानुसार प्रत्येक दोहे में १२

भाषाओं के प्रयोग में नायिका भेद का वर्णन। दे० (छ-३८ बी)

सुहृद्गार—गजराज कृत, लि० का० सं० १९०३, वि० पिंगल। दे० (घ-१७)

सूत्रार्थ पातंजलि भाषा—मधुरानाथ शुक्ल कृत, लि० का० स० १८४५, वि० योग का वर्णन। दे० (ज-१९५ सी)

सूदन कवि—बसंतराम के पुत्र, जाति के चौबे ब्राह्मण, मथुरा निवासी, स० १८०३ के लगभग वर्तमान, भरतपुर नरेश राजा सुजानसिंह के आश्रित थे।

सुजान चरित्र दे० (क-८१)

सूरज—१८वीं शताब्दी में वर्तमान, ये ज्योतिषी थे, सूदन कवि ने इनकी प्रशंसा की है।

कर्म विवेक दे० (ज-३०५)

सूरज पुराण—तुलसीदास कृत, वि० सूर्य की कथा का वर्णन। दे० (ज-३२३ एम)

नोट—ये गोस्वामी तुलसीदास से भिन्न जान पड़ते हैं।

सूरजमल—उप० सुजानसिंह, भरतपुर-नरेश, राज्य का० सं० १७१२-१७२०, स० १७२० में मुगलों के युद्ध में मारे गए, ये मुगलों, मरहठों, रुहेलों और अहमदशाह दुर्रानी की लड़ाई में सम्मिलित हुए थे, राजा बदनसिंह के पुत्र और जवाहरसिंह के पिता, सूदन कवि और शशिनाथ के आश्रयदाता थे। दे० (क-८१) (क-८२)

सूरत मिश्र—स० १७६८ के लगभग वर्तमान, जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण, आगरा निवासी, जोधपुर-नरेश महाराज जसवंतसिंह के शिक्षक, नसरुल्ला खाँ और दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के आश्रित थे।

रसग्राहक चंद्रिका दे० (छ-२४३ ए) (ज-३१४ ए)

रस रत्नमाला दे० (छ-२४३ बी) (ख-८६) (ग-९६)

अमर चंद्रिका दे० (छ-२४३सी) (ज ३१४सी

रसिक प्रिया टीका दे० (छ-२४३ डी)

अलंकार माला दे० (घ-१०४)

सरस रस दे० (ज-३१४ बी)

सूरतसिंह—कवि सतसिंह के पिता, सं० १८८१ के पूर्व वर्तमान, पंजाब निवासी थे। दे० (ग-२८२) (क-७८)

सूरदास—स० १५५० से १६२० तक वर्तमान, वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि, इनकी गणना अष्टछाप में की जाती है, जाति के ब्राह्मण, ब्रज निवासी थे।

सूरसागर सार दे० (ज-३१३)

सूरसागर दे० (क-२१) (ज-१४२) (छ-२४४ सी)

ब्याहलो दे० (छ-२४४ ए)

पद संग्रह दे० (छ-२४४ बी) (ग-२६२)

दशम स्कंध टीका दे० (छ-२४४ डी)

नागलीला दे० (छ-२४४ ई)

सूरदास जी के दृष्टिकूट (सटीक)—बालकृष्ण दास कृत, वि० सूरदास जी के कठिन पदों की टीका। दे० (क-६)

सूरसागर— सूरदास कृत, लि० का० स० १६३१, लि० का० स० १८५३, दूसरी प्रति का स० १७६२, तीसरी प्रति का स० १८७१, चौथी का सं० १८९६,

वि० श्रीकृष्ण लीला संबंधी पदों का संग्रह।
दे० (छ–२४४ सी) (ख–२३) (ट–१४२)

सूरसागर सार—सूरदास कृत; वि० ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का वर्णन। दे० (ज–३१३)

सूरसिंह—नरहरिदास के समकालीन और आश्रयदाता; जोधपुर नरेश, महाराज-कुमार गजसिंह के पिता, सं० १६७४ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ग–२०) (ग–४८) (ज–२१०)

सूबासिंह—ओहल (खेरी) के राजा; सं० १८६४ के लगभग वर्तमान; सुवंश शुक्ल के आश्रयदाता। दे० (ज–३०६)

सेनापति—परशुराम के पौत्र; जाति के कान्यकुब्ज दीक्षित ब्राह्मण, गंगाधर के पुत्र, जन्म का० सं० १६८४, अनूप शहर (बुलन्द शहर) निवासी; हीरामन दीक्षित के शिष्य; अंत समय में संन्यासी होकर वृंदावन में रहने लगे थे, कविता का० सं० १७०६।

कवित्त रत्नाकर दे० (ज–२८७),
षटऋतु कवित्त दे० (ङ–५१)
कवित्त दे० (छ–२३१)

सेवक—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

अकबर नामा दे० (छ–३२६)

सेवक चरित्र—भगवत मुदित कृत, वि० राधावल्लभी सेवक जी की कथा का वर्णन। दे० (ज–२३ बी)

सेवकराम—असनी (फतेहपुर) निवासी, ऋषिनाथ के प्रपौत्र और ठाकुर कवि के पौत्र; जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण, काशी नरेश के भाई बाबू देवकीनन्दनसिंह के आश्रित; १९वीं शताब्दी में वर्तमान थे।

बरवै नखशिख दे० (ज–२८९)

सेवकराम—सं० १८११ के पूर्व वर्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञान नहीं।

वशिष्ठ राम का सम्वाद दे० (ज–२९०)

सेवक बानी की टीका—सर्वसुखदास कृत; लि० का० सं० १९५२, वि० सेवक बानी की टीका, इसमें राधावल्लभी संप्रदाय के सिद्धांतों का वर्णन है। दे० (ज–२८५)

सेवक बानी को सिद्धांत—स्वामी वल्लभदास कृत; वि० राधाकृष्ण विलास और राधावल्लभी सिद्धांतों का वर्णन। दे० (ज–३२५)

सेवक बानी फल स्तुति—वृंदावनदास कृत, लि० का० सं० १८४३; वि० सेवक बानी के माहात्म्य का वर्णन। दे० (ज–३३१ डी)

सेवक बानी सटीक रसिक मेदिनी—हरिलाल व्यास कृत, नि० का० सं० १८३७, लि० का० सं० १९११; वि० राधावल्लभी संप्रदाय के सिद्धांतों का वर्णन। दे० (ज–११४)

सेवकहित—हितहरिवंश के अनुयायी या शिष्यों में से थे, वृंदावन निवासी।

बानी दे० (छ–२३२)

सेवादर्पन—प्रियादास कृत; नि० का० सं० १९०५; वि० राधाकृष्ण की सेवा तथा पूजा की विधि का वर्णन। दे० (ज–२३१ बी)

सेवादास—कड़ा मानिकपुर के मलूकदास के शिष्य; १७ वीं शताब्दी में वर्तमान थे।

परब्रह्म की बारहमासी दे० (छ–३२७ ए)
परमार्थरमैनी दे० (छ–३२७ बी)
सेवादास की बानी दे० (ज–२८८)

सेवादासकी परचई—रूपदास कृत; नि० का०

सं० १८३२, वि० सेवादास के चरित्र का वर्णन। दे० (अ-२१८)

सेवादास जी की बानी—सेवादास कृत, लि० का० सं० १८५५, वि० ज्ञानोपदेश। दे० (अ-२८८)

सेवाराम—ग्वाल कवि के पिता, मथुरा-निवासी, जाति के ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण, सं० १८७६ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ख-१४) (ख-८८) (ख-६०)

सेवा विधि—रामचरणदास कृत, लि० का० सं० १९३०, वि० श्रीरामचन्द्रजी की सेवा करने की विधि का वर्णन। दे० (अ-२४५ एफ)

सैयद पहार—सैयद हमजा के पुत्र, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

रस रत्नागार दे० (अ-२७३)

सैयद बाकर—गुलाम नबी (रसलीन) के पिता, सं० १७६४ के पूर्व वर्तमान, बिलग्राम निवासी थे। दे० (च-१५)

सोन कुँवरि—उप० सुवर्णबेलि, जयपुर-नरेश की रानी, राधावल्लभी सम्प्रदाय की वैष्णव थीं।

सुवर्ण बेलि की कविता दे० (छ-२३६)

सोनेजू—छतरपुर राज्य (बुंदेलखंड) के संस्थापक, सं० १८६० के लगभग वर्तमान, अमर सिंह के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२)

सोमनाथ—नीलकंठ के पुत्र, सं० १८०४ के लगभग वर्तमान, भरतपुर के कुँवर बहादुरसिंह और अलवर-नरेश प्रतापसिंह के आश्रित थे, जाति के माथुर चौबे ब्राह्मण, मथुरा निवासी थे।

माधव विनोद नाटक दे० (ट-४७)

रस पीयूष निधि दे० (अ-२६८ ए)

कृष्ण लीलावती पंचाध्यायी दे० (अ-२६८ बी)

सोलह तिथि निर्णय—सहजो बाई (स्त्री) कृत, वि० प्रतिपदा से अमावस्या तक और पूर्णिमा का भक्ति, ज्ञान, योगादि के रूपक में निर्णय। दे० (क-१३०)

सोहनलाल (चौबे)—भरतपुर (मथुरा) निवासी, जाति के चौबे ब्राह्मण थे।

ब्रज गोपिका विनय दे० (अ-२६७)

सौंदर्य चंद्रिका—कृष्णचैतन्य देव कृत, लि० का० सं० १९२२, वि० राधा-कृष्ण के अंगों के सौंदर्य का वर्णन। दे० (अ-३०२)

सौभागसूरि—लालचन्द्र के गुरु, जैन धर्मानुयायी, सं० १७३६ के पूर्व वर्तमान। दे० (ग-७६)

स्त्री रोग चिकित्सा—बाबा साहब मुसुमदार कृत, वि० वैद्यक। दे० (अ-१२ डी)

स्फुट कवित्त—चन्द्रलाल कृत, वि० स्फुट कवित्तों का संग्रह। दे० (अ-४२ आई)

स्फुट कवित्त—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० कृष्ण-स्तुति। दे० (छ-१०० डी)

स्फुट दोहा—राजा पृथ्वीसिंह कृत, वि० स्फुट दोहों का संग्रह। दे० (छ-८५ ई)

स्फुट दोहा कवित्त—जानकी दास कृत, वि० स्फुट कविताओं का संग्रह। दे० (छ-५२ ए)

स्फुट पद—रामकृष्ण चौबे कृत, वि० प्रार्थना और स्तुति। दे० (छ-१०० सी)

स्फुट पद टीका—प्रियादास कृत, नि० का० सं० १९१६, लि० का० सं० १९१६, वि० हितहरिवंश के पदों की टीका। दे० (अ-२३१ सी)

स्यामराम—इन्द्रभान के पुत्र, मारवाड़ निवासी, जाति के कायस्थ, सं० १७७५ के लगभग वर्तमान, रामचरण के पिता थे।

मल्लार वर्णन दे० (ग-८०)

स्यामसिंह—मनियारसिंह के पिता, काशी निवासी, सं० १८४३ के पूर्व वर्तमान। दे० (घ-४७)

स्वजनानंद ग्रंथ—महाराज सावंतसिंह (नागरीदास) कृत, नि० का० सं० १८०२, वि० कृष्ण-चरित्र का वर्णन। दे० (ख-१२७)

स्वद्रष्टि (सुदिष्ट) तरंगिणी—र० अज्ञात; नि० का० सं० १८३८, वि० जैन धर्म के सिद्धांतों का वर्णन। दे० (क ११६)

स्वप्न-परीक्षा—छत्रसाल मिश्र कृत; लि० का० सं० १८४६, वि० स्वप्न के फलाफल का विचार। दे० (छ-२१ सी)

स्वरोदय—दत्त कवि कृत; वि० युद्ध के समय स्वर के विचार का वर्णन दे० (घ-१२०)

स्वरोदय—ऋषिकेश कृत; नि० का० सं० १८०८; लि० का० सं० १९२०, वि० प्राणायाम और योग-विधि का वर्णन। दे० (छ-२२१)

स्वरोदय—उत्तमदास मिश्र कृत, लि० का० सं० १८६५; वि० प्राणायाम की विधि का वर्णन। दे० (छ-३४० ए)

स्वरोदय—रसालगिरि गोसाईं कृत; नि० का० सं० १८७४; लि० का० सं० १९०५; वि० स्वर-विचार। दे० (ज-२५६ बी)

स्वरोदय की टीका—रतनदास कृत; लि० का० सं० १९२६; वि० स्वरोदय ग्रंथ की टीका। दे० (छ-३२०)

स्वरोदयपवन विचार—मोहनदास कायस्थ कृत; नि० का० सं० १६८७; वि० स्वर, ज्ञान और आसन आदि का वर्णन। दे० (क-५)

स्वर्गारोहण—विष्णुदास कृत, लि० का० सं० १८३२; वि० पाँडवों के हिमालय गमन का वर्णन। दे० (छ-२५८ बी)

स्वायंभुव मनु की कथा—महाराज जयसिंह कृत; लि० का० सं० १८६०; वि० स्वायंभुव मनु की कथा का वर्णन। दे० (क-१४६)

स्वाँस गुंजार—कबीरदास कृत, लि० का० सं० १८८६, वि० स्वाँस के विचार का वर्णन। दे० (ज-१४३ जे)

स्वाँस विलास—संतदास कृत; लि० का० सं० १९४४, वि० स्वाँस के विचार का वर्णन। दे० (ज-२८२ बी)

हंस जवाहिर—कासिम शाह कृत, नि० का० सं० १७८८ (हि० सन् ११४६) लि० का० सं० १९५८, वि० राजा हंस और रानी जवाहिर की कथा का वर्णन। दे० (ग-१११)

हंस मुक्तावली—कबीरदास कृत; लि० का० सं० १९१८, वि० ज्ञान। दे० (छ-१७७ एन)

हंसराज बख्शी—राठ (हमीरपुर) निवासी; जाति के कायस्थ; विजयसखी के शिष्य; सखी समाज के राधावल्लभी वैष्णव; सं० १७८६ के लगभग वर्तमान, पन्ना नरेश हृदयसाहि, सभासिंह और अमानसिंह के आश्रित, ये कुछ काल तक ओडछा में भी रहे थे।

सनेहसागर दे० (क-१३५) (छ-४५ सी)

श्रीकृष्णजू की पाती दे० (छ-४५ ए)

जुगल स्वरूप विरह पत्रिका दे० (छ-४५ बी)

फाग तरंगिणी दे० (छ-४५ डी)

चुरिहारिनी लीला दे० (छ-४५ ई)

हठी द्विज—कालिंजर निवासी, सं० १९४७ के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण थे।

राधा शतक दे० (च-८६)

हणुवंत मोच्यगामी कथा—प्रहरायमल्ल कृत, नि० का० सं० १६१६, लि० का० सं० १७२०, वि० जैनमतानुसार हनुमानजी के चरित्र का वर्णन। दे० (क-१२३)

हनुनाटक—मनसू कृत, लि० का० सं० १८४७, वि० रामायण की कथा का संक्षिप्त वर्णन। दे० (छ-२६२)

हनुमत नाटक भाषा—हृदयराम कृत, नि० का० सं० १६८०, लि० का० सं० १६३६, वि० संस्कृत हनुमन्नाटक का भाषानुवाद। दे० (ङ-१७) (ज-११६)

हनुमत पचीसी—मान (खुमान) कृत, लि० का० सं० १६३५, वि० हनुमान जी की स्तुति। दे० (छ-७० बी)

हनुमत पचीसी—गणेश कवि कृत, नि० का० सं० १८६१, लि० का० सं० १६३५, वि० हनुमान जी की महिमा का वर्णन। दे० (ज-८३)

हनुमत पचीसी—रघुराम कृत, लि० का० सं० १८६४, वि० हनुमान जी की स्तुति। दे० (छ-२६३ बी)

हनुमत बालचरित्र—प्रजलाल कवि कृत, लि० का० सं० १८७६, वि० हनुमान जी के बाल चरित्र का वर्णन। दे० (घ-६१)

हनुमत शिखनख—मान (खुमान) कृत, लि० का० सं० १८१६, १६५२, १६१० और १६२५, वि० हनुमान जी के रूप का वर्णन। दे० (छ-७० ई)

हनुमान—रीवाँ-राज्य महाराज रघुराजसिंह के मंत्री के पौत्र, सं० १६११ के लगभग वर्तमान थे। दे० (घ-१७)

हनुमान जन्मलीला—केशव कवि कृत, लि० का० सं० १८६४, वि० हनुमानजी की जन्म कथा का वर्णन। दे० (ज-१४६ बी)

हनुमानजी की स्तुति—हरिसेवक कृत, वि० हनुमानजी की स्तुति। दे० (छ-५१ ए)

हनुमान नाटक—राम कवि कृत, लि० का० सं० १६३०, वि० राम-रावण युद्ध का वर्णन। दे० (ज-२४३)

हनुमान नाटक दीपिका—परमानंद कृत, वि० संस्कृत हनुमन्नाटक की टीका। दे० (छ-८८)

हनुमान पचक—मान (खुमान) कृत, वि० हनुमान की स्तुति और प्रार्थना। दे० (छ-७० ए)

हनुमान पचीसी—मान (खुमान) कृत, लि० का० सं० १६६०, वि० हनुमानजी की स्तुति और प्रार्थना। दे० (छ-७० सी)

हनुमान पचीसी—गणेशप्रसाद कृत, नि० का० सं० १८६१, लि० का० सं० १६३२, वि० हनुमान जी के बल-पराक्रम का वर्णन। दे० (ज ८३)

हनुमानप्रसाद—कृपानिवास के गुरु, सखी संप्रदाय के साधु थे। दे० (छ-२७६)

हनुमान बाहुक—गोस्वामी तुलसीदास कृत, लि० का० सं० १८१६, दूसरी प्रति का सं० १६२८, वि० हनुमान जी की स्तुति। दे० (घ-१०) (छ-२४५ पी) (ज-३२३ डी)

हनुमान विरुदावली—मारच भाट कृत, लि० का० सं० १६२४, वि० हनुमानजी की स्तुति और प्रशंसा। दे० (छ-१४ बी) (ज-२५)

हनुमानाष्टक—हरिलालिकाप्रसाद त्रिवेदी कृत, वि० हनुमानजी की वंदना। दे० (ज-११८)

हमजा (सैयद)—सैयद पहार के पिता थे। दे० (ज-२७३)

हमीर—राजा त्रिविक्रमसेन के पिता, सं० १६६४ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ज-३२२)

हमीरसिंह—त्रिविक्रम सेन के पिता; सं० १६६४ के पूर्व वर्तमान। दे० (ज-३२२)

हमीरसिंह—तिरवॉ (फर्रुखाबाद) के राजा, राजा जसवंतसिंह के पिता, सं० १८५४ के पूर्व वर्तमान, जाति के बघेल-वंशी क्षत्री थे। दे० (क-८४)

हमीरसिंह—सं० १८८८ के लगभग वर्तमान, ओड़छा (बुंदेलखंड) के राजा, मदनसिंह और दामोदरदेव के आश्रयदाता थे। दे० (छ-२४) (छ-प० १-६४)

हमीरहठ—ग्वाल कवि कृत, नि० का० सं० १८८१, लि० का० सं० १६४५; वि० अलाउद्दीन खिलजी और रणथंभोर के नरेश हमीरदेव के युद्ध का वर्णन। दे० (च-१३)

हमीरहठ—चंद्रशेखर कृत, नि० का० स० १६०२, वि० रणथंभोर के चौहान महाराज हमीरदेव के अलाउद्दीन खिलजी से, एक मुसलमान की रक्षा करने के लिए, युद्ध करने का वर्णन। दे० (घ-१००)

हम्मीर रासौ—महेश कवि कृत, लि० का० स० १८६१; वि० रणथभोर के राजा हमीरदेव और अलाउद्दीन खिलजी के युद्ध का वर्णन। दे० (ख-६२)

हयग्रीव कथा—महाराज जयसिंह कृत, वि० भगवान के हयग्रीव अवतार का वर्णन। दे० (क-१५६)

हरतालिका की कथा—मीनराज प्रधान कृत, लि० का० स० १७८३, वि० भादो सुदी तीज या हरतालिका व्रत की कथा का वर्णन। दे० (छ-७५)

हरतालिका प्रसाद (त्रिवेदी)—जाति के ब्राह्मण; भोजपुर (राय बरेली) निवासी थे।

हनुमान अष्टक दे० (ज-११८)

हरदेव—स० १८५७ के लगभग वर्तमान, नागपुर के रघुनाथ राव के आश्रित थे।

नायिका लक्षण दे० (छ-१७१)

हरप्रसाद—सं० १८६७ के लगभग वर्तमान; जाति के कायस्थ; पन्ना (बुन्देलखड) निवासी; पन्ना-नरेश राजा हरिवंश के आश्रित थे।

रस कौमुदी दे० (च-६५)

हरराज—सं० १६०७ के लगभग वर्तमान, जैसलमेर निवासी, जैसलमेर नरेश के आश्रित थे।

ढोला मार वाणी चउपहीं दे० (क-६६)

हरवंश राय (राजा)—पन्ना-नरेश, सं० १८६७ के लगभग वर्तमान, हरिप्रसाद कवि के आश्रयदाता। दे० (च-६५) (छ-४६ ए)

हरसहाय—जीवनदास के शिष्य, गाजीपुर निवासी, सं० १८८५ के लगभग वर्तमान थे।

राम रत्नावली दे० (ज-१०५ ए)

राम रहस्य दे० (ज-१०५ बी)

हरसेवक मिश्र—स० १८०८ के लगभग वर्तमान; बुन्देलखड ओड़छा के राजा पृथ्वीसिंह के आश्रित थे, इनकी वशावली इस प्रकार है—कृष्णदास, काशीनाथ, कल्याणदास, परमेश्वरदास और हरिसेवक, कुमवार वंश के सनाढ्य ब्राह्मण; केशवदास के भाई थे।

कामरूप की कथा दे० (च-६०) (छ-५१ बी)

हनुमान जी की स्तुति दे० (छ–५१ ए)

हरिअवतार कथा—महाराज जयसिंह कृत, वि० ग्राह से गज को छुड़ाने के लिए विष्णु के अवतार का वर्णन। दे० (क–१५५)

हरि आचार्य—ये कोई साधु थे। इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

नखशिख दे० (छ–२६२)

हरिकृष्ण—कुलपति मिश्र के पितामह, परशुराम के पिता और मधुलाल के पुत्र, जाति के माथुर चौबे, आगरा निवासी थे। दे० (क–७२)

हरिकेश द्विज—सं० १७८२ के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण, जहाँगीराबाद, परगना सेमहुरा (राज्य दतिया) निवासी, पन्ना-नरेश राजा छत्रसाल और हृदयसाहि तथा जैतपुर के राजा जगतराज के आश्रित थे।

जगतराज दिग्विजय दे० (छ–४६ ए)

जलकीड़ा दे० (छ–४६ बी)

हरिचंद—बरसाना (व्रज) निवासी थे, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

हरिचंद शतक दे० (ज–१०७)

हरिचंद की कथा—नारायण कवि कृत, वि० अयोध्या-नरेश राजा हरिश्चंद्र की कथा का वर्णन। दे० (छ–३०२)

हरिचंद की कथा—जगन्नाथ मिश्र कृत, वि० राजा हरिश्चंद्र की कथा का वर्णन। दे० (ज १२४)

हरिचंद पुराण—नारायण देव कृत, लि० का० सं० १४५३, वि० राजा हरिश्चंद्र की कथा का वर्णन। दे० (क–८६)

हरिचंद शतक—हरिचंद कृत, वि० ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का वर्णन। दे० (ज–१०७)

हरिचंद सत्—श्यामदास साधु कृत, वि० राजा हरिश्चंद्र की कथा का वर्णन। दे० (ग–१०७)

हरिचरण दास—चैनपुर, परगना गोयल ज़िला सारन (बिहार) निवासी, जन्म का० सं० १७६६, जाति के सरयूपारी ब्राह्मण, रामधन के पुत्र और वासुदेव के पौत्र, सं० १८३४ के लगभग वर्तमान, पहले नयापुर के राजा विभ्रसेन तत्पश्चात् कृष्णगढ़ के राजकुमार बिरदसिंह के आश्रित रहे।

कवि प्रियाभरण दे० (ङ–५८) (ज–१०८)

हरिप्रकाश टीका दे० (ङ–४)

हरिचरण दास—सं० १८३५ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

कविप्रिया दे० (छ–२५५ ए)

सभा प्रकाश दे० (छ–२५५ बी)

हरिचरित चंद्रिका—महाराज जयसिंह कृत, लि० का० सं० १८६०, वि० कृष्ण चरित्र का वर्णन। दे० (क–१४५)

हरिचरितामृत—महाराज जयसिंह कृत, लि० का० सं० १८७५, वि० भगवान के मत्स्य, कूर्म, मोहनी और वाराह अवतारों का वर्णन। दे० (क–१४०)

हरिचरितामृत—महाराज जयसिंह कृत, वि० श्रीरामचन्द्र जी की लीलाओं और अश्वमेध का वर्णन। दे० (क–१४४)

हरिचरित्र—लालचदास कृत, नि० का० सं० १५८५, लि० का० सं० १८६८, वि० भागवत दशम् स्कंध का भाषानुवाद। दे० (छ–१८६)

हरिजन—ललितपुर (झाँसी) निवासी, सरदार कवि के पिता, सं० १६०१ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (क–५७)

हरिजन—सं० १६०३ के लगभग वर्तमान; जाति के कायस्थ, टीकमगढ़ (बुंदेलखंड) निवासी थे।
तुलसी चिंतामणि दे० (छ-४८)

हरिजू मिश्र—सं० १७६२ के लगभग वर्तमान, आज़मगढ़ निवासी, दिल्ली के बादशाह और आज़मगढ़ के संस्थापक आजम खाँ के वंशज के आश्रित थे।
अमरकोश भाषा दे० (ज-११२)

हरिदत्त सिंह (राजा)—ये शाकद्वीपी ब्राह्मण थे, शायद अयोध्या-नरेश के वंशज थे।
राधा विनोद दे० (छ-१७२) (ज-१११)

हरिदास (स्वामी)—निरंजनी पंथ के संस्थापक; पीतांबरदास के गुरु, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं। दे० (ग-६४) (च-४७)

हरिदास (स्वामी)—वृंदावन निवासी, प्रसिद्ध साधु; टट्टी संप्रदाय के संस्थापक; गंगाधर के दौहित्र; धीर के पुत्र, ज्ञानधीर के पौत्र और ब्रह्मधीर के प्रपौत्र, जाति के सनाढ्य ब्राह्मण, पहले हरिदास पुर निवासी; सं० १६१७ के लगभग वर्तमान, वल्लभरसिक, भगवतरसिक, विट्ठलविपुल और तानसेन के गुरु, बादशाह अकबर के समकालीन, ये हिंदी के अच्छे कवि थे। दे० (क-२६) (ख-१२) (क-६७)
हरिदास जी को ग्रंथ दे० (ग-१७१)
स्वामी हरिदास के पद दे० (क-३७)
स्वामी हरिदास की बानी दे० (ज-१०६ ए) (च-६७)
बानी दे० (च-६७) (ज-१०६ बी)

हरिदास—जाति के ब्राह्मण; सं० १८११ के लगभग वर्तमान; राजा अरिमर्दन सिंह के आश्रित थे।
भर्तृहरि वैराग्य दे० (ख-१३५)
भाषा भागवत समूल एकादश स्कंध दे० (ड-५५)
ज्ञान सतसई दे० (ड-७२)
भगवतगीता दे० (छ-२५६)
रामायण दे० (ज-११०)

हरिदास—पन्ना (बुंदेलखंड) निवासी, जाति के कायस्थ; भैरवप्रसाद बख्शी के पुत्र; जन्म का० सं० १८७६, मृत्यु का० सं० १६००।
रसकौमुदी दे० (छ-४६ ए)
गोपाल पचीसी दे० (छ-४६ बी)
अलंकार दर्पण दे० (छ-४६ सी)

हरिदास—सं० १८३४ के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण, बाँदा निवासी थे।
भाषा भूषण सटीक दे० (छ-४७)

हरिदास की बानी—स्वामी हरिदास कृत; लि० का० सं० १८५५; वि० ज्ञान और उपदेश वर्णन। दे० (ज-१०६) (च-६७)

हरिदास की परचई—रघुनाथदास कृत, वि० स्वामी हरिदास का चरित्र। दे० (ज-२३६)

हरिदास जी के पद—स्वामी हरिदास कृत; वि० राधाकृष्ण के विहार के पद। दे० (क-३७)

हरिदासजी को ग्रंथ—हरिदास स्वामी कृत; नि० का० सं० १६०७, लि० का० सं० १७०६। दे० (ग-१७१)

हरिदास जी को मंगल—नागरीदास कृत; वि० गुरु की प्रशंसा। दे० (च-४०)

हरिदास स्वामी की बानी—अन्य नाम बानी; स्वामी हरिदास कृत, वि० राधा कृष्ण के विहार का वर्णन। दे० (ज-१०६ बी) (च-६७)

हरिगौराचरित्र—बिहारीलाल कृत; लि० का० सं० १८७५, लि० का सं० १६१८, वि० कुँवर हरि दौल की कहानी का वर्णन। का दे० (ख-६२)

हरिनाथ—सं० १८२३ के लगभग वर्तमान, वनारस निवासी; जाति के गुजराती ब्राह्मण थे।

अलंकार दर्पण दे० (छ-१३०)

हरिनाम बेलि—वृन्दावनदास कृत, लि० का० सं० १८०३, लि० का० सं० १८८६, वि० श्री कृष्ण संबंधी भिन्न भिन्न अवसरों पर गाने योग्य पद। दे० (छ-२५० ए)

हरिनाम महिमावली—वृन्दावनदास कृत, लि० का० सं० १८०३, लि० का० सं० १८४३, वि० वैष्णव धर्म के सिद्धान्तों का वर्णन। दे० (ज-३३१ए)

हरिनाम माला—गिरधरदास कृत, लि० का० सं० १७८५, वि० ईश्वर के नामों का वर्णन। दे० (छ-२०२)

हरिनारायण—सं० १८१२ के लगभग वर्तमान, इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं।

माधवानल की कथा दे० (ग-६१)

हरिनारायण—मनसाराम के पिता, जाति के कायस्थ, सं० १८६१ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (ज-१८३)

हरिप्रकाश टीका—हरिचरण दास कृत, लि० का० सं० १८३४, लि० का० सं० १८८१, वि० बिहारी सतसई की टीका। दे० (ज-४)

हरिप्रसाद—मदनाबाई (स्त्री) के पिता, परीक्षितपुर (दिल्ली) निवासी, सं० १८०० के पूर्व वर्तमान, जाति के धूसर वैश्य थे। दे० (क-१२६)

हरिप्रसाद—जाति के कायस्थ, पता लरकच कड़ा (प्रयाग) निवासी, पुनः दिन रानीपुर (झाँसी) में रहकर टीकमगढ़ राज्य के आश्रय में चले गए थे।

दिनाथ दे० (छ-५०)

हरिवल्लभ—सं० १७०१ के लगभग वर्तमान जाति के ब्राह्मण थे।

भगवत गीता की टीका दे० (ज-११७) (ग-६०) (छ-२६०)

हरिप्रताप—ये संगीत विद्या के अच्छे ज्ञाता थे, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

संगीत भाषा दे० (ख-६१)

हरि-बोल चिन्तामणि—सुंदरदास कृत, वि० हरि भजन और उपदेश। दे० (क-२३)

हरिभक्त सिंह—जाति के बिसेन ठाकुर, मिनगा (बहराइच) के राजा, सं० १६०५ के लगभग वर्तमान थे।

ज्ञान महोदधि दे० (ज-१०६)

हरि भक्ति विलास—चन्द्रशेखर कृत, लि० का० सं० १८६३ वि० भक्ति के लक्षणों का वर्णन दे० (घ-१०१)

हरिभक्ति विलास उत्तरार्ध—राजा विक्रमसाहि कृत, लि० का० सं० १८८०, लि० का० सं० १८८३, वि० भागवत दशमस्कंध उत्तरार्द्ध का भाषानुवाद। दे० (घ-३२)

हरिभक्ति विलास पूर्वार्द्ध—राजा विक्रमसाहि कृत, लि० का० सं० १८८०, वि० भागवत दशम स्कंध के पूर्वार्द्ध का अनुवाद। दे० (घ-३८)

हरिरस—मालम कृत, लि० का० सं० १७८१ वि० हरि-भक्ति का वर्णन। दे० (ग-३६)

हरिराम—इनके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं।

छंद रत्नावली दे० (छ-२५७)

हरिराम—कवि लल्लूलाल के वंशज; १६ वीं शताब्दी में वर्तमान; आगरा निवासी; जाति के गुजराती ब्राह्मण थे।

जानकी रामचरित नाटक दे० (ज-११६)

हरिराम विलास—ब्रजजीवन दास कृत; वि० गाजीपुर निवासी महात्मा हरिराम की परिचर्या का वर्णन। दे० (ज-३४ एच)

हरिराय—उप० रसिक प्रीतम, वल्लभाचार्य के शिष्य, श्रीनाथद्वारा मेवाड़ के महंत, जन्म का० सं० १७६५; ये संस्कृत और हिंदी के अच्छे कवि थे; संस्कृत में हरिराम और हिंदी में रसिकराय तथा रसिक प्रीतम उपनाम देते थे।

नित्यलीला दे० (क-३८)

हरिराय—वल्लभाचार्य के शिष्य, विट्ठलनाथ और गोकुलनाथ के समकालीन; सं० १६०७ के लगभग वर्तमान; ये संस्कृत और हिंदी के अच्छे ज्ञाता थे।

आचार्य महाप्रभु की द्वादश निज वार्ता दे० (ज-११५ ए)

आचार्य महाप्रभु की सेवक चौरासी वैष्णवों की वार्ता दे० (ज-११५ बी)

आचार्य महाप्रभु की निज घरू वार्ता दे० (ज-११५ सी)

हरिलाल मिश्र—सं० १८५० के लगभग वर्तमान, आजमगढ़ निवासी; बादशाह शाह आलम के आश्रित थे।

रामजी की वंशावली दे० (ज-११३)

हरिलाल व्यास—सं० १८३७ के लगभग वर्तमान, राधावल्लभी संप्रदाय के वैष्णव थे।

सेवक वानी सटीक रसिक मेदिनी दे० (ज-११४)

हरिवंश चौरासी—अन्य नाम हित चौरासी धनी; हितहरिवंश कृत, लि० का० सं० १८२६; वि० चौरासी भक्तों की कथा का वर्णन। दे० (छ-१७४)

हरिवंश चौरासी टीका—प्रेमदास कृत; नि० का० सं० १७६१, लि० का० सं० १६१३, वि० हरिवंश चौरासी की टीका। दे० (छ-२०६)

हरिवंश चौरासी पर टीका—लोकनाथ कृत; लि० का० सं० १८६८, वि० हरिवंश चौरासी पर टीका। दे० (छ-२८८)

हरिवंशराय—सं० १८२२ के लगभग वर्तमान, जाति के ब्राह्मण थे, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

वैद्य विनोद दे० (छ-२६१ ए)

गणपति कृष्ण चतुर्थी व्रतकथा दे० (छ-२६१ बी)

हरिव्यास—रूपरसिक और अलिरसिक गोविंद के गुरु, सं० १८५७ के पूर्व वर्तमान, वृंदावन निवासी थे। दे० (छ-१२२) (छ-२२२)

हरिव्यास—परशुराम के गुरु, १७ वीं शताब्दी में वर्तमान थे। दे० (क-७५)

हरिशंकर द्विज—सं० १६५१ के लगभग वर्तमान; जाति के ब्राह्मण, राजा बरजोरसिंह के आश्रित थे।

गणेशजू की कथा दे० (छ-२५८)

हरिश्चंद्र कथा—कृष्णदास कृत, वि० अयोध्यानरेश

राजा हरिश्चन्द्र के आपत्ति-काल का वर्णन। दे० (छ-६४ ई)

हरिश्चंद्र की कथा—जगन्नाथ मिश्र कृत, वि० राजा हरिश्चन्द्र के आपत्ति-काल की कथा का वर्णन। दे० (ज-१२७)

हरिसहचरी विलास—व्रजजीवनदास कृत, वि० हित हरिवंश जी की दिनचर्य्या का वर्णन। दे० (ज-१४ सी)

हरिसहाय गिरि—मिर्ज़ापुर निवासी, सं० १८५६ के लगभग वर्त्तमान, ये सन्यासी थे।
रामाश्वमेध दे० (घ-१६)

हरीसिंह—सं० १८२८ के लगभग वर्त्तमान, इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।
प्रमावली दे० (छ-२५६)

हरीसिंह—गंगादास के पिता थे। दे० (छ-२५२)

हलधर—इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं।
सुदामा चरित्र दे० (ज-१०४)

हाथी को शालिहोत्र—जनार्दन भट्ट कृत, वि० हाथियों के रोगों की चिकित्सा का वर्णन। दे० (छ-२१७ सी)

हिंडोरा—राजा पृथ्वीसिंह कृत, वि० श्रीकृष्ण राधिका के हिंडोला झूलने का वर्णन। दे० (छ-६१ एम)

हिंडोरा और रेखता—कबीरदास कृत, वि० आत्मिक सत्यता के पद। दे० (छ-१७७ डी)

हिंदी, अंग्रेजी और फ़ारसी कोश—मल्लूलाल कृत, नि० का० सं० १८६७, लि० का० सं० १८६८, वि० कोश। दे० (छ-१६२ बी)

हिंदूपति—पन्ना-नरेश महाराज सभासिंह के पुत्र और महाराज छत्रसाल के प्रपौत्र, सं० १८१६ के लगभग वर्त्तमान, राजा पंचमसिंह के चचेरे भाई, भिखारीदास (दास), रतन कवि, रूपसाहि और कर्ण कवि के आश्रयदाता थे। दे० (छ-५७) (छ-१०३) (छ-१०५) (छ-११६) (घ-८३) (छ-१५)

हितकुलावलाल—हितहरिवंश स्वामी के वंशज, वृन्दावन निवासी परमानन्दहित के गुरु थे। दे० (छ-२०४)
बानी दे० (छ-१७३)

हितचरित्र—भगवत मुदित कृत, वि० स्वामी हितहरिवंश और उनके अनुयायियों का वृत्तांत। दे० (ज-२३ ए)

हित चौरासी धनी—अन्य नाम हरिवंश चौरासी, हितहरिवंश स्वामी कृत, लि० का० सं० १८२६, वि० चौरासी भक्तों की कथा। दे० (छ-१७४)

हित जी महाराज की बधाई—व्रजजीवन दास कृत, वि० हितहरिवंश जी के जन्म की बधाई। दे० (ज-१४ एफ)

हित जू को मंगल—चतुर्भुजदास कृत, वि० हित हरिवंश की महिमा। दे० (छ-१४८ सी)

हित तरंगिणी—कृपाराम कृत, नि० का० सं० १५६८, लि० का० सं० १६९०, वि० नायिका भेद वर्णन। दे० (छ-२८०) (ज-१६७)

हितशृंगार लीला—ध्रुवदास कृत, वि० राधाकृष्ण की रास का वर्णन। दे० (ज-७३ टी)

हितहरिलाल—हित हरिवंश के पुत्र, ध्रुवदास के गुरु, सं० १६८७ के लगभग वर्त्तमान थे। दे० (छ-१५६)

हित हरिवंश (स्वामी)—वैष्णवों के राधावल्लभी सम्प्रदाय के संस्थापक, स० १५८०-१६२४ तक

के लगभग वर्तमान; वृंदावन निवासी; ये संस्कृत और हिंदी के अच्छे विद्वान थे, ध्रुवदास के गुरु। दे० (क-८)

फुटकर वानी दे० (ज-१२०)

हरिवंश चौरासी दे० (छ-१७४)

हित हरिवंश की जन्म-बधाई—परमानंद हित कृत, नि० का० सं० १८३३, लि० का० सं० १८३३. वि० स्वामी हित हरिवंश के जन्मोत्सव के आनंद का वर्णन। दे० (छ-२०४ ए)

हित हरिवंश की चौरासी पर टीका—लोकनाथ कृत; लि० का० सं० १८४८, वि० हित हरिवंश की चौरासी पर टीका। दे० (छ-२८८)

हित हरिवंश चंद्रजू को सहस्र नामावली—वृंदावनदास कृत, नि० का० सं० १८१२, लि० का० सं० १९५४; वि० श्री हितहरिवंश जी के नाम और उनकी वंदना। दे० (ज-३३१ बी)

हितोपदेश—प्रयागदास कृत; नि० का० सं० १८८७, लि० का० सं० १८८९ वि० संस्कृत हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (घ-९६)

हितोपदेश—नारायण पंडित कृत. वि० हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (ङ-६०)

हितोपदेश—अन्य नाम मित्र मनोहर; बंसीधर कृत. नि० का० सं० १७९२; लि० का० सं० १९३२, वि० संस्कृत हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (च-९४)

हितोपदेश—देवीचंद कृत लि० का० सं० १८५४ वि० संस्कृत हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (ज-९७)

हितोपदेश उपपाणां बावनी—स्वामी अग्रदास कृत. लि० का० सं० १७५३. वि० उपदेश। दे० (घ-६०)

हितोपदेश भाषाटीका—र० अज्ञात; लि० का० सं० १८२५; वि० हितोपदेश का भाषानुवाद। दे० (ख-७९)

हिम्मत खाँ—बादशाह औरंगजेब के मंत्री खाँ जहाँ के पुत्र, सं० १७४१ के लगभग वर्तमान; बलबीर और श्रीपति भट्ट कवि के आश्रयदाता थे। दे० (ग-२८) (ख-८२) (छ-२३८)

हिम्मत प्रकाश—श्रीपति भट्ट कृत नि० का० सं० १७३१: लि० का० सं० १९०५, वि० वैद्यक। दे० (छ-२३८)

हिम्मत बहादुर—बाँदा के नवाब गनी बहादुर के दीवान अस्कंध गिरि के आचार्य, गोसाईं संप्रदाय के नेता मृत्यु सं० १८६१ में कालपी में हुई थी। दे० (च-३२)

हिम्मतसिंह—अमेठी के राजा, सं० १७५७ के लगभग वर्तमान सुखदेव मिश्र के आश्रयदाता थे। दे० (घ-१२३)

हिम्मतसिंह—सं० १७७४ के लगभग वर्तमान; बुंदेलखंड निवासी, जाति के कायस्थ थे।

दफ्तरनामा दे० (छ-५२)

हिसाब—हरिप्रसाद कृत; वि० गणित पर पद्य ग्रंथ। दे० (छ-५०)

हीरानंद—रामराय के पुत्र, चंद्र कवि के पिता; जाति के सनाढ्य ब्राह्मण. सं० १८२८ के पूर्व वर्तमान। दे० (छ-१४५)

हीरामणि—सेनापति कवि के गुरु; जाति के कान्यकुब्ज दीक्षित ब्राह्मण, सं० १७०६ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (अ-२८७)

हीरालाल—हेमराज के पुत्र, हलपति राय के पौत्र, सं० १७०४ के लगभग वर्तमान थे। रुक्मिणी मंगल दे० (च-६४)

हुसेन शाह—सहसराम के शासक, शेरशाह सूर के पिता, सं० १५१० के लगभग वर्तमान, कुतबन कवि के आश्रयदाता थे। दे० (क-४)

हुस चमन—महाराज सुदर्शसिंह कृत, नि० का० सं० १८३०, वि० कृष्ण प्रति भक्ति का वर्णन। दे० (छ-७५)

हृदयराम—कृष्णदास के पुत्र, सं० १६८० के लगभग वर्तमान, बादशाह जहाँगीर के समकालीन, पंजाब के निवासी थे। हनुमान नाटक दे० (अ-११६) (छ-१७)

हृदयसाहि—पन्ना-नरेश राजा छत्रसाल के पुत्र, कुँवर मेदिनी मल्ल के पिता, राज्य का० सं० १७८६-१७६६ हरिकेश द्विज, हसराज बख्शी और रामकृष्ण कवि के आश्रयदाता थे। दे० (च-३६) (छ-४५) (छ-४६) (अ-२४८)

हेमराज—भक्तामर के रचयिता के आश्रयदाता। दे० (क-१०८)

हेमराज—हीरालाल के पिता, हलपति राय के पुत्र, सं० १७०४ के पूर्व वर्तमान थे। दे० (च-६४)

होरी—प्रेमसखी कृत, वि० होली संबंधी पदों का संग्रह। दे० (छ-३०८)

होरी—रसिक अली कृत, वि० श्रीरामचन्द्र जी के होली खेलने के पद। दे० (छ-३१७)

होरी—रूप सखी कृत, वि० राम के होली खेलने का वर्णन। दे० (छ-३२२)

होलिका विनोद दीपिका—जनकराज किशोरी शरण कृत, नि० का० सं० १६२०, वि० श्रीराम के होली खेलने का वर्णन। दे० (छ-१२४ सी

४	११११	बघारस म सिंह के आश्रित
	११२०	
	१७०१	
	११५२	सिरमर (सारन) निवासी
१११		गर्द (जालौन) निवासी, बाल ... के पुत्र, ... काल में ११
११११		

का भाषानुवाद । दे० ।

पदेश—नारायण पंडित कृत वि०।

भाषानुवाद । दे० (ङ-६०)

तोपदेश—अन्य नाम मित्र मनोहर वस

कृत नि० का० सं० १७५४ लि० का० १

१९३२ वि० संस्कृत हितोपदेश का भाषानुवाद

दे० (च-६४)

पदेश—देवीचंद कृत लि० का० सं०

वि० संस्कृत हितोपदेश का भा

(ज-६७)

परिशिष्ट (१)

सं० १९५७ से सं० १९६८ तक की रिपोर्टों के परिशिष्टों में आए हुए कवियों तथा उनके ग्रंथों की सूची।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	परिचय
प. रि. (२)/१	१६०१	[illegible]	१ [illegible] २ [illegible]			[illegible] के रईस थे।
प. रि. (२)/२	१६६५	[illegible]	[illegible]	१६६५		[illegible]पुर ([illegible]) निवासी [illegible]पुर ([illegible]) नरेश के आश्रित थे।
प. रि. (१)/१		[illegible]	[illegible]			
प. रि. (१)/२१५		[illegible]	[illegible] की [illegible]	१८६७		
प. रि. (१)/१०७		[illegible]	[illegible]			
प. रि. (२)/२	१७०४	[illegible]	[illegible]	१७०८	१७११	[illegible] नरेश [illegible] सिंह के आश्रित।
प. रि. (१)/२				"	१७२७	
प. रि. (१)/१८१		[illegible]	[illegible] की [illegible]		१७०१	
प. रि. (२)/३१		[illegible]	[illegible]		१७२२	[illegible] ([illegible]) निवासी।
प. रि. (२)/३१	१७१०	[illegible]	[illegible]	१७१०		
प. रि. (२)/३२		[illegible]	[illegible] विनोद	१७११		[illegible] ([illegible]) निवासी [illegible] के गुरु [illegible] १७११।
प. रि. (१)/३३		[illegible]	१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible]			

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि का.	लि.का.	परिचय
छ. प. (१) / ७५		किशोर	तेरहमासी			चरखारी निवासी थे, इन्होंने राजा का भी वर्णन किया है।
छ प. (१) / ५८		किशोरीसिंह दीवान	रामप्रभावली		१९६४	
छ प. (१) / ६१		कुंजविहारी	भजनपत्रिका		१९४३	वृंदावन निवासी।
ज. प (२) / २६	१९१०	कुँवर गनाजी	१ फ़ील नामा २ ,,	१९१० ,,	१९२४ ,,	बलरामपुर नरेश राजा दिग्विजयसिंह के दीवान थे।
घ प (१) / १२८		कृष्णदास	दानलीला		१८८३	
छ. प. (१) / ५६		कृष्णसिंह (गुणवत)	गंगाष्टक			
छ. प (१) / ५४		केशवगिरि	प्रमोद नाटक	१९२३		कायस्थ, कुलपहाड़ निवासी
छ. प. (१) / ५३	१९२४—१९३०	केशवदास	१ मुहूर्त्त प्रदीप २ गणितसार	 १९३०	 १९३०	लोहागढ़ (टीकमगढ़) निवासी महाराजा हमीरसिंह के आश्रित।
छ. प (१) / ५५		केशवराय	गणेशराज का कथा			राठ (हमीरपुर) निवासी.
ग. प. (१) / १६५		केसरीसिंह (राठौर)	केसरीसिंह की कुंडलिया			
ज. प. (२) / २५	१९४१	कौलेश्वरलाल	१ सरिता वर्णन २ कविमाला ३ रामशब्दावली ४ सत्यनारायण कथा	१९४१ × × ×	१९५२ १९५६ १९५४	मंडेर (गाज़ीपुर) निवासी, रुचिलाल के पुत्र, उप० कमलादास और पंकजदास।
छ. प (१) / ६०		कौशल	इश्कमंजरी			
घ. प. (१) / १३६	१९५७	खेमराज	फतहप्रकाश			
ङ. प. (१) / १२७			,,	१९५७	१८३४	
छ. प. (१) / ५६		खूबचंद	तेरहमासी	१९२०		
छ. प. (१) / २८		गंगाधर भट्ट	१ प्रताप मार्तण्ड २ रत्न परीक्षा ३ व्यवहार कौस्तुभ	१९३५	१९३६ १९५५	ओड़छा निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि० का	लि० का	परिचय
च. प. (१) / ११		मीरसिंह चौहान	तुरंग मंजन	१९६४	१९६४	
च. प. (१) / १३१		मदेश	ऋतु मयन	१८९७		
च. प. (२) / ११		मथुरादास	मानचरितामृत सागर	१९९९		बल्लभपुर (मथुरा) निवासी।
च. प. (१) / १७	१८१४– १९३१	गदाधर	१ आलीजाह २ जैपर नगर विनोद ३ कैलास विनोद ४ विरदावली ५ पुष्पवाटिका ६ निरंजन विलास	१८१५ १९३१ १८१८ १८१४ १९०१	१९१७ १८९८	दतिया निवासी; पद्माकर कवि के पौत्र।
च. प. (२) / १०	१९५६– १९९५	गदाधर	१ अयोध्या दीपमाला दर्पन २ अर्थविहारिणी ३ कामाख्यामहोदय तरंगिणी ४ गंगाश्लहरी ५ गायत्री चिकित्सा ६ कृष्णकृपा तरंगिणी ७ पूजा-मंजरी ८ जगन्नाथ महोत्सव ९ देव गुरु सुधा तरंगिणी १० देव सुधा तरंगिणी ११ दशरथ रस स्तोत्र १२ नवल नार निर्मित आख्यान १३ नाड़ी चिकित्सा १४ मनोहर देवगुण तरंगिणी १५ बद्रीनाथ महोत्सव १६ हनुमानचरित्र महोत्सव १७ गणेश माहात्म्य १८ वैद्यनाथ महोत्सव १९ मधुमयंगनी २० हीरामनरहस्य	 १९९१ १९४८ १९५८ १९६० १९९१ १९९१ १९५८ १९९५ १९९१ १९९९ १९९० १९९१ १९९१	 १९९५	दतिया (बस्ती) निवासी, दतिया के राजाश्रित कवि थे और कवि थे।
च. प. (२) / ११	१९९०	रघुवरदास	हिमगिरचन्द्र	१९९०	१९९०	दिल्ली नरेश रणजीत और बल्लभपुर दोनों के आश्रित थे।
च. प. (१) / ४१		नरनसार	रामचन्द्रविनोद			मथुरा (बुन्देलखंड) निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का	लि. का.	परिचय
ज. प. (२) / १६		गुरुप्रसाद	सन्निरत्त चन्द्रिका	१६६२		कन्हईसिंह के पुत्र, नानक पथा आजमगढ़ निवासी।
छ प. (१) / ४५	१८३३	गुलाब कवि	१ बृहत्व्यगार्थ चन्द्रिका २ भूषण चन्द्रिका	 १८३३	 १८४३	बूँदी (राजपूताना) निवासी।
ग. प. (१) / २३६-२१५		गोपालदास	१ परचई स्वामी आदृदयाल जी की २ मोहविवेक		१७०६ १७०६	
छ प. (१) / ४३		गोपालदास	मगीनसार			लाहौर निवासी, बिजावर नरेश के आश्रित।
ज. प. (२) / १५		गोपाललाल	नसीहतनामा		१६३२	बस्ती में डिप्टी इन्स्पेक्टर थे।
छ. प. (१) / ४४		गोपालसिंह	अजबमजरी	१६०१		
ग. प. (१) / २०१		गोवर्धन (चारण)	कुण्डलिया महाराज पद्मसिंह जी रा	१७०७	१७७८	
ज. प. (२) / १४		गोवर्धनलाल	१ प्रेमप्रकाश २ हितपथदर्शन	१६५५ १६६७	१६६७ १६६७	वृंदावन निवासी, पीछे मिर्जापुर में रहने लगे, जन्म सं० १६३३।
छ. प. (१) / ४२		गोविंदराव (गिरिधर)	षट ऋतु वर्णन			दतिया निवासी, पद्माकर भट्ट के वंशज।
छ. प (१) / ४०		गौरीशंकर (सुधाकर)	१ सोनिविलास २ विश्वविलास नाटक	१६५२ १६५६	१६५२	पद्माकर कवि के प्रपौत्र, दतिया निवासी।
ज. प. (२) / १३		घनश्याम	वैद्यजीवन	१६१८	१६१४	आजमगढ़ निवासी।
छ. प. (१) / २६		चतुरसुजान	फूल चेतनी			
छ. प. (१) / २८		चतुर्भुज	भवानी की स्तुति			
ज. प. (२) / ८	१६६५	चतुर्भुज सहाय	१ मंत्री हरिश्चंद्र २ बाबू ताराचंद ३ बीबा हमीदा ४ लंबी घन घटावली	१६६५ १६६३ १६६४ १६६३	१६६५ १६६३ १६६४ १६६३	छत्रपुर (बुंदेलखंड) निवासी।
छ. प (१) / ३१		चिंतामणि	बत्तीस अच्छरी			बुंदेलखंड निवासी।
छ. प. (१) / ३०		चिन्मनसिंह	प्रश्नोत्तर नीतिशतक			
छ. प. (१) / २७		चैन	दोहा			

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि० का	लि० का	परिचय
[illegible]		केसराम चारन	गीत नाम का टी	१८६७		
[illegible]		भवानीसिंह	हनुमत शृंगार	१९२४	१९२४	
[illegible]		गुणानंद	नाम सुधासिंधु	१९४५	१९४५	उप० ब्रह्मानंद; गोंडा निवासी; जगन्नाथ के पुत्र, साधु थे।
[illegible]		मधुराम	ब्रजमाधा			
[illegible]		मधुराम	गीतगोविन्द मेघमाला			बारवाटी निवासी; ब्राह्मण।
[illegible]		मधुप्रसाद (सूर्य)	१ कृष्ण चंद्रिका २ जानकी स्वयंवर ३ नख शिखमणी	१९३३ १९४८ १९२	१९३७ १९४८ १९५०	सिकन्दर निवासी अयोध्या-प्रसाद के पितामह।
[illegible]		मधुप्रसाद (भाषा)	१ प्रेम चंद्रिका २ भक्ति रसिक ३ माधवविलास	१९२५ १९३८ १९३२	१९२६ १९५४ १९३६	सीतापुर निवासी; महाराज प्रतापसिंह के आश्रित।
[illegible]		तारानंद व्यास	तारानंद प्रकाशिका	१८८१	१८८१	
[illegible]		प्रेमराम	प्रेमप्रकाशी			
[illegible]		हरीराम (वैश्य)	जलवर्षमाला	१८८२	१९२२	जगपुर (हरिद्वार) निवासी।
[illegible]		दयानंद	हरिदेव जू को स्तवन	१९१८	१९२१	
[illegible]		दिनेश	रामायण टीका	१९१६		
[illegible]		दीप कुँवरि (रानी)	धीरविलास	१९२२		महाराजकुमार ... की रानी
[illegible]		दुर्गाप्रसाद	१ गर्भेदमोच २ रामकृष्ण शतक	 १९२८	 १९३१	... के पुत्र; सिकन्दर ... के ... ।
[illegible]		दूलनदास (साधु)	दूलनदास जी का शब्द			
[illegible]		देवीराम	रामचंद्र दोहा			
[illegible]		द्वारिकाप्रसाद	चौतान चरित्र	१९६०		काशी-निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	परिचय
ज. प (२) / ३६		नदकिशोर	सगीत विद्यारत्नाकर	१६६४	१६६४	भोजपुर (रायबरेली) निवासी।
ज. प. (२) / ४०		नरहरिदास	नरहरि प्रकोष्ठ	१६१२	१६१२	इसको नारायणदास ने पूरा किया।
ज. प. (२) / ४२		नवलसिंह	१ रामचन्द्र विलास को आदि काड		१६२७	श्रीवास्तव कायस्थ, समथर निवासी।
			२ रामचद्र विलास को रास खंड		१६५८	
			३ रास पचाध्यायी	१६१६	१६१६	
छ. प. (१) / ७२		नारायणदास	नाड़ी परीक्षा	१६०२	१६३२	
ज. प. (२) / ४१		नारायणदास	उद्धव ब्रजगमन चरित्र	१६२५	१६२५	जाति के भाट, सोनारपुर (बनारस) निवासी सरदार कवि के शिष्य, भागत्रा के राजा राममल्ल सिंह के आश्रित थे।
ग. प. (१) / १५५		नाहर खाँ जटमल	गोरावादल की कथा			
छ. प. (१) / ७४		पकजदास	सत्यनारायण कथा भाषा			जाति के कायस्थ, मदिर (गाजीपुर) निवसी।
छ. प. (१) / ६०		पन्नालाल	सीताराम सामरी (निकुज)	१६६४	१६६४	
छ. प. (१) / ७३		पद्मपालसिंह (कुँवर)	सिंगिल स्टिक प्रैक्टिस			अजयगढ के राजकुमार।
छ. प. (१) / ७५		परमानद प्रधान	१ अपराध भजन	१६४४	१६५१	जाति के कायस्थ, टीकमगढ निवासी, वहाँ के राजा के आश्रित थे।
			२ गणेशाष्टक		१६५१	
			३ चालीसी			
			४ जानकी मगल	१६४८		
			५ जानकी शृगार शतक		१६५१	
			६ नीति मुक्तावली	१६६४	१६६४	
			७ नीति सारावली		१६६२	
			८ नीति सुधा मंदाकिनी	१६४८	१६४८	
			६ पद्माभरण प्रकाश	१६६४	१६६४	
			१० प्रताप चद्रोदय	१६५६	१६५६	
			११ प्रतापनीति दर्पण	१६६१	१६६१	
			१२ प्रतिपाल प्रभाकर	१६५१	१६५१	
			१३ प्रमोद रामायण	१६४२		
			१४ ब्रह्म कायस्थ कौमुदी	१६६३	१६६३	

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	परिचय
			१५ मंगलपत्री रामायण	१९१०	१९१०	
			१६ मंजु रामायण	१९४७	१९६२	
			१७ महेन्द्रवर्ण प्रकाश	१९६१	१९६१	
			१८ महेन्द्र मुक्तावली		१९५८	
			१९ मानस विलास	१९६४	१९६४	
			२० मृगया चरित्र	१९५८	१९५८	
			२१ रंगपत्र संग्रह			
			२२ रस पचीसा		१९५५	
			२३ राजनीति मंजरी	१९६४	१९६४	
			२४ रामगुण प्रकाश	१९६४	१९६४	
			२५ रामचंद्र रत्नाकर		१९५१	
			२६ रामचरितमानस भूमिका	१९५८	१९८५	
			२७ रामचरितमानस दर्पण	१९५०	१९५०	
			२८ लक्ष्मण पचीसी		१९४०	
			२९ वर्ण चौंतीसी	१९६०	१९६०	
			३० विनय विलास	१९४२	१९४२	
			३१ विश्वम्भर सुमरिनी		१९५१	
			३२ सामेश्वर	१९६१	१९६१	
			३३ हनुमत नैनामी	१९४४	१९६१	
			३४ हनुमत विरदावली	१९५०	१९५०	
			३५ हनुमत सुमरिनी		१९४१	
ग. प. (१)/५१		परमेश	कृष्ण-विनोद		१९४०	शेखपुर (फतेहाबाद) निवासी, मौजा के तालुकेदार कृष्णदत्त राम के आश्रित; काशी के थे।
ग. प. (१)/११०		परशुराम	भक्तविनय			
ग. प. (१)/१७१		परशुराम चौबे	हरिपद प्रकाश			
ग. प. (१)/७९		पीताम्बर भट्ट	प्रताप प्रभाकर	१९२१		पद्माकर भट्ट के वंशज।
ग. प. (१)/७८		पुरुषोत्तम भट्ट	१ काव्यामृत २ चिन्तामणि ३ नायक भेद ४ दुर्गा चरित्र ५ वैराग्यानी ६ शृंगार सविता संग्रह			अजयगढ़ नरेश महाराज रणजीतसिंह के आश्रित थे।
ग. प. (१)/३८१		प्रेमनाथ	शिशुबोध धन्य परिचय बोध ग्रंथ			

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	परिचय
घ. प. (१) १६१		पोहकर	नखशिख			
ग. प. (१) २६२		प्रतापसिंह	रेखता	१८४७		उप० ब्रजनिधि, जयपुर-नरेश।
न. प. (२) ४४		प्रधान	प्रधान कवि के ग्रंथ		१९३७	शायद ये रामनाथ प्रधान हों, जन्म सं० १९०२।
छ. प. (१) ७१		प्रभाकर भट्ट	१ अलंकार २ प्रताप कीर्ति चन्द्रोदय ३ भर्तृहरि नीति शतक ४ यज्ञोपवीत सरोज ५ षटऋतु वर्णन ६ हमीर कुल कल्पवृक्ष	१९५६ १९५२ १९५६		पद्माकर भट्ट के वंशज, दतिया निवासी, मृत्यु सं० १९६०।
न. प. (२) ४६		प्रवीण	सार-संग्रह	१९४५		उप० ठाकुरप्रसाद मिश्र पहपू (शाहगंज) जिला फैजाबाद निवासी।
अ. प. (२) ४३		फूलचन्द	अनिरुद्ध स्वयंवर	१९३०		त्रिवेदी ब्राह्मण, बालादीन के पुत्र, रायबरेली निवासी।
न. प. (२) ४	१९५०– १९६०	बल्लाराम	१ कमलानन्द विनोद २ कृष्णचंद्र आभरण ३ कृष्णचंद्र चंद्रिका ४ तन्मय दर्श ५ राधाकृष्ण विजयनेतराम ६ रामेश्वर भूषण ७ रुक्मिणी व्याह ८ सदुपदेश शतक	१९५८ १९५८ १९५० १९५८ १९६०		उप० सुजान, हल्दी जिला बलिया निवासी।
छ. प. (१) ११		बघेल उपाध्याय	दीक्षा प्रबंध			सनयर (बुंदेलखंड) निवासी।
न. प. (२) ५		बलभद्रदास	संवाद गुरु नानक नवनाथ और चौरासी सिद्ध			ये २० वीं शताब्दी में डिप्टी कलेक्टर थे।
क. प. (१) ६		बलवन्तसिंह	चित्रविनोद			अजयगढ़ (बुंदेलखंड) निवासी।
छ. प. (१) ६		बलिदास	दानलीला			वृन्दावन निवासी।
छ. प. (१) ७		बलदेव	दानलीला			
क. प. (१) ८		बल्देवदास माथुर	करीमा	१९१७	१९५८	जाति के चौबे, नौगाँव (बुंदेलखंड) निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का	लि. का	परिचय
म. प. (१) / १		बहादुर कनौजिया	करमादीप मुहूर्त भाष्य			हटिया निवासी कायस्थ।
म. प. (१) / १८४		बाँकीदास	भीमसूर रा कवित	१८६७		
म. प. (१) / १५८		बालकराम	मनमाल चिन्हारी टीका	१८११	१९२७	
म. प. (१) / १२१		बेनीराम	नाममाला			
म. प. (१) / ४		बैजनाथ	वृत्त प्रभाकर			
म. प. (१) / २१		भगवंत कवि	हनुमत पचासा			चरखारी निवासी।
म. प. (१) / १२		भगवानराम	भवानीसिंह प्रकाश			दतिया नरेश भवानीसिंह के आश्रित।
म. प. (१) / ११		भट्ट	भवानीशिव			
म. प. (१) / ११५		भद्रसेन	चंदन मलयागिरि वार्ता			
म. प. (१) / ११२		भवानीदास	दुर्विधा मुहूर्त भाष्य			
म. प. (१) / १६		भवानीप्रसाद	प्रमाणश्री	१९५१		जय मार्तण्ड ओझा के दरबार।
म. प. (१) / १४		भानराम	रामनीति	१८७२		चरखारी नरेश खुमानसिंह के आश्रित।
म. प. (१) / १५		भानुप्रताप (महाराज)	१ बिहार शतक २ शृंगार पचासा	१९५		जय स्वामदेव बिजावर (बुंदेलखंड) नरेश।
म. प. (२) / ७		भानुप्रताप (तिवारी)	१ कबीर साहब का जीवन चरित्र २ जीवन चरित्र नानक साह का ३ जीवन चरित्र राव बहादुर रामनिधान का ४ तुलसी सतसई सटीक ५ भक्तिमाल दीपक ६ भक्तिमाल वृत्तांत ७ भानुप्रताप तिवारी का जीवन-चरित्र	 १९५० १९५ १९५	 १९५ १९५० १९५० १९१५	चुनार (मिर्जापुर) निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	परिचय
			८ विहार मार्तंड सटीक	[illegible]	[illegible]	
छ. प. (१) १७		निरंजनदास	नौरंग का कथा			
छ. प. (१) १८		आनंददास	नामरत्न दोहावली	१९००	१९०१	
घ. प. (१) १३३		भूप	चंपू भानुटिक भाषा		१७२६	
छ. प. (१) १९		भूप	भानुटिक			बिजावर निवासी।
छ. प (१) २०		भूरे	बारहमासा			
ज. प. (१) ६		मंगलप्रसाद	पाप विमोचन	१९६०	१९६८	गोलागंज (लखनऊ) निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
छ. प. (१) ७०		मदनसिंह	नीतिचंद्रिका	१९३३	१९३७	किसी बुंदेलखंडी राजवंश के थे।
छ. प (१) ६८		मणिन्द्र	रामचेतनी			
		मदनसिंह	१ फागुनी का खेल २ मदनचंद्रिका ३ मदनप्रताप शालिहोत्र ४ मदनमुद्रिका ५ हम्मीर प्रकाश	 १९०१ १९३१ १९०३ १९०३	१९२१ १९२१ १९३१ १९०३	पीपट (बिजावर) निवासी, ओड़छा नरेश महाराज हम्मीरसिंह और प्रताप-सिंह के आश्रित।
घ. प. (१) १५१		मनीराम	सार संग्रह		१८४०	
घ. प. (१) ६६		महबूब और कासिम	कवित्त और कुंडलिया			
ग. प. (१) १३७		महाराज चारण	छंद अर्थ जगन्नाथ जी की कथा	१८६७		
ज. प. (२) ३४		महेशदास	एकादशी माहात्म्य	१९१५		जाति के कहार, वल्लभ संप्रदाय के वैष्णव, पटना निवासी।
ज. प. (२) ३५		मातादीन	१ रस-सारिणी २ संग्रहावली	१९३२	१९३६ १९०४	जाति के ब्राह्मण, प्रतापगढ़ निवासी।
ज. प. (२) ३३		माधव	अध्यात्म रामायणसार संग्रह	१९६२		भानुदत्त तिवारी के पुत्र, जौनपुर निवासी।
छ. प. (१) ६५		माधवप्रसाद	१ अलंकार सागर २ माधव गणित ३ माधवभूषण			अजयगढ़ निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	परिचय
ख. ए. (२)/१७		मुक्तराम	मनतत्व कल्पलतिका	१९३०		सुलतानपुर (प्रतापगढ़) जिला में पांडे शिवगोविन्द (मिरजापुर) का बने।
ख. ए. (१)/६७	-	मुकुन्दराम	१ वृन्दिहर पद मा	१९६८	१९६५	मल्लावाँ (हरदोई) निवासी।
			२ शिवमाहात्म्य भाषा	१९६३	१९६५	
ख. ए. (१)/१८		मुकुन्द शुक्ल	१ जैमिनी भारत पुराण भाषा			सर्वनगर (बाराबंकी) निवासी।
			कथा की		१९५८	
			२ परमहंस पत्र भी	१९४४	१९६	
			३ रघुराम विलास		१९५८	
			४ रामभर्त विलास	१९४८		
ख. ए. (१)/२१७		मुरलीराम साधु	मुरलीराम साधु का पद			
ख. ए. (१)/२११		मूलराम (साधु)	मूलराम साधु का पद			
ख. ए. (२)/११		मोहनराम	बृहत् सम्मानकसागर	१९६४	१९६४	मोहनपुर में हनुमानगढ़ी के महन्त।
ख. ए. (१)/७१		मोहनराम	१ नृसिंह जू की स्तक		१९२१	बरखेरी निवासी; शोभाराम देवसिंह के स्वामित।
			२ शालिहोत्र	१९३५	१९४२	
ख. ए. (२)/१२		युगलानन्यशरण	१ समाधान प्रकाश			अयोध्या के महन्त।
			२ सर्व शतक			
			३ भजन विहार	१९१८		
			४ रस विलास रहस्य	१९०४		
			५ रामोदरसंख्य शतक			
			६ रामरसामृत	१९१८		
			७ जानकी सनेह हुलास			
			८ मूलमा स्वरमी			
			९ सिय दर्पण प्रकाशिका	१९१८		
			१० मनोहर प्रदीप दोहावली	१९२		
			११ प्रेम उमंग			
			१२ प्रेमरस दोहावली			
			१३ प्रमप्रभाव	१९२०		
			१४ प्रमतर्ज्जनी			
			१५ रसविलास			
			१६ महिमा भावनग्गी			
			१७ माधव मंजुवाणी	१९०५		
			१८ मानसेन शतक			
			१९ रामनामसरण राजस्त्री			
			२० रामनाम माहात्म्य नदिम	१९३२	१९३८	
			२१ रसराज पदावली		१९३०	

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	परिचय
			२२ वर्णमाला			
			२३ विनयविहार			
			२४ विनोदविलास	१९१०	१९६०	
			२५ विरहदिनेश		१९३४	
			२६ विशदवस्तु दोधावली	१९१६		
			२७ वृत्तिशतक			
			२८ मतवचन विलासिका			
			२९ मनविनय शतक			
			३० सतगुरु प्रवेशिका पदावली			
			३१ सतसंग मतमर्ड	१९१७		
			३२ मीनाराम उत्सव प्रकाशिका			
			३३ मीताराम मनेहवाटिका	१९२१	१९६२	
			३४ मीनाराम मनेहसागर			
			३५ सुखसीमा दोहावली	१९२०		
			३६ सुमति प्रकाशिका	१९२०		
			३७ हृदय हुलासिनी	१९२०		
छ. प. (१) / ८५		रनोरसिंह	१ उपवनविनोद			अजयगढ़-नरेश, पुरुषोत्तम भट्ट के आश्रयदाता।
			२ उष्ट्रशालिहोत्र			
			३ किताब जर्राहा			
			४ गज शालिहोत्र			
			५ गूढवैद्य			
			६ दायागरी			
			७ फायदे जहर			
			८ बकरी भेड़ पालन			
			९ बनिजप्रकाश			
			१० मखजने हिंद			
			११ मृगयाविनोद			
			१२ विहगविनोद			
			१३ वैद्यप्रभाकर			
			१४ सगीत-सग्रह			
			१५ सतान-शिक्षा			
			१६ श्वानचिकित्सा			
छ. प. (१) / ८७		रघुनाथदास (सराफ)	१ द्रोपदी की कथा	१९३७	१९५६	पन्ना निवासी थे।
			२ मीराबाई चरित्र	१९३७	१९५६	
			३ मोरध्वज की कथा	१९३७	१९५६	
			४ सबरी को गुरिया	१९३७	१९५६	
			५ सुदामा को गुरिया	१९३७	१९५६	
			६ हनुमान जू को गुरिया	१९३७	१९५६	

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि. का	परिचय
ख. पं. (२) / ४९		रघुनाथप्रसाद	रामा समरिका	१९३७	१९३७	प्रयागसिंह कायस्थ के पुत्र थे बनारसी निवासी, पीछे से बनारस में रहने लगे थे।
ख. पं. (२) / ४८		रघुवरदयाल	१ कृष्ण बालचरित २ कृष्ण मर्मनामा	१९४५ १९५८		रंगीलपुरा (कानपुर) निवासी; शिवभजनलाल कायस्थ के पुत्र।
ख. पं. (१) / ११०		रत्नहरी	प्रेमसरोजी			
ख. पं. (१) / ८९		रसरंगमणि	१ सीताराम मंगलविनोद २ हनुमत बलतरंगिणी	 १९४५	 १९५५	अयोध्या निवासी।
ख. पं. (१) / १११		रमाराम	मनरंजिनी	१९८०		
ख. पं. (१) / ८७		रमाराम	१ रामाष्टक मनोरंजन की टीका २ रसिकप्रिया की भावदीपिका ३ शिवसार ४ श्यामविनोद	 १९५४	 १९५५	सं० का मित्र, पौढ़ी (मैनपुरी) निवासी थे।
ख. पं. (१) / ८१		राजेन्द्रप्रसाद	रामगीता			
ख. पं. (२) / ४७		राधारमणप्रसाद सिंह	१ महिम्न स्तोत्र भाषा २ स्तोत्र रत्नावली	१८६५ १८९९		मरहमपुर (बलिया) के रईस। सं० १९६५ तक जीवित थे। नोट—यदि रचनाकाल ठीक है तो इस समय तक जीवित रहने पर विश्वास नहीं होता।
ख. पं. (२) / १२		रामचरण	१ रहस्य रामायण २ सीताराम दर्शन विलास ३ हितोपदेश	१९५६ १९५६ १९६३	१९५६ १९५६ १९६३	मिरजापुर (झाँसी) निवासी; स्वामी रामचरण के शिष्य [illegible] जन्मकाल सं० १९१०, [illegible] के शिष्य।
ख. पं. (१) / ८३		रामदीन	विजयमुक्तावली समर	१९५३	१९५५	सं० इंदर; बबेल (हमीरपुर) निवासी।
ख. पं. (२) / १४		रामनाथ मिश्र	मानुष चिकित्सा	१९६७		रघुनाथ मिश्र के पुत्र।
ख. पं. (२) / ११		रामरतन	गंगा माहात्म्य			सुमार निवासी ठाकुर के पुत्र।
ख. पं. (१) / ८४		रामचन्द्र	१ [illegible] २ [illegible]	१९१० १९१०	१९१८ १९११	[illegible] निवासी।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	परिचय
ज. प. (२) / ५०		रामभरोसे	पद्यव्याकरणसार	१९६५		बहरायच जिला स्कूल के अध्यापक।
ज. प. (२) / ५२		रामलगनलाल	१ विनय पचीसी २ शंकर पचीसी			उप० छेम, लाला कौलेश्वर-दयाल के पुत्र, मटेर (गाजीपुर) निवासी।
छ. प. (१) / ८३		रामलाल स्वामी	१ अमर कटक चरित्र २ कृष्णप्रकाश ३ ब्रह्मसागर ४ भवानी स्तुति ५ महावीर तोमा ६ रामसागर	१९४३ १९२४ १९२४ १९२३	१९४६ १९२५ १९२५ १९४०	बिजावर नरेश महाराज भानु-प्रताप के गुरु थे।
ग. प. (१) / २२१–१९३–१९४		रिझवार	१ कवित्त श्रीनाथजी रा २ कवित्त श्रीहजूरान रा ३ नाथचरित्र रो हकीकत नामा	१८६७ १८६७ १८६७		इसमें भूपति कवि ने भी सहायता दी थी।
ज. प. (२) / २७		लक्ष्मीनारायण	१ गोरखशतक २ विद्यार्थी बाललीला	१९६१	१९६५ १९५२	बनारस निवासी।
छ. प. (१) / ६२		लच्छीराम	प्रतापरस भूषण			अयोध्या निवासी।
ज. प. (२) / ३०		ललित	१ ख्याल तरंगिणी २ दिग्विजय विनोद	 १९३०	 १९३०	मुल्लावर (हरदोई) निवासी, कानपुर में रहते थे, सं० १९६२ में मृत्यु हुई।
ज. प. (२) / ३१		ललितकिशोरदास	ललितकिशोरदास के पद			उप० शाह कुंदनलाल, लखनऊ निवासी, २० वीं शताब्दी में वर्तमान थे।
ज. प. (२) / ३२		लल्ला पाण्डेय	ऊषा चरित्र	१९१६	१९१६	उप० लल्लन, गाजीपुर निवासी।
ज. प. (२) / २९		लालजी	लक्ष्मीनारायण नो जीवन चरित्र	१९५९		काकोरी (लखनऊ) निवासी।
छ. प. (१) / १३० } घ. प. (१) / १४१ }		लालजी मिश्र	कोकसार		१८९९ और १८५१	दो प्रतियाँ प्राप्त हुई।
ज. प. (२) / २८		लालबिहारी	१ विजयमंजरी और दुर्गा-शतक २ विजयानंदचंद्रिका और कालिकाशतक	१९६१ १९६१		गँधौली (सीतापुर) निवासी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, लेख राज कवि के पुत्र, मृत्यु सं० १९६२।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	परिचय
द ५ (१)/५		[illegible] खाँ	[illegible]	१९१२	१९३५	[illegible] निवासी।
द ५ (१)/११८		[illegible]	[illegible]	१८८२		
द ५ (१)/२९		[illegible]	[illegible] की [illegible]		१९५१	
द ५ (१)/२९		बिहारीप्रसाद	१ [illegible] २ [illegible]	१९१? १९०१		ओरछा [illegible] की ओर से [illegible] थे।
द ५ (१)/३१		बिहारीलाल भट्ट	[illegible]			दतिया नरेश भवानीसिंह के आश्रित।
द ५ (१)/३३		बिहारीलाल ([illegible])	[illegible] चंद्रिका			कायस्थ; [illegible] (छतरपुर) निवासी।
द ५ (१)/३४		बिहारीलाल ([illegible])	[illegible]	१९१८	१९५४	दतिया निवासी।
द ५ (१)/१०१		वृंदावन	[illegible] भाषा	१९२१	१९५७	[illegible] निवासी।
द ५ (१)/१		वृंदावन ([illegible])	[illegible]	१९११		दतिया निवासी [illegible] थे।
द ५ (१)/४१		[illegible] कुँवरि	१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible]	१९६० १९६२ १९४?	 १९९? १९४?	ओरछा की महारानी।
द ५ (१)/१?		[illegible]	[illegible]	१९४?		द्विवेदी कान्यकुब्ज ब्राह्मण, दुर्गीगंज (छतरपुर) निवासी
द ५ (१)/८८		[illegible]	[illegible]	१९२४		[illegible] (छतरपुर) निवासी।
द ५ (१)/८१		[illegible] मिश्र	१ [illegible] २ [illegible]	१९७० १९७०		[illegible] निवासी।
द ५ (१)/१११		[illegible]	[illegible]	१०५०	१८५१	
द ५ (१)/३१		[illegible] मिश्र	[illegible]	१९६८		[illegible] के पुत्र, [illegible] ([illegible]) के [illegible]।
द ५ (१)/३१४		[illegible]	[illegible]			
द ५ (१)/९१		[illegible]	१ [illegible] २ [illegible]	१९१५ १९१५	१९१५ १९१५	टीकमगढ़ निवासी, कायस्थ।

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि. का	लि. का.	परिचय
ज. प. (२) / ५८		शीतलप्रसाद	१ भारतोन्नति सोपान २ रामचरितावली नाटक ३ विनय पुष्पावली	१९६४ १९५६ १९६०	 १९६३ १९६२	भरमर (गोरखपुर) निवासी।
छ. प. (१) / ९६		श्यामलाल	१ नीतिसार २ ध्यानस्वर			बाँदा निवासी, कायस्थ, अजय-गढ नरेश के आश्रित।
घ. प (१) / १६६		श्यामसखा	रामध्यान सुदरी			
छ. प. (१) / ९२		श्रीधर	१ गजेंद्र चिंतामणि २ भारतसार	 १९०६		पद्माकर भट्ट के वंशज, जयपुर निवासी।
छ. प. (१) / ९३		श्रीराम (नेत)	१ इतिहास ओड़छा २ प्राचीन भारत ३ बुंदेलवंश वर्णन ४ राज ओड़छा ५ समालोचन बुदेलराज्यकी ६ साँचीशिला लेख और ताम्रपत्र	 १९५९ १९४६ १९०६		बिजावर राज्य के दीवान।
ज. प. (२) / ६०		श्रीहर्ष	१ राधाकृष्ण होली २ राधिकाजी का विवाह	१९३५	१९३६ १९३६	काशी निवासी।
ग. प. (१) / १७७		मनोपराम	जलधरनाथजी रो रूपक	१८६७		
ग. प. (१) / २६६		सदलवच्छ	सदलधच्छ मावलग्या का दुहा	१९६७		
ग. प. (१) / २११		समीरल पारसराज	माँड और टप्पे			
ज. प (२) / ५७		सरजूप्रसाद और शंभूनाथ	प्रेमचंद्रिका	१९५८		सरजूराम जगदीशपुर (वस्ती) के जमीदार और शंभूनाथ भँभरी निवासी थे।
छ. प. (१) / ९०		सीताराम सामरी	१ आयुध प्रकाश २ नवदुर्गा नवाह ३ पन्ना का राजवंश ४ रस कलानिधि	१९६३ १९५५ १९६४ १९५३	१९३३ १९५५ १९६४ १९६१	उप० निकुंज, पन्ना निवासी।
छ. प. (१) / ९४		सुरजन	बत्तीस अच्छरी			
ग. प. (१) / २७७		सेमजी	सेमजी की चेतावनी			
ग. प (१) / १५३		सेवकसगजी	गीत सेवकसग रा	१८६७		

पता	कविता काल	कवि का नाम	ग्रन्थ का नाम	नि० का	लि० का	परिचय
ग० च० (१) / १७८		स्वरूपराम	कर्णेश्वर चंद्रोदय	१८६७	१८६७	
क० च० (१) / ६१		स्वामीराम	राम मञ्जरी			
क० च० (१) / १४३		ईश्वरदास	सनेह सागर		१८११	
क० च० (२) / ६६		हरदीक्षान	माधी माधा मानस रास	१६२५		गोंडा निवासी।
क० च० (२) / १०		हनुमान	मूल रामायण	१६५२		सेवाराम के पुत्र।
क० च० (१) / ३७		हनुमानदास	गीत माला		१६३२	बिजावर-नरेश भानुप्रताप के आश्रित।
क० च० (१) / ४६		हरिदास	कृष्णचरित्र बरसाने को			बिजावर निवासी; कायस्थ।
क० च० (१) / ४८		हरिदास	व्याकरण	१६२७	१६२८	
ग० च० (१) / ६६		हरिदास	भरथरी गोरख संवाद			
ग० च० (१) / २६६-२६६ १७० १६४ १४६ १२६ २०६		हरिदास	१ ब्रह्म मारिग २ कृष्णावतार स्वरूप निर्णय ३ यथार्थ मत		१८६५	
			४ गुरुजी के स्वरूप को चिन्तन मार्ग ५ ब्रिन्दावन स्वरूप विचार ६ भागवत के श्लोक ७ सातों स्वरूप की भावना		१८६६	
क० च० (२) / १०		हरिविलास	गोविन्दविलास	१६६६		लखनऊ निवासी; रामचंद्र के पुत्र थे।
क० च० (१) / ३६		हामी	प्रेममाला			ये मुसलमान थे।
क० च० (१) / ६		हीरालाल प्रधान	नर्मदा वागीश्वर विलास	१६६४		जबलपुर निवासी कायस्थ।
ग० च० (१) / २०६		हेमनारायण	महाराज रामसिंह सगुन सवद	१६८७		

परिशिष्ट (२)

सं० १६५७ से सं० १६६८ तक की रिपोर्टों के परिशिष्टों में आए हुए अज्ञात कवियों के ग्रंथों की सूची।

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	विशेष
छ. प. (२) / ४		अगहन माहात्म्य		१६७१	
ग. प. (१) / ११६		अचलदास खीची की बात		१८४३	
ज. प. (४) / २		अनरप्रकाश		१६३५	
छ. प. (२) / ३		अद्वैतप्रकाश		१६४५	
छ. प. (२) / २		आधाशीशी की कथा		१६४७	
छ. प. (२) / ७		अनन्त कथा			
छ. प. (२) / ६		अनन्तदेव की कथा		१६२४	
ज. प. (४) / १		अनन्तराय मंखल की वार्ता			अन्य नाम सर्वहिय की बात, कोशलपुर राज का इतिहास।
छ. प. (२) / १३		अयोध्याकांड			
छ. प. (२) / ८		अर्जी सतगुरु			वेदांत।
छ. प. (२) / ६		अर्जुनगीता		१८३३	
छ. प. (२) / १		अवधूत विलास		१६१०	जादूगरी।
ग. प. (१) / ११६		अश्वमेधयज्ञ भाषा		१७८०	
छ. प. (२) / १०		अष्टावक्र गीता		१८५७	

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	लि का	लि का	विशेष
ह. प. (१)/१२		अर्जुन्य सुत की कथा भाषा			
ह. प. (१)/११७		आचार्य जी के समय के पद			संग्रह।
ह. प. (२)/१२		आनबोध		१११०	केवल १।
ह. प. (२)/११		आनबोध			कथानक।
ह. प. (१)/१४८		इंद्रजाल			
ह. प. (१)/८४		इंद्रजाल		११८०	
ह. प. (४)/२१		इंद्रजाल			
ह. प. (१)/१७४		एक ब्राह्मण री कथा			
ह. प. (२)/८५		इतिहास		१९११	
ह. प. (४)/२१		इतिहास संग्रह			
ह. प. (२)/८१		इसराज			
ह. प. (१)/२११		उत्पत्ति प्रकरण			
ह. प. (४)/७४		उपमा भाषा			
ह. प. (२)/१११		उपदेशमालिका			
ह. प. (२)/११७		ऋषिपंचमी की कथा		१८१४	
ह. प. (१)/११ ११		एकादशी माहात्म्य		१९११-१०७१	
ह. प. (१)/१११		ओखा संगरत्नी			
ह. प. (१)/११६		ओखा बर्णन		१८६१	

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	विशेष
छ. प (२) / ५		अगद वाद			
छ प. (२) / ६३		कपोत कपोती की कथा		१८२६	
छ. प. (२) / ६५		करुणा के कवित्त		१८६१	
छ. प. (२) / ६८		कर्म-विपाक		१८४१	ज्योतिष।
म. प. (४) / २८		कलियुग वर्णन भूगोल			
छ. प. (२) / ६२		कलावती		१८७०	वैद्यक।
ज. प. (८) / ३०		कवित्त संग्रह			
ग. प (१) / १८६		कवित्त जालंधरनाथजी रा	१८६७		
ग. प. (१) / १६०		कवित्त महाराज मानसिंह रा	१८६७		
ग. प. (१) / १६२		कवित्त षटऋतु			
ग. प. (१) / १६१		कवित्त संग्रह			
घ. प. (१) / १८०.		कवित्त संग्रह			
ड प (१) / १८८		कवित्त संग्रह			
द. प. (१) / १५०		कवित्त संग्रह		१८५३	
छ. प. (२) / ६८		कांताभूषण			अलङ्कार।
छ. प. (२) / ६६		काग परीक्षा			
ग प. (१) / १८२		कार्तिक माहात्म्य भाषा		१८४४	
छ. प (२) / १००		कादम्ब वंशावली	१८८१		

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	लि का	लि का	विशेष
द. प. (२) / १०१		कायस्थोत्पत्ति		१११६	
द. प. (२) / ११		कार्तिक माहात्म्य		१६०७	
द. प. (२) / ६१		कालज्ञान		१८५०	
द. प. (४) / ११		कालीकथा इत्यादि			
द. प. (४) / ११		कीमियासार		१८७२	पापमोचन पद्धत।
द. प. (१) / ११७		कीर्तन राम-कृष्णचरित्र का			२३६।
म. प. (१) / ११८		कीर्तन समय			
द. प. (१) / २०१		कुंडलिया सिंह सिंहाल के			
द. प. (१) / १९५		कृष्णजी की मनविहार लीला		१८५७	
द. प. (१) / १०१		कोक		११४५	
द. प. (४) / ११		कोक कथा			अपूर्ण।
द. प. (१) / १११		कोकशास्त्र		१७७२	
द. प. (४) / ११ १४		कोकसार		११५१	
द. प. (४) / १२ ११		कौतुक रत्नावली			
द. प. (२) / १०४		ख्वाजे निजामत			
द. प. (२) / १०१		खेद व निवार			
द. प. (१) / ११६		ख्यात कर्लसिंह की			
द. प. (२) / ११		गंगा की बातें			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि.का.	लि.का.	विशेष
छ. प (२) / ६३ ६४-६५-६६		गजराज नामा			
छ. प. (२) / ६८		गणेश कथा			
छ. प. (२) / ६७		गणेश स्तुति			
ग. प. (१) / १४८		गिदौली री बात		१८३७	
छ. प. (२) / ७० ७१ ७२		गीत गोविंद (सटीक)		१८४६, १६८७, १६०२	
ग. प. (१) / १५४		गीत त्रिकुट श्रामाता जी रा			संग्रह ।
ग. प. (१) / १४६		गीत महाराज अभयसिंह जी रा	१८१७		संग्रह ।
ग. प. (१) / १५०		गीत महाराज जसवंतसिंह जी रा	१७३७		संग्रह ।
ग प. (१) / १५२		गीत रावजी भीओभा जी रा	१८६७		संग्रह ।
ज. प. (४) / १८		गीता चिंतामणि			
छ. प. (२) / ७३		गीता माहात्म्य		१८४०	
ट. प. (१) / १४६		गुटिका		१६०५	
ग. प. (१) / १६३		गुणगज नामो		१७०६	
ज. प. (४) / २०		गुणसागर कामविनोद		१६१०	सामुद्रिक ।
ज. प. (४) / २१		गुर प्रताप			
छ. प. (२) / ७५		गुरां को विचार		१८६२	
ग. प. (१) / १६१		गुलाव अने भँवर की वात			
ज. प. (४) / १६		गोपीकृष्ण सनेह वत्तीसी कचहरी		१६०८	

पता	कवित्ता काल	ग्रन्थ का नाम	लि का	लि का	विशेष
छ. प. (२) / ७४		गोवर्धन पूजा			
ग. प. (१) / १५८		गोरखा भक्ति	१८६७		
ग. प. (१) / १५६		गोरख मोहरा गाथा	१८६७		
छ. प. (२) / ४८		चंद्रहंस कथा		१८२१	
ब. प. (८) / ११		चकवा की [illegible] का परंपरा			
छ. प. (२) / ४६		चरन चिह्न		१८४५	
ग. प. (१) / ११४		चाणक्यनीति भाषा टीका			
छ. प. (२) / ५१		चित्रकूट माहात्म्य		१९०८	
ब. प. (४) / १९		चित्रकूट विलास		१९१२	
ब. प. (४) / १५		चित्रगुप्त की कथा			
छ. प. (२) / ५२		चुरेरिन की गारी			
छ. प. (२) / ५८		चुरेरिन राग		१९५८	
ब. प. (१) / १११		चौबीस एकादशी माहात्म्य भाषा		१८५१	
ब. प. (४) / १७		चौसठ सखी की लीला			
छ. प. (२) / ५		छंद [illegible]			
ग. प. (१) / ११५		छंद मंजरी			
ग. प. (१) / १११		ज[illegible] बत्तीस रागनी का [illegible]			अपूर्ण।
ब. प. (१) / १४०		जंत्रावली		१८४०	
छ. प. (२) / ८१		जन्माष्टमी			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	विशेष
छ. प. (२) / ८७		जमुनाष्टक			
छ. प. (२) / ८८		जमुना स्तुति		१८८५	
ज. प. (४) / २७		जानकी विजय	१८१३		
छ. प. (२) / ८९		जालधर कथा			
ग प. (१) / १७६		जालधरनाथ जी रा गीत	१८६७	१८६७	
ग. प. (१) / १८०		जुनि-ख्यात			
ग. प. (१) / १७५		जैमिनी अश्वमेध भाषा			
छ. प. (२) / ९०		जैमिनी कथा		१८०८	
ग. प. (१) / १५०		जोधपुर राज्य की वंशावली		१८०९	
ज. प. (४) / २२		ज्ञानप्रकाश		१९२२	
छ. प. (२) / ७६		ज्ञानमाला		१८३४	
ग प. (१) / १६७		ज्ञानशृंगार			
छ. प. (२) / ९१		झूलना के पद			
ग. प. (१) / २८७		ठाकुर जी री लीलाभाव रा कबित्त			
छ. प. (२) / १९५		तत्वोत्पत्ति			दर्शन।
छ. प. (२) / १९४		तर्कशतिका		१८९३	
ज. प. (४) / ७६		तारीख रामायण			रामायण पढ़ने के दिनों का वर्णन।
छ. प. (२) / १९६		तीना की कथा			

पता	कवियता काल	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	परिचय
ब. प. (४) / ७८		तैसामंत			आत्मज्ञान वर्णन ।
क. प. (१) / १८६		गुनसीसमार सेतु	१९३७		
क. प. (२) / ११७		गुरुमी स्तोत्र		१८६८	
क. प. (२) / ११८		सूरीनामा	१८७६		
ब. प. (८) / ७७		त्रिभारत सायरा		१९१८	
क. प. (२) / ५४		दरामसार			
क. प. (२) / ५६		दस्तूरमालिका		१९४०	
क. प. (२) / ५५		दस्तूरम भ्रमण		१९०२	सूक्ष्मरीति ।
क. प. (१) / ६६		दीपक बज्राम			बिनी मौनसी में बना
क. प. (२) / ६		दशलम्भार	१८७७		
ब. प. (२) / ५०		दोहासार	१८१२		
क. प. (१) / १४८		धनुषवध			
क. प. (२) / ५१		धनुषपरीक्षा			
क. प. (२) / ५८		धातु बनाने की विधि	१९११		
क. प. (१) / १६५		ध्रुवचरित्र			
क. प. (२) / १११		नर्मुन्द स्नान			
ब. प. (१) / २११		नसीहतनामा			
ब. प. (१) / २७६		मान जी रा बात	१८५४		

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि का.	विशेष
ग. प. (२) / २२२		नाथधर्म			
छ प (२) / ११९		नाम चेतावनी			स्फुट संग्रह ।
छ. प. (२) / १२०		नाम तर्कशास्त्र		१७८५	
ज. प. (४) / ४०		नायिका भेद		१९०५	
ज. प. (४) / ४१		नायिका भेद बरवा		१९०१	
छ. प. (२) / १२२		नासकेतु पुराण		१७८५	
ग. प. (२) / २२०		नासकेतु भाषा		१८१६	
छ. प. (२) / १२४		निर्घंट		१९१४	
ज. प. (२) / ४२		निधिप्रदीप		१९६१	
छ प. (२) / १२३		नेमचद्रिका	१७६१	१८११	
ज प. (४) / ४४		पचतत्व विशेप			
ग प. (१) / २६४		पचदशी भाषा टीका		१९९७	
छ. प (२) / १३०		पंचमुद्रा		१८८५	वेदात ।
ग प. (१) / २३५		पचाग्यान			अन्य नाम पंचतंत्र कथा ।
छ. प (२) / १३१		पञ्छी चेतावनी			स्फुट कविता ।
छ. प (२) / १२७		पद		१७६२	
ज. प. (४) / ४३		पद			
ग प. (१) / २३३		पद संग्रह			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	विवरण
म. प. (२) / १२८		पद संग्रह			
म. प. (१) / २१२		पशुपत्त मन्दिरको वैशाख माहात्म्य			
म. प. (१) / ११५		परमार्थ मत		१८४२	
म. प. (१) / ११४		पराक्रम मू. को कलक			
म. प. (१) / १८२		पहेली		१११६	
म. प. (१) / ११२		पीमा कवनी			
म. प. (१) / १२६		पाक रोटी विधि		१८६१	
म. प. (१) / १११		पारसी मसरा			
म. प. (४) / ५१		पीयूष प्रवाह		११११	मैनक।
म. प. (१) / १४२		पृथ्वीराज वीरभद्र संवाद			
म. प. (१) / २४२		प्रतिबोध ज्ञान सीमको योग		१८८१	
म. प. (२) / १४		प्रश्नोत्तर मालिका			
म. प. (४) / ५१		प्रह्लाद चरित्र		१८६४	
म. प. (१) / १४१		प्रेम कहानी		११५५	
म. प. (१) / २४१		प्रेमपत्रिका			
म. प. (१) / ११७		फरकन परीक्षा	१७८८	१७६१	
म. प. (१) / ११६		बागविलास			
म. प. (१) / १५१		बरजनामा		१८८१	

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	विशेष
ग. प (१) / २३६		फुटकर कवित्त दुहा			
ग. प (१) / २३८		फुटकर गीत			
ग प. (१) / २३७		फुटकर दुहा			
ग. प. (१) / २४०		फुटकर पद गाने के		१८७६	
छ. प. (२) / १=८ १३६		फूल चेतावनी		१९५१	स्फुट कविता।
न प. (४) / ४		वदी मोचन			दुर्गा की प्रार्थना।
छ प. (२) / २०		वत्तीस अक्षर।		१८१२	आध्यात्मिक वर्णन।
छ. प (२) / १८		बरवा			स्फुट कविता।
छ. प. (२) / १९		बरवा विलास			स्फुट कविता।
छ. प. (२) / २१		वाजनामा		१९४०	
ग. प. (१) / १२२		बार्ता रा मिमरा			
छ प (२) / १४		बालक चिकित्सा		१९०३	
छ. प. (२) / ४०		बीसई कथा			
छ. प. (२) / ४३		बुदेल वशावली			पन्नाराज की वशावली।
छ. प. (२) / ४४		बुदेल वशावली			ओछाराज की वशावली।
छ. प. (२) / ४५ ४६ ४७		बुदेल वशावली			तीन प्रतियाँ।
न. प (४) / १२		बृहस्पति-मति			ज्योतिष।
न. प. (४) / ६		भँवर गीता			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	लि का	लि का	विशेष
ख. द. (१) / ११		भक्त मनरंजन			
ख द. (४) / ७		भक्त माल			
ख. द. (४) / ८		भक्ति भागवी गीत ग्रंथ	१६०६		
ख. द (१) / १२		भगवद् कथा			
ख. द. (१) / १०१८२१ १०		भगवत गीता		१८६६ १८११ १८४४	
ख. द. (२) / ११		भगवत गीता पुराण		१८६२	
ख. द. (१) / ११		भगवत गीता ग्रंथ			त्रुटि ग्रंथ।
ख. द. (१) / १२४		भगवान स्तोत्र			
ख. द. (१) / १२१		भजन			
ग. द. (१) / १२१		भजन	१६४६		
ख द. (४) / ६		भजन पद्धति			
ख. द. (४) / ?		भरत विलाप			
ग. द. (१) / ११२		भगवती की कथा		१७०६	
ख द. (१) / १११		भगवती जी की शान्ती			
द. (१) / १८४		भागवत (भाषा)			
ख द. (८) / ५		भागवत एकादश स्कंध			
ग द (२) / १५		भागवत दशम स्कंध		१८८७	
ख. द. (१) / १४		भागवत दशम स्कंध		१८११	

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का	लि. का.	विशेष
छ. प. (२) / २६		भागवत नवम स्कन्ध			
छ. प (२) / ३३		भागवत पञ्चम स्कध		१७५१	
छ. प (२) / ३४		भारत वार्तिक			
छ. प. (१) / १७४		भाषा ज्योतिष लग्न प्रकाश			
ज. प. (४) / ११		भाषा निघट्ट			
छ. प. (२) / ३५		भाषा निरूपण			
घ. प. (१) / १७५		भाषा सामुद्रिक			
छ. प. (२) / ३६		भूगोल			
ग. प. (१) / १३३		भोगल पुराण			
ग. प. (१) / २१०		मल्लावाचा री वार्ता			
छ. प. (२) / ११४		मनो गूजरी			
छ. प. (२) / ११२		मलमास कथा			
छ. प (२) / १०६		महाप्रसाद महिमा			
छ. प (२) / ११०		महिम्न			
छ. प. (२) / १११		महिरावण काट			
ज. प (४) / ३७		महोत्सव वैद्यक		१८३६	
ग. प. (१) / २०४		माघ माहात्म्य भाषा		१८४३	
छ. प. (२) / ११३		मानलीला			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	विशेष
ख. द. (१) / १८		मानस दीपावली			
ख. द. (१) / ११८		मानमंजरी			
ख. द. (१) / २११		मिथिलेश माहात्म्य		१८४२	
ख. द. (१) / २११		मुकुन्दलालजी के पद		१०८२	
ख. द. (२) / ११६		मैनी चरित्र		१८६१	अपूर्ण।
ख. द. (१) / ११७		मोहन रूप			अपूर्ण।
ख. द. (१) / ११८		मोहन विलास		१६९५	
ख. द. (४) / ११११		मोहनी चरित्र		१९५८	
ख. द. (१) / १३४		यमन चिकित्सा			
ख. द. (४) / १		युक्ति		१६९५	अध्यात्म वर्णन।
ख. द. (४) / ८१		योगमंजरी		१९१६	
ख. द. (१) / १११		रंभा शुक की बात			
ख. द. (२) / १११		रघुवीर चरित्र			
ख. द. (२) / १११		रत्नाकर			
ख. द. (४) / २४		रमल		१९१२	
ख. द. (४) / २१		रमलचिन्ता भाषा			
ख. द. (४) / ११		रमल भाषा			
ख. द. (४) / १०		रसराज		१८४१	वैद्य

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	विशेष
ज. प (८) / ६१		रसायन विधि			
ग. प. (१) / २८६		राग			
ज. प. (८) / ४६		राग कल्पद्रुम			
छ प. (२) / १८६		राग चेतावनी			
ग. प. (१) / २७४		राग मलार			
छ. प. (२) / १४७		राग मलार		१९६१	
ज. प. (४) / ५०		रागमाला			
ग. प. (१) / २४८		रागसंग्रह			
ग. प. (१) / २४६		राग सोरठ का पद	१४७७		मीरा, कबीर और नामदेव की कथा।
छ. प. (२) / १४८		राजनीति		१८३७	
ग. प. (१) / २६१		राठौरान री प्रणाली	१८६७		
ज. प. (२) / ४७		राधा नाम प्रताप			
छ. प. (२) / १४३		राधा मकर स्नान			
छ. प (२) / १४४		राधाष्टमी व्रत कथा		१८६८	
छ. प. (२) / १४५		राधा सुधानिधि टीका		१८२६	
ज. प (४) / ४८		राधा सुधानिधि शतक			
ग. प. (१) / २४५		राधिका स्मर्नो		१८२०	
छ. प. (२) / १४६		रामचंद्र विवाह पद			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	लि का	लि का	विशेष
म. ए. (४) / ११		रामचरण विहारमा			
प. ए. (१) / २२१		रामचरित भाषा		१८४०	
म. ए. (२) / ११[illegible]		राम जन्मविहार			
म. ए. (४) / ११		रामजी की बधाई			
म. ए. (१) / २२[illegible]		रामदास बैरागर की [illegible]			
म. ए. (१) / १२२		राम नागलीला			
म. ए. (४) / १७		रामनाम विधि		१९५०	
प. ए. (१) / २२४		रामलीला री कथा			
म. ए. (४) / १८		राम रस गीता			
म. ए. (२) / १२४		रामरायण मधुकोष		१९०६	
म. ए. (२) / १११		राम सहस्रनाम		१९ २	
म. ए. (२) / १२		राम हृदय स्तोत्र			
म. ए. (४) / ११		रामदेवी	१९१८	१९४२	
म. ए. (४) / ११		रामायण माहात्म्य	१८७७	१८८८	
म. ए. (१) / २२१		रिसालू राजा री बात		१८११	
म. ए. (१) / २११		रूपक [illegible] री कथा			
म. ए. (२) / १०७		लव राम		११२६	
म. ए. (२) / १०६		लालपुरदास के [illegible]			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि.का.	लि.का.	विशेष
घ. प. (१) / १८२		लालारस तरंगिणी		१८६०	
छ. प (२) / १०८		लालावली			
ग. प. (२) / २०३		लले मजन			
छ. प. (२) / १५		वध्या प्रकरण		१६७०	
ज. प. (८) / ३		वचनावली		१६२१	अध्यात्म वर्णन।
छ. प. (२) / १६		वनजारो			स्फुट कविता।
छ. प. (२) / १७		वन यात्रा परिक्रमा			
ग. प. (१) / २६८		वर्णाश्रमधर्म			
छ. प. (२) / २०५		वर्षफल			
ज. प. (८) / ८५		वर्षोत्सव			
छ. प. (२) / २०४		वर्षोत्सव कीर्तन			
ज. प. (८) / ८४		वर्षोत्सव के पद			
ग. प. (१) / २२७		वल्लभाचार्य के स्वरूप को चिंतनभाव			
छ. प. (२) / २०२		वशिष्टसार			
ङ. प. (१) / १५३		वामन चरित्र			
छ. प. (२) / २०१		वाराहजी की कथा		१७८३	
ज. प. (८) / ८३		वाल्मीकीय रामायण			
ज. प (४) / ८४		विचित्र नामावली	१८७६	१६१०	

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	लि का	लि का	परिचय
ह. प. (१) / १२१		विरह मंजरी		१११७	
ह. प. (१) / २०१		विरह पद			
ह. प. (२) / ११		विषहरण		१७११	
ह. प. (२) / २०७		विष्णुपंजर स्तोत्र			
ग. प. (१) / १०		विष्णुपद		१८११	
ह. प. (२) / २१		विष्णुपद मंगल		११९०	
ह. प. (४) / ८८		विष्णु पुराण		११९६	
ह. प. (२) / १०-१८		वीर विरदावली			
ह. प. (२) / १०८-२०८		वृन्द सतसई		११२६	
ह. प. (४) / ८७		वेदांत युक्ति सुधा			
ह. प. (१) / १२२		वेदांत स्तोत्र सटीक			
ह. प. (१) / १२८		वैद्यक			
ह. प. (१) / १२७		वैद्यक			
ह. प. (१) / २०		वैद्यक		११२१	
ह. प. (४) / ८०		वैद्यसार संग्रह		१८४४	
ह. प. (४) / ८१		वैद्यक परीक्षा		१८४२	
ह. प. (१) / १२४		वैद्य दर्पण		११९९	
ह. प. (४) / ८२		ब्रज निर्वाणी			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि. का.	लि. का.	विशेष
ङ. प (१) / १५५		वैराग्यसती			
छ. प (२) / ४२		व्रजमडल चिह्न			
छ. प. (२) / ४१		व्रजमक्खी			
छ. प. (२) / १६८		शकर चतुर्थी		१६०३	
घ प. (१) / १८३		शकावली			रामायण पर शका समाधान।
ग. प (१) / २७०		शकुन विचार			
छ. प. (२) / १६३		शालिहोत्र			
छ. प. (२) / १६१		शालिहोत्र		१६३१	
छ. प (२) / १६४		शालिहोत्र हाथी ऊँट को			
छ. प. (२) / १६२		शालिहोत्र हाथी को		१६२६	
ग. प (१) / २८२		शिव गीता			
ग. प. (१) / २८३		शिवरात्रि री कथा		१८०२	
छ प. (२) / १८८		शुकदेव की कथा		१७८६	
ग. प (१) / २८६		शुक बहत्तरी		१८७४	
छ प. (२) / १८७		शुक बहत्तरी			
छ. प (२) / १८६		शुकरभा सम्वाद	१८६८	१६५६	
छ. प. (२) / १८८ १८५		श्रृगार चेतावनी		१८७६	
ग. प. (१) / २८०		श्रृगारमत			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	विशेष
ह. प. (२) / ११		शनैश्चर कथा		१९०२	
ह. प. (२) / १८०		सत्यव्रत साहसी कथा		१८६६	
ह. प. (२) / १८२		श्रीजी के धारण के कीर्तन			
ह. प. (२) / १८१		श्रीबृजके पद		१८६६	
ह. प. (२) / २८१		श्रीनाथजी के मन का ग्रंथ			
ह. प. (२) / १३८		षोड्षभक्ति मत			
ह. प. (२) / १९९		संग्रह			
ह. प. (२) / २७३-२७४		संग्रह ग्रंथ			
ह. प. (२) / १७०		सन्तान सप्तमी कथा		१८०३	
ह. प. (२) / १९८-१९९		सभाबोधिनी		१८५६ १९२६	
ह. प. (२) / १७५		समभूमिका			वर्णन ।
ह. प. (२) / १७-		सत्यनारायण कथा		१९६५	
ह. प. (२) / १७१		सर्वोपरस्थान			
ह. प. (२) / २१७		मदन विचार			
ह. प. (२) / १७१		समयानुसार अध्याय		१८७८	
ह. प. (२) / ११५		समय प्रबंध		१८५८	माखन ।
ह. प. (४) / ६२		सुमन प्रबंध		१८७७	राधाकृष्णकी लीला का वर्णन
ह. प. (४) / ६२		समय प्रबंध और वर्षोत्सव कीर्तन			

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि का.	लि.का.	विशेष
न. प. (४) / ६९		सर्व संग्रह		१९१४	वैद्यक।
छ. प. (२) / १९९		सांख्य दर्शन		१९२८	
न. प. (४) / ६७		साँझी के पद			
छ. प. (२) / १९७		साँझीलीला		१८६०	
छ. प. (२) / १७६-१७७		साठिका		१८७७	
न. प (४) / ६४		सामिग्री विधि		१९३६	
न. प (४) / ६५		सामुद्रिक		१८९३	
ग. प. (१) / २७२		सामुद्रिक भाषा टीका		१८४६	
न. प. (४) / ६६		सामुद्रिक लक्षण			
न. प. (४) / ६८		सारंगधर		१८६६	
छ. प. (२) / १७३-१७४		सारसंग्रह		१८८८	वैद्यक।
न. प. (४) / ७१		सावित्री व्रत कथा		१८१७	
न. प. (४) / ७१		सिद्धि गोष्ठी		-	
ग. प. (१) / २९०		सुंदरदास का सवैया	१६७७	१८३०	
छ. प. (२) / १९१		सुखावहत्तरी		१८९९	
छ. प. (२) / १८६		सुदामा बारहखड़ी		१९१७	
न. प. (४) / ७२		सुधानिधि			
छ. प. (२) / १९०		सुरमाला			संगीत।

पता	कविता काल	ग्रन्थ का नाम	नि का	लि का	विशेष
द. द. (१)/२८८		मूलो की हकायत	१७८७		
द. द. (४)/७१		मदन पुराण		१८७३	
द. द. (१)/१५५		सूरज पुराण			
द. द. (१)/१४६		स्फुट कविता संग्रह			
द. द. (२)/१७१		स्वप्न परीक्षा		१८६८	
द. द. (४)/७८		स्वप्नाध्यायी			
द. द. (२)/१११		स्नेह विचार	१८२१	१८२१	नेपाल ।
द. द. (२)/११२		सरोदय		१७६५	
द. द. (४)/७२		सरोदय		१८६६	
द. द. (२)/७३		हरजस			
द. द. (२)/८८-७१		हनुमान नाटक		१८७२ १८८३	
द. द. (१)/१११		हनुमन्निशानीनामा	१७५७	१८७१	
द. द. (१)/१७०		हरिचंद पुराण		१७८०	
द. द. (१)/१७२		हरिवंश			[illegible] ।
द. द. (४)/११		हम्मारम		१८९१	
द. द. (४)/२४		हितहरिवंश चौरासी भाषा		१९०५	
द. द. (२)/८०-८१		हितोपदेश			
द. द. (१)/१७३		हितोपदेश सटीक		१८१	
द. द. (१)/८१		हृदय प्रकाश	१७०८		